रकादिमिरौषधिश्चोत्तरस्थे ॥१॥
वलौ मेषस्थे घृतक्षौद्रयुक्तं
घृतैकरक्षौद्रविकेशसिद्धं
सिद्धं धनुर्मिन्नयुगं मयौ
नौ श्रवसद्यग्निभिः प्रकरकु
म्भसंस्थामृतं ॥॥॥
स्थूलं रसेनैभकरे
चयान्तैर्हयैर्वैद्यस्था
लपरान्तनेत्रग्रथी
ग्रहनेत्रैर्हयस्थस्य

इत्यादी सेवा करतां न
सद्गतीस जातो ॥
॥ पाचवा : अद्वैत संयुक्त
लोकोत्तरी श्रेष्ठ वीर ॥
त्याचें : चतुर्थैक खंड ॥ प्र
॥ प्रा नवधा भक्ति च : ष
मंजन श्रवण स्मरण
नेत्र रूप नमन नोपेक्षा धर्म सख्य
दास्य सेवा पर्यंत नवधा भक्ति
पावलीस जेंव हो दास्य भक्ति पूर्ण
पणें करून जाणें उद्धरला जाणावा
नाम : उरवत : पाच्छें मुंजावा दधिनंदी
स्वामि भाग्या हरेत : ॥२॥ परम भक्त
वंशा नंदा सर्वो तीर्थ

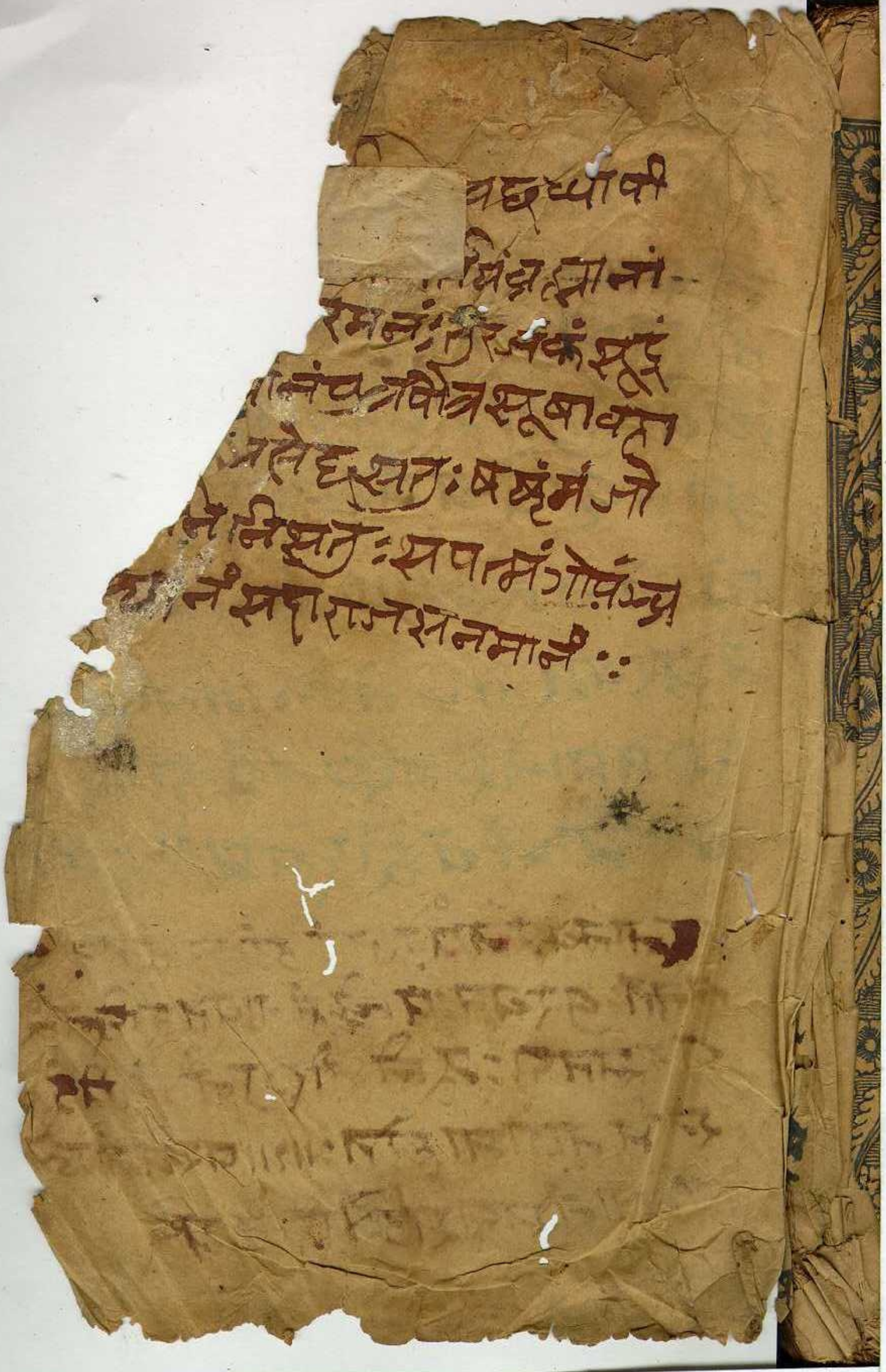

जगदीशपचासा

मुन्शी किशनलालने पंडितचंदा
चनदासजीके द्वारा संस्कृतसे
भाषाटीकाकराके मूलसहित

आगरा
मुहल्ला छिलीईंटमतबैईज़ादकिशन
में छपवाया

एक्ट २५सन १८६७ ई० के अनुसार
रजिस्टरीहुईकोईसाहबनक़लइसटीका
कीनछापें सन १८७६ ईसवी

चौथीबार ३००० पुस्तक मूल्यप्रतिपुस्तक १

3000 Copys } 1 Rupee

प्रकरण	पृष्ठ	प्रकरण	पृष्ठ
ने	१	ग्रहों के जाति ...	१३
...	२	ग्रहों के वर्ण ...	१३
ामी	२	रविवारादिकर्मजा	१३
...	३	सोमवार के कर्म	१३
...	३	भौमवार के ...	१४
कर्णी	३	बुध के	१४
शुभाशुभ	४	गुरु के	१४
त्वऋतव	४	शुक्र के	१४
ार त्वऋतु ...	५	शनिवार के ...	१५
मास परिज्ञान ...	५	ग्रहोंके अधिदेवता	१५
मासनाम ...	५	काल परिणाम ...	१५
मासपरत्वसूर्यकेना	६	वारदोष	१६
मासपरत्वविष्णुकेना	६	वारकृत्य ...	१६
मासपरत्वदेवीकेना	७	वारपरत्वतैल ...	१६
वारपरत्वमासफल	७	नक्षत्र ज्ञान ...	१७
पक्ष फल ...	८	शुभाशुभ नक्षत्र ...	१७
अधिकमास ...	६	नक्षत्रों के स्वामी	१८
क्षयमास ...	६	अधोमुख नक्षत्रोंके	१८
तिथि प्रकरण ...	६	तिर्यमुख नक्षत्र ...	१८
तिथि ज्ञान ...	६	ऊर्द्धमुख नक्षत्र	१८
तिथिकर्म फल ...	६	ध्रुवस्थिर नक्षत्र	२०
तिथियोंके स्वामी	१०	मृदु नक्षत्र ...	२०
तिथि संज्ञा ...	१०	लघु संज्ञक ...	२०
तिथि वर्जितानि	११	तीक्ष्ण नक्षत्र ...	२०
तिथियोंमें कृत्य ...	११	चर नक्षत्र ...	२१
आठदिशाकेस्वामी	१२	उग्र नक्षत्र ...	२१
मिश्र नक्षत्र ...	२१
अथ नष्टवस्तु प्रा	
प्रश्नभाद ...	२१
नक्षत्र परत्व प्रश्न	२२
अश्वादिनक्षत्र सं	२२
नक्षत्र संख्या ...	२३
नक्षत्र की आक्ष	
ति स्वरूप ...	२४
इत्येवमश्वादिव	
चक्र रूपम् ...	२४
अथनवीन वस्त्र	
धारणम् ...	२६
मोती सोनामणिर	
क्तवस्त्र धारणं ...	२६
मद्यारंभकरण	२७
अथऔषधग्रहण	
नक्षत्र	२७
पुंसवन नक्षत्र	२७
कर्णवेधः ...	२७
अन्न प्राशन ...	२८
श्मश्रुकर्म सुव	२८
दंत बंधनं ...	२८
मौंजी बंधन ...	३०
विवाह नक्षत्र ...	३०
अग्निहोत्रग्रहण	
करना	३

प्रकरण	पृष्ठ
...	२८
तु प्रा	
...	२
प्रश्न	
त्र सं	१
या ...	३
ाक्ष	
...	२४
दिव	
...	२४
स्त्रे	
...	२६
णेर	
	२६
गान विद्या सीखना	३१
रोगोत्पन्न शुभाशुभ	३१
रोग मुक्ति स्नान	३२
अथ लता औषधी	
वृक्ष लगाना ...	३३
हल चलाना ...	३३
बीज रोपण करना	३३
तृण काष्ठादि संग्रह	३४
हाथी लेना देना	३४
अथ गवादि पशुओं	
में लेना देना ...	३४
राज्याभिषेक ...	३५
राजा का दर्शन ...	३५
दूज के चंद्रमा का फ	३५
राशि परत्व चंद्रोदय	३६
द्रव्य स्थापित करना	३६
चूल्हा पूजन मूहूर्त्त	३७
काष्ठ स्थापन मूहूर्त्त	३७
पुष्य नक्षत्र के गुण	
दोष	३८
योग प्रकरण ...	३८
अति हित योग जा	
नने की रीति ...	३८
योगों के नाम ...	३९
अथ योगों में वर्जनीय	
का वर्जनीय ...	३९
कर्ण जानने की रीति	३९
नाम कर्णों का ...	४०
कर्णों के स्वामी	४०
हास्य कर्णों का जा	
नना	४०
भद्रा विचार ...	४१
शास्त्रार्थ ...	४१
भद्रा का शरीर का	
विभाग	४२
भद्रा के अंग का फल	४२
अथ चंद्रजन्य भद्रा	
वास फल ...	४२
भद्रा फल ...	४३
वार के अनुसार भ	
द्रा का नाम ...	४३
कर्णों के नाम तिथि	४४
स्वामी	४४
वारानुसार संक्राति	
के नाम	४५
नक्षत्रों के अनुसार	
संक्राति ...	४५
संक्राति फल ...	४५
काल फल ...	४६
दिशा का मुख ...	४६
अथ कर्णों के अनुसा	
र संक्राति स्थित ...	४७
संक्रा	
किस	
संक्रा	
संक्रां	
संक्रां	
पात्र	
संक्राति	
पदार्थ ...	
संक्राति की गंध ...	४८
संक्राति जाति माह	४९
संक्राति के पुष्प	
माह	४९
संक्राति के आभूष	४९
संक्राति की कुंच	४९
संक्राति की अव	
स्था	५०
संक्राति कितने	
मूहूर्त्त होती है ...	५०
धान्य विचार ...	५२
नक्षत्र के अनुसार	
नक्षत्र की पीडा	५२
जन्म नक्षत्र का फ	५२
अथ संक्राति का	
स्वरूप वर्णन ...	५३
चंद्रमा से संक्राति	
का वर्णन फल ...	५३

प्रकरण	पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि
नादि संस्कार ...	६३	जन्मकालमेंमृत्यु	
५३ अन्य मत से ...	६४	कारक ग्रह	७१
५४ पक्षछिद्रतिथि ...	६४	जन्मलग्नसेस्त्री	
५४ गर्भणी के धर्म ...	६५	कैमृत्यकारक ग्रह	७२
गर्भणी का प्रश्न ...	६५	पराक्रमेपराक्रमी	
... ५४	प्रसूता के स्थान	ग्रह	७२
... ५५	प्रवेश के नक्षत्र	६५ जातिभ्रंशकारक	
थऋतु ... प्रक	प्रसूति समय का	योग	७३
णाम ५५	प्रश्न	६५ मृत्युकारक ग्रह	७३
तिथि फलं ... ५६	तिथि गंडांत ...	६६ ग्रहों की दृष्टि ...	७४
वार फलं ... ५६	लग्न गंडांत ...	६६ ग्रहों का उच्चनीच	७५
नक्षत्र फलं ... ५७	नक्षत्र गंडांत ...	६६ जन्म काल का	७५
योग फलं ... ५७	गंडांत शुभाशुभ	६७ फल	
कर्ण फलं ... ५८	फल माह	स्त्री जातक ...	७५
राशि फलं ... ५८	क्षुभ चतुर्दशी	विंशोत्तरीदशा ...	७७
होरा फलं ... ५९	जन्म फलम्	६७ अष्टोत्तरीदशाक्र	७८
लग्न फलं ... ५९	अमावास्याके	अंतरदशा लाने	
ग्रहों के फल ... ६०	फल	६७ का फल	७८
रक्षादर्शन फल ... ६०	दिनक्षयादि फलं	६८ विंशोत्तरी दशा	
काल फलं ... ६०	अधज्येष्ठा नक्षत्र	क्रम	८०
पहिरे हुए वस्त्रों	के जन्मका फल ...	६८ महादशा ग्रौरलं	
का फल ६१	मूल नक्षत्र जन्मफ	६८ तरदशा का फल	८०
गर्भाधान महूर्त्त ... ६१	जन्म समय में मूल		
निजक के तिथि	किस लोक में ...	६९ योगिनीदशाक्र	८४
वार का फल ... ६२	श्लेषा नक्षत्र का	योगनीदशा का फ	८५
प्रथम गर्भाधि के पुं-	नक्षत्र चक्रम्	६९ वर्षदशा का	
		फल कथनं	८६

प्रकर
ग्रहोंकी
शा का
दूसरा म
गोचर प्र
हकितने
राशिको
छादशा
नाम ग्रे
वारानु
ग्रहोंके
ग्रहों
ग्रह पा
जात
नाम
मंच
पाल
तांबू
सूया

प्रकरण	पृष्ठि
ग्रहोंकी स्थितद	
ष्पा का फल ...	८६
दूसरा महूर्त्त ...	८६
गोचर प्रकरण ग्र	
ह कितनेमास एक	
राशिको भोगे हैं	८७
द्वादशभावनोंके	
नाम और फल ...	८८
वारानुसार दान ...	८०
ग्रहोंके दानजप	८०
ग्रहों का जप	
ग्रह पीडा निवारण	८१
जात कर्म ...	८१
नाम करण ...	८२
मंचका रोहण ...	८३
पालने का महूर्त्त	
तांबूल खाने का मु	८४
सूर्यावलोकन वा कु	
आ पूजन महूर्त्त ...	८४
करण वेध ...	८५
अन्नप्राशन ...	८५
चौल कर्म ...	८५
विद्यारंभः ...	८६
यज्ञोपवीत ...	८६
वर्ष संख्या ...	८७
अस्तोदय ...	८७

प्रकरण	पृ
अस्तमें वर्जनीय	
कर्म	८८
विवाहे वर्जनीय	८८
मूलादिजन्म नक्ष	
त्र का दोष ...	८९
वर्ष प्रमाण ...	८९
गुरुचंद्रबल ...	८९
गुरुबल	१००
गुरुअनुकूल कर	
ने का विचार ...	१००
अष्टमैत्री ज्ञान ...	१००
मिलापमें वर्णादि	
कों का ज्ञान ...	१००
भकूटनव पंचक	१०३
मृत्युषडाष्टक ...	१०३
प्रीति षडाष्टक ...	१०३
द्विर्द्वादश ...	१०३
ग्रह मैत्री ...	१०४
वर्ण के गुण ...	१०४
तारागुणवश्यकेगु	१०५
योगिनी के गुण ...	१०५
ग्रहों के गुण ...	१०६
गणों के गुण ...	१०६
भिन्ननाडी के गुण	१०६
सत्कूट के गुण अ	
थवा अस्तकूट ..	१०६

प्रकरण	पृ
का	
कू	
अव	
चार	
विवा	
एकर	
दोष	
दुष्ट मह	
यामाद्धादि	
धनम् ...	
लत्ता दोष ..	
पापग्रहयुक्त और	
रवेधनक्षत्र ...	१११
नक्षत्रकर्णवेध	११२
चंडायुध ...	११३
शांति साम्य ...	११३
चक्र का फल ...	११३
जामित्र दोष ...	११३
चरज्य दोष ...	११४
१२ राशियों का	११४
उदय प्रमाण ..	११४
लग्न की घटिका	
श्रों का संख्या ..	११५
अथ दिन प्रति यु	
क्त फल जानने का	
क्रम विचार ...	११५

पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि
	त्रिंशांशादिकथनं	१२५	मतांतरसेआयों	
११५	आदौग्रहज्ञानं	१२६	के फल	१३५
११६	होराकथनं ...	१२६	नक्षत्रकेअनुसार	
	द्रेष्काणकथनं ...	१२६	व्ययसाधन ...	१३६
११६	चतुर्थांश कथनं ...	१२७	ग्रहों की राशि वि-	१३६
	नवांशकथनं	१२७	ग्रहोंकेनाम ...	१३७
११७	द्वादशांश कथनं	१२८	अंशलाने का प्र	
	विशमत्रिंशांशक	१२८	करण	१३७
११७	समत्रिंशांशककथनं	१२८	ग्रहोंकेभाग ...	१३७
	उक्तांश कथनं	१२९	द्वार गृहोंके	१३७
११८	लग्नांशफलमाह	१३०	ग्रहोंकेस्थानोंकी	
११९	गोधूलिलग्नकथनं	१३०	योजनाका प्रकार	१३८
	वधूप्रवेशमाह ...	१३१	गृहारंभचक्रम ...	१३९
११९	नूतनपल्लवधार		मासोंका फल ...	१३८
	णा का मूहूर्त्त ...	१३१	ग्रहारंभकेनक्षत्र	१३९
१२०	गांधर्वविवाहमूहूर्त्त	१३२	वृष चक्रं	१३९
	दूसरेमतकेअनुसा	१३२	शिलान्यास ...	१३९
१२०	अथवास्तुप्रकरण	१३३	शिलान्यासनक्षत्र	१३४
	ग्रहबलं	१३३	शेषनागकेमुख	१४०
१२१	वर्ज्योनि	१३३	कूर्म चक्रम ...	१४१
	द्वारशुद्धं	१३३	देहलीरखनेका	
१२२	जातकवर्गजानने		मूहूर्त्त	१४१
	का क्रम	१३४	द्वार चक्रं	१४३
१२४	काकिणी	१३४	शांतिकर्मकाप्रकरण	१४४
	ग्रामादिसाधन	१३५	ग्रहकेमुखमें आ	
१२५	आयोंके नाम ...	१३५	हुती का विचार	१४२

पृष्ठि	प्रकरण
	कलश च
	वामार्क
	गृहप्रवेश
	आयुष य
	दूसरा प्र
	तीसरा
	पृथ्वी पू
	प्रकार
	शुक्र क
	सुगन
	तिथि
	गुण च
	होरा व
	सूर्य व
	मंगल
	बुध
	मनु
	वार
	धार
	आव
	शुभ
	भय
	मूल
	कु
	में
	स

प्रकरण	पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि
कलश चक्रम् ...	१४३	विचार	१५३	उपयोगी है ...	१६८
वामार्क लक्षणं	१४३	दिशाकेानुसार-		प्रस्थान दिवस	
गृह प्रवेश लग्नं ...	१४४	न्मुख चंद्रमा ...	१५४	वर्जनीय पदार्थ ...	१७१
आयुष योग	१४४	काल वेला विचार	१५४	गमन काल के उ	
दूसरा प्रकार ...	१४४	वारानुसारकालवा		त्तम शकुन ...	१७३
तीसरा प्रकार ...	१४४	क्षुधित राहु जानना	१५५	अंधादि शुभाशुभ	
पृथ्वी प्राधने का-		पंथा राहु चक्रं ...	१५६	योग कहते हैं ...	१७३
प्रकार	१४५	धर्म मार्ग का फल	१५६	चर योग	१७३
शुक्र का विचार ...	१४६	शुभाशुभ वाहन ...	१५८	दास चक्र	१७७
सुगन धातादि ...	१४८	वारानुसारस्वर ...	१६०	गवादि पशुलेने	१७८
तिथि परत्व लग्नव-	१४८	पिंगला शकुन शब्द	१६१	का मुहूर्त्त ...	१७८
गुण घात ...	१४८	छीकानुसार छाया		अश्व लेने का मूर्त्त	
होरा कथनवा शकुन	१४८	शकुन	१६१	हाथी लेने का मु-	१७८
सूर्य की होरा ...	१४८	छींक शकुन ...	१६१	पालकी चढ़ने का	
मंगल की होरा ...	१४९	पक्षी शब्द शकुन	१६२	मूहूर्त्त	१८०
बुध की होरा ...	१५०	अंगस्फुरण ...	१६३	पंचक चक्रं ...	१८१
मनु का वाक्य ...	१५०	अथ स्त्रियों का अ		रथ चक्राम ...	१८१
वारानुसार वस्त्र		ग स्फुरन	१६५	तिलों की घानी क	
धारण	१५१	त्रिशूल यंत्र ...	१६५	रने का मुहूर्त्त ...	१८२
आवश्यके वर्ज्यान	१५१	ममन की लग्न ...	१६६	ऊख पेलने का मु-	१८२
शुभाशुभ वार वास		दूसरा लग्न का		खेती करने का मु-	१८२
भय	१५२	प्रकार	१६६	हल चक्रम् ...	१८३
शूल दोष निवारण	१५३	प्रथम स्थान के फ-	१६६	नौका चक्रम् ...	१८३
कुंभ मीन के चंद्रमा		दूसरे स्थान के फ-	१६७	लग्न ग्रह यत्न ...	१८३
में वर्जित कर्म ...	१५३	प्रस्थान रखना ...	१६८	नौका स्थान के ग्रह	१८४
सन्मुख चंद्रमा का		प्रस्थान कितने दि-		दीपक चक्रम ...	१८४

प्रकरण	पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि	प्रकरण	पृष्ठि
कूर्म चक्रं	१८५	अंक प्रश्न ...	१९१	शनि राहु	१९९
अष्ट धातु लगाने		रोगी प्रश्न ...	१९१	केतु	
का मूहूर्त्त	१८५	केवल लग्न दोष	१९२	लग्न शुद्धिमें पंच	
अथ सिक्का ढालने		मेघ का प्रश्न ...	१९२	क स्नान	२००
का महूर्त्त	१८६	जल लग्नम् ...	१९३	वारोंमें पंचक व	२००
अथ प्रश्न प्रकरण	१८६	स्त्रीनपुसकनक्ष		दिन रात्रि मानं ...	२००
[illegible]एशादिप्रयुक्तप्र	१८६	त्र जानना ...	१९३	दिन कितना चढा	
अथ अपनी छाया		अथ सूर्य चंद्र नक्ष		है जानना ...	२०१
से प्रश्न	१८६	त्र की संज्ञा ...	१९३	रात्रि कितनी गई	
दूसरा प्रकार ...	१८७	धान्य प्रश्न ...	१९४	यह जानने की	
कार्याकार्य प्रश्न	१८८	पशु विषय प्रश्न ...	१९४	रीति	२०१
अंक प्रश्न	१८८	राज्य भंगादि योग	१९५	अंतरंगबहिरंग	
दूसरा मत	१८९	सूर्य चंद्र के परिवे		नक्षत्र	२०२
अथ वारनक्षत्रयत		ष मंडल का फल ...	१९५	सूति का स्नानं ...	२०२
पंथा प्रश्न	१८९	उल्कातों का फल ...	१९५	अथ अस्यामेव	
नष्ट वस्तु प्रश्न	१८९	ग्रह चक्र प्रकरण ...	१९५	दिग्विप्रेषे वायु	
गर्भणी प्रश्न ...	१९०	सूर्य चंद्र	१९८	संचार फलं ...	२०२
मुष्टिक प्रश्न ...	१९०	भौम कोष्ठक बुध	१९८	अथ अस्यापूर्णि	
लग्न से मन चिंतित		गुरु	१९९	माया हुतासनी	
प्रश्न कहना ...	१९०	शुक्र	१९९	फलम्	२०२

इति सूचीपत्र ज्योतिषसार समाप्त : शुभम्

श्रीगणेशायनमः

श्लोक

शकेन्द्रकालार्कयुतःकृत्वाशून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाःसंवत्सराज्ञेयाःप्रभवादिबुधैःक्रमात्१

टीका ॥ शालिवाहन के शकमें १२ बारह मिलावै और ६० का भाग देय शेष रहे तो प्रभवादिक संवत् का नाम जानना ॥१॥

श्लोकः

सप्तवपंचाग्निकुभिर्युक्तःस्याद्विक्रमस्यहि
रेवायाउत्तरेतीरेप संवत्सात्रातिविश्रुतः ॥ २

टीका ॥ शालिवाहन के शकमें १३५ एकसौ पैंतीस मिलावे तो रेवानदी के उत्तरके किनारे पै वसेजो विक्रम राजा जिसका संवत्सर जानना ॥ २ ॥

संवत्सरनामानि

श्लोक

प्रभवो विभवः शुक्लःप्रमोदोथ प्रजापतिः॥
अंगिराः श्रीमुखोभावोयुवाधातातथैवच १।
ईश्वरोबहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमोवृषः ॥
चित्रभानुःसुभानुश्चतारणः पार्थिवोव्ययः२।
सर्वजित्सर्वधारीच विरोधी विकृतिःखरः ॥
नंदनो विजयश्चैवजयोमन्मथदुर्मुखौ ॥३॥
हेमलंबो विलंबीच विकारी शार्व्वरी प्लवः॥
शुभकृच्छोभनःक्रोधी विश्वावसुपराभवौ ४
प्लवंगःकीलकःसौम्यःसाधारणविरोधकृत्
परिधावी प्रमादीच आनंदोराक्षसोनलः ॥५॥
पिंगलःकालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मतिः॥
दुंदुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षीक्रोधनःक्षयः ः॥
॥ ६ ॥

टीका

१	प्रभवः	१६	चित्रभानू	३१	हेमलंब	४६	परिधावी
२	विभवः	१७	सुभानु	३२	विलंब	४७	प्रमादी
३	शुक्लः	१८	तारण	३३	विकारी	४८	आनंदः
४	प्रमोदः	१९	पार्थिव	३४	शर्वरी	४९	राक्षसः
५	प्रजापति	२०	व्ययः	३५	प्लव	५०	नलः
६	अंगिरा	२१	सर्वजित्	३६	शुभकृत्	५१	पिंगल
७	श्रीमुख	२२	सर्वधारी	३७	शोभनः	५२	कालयुक्तः
८	भाव	२३	विरोधी	३८	क्रोधी	५३	सिद्धार्थी
९	युवा	२४	विकृति	३९	विश्ववसु	५४	रौद्रः
१०	धाता	२५	खरः	४०	पराभव	५५	दुर्मति
११	ईश्वर	२६	नंदनः	४१	प्लवंग	५६	दुंदुभी
१२	बहुधान्य	२७	विजयः	४२	कीलकः	५७	रुधिरोद्गारी
१३	प्रमाथी	२८	जयः	४३	सौम्यः	५८	रक्ताक्षी
१४	विक्रम	२९	मन्मथ	४४	साधारण	५९	क्रोधनः
१५	वृषः	३०	दुर्मुख	४५	विरोधकृत	६०	क्षयः

संवत्सर फल

प्रभवादिगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ १ ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पंच द्वाभ्यां सुभिक्षकं । त्रिषु शेषं समं ज्ञेयं शून्यं पीडा न संशय ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रभवादि संवत्सरों में वर्तमान जो संवत तिसे दूना करे और तीन उसमें से घटायदे और सात का भाग दे शेष रहे तो शुभाशुभ जानना १।४ बचें तो महँगा कहना २।५ बचें तो सस्ता कहना ३।६ बचें समजानना और शून्य बचे तो पीडा जानना ॥ २ ॥

संवत्सरों के स्वामी

पुरंदरो वह्निरपश्च कैनयुगानि च ब्रह्मा वर्षे षष्ठ्या ॥

भवंति तेषामधिदेवताश्च क्रमेणावक्ष्यामि मुनिप्रणीताः
विष्णुर्जीवः प्राक्तोदहनस्त्वष्टाऽहिर्बुध्न्यः पितरः ॥
विश्वेदेवाश्चंद्रज्वलनौनासत्यनामा नोचभागः२॥

टीका ॥ बारह वर्षका एक युग कहते हैं ऐसे पांच युगलके ६० संवत्स
र होतेहैं तिन वर्षोंके क्रम से अधि देवता मुनियोंने कहे हैं ॥१॥ विष्णु
१बृहस्पति २ इंद्र३ अग्नि४ ब्रह्मा५ शिव६ पितर७ विश्वदेवा८
चंद्रमा९ अग्नि१० अश्विनीकुमार११ सूर्य१२ ये संवत्सरों के
स्वामी कहे ॥ २ भेद कहते हैं ॥

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्यस्तस्मादिडा
न्वदितिपूर्वपदाद्वेयुः ॥ एवंयुगेषुसकलेषु
तदीयनाथा वन्ह्यर्कसोमगुविरंचि शिवाक्रमेण

टीका ॥ प्रथम संवत्सर का स्वामी अग्नि द्वितीय परिवत्सर का स्वा
मी सूर्य तृतीय इडावत्सर का स्वामी चंद्रमा चतुर्थ अनुवत्सर का स्वा
मी ब्रह्मा पंचम इद्वत्सर का स्वामी शिव ये सबरे युगोंके दिये जानियें॥

अन्यमतेतु

आनंदादि भवब्रह्मा भावादि र्विष्णुरेवच ॥
जयादि प्रंकरः प्रोक्ता सृष्टि पालननाशकाः

टीका ॥ आनंदादिक २० बीस संवत्सरों का स्वामी ब्रह्मा प्रौर भा
वादिक २० संवत्सरों का स्वामी विष्णु और जयादिक २० बीस
संवत्सरों का स्वामी रुद्र ब्रह्मा सृष्टि कर्त्ता विष्णु पालनकर्त्ता
रुद्र संहार कर्त्ता ये जानिये ॥१॥

ऋतु अयन प्रकार्णं

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्चतदामकम्॥
भवतिदक्षिणमन्यऋतुत्रयंनिगदिता रजनीमरुताहिसा

टीका ॥ शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन ऋतोंमें सूर्य उत्तरायन हो
तेहैं सो देवताओं का दिन जानिये और वर्षा शरद हेमंत इनतीन ऋ
तुन में सूर्य दक्षिणायन होते हैं सो देवताओं की रात्रि जानिये॥८॥

अयन मध्येशुभाशुभकर्म ॥

गृह प्रवेशादि दृढ़ाप्रतिष्ठा विवाह चौलव्रत बंधदीक्षाः
सौम्यायने कर्म शुभे विधेयं हेयं हितं तत्खलदक्षिणेच ॥१

टीका ॥ गृह प्रवेश विवाह देव प्रतिष्ठा मुंडन जनेऊ मंत्र दीक्षा ये उत्त
रायण सूर्य में शुभ हैं और निंदित कर्म दक्षिणायन में करने शुभ हैं ॥१॥

संक्राति परत्व ऋतु कथनं

मकरादि राशि द्वयभानुभोगात् षडर्त्तवस्युः शिशिरो वसंतः
ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरश्च तद्वद् हेमंत नामा कथितश्च षष्ठः १

टीका ॥ मकर राशि से आदि लेके दो दो राशि सूर्य के भोगें ते छः ऋतु
हों हैं शिशिर १ वसंत २ ग्रीष्म ३ वर्षा ४ शरद ५ हेमंत ६ ये छः ऋ
तु के नाम जानो ॥ १ ॥ ॥ उदाहरण ॥

१० मकर ११ कुंभ १२ मीन	शिशिर ऋतु १	
१ मेष २ वृष ३ मिथुन	वसंत ऋतु २	
४ कर्क ५ सिंह	वर्षा ऋतु ४	
६ कन्या ७ तुला	शरद ऋतु ५	
८ वृश्चिक ९ धन	हेमंत ऋतु ६	

मतांतर राशि परत्व ऋतुत्व. मेषादितोद्वि द्विभभानुभोगादसंतपूर्वा ऋतुः षडुक्ता ॥१

टीका

मेष राशि से लेके दो दो राशि सूर्य के भोगते छहों ऋ
तु कहे हैं मतांतर तें सो जानना ॥ १ ॥

१ मेष २ वृष	वसंत १	
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्म २	
५ सिंह ६ कन्या	वर्षा ३	
७ तुला ८ वृश्चिक	शरद ४	
९ धन १० मकर	शिशिर ५	
११ कुंभ १२ मीन	हेमंत ६	

मास परत्व ऋतु

चैत्रादि द्वि द्वि मासाभ्यां वसंताद्यतवश्चषट्
दक्षिणान्याग्र गृह्णंति दैवपित्र्ये च कर्मणि ॥१

टीका ॥ चैत्रादिक दो दो महीनों में दक्षिणान्य के मत से दैवकर्म पित्र कर्ममें वसंत आदि छहों ऋतु ग्रहण करते हैं ॥ १ ॥

उदाहरण

१ चैत्र	वसंत १	७ आश्विन	शरद ४
२ वैशाख		८ कार्तिक	
३ ज्येष्ठ	ग्रीष्म २	९ मार्गशिर	हेमत ५
४ आषाढ		१० पौष	
५ श्रावण	वर्षा ३	११ माघ	शिशिर ६
६ भादों		१२ फाल्गुण	

मास परिज्ञान

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः।
सा राशिः संक्रमाख्या स्या मासत्यत्तनद्दायने

टीका ॥ पूर्व की राशि को छोडके आगे की राशि को जाय जो सूर्यसो मेष राशि से आदि देके उसको मास संक्राति ऋतु वर्ष अ यन या गिनती से होते हैं ॥

दर्शो वधिं मास मुपांति चांद्रं सौरंतथा भास्कर
राशि चारात् ॥ त्रिंशाहनं सावन संज्ञमार्यो
नक्षत्र मिंदो र्भगणा भ्रमाच्च ॥ १ ॥

टीका ॥ मावस से मावस तक चंद्रिमास कहते हैं संक्रांति से सं क्रांति तक सौरमास कहते हैं तीस ३० दिन का सावन मास कहते हैं । चंद्रमा के नक्षत्र से लेके चंद्रमा के नक्षत्र तार्इ नक्षत्र मास कहते हैं १

मास नाम

मधश्चतथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ

नभोनभस्य ॥ तयेषऊर्ज्जश्चसहांसहस्यस्तपस्य
श्चयथाक्रमेण ॥ १ ॥

टीका ॥ मधु कहिये चैत्र माधव कहिये वैशाख शुक्र कहिये ज्ये
ष्ठ शुचि कहिये आषाढ नभ कहिये श्रावण नभस्य कहिये भाद्र
पद ईष कहिये आश्विन ऊर्ज कहिये कार्तिक सहा कहिये मार्गशि
र सहस्य कहिये पौष तय कहिये माघ तपस्य कहिये फाल्गुन इस
क्रम से महीनों के नाम जानना ॥ १ ॥

मास परत्व सूर्य के नाम

अरुणो माघ मासेतु सूर्य्योवै फाल्गुणे तथा ४॥
चैत्रमासेत वेदांगो भानु वैशाख एवच ॥ १ ॥
ज्येष्ठमासेतथेन्द्रः आषाढेतपतेरविः ॥
गभस्तिः श्रावणे मासे यथोभाद्र पदतथा २
सुवर्णरेता श्च पुजि कार्तिकेच दिवाकरः
मार्गशीर्षेतथेन्मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः
इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात्

टीका ॥ माघ में अरुणा सूर्य का नाम है फाल्गुण में सूर्य नाम है चैत्र
में वेदांग सूर्य का नाम है वैशाख में भानु नाम है ज्येष्ठ में इंद्र नाम है आषा
ढ में रवि नाम सूर्य जानिये श्रावण में गभस्ति नाम सूर्य जानिये ॥ भाद्रों
में यम नाम सूर्य जानिये आश्विन में सुवर्ण रेता सूर्य जानिये ॥ कार्तिक में
दिवाकर नाम सूर्य जानिये मागशिर में मित्र नाम सूर्य जानिये पौष में
विष्णु नाम सूर्य जानिये ॥ यह बारह महीनों में सूर्य के नाम जा
निये ॥ १ ॥

मास परत्व विष्णु के नाम

केशवं मार्गशीर्षेतु पौषे नारायणं विदुः
माधवं माघ मासेतु गोविन्द मथ फाल्गुने
चैत्र विष्णु तथा विद्या द्वैशाखे मधुसूदनम्
त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः

श्रावणे श्रीधरं विद्धिं हृषीकेशंतु भाद्रके ॥
श्राश्विने पद्मनाभं च कर्जे दामोदरंवतु ४

टीका ॥ मार्गशिर में केशव नाम वस्तु का नाम जानिये - पौष में नारायण नाम जानिये - माघ में माधव नाम जानिये - फाल्गुन में गोविंद नाम जानिये - चैत्र में विष्णु नाम जानिये - वैशाख में मधुसूदन नाम जानिये - ज्येष्ठ में त्रिविक्रम नाम जानिये - आषाढ में वामन नाम जानिये - श्रावण में श्रीधर नाम जानिये - भादों में हृषीकेश जानिये - आश्विन में पद्म नाम जानिये - कार्तिक में दामोदर नाम जानिये - मार्गशिर में केशव नाम जानिये - पौष में नारायण नाम जानिये ॥ ४ ॥

मास परत्व देवीन के नाम

मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥
माघेतु रुक्मणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रि नामका।
चैत्रे मासि रमा देवि वैशाखे मोहिनी तथा ४ ॥
पद्माक्षी ज्येष्ठ मासेतु आषाढे कमले तिच ॥
कांतीमती श्रावणेच भाद्रेतु अपराजिता ४ ॥
पद्मावती आश्वनेतु राधादेवीतु कातके ॥ १

टीका ॥ चैत्र में रमा देवी जानिये - वैशाख में मोहिनी नाम जानिये - ज्येष्ठ में पद्माक्षी नाम जानिये - आषाढ में कमला देवी नाम जानिये - श्रावण में कांतिमती जानिये - भादों में अपराजिता नाम जानिये - आश्विन में पद्मावती नाम जानिये - कार्तिक में राधा नाम जानिये - मार्गशिर में विशालाक्षी नाम जानिये - पौष में लक्ष्मी नाम जानिये - माघ में रुक्मिणी नाम जानिये - फाल्गुण में धात्री नाम जानिये - ये देवीन के नाम हैं ॥ १ ॥

वार परत्व मास फल

पंचार्क वासरे रोगाः पंचभौमे महद्भयं
पंचार्क वारदुर्भिक्षशेषावाराः शुभप्रदः

सं.	मास नाम	मास नाम	मास सर्य	मास विष्णु	मास स्त्रीकेन
१	चैत्र	मधु	वेदांग	विष्णु	रमा
२	वैशाख	माधव	भानु	मधुसूदन	मोहिनी
३	ज्येष्ठ	शुक्र	इंदु	त्रिविक्रम	पद्माक्षी
४	आषाढ	शुचि	रवि	वामन	कमला
५	श्रावण	नभ	गमस्ति	श्रीधर	कांतिमती
६	भाद्रपद	नभस्य	यम	हृषीकेश	अपराजिता
७	आश्विन	ईष	सुवर्ण रेता	पद्मनाभ	पद्मावती
८	कार्तिक	ऊर्ज	दिवाकर	दामोदर	राधा
९	मार्गशिर	सह	मित्र	केशव	विशालाक्षी
१०	पौष	सहस्य	विष्णु	नारायण	लक्ष्मी
११	माघ	तप	अरुण	माधव	रुक्मिनी
१२	फाल्गुन	तपस्य	सूर्य	गोविन्द	धात्री

टीका ॥ जिस महीने में पांच रविवार होंय तो राग जानिये और जिस महीनेमें पांच मंगलवार होय तो बडा भय होय- जिस महीनेमें पांच शनीचर होंय तो दुर्भिक्ष पडे - और बुध गुरु शुक्र ये वार होंय तो शुभ को देते हैं ॥ १ ॥

पक्ष

पूर्वापरे मासदलं हिपक्षौ पूर्वापरौ तौ सित नील संज्ञौ ॥ पूर्वस्तु दैवस्तु परस्त्वपैत्र्यः कैश्चित्तु कृष्णेसितपंचमांतः ॥ १ ॥ आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः कैश्चित्कृष्णोपिमासके २

टीका ॥ शुक्ल पक्ष की पड़वा से लेके पूनों तक शुक्ल पक्ष कृष्ण पक्ष की पडवा से लेकें मावस तक कृष्ण पक्ष शुक्लपक्ष में देव कार्य करे कृष्ण पक्षमें पित्रकार्य करे दोपक्ष मिलकें एक महीना होता है शुक्ल पक्ष की पंचमी से लेके कृष्ण पक्ष की पंचमी तक शुभ है कृष्ण पक्ष की पंचमी लेकें शुक्ल पक्ष की पंचमी तक मध्यम है ॥ २ ॥

अधिक मास

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासै र्दिनैः षोडशभिस्तथा
घटिका नाब्द तुष्केन पतत्यधिकमासकः

टीका ॥ ३२ महीना २९ दिन ४ घटी इनके भोगजाने पर्यंत अधिक मास संभव होता है ॥ २ ॥

क्षय मास

असंक्रांति मासाधिमासः स्फुटंस्याद्विसंक्रांतिमा
सः क्षयाख्यः कदाचित् ॥ क्षय कार्त्तिका दित्रयेना
न्यतः स्यात्तदा वर्ष मध्येधिमास द्वयंच ॥ १ ॥

टीका ॥ जिस महीने में संक्रांति होय नहीं तो अधिक मास होत
है और जिस महीने में दो संक्रांति होंय तो क्षय मास जानिये का
र्त्तिकादि तीन मासों में संक्रांति का सभव न हो तो उस वर्षमे दे
अधिक मास होते हैं ॥ १ ॥

तिथि प्रकरणं

तिथि ज्ञान

मासभा च्चंद्रभंयावत् गणयेत्तावदेवतु ४ ॥
यावंति गणना द्वानितावंत्यः स्तिथयः क्रमात्

टीका ॥ मासके नक्षत्र से लेके दिवस के नक्षत्र की जितनी संख्या
य तितनी तिथि जानिये परंतु पूर्णिमास की गिनती समझले ॥ १ ॥

तिथि कर्म फलं

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृती
या रोगदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥ शुभातु पंचमी
ज्ञेया षष्टिका त्वशुभामता ॥ सप्तमीतु शुभा ज्ञेया श्रेष्ठ
मौ व्याधिनाशिनी ॥ नवमी मृत्युदा ज्ञेया द्रव्यदा दश
मीतथा ॥ एकादशीतु शुभदा द्वादशी सर्व सिद्धिदा ॥
त्रयोदशी सर्व सिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा
पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्याऽशुभा तिथिः ॥ २५ ॥ २ ॥

टीका ॥ पड़वा सिद्ध की देनेवाली कही - द्वितीया कार्य की साधन करनेहारी कही - तृतीया आरोग्य की करनेहारी कही - चौथ कलह की करनेहारी - पंचमी ज्ञान की देनेवारी - षष्ठी अशुभ करनेवाली -सप्तमी शुभकी देनेवारी - अष्टमी व्याधि की दूर करनेवाली - नवमी मृत्य करनेवाली - दशमी धन देनेवाली - एकादशी शुभकरनेवाली - द्वादशी प्राण की संदेह करनेहारी - त्रयोदशी शुभ कीदेनेवाली - चतुर्दशी उग्र कर्म की करनेहारी - पूर्णिमा पुष्ट की देनेवाली - अमावास्या अशुभ की करनेहारी जानिये ॥४॥

तिथियोंकेस्वामी

वन्हिविरंच्योगिराजागणेशाः फणिर्विषाखो दिनकृत्महेशः ॥ दुर्गोतको विश्वहरिस्मरश्च सर्वेः शशी चेति पुराणदृष्टः ॥१॥ अमायाः पितरः प्रोक्ता स्तिथीनां मधिपाः क्रमात् ॥ २ ॥

टीका ॥ पड़वा का स्वामी अग्नि - द्वितीया का स्वामी ब्रह्मा - तृतीया का स्वामी गौरी - चौथ का स्वामी गणेश - पचमी का स्वामी सर्प - षष्टी का स्वामी स्वामिकार्तिक - सप्तमी का स्वामी सूर्य - अष्टमी का स्वामी शिव - नवमी का स्वामी दुर्गा - दशमीका स्वामी यम - एकादशी का स्वामी विश्वेदेवा - द्वादशी का स्वामी हरि - त्रयोदशीका स्वामी कामदेव - चतुर्दशी का स्वामी शिव - पूनों का स्वामी चंद्रमा - अमावस का स्वामी पितर - यह तिथियों के स्वामी कहे ॥ १ ॥ २ ॥

तिथि संज्ञा

नंदाचभद्राचजयाचरिक्ताः पूर्णेतिसर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ॥ कनिष्ठमध्येष्टफलाश्चशुक्लकृष्णेभवत्पुत्तम मध्यहीनाः ॥ १ ॥ ३ ॥

टीका ॥ पडवा १ छठ ६ एकादशी ११ यह नंदा तिथि जानिये - दूज सप्तमी ७ द्वादशी १२ यह भद्रा तिथिजानिये - तीज ३ अष्टमी ८ तेरस १३ यह जया तिथि जानिये - चौथ ४ नौमी ९ चौदश १४ येरिक्ता

तिथि जानिये - पंचमी १५ दशमी १० पूनों १५ ये पूर्णा तिथि कृष्ण पक्ष में पंचमी पर्यंत शुभ जानिये - पंचमी से मावस पर्यंत मध्यम - भाव स से पंचमी पर्यंत हीन - शुक्ल पक्ष में पंचमी तक हीन - पंचमी से दशमी तक मध्यम - दशमी से पंचमी पर्यंत श्रेष्ठ जानिये ॥ १ ॥

तिथि वर्ज्यतानि

कूष्मांडं बृहती फलानि लवणं वर्ज्यं तिला मृतथा तैलं चामलकं दिवं प्रवसता पूर्णिषक पालांऋकम् ॥ निष्पावांश्चमसूरिका फल मद्यांहंताकसंज्ञंमधु द्यूतंस्त्री गमनंक्रमात् प्रतिपदादिश्चेवना षोडशः ॥ १ ॥ ४ ४ ॥

टीका ॥ पड़वा को पेठा न खाय - दूज को कटहल न खाय - तीज को नोंन न खाय - चौथ को तिल न खाय - पंचमी को आमकी खटाई न खाय - छट को तेल न खाय - सप्तमी को आँवला न खाय - अष्टमी को नारियल न खाय - नौमी को काशीफल न खाय - दशमी को परवल न खाय - एकादशी को दलिया न खाय - द्वादशी को मसूर न खाय - त्रयोदशी को बैंगन न खाय - चौदश को सहत न खाय - पूनों को जूआ न खेले - मावस को स्त्री से भोग न करे ये आयु वारे को वर्जित करे है - अष्टमी को मास न खाय चौदश को हजामत न करावे - ये बातें ऊपर लिखी सो वर्जित हैं ॥ २ ॥

तिथों के कृत्य

नंदासु चित्रोत्सव वास्तुतंत्र क्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यं ॥ विवाहभूषा भ्रुकटाध्वयाने भद्रासु कार्य्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ जयासु संग्राम बलोपयोगी कार्याणि सिद्धं त्यपि निर्मितानि ॥ रिक्तासु विद्वद्वध घात सिद्धि र्विषा दिप्रयोगादिच यांति सिद्धिम् ॥ पूर्णासु मांगल्य विवा हयात्रा सपौष्टिकं शांतिक कर्म कार्यं ॥ सदैव दर्शेपि तत्कर्म मुक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलानि ॥ ३ ॥

टीका ॥ नंदा तिथि में आनंदादि उत्सव देवी उत्साह राह संबंधी क
र्म गीत नृत्य वाजे ये करना १ भद्रा में विवाह गाडी रथ बनाना यात्रा
पुष्टिकं कर्म करना २ जया में युद्ध कर्म सेना संबंधी कर्म तलवार ध्व
जा बनानी ये कर्म सिद्धि होते हैं ३ रिक्ता में घात कर्म विष कर्म शस्त्र
प्रयोग उग्र कर्म करना पूर्णा में विवाहादि शुभ कर्म शांतिक पौष्टिक
कर्म करना मावस में पितृकार्य करना ॥

सं.	तिथि	फल	स्वामी	नाम	शुक्ला.	कृष्णा	नक्षत्रेसो
१	पड़वा	सिद्धिदा	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	पेडा
२	द्वितीया	कार्यसा	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेढ
३	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	नोंन
४	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	पंचमी	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	आमखदाई
६	षष्ठी	अशुभ	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	सप्तमी	शुभ	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आवला
८	अष्टमी	व्याधिना	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	नवमी	मृत्य	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफ.
१०	दशमी	धनदा.	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	एकादशी	शुभ	विश्वेदेवा	नंदा	शुभ	अशुभ	दरिया
१२	द्वादशी	अशुभ	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	त्रयोदशी	सर्वसिद्धी	मदन	जया	शुभ	अशुभ	वेंगन
१४	चौदश	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	सहतक्षी.
१५	पूनों	पुष्टिदा	चंद्रमा	पूर्णा	शुभ	अशुभ	जूआ
३०	मावस	अशुभ	पितर	०	०	०	स्त्रीसंग

अष्ट दिशाओं के स्वामी

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधः

बुधोबृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथाग्रहाः

टीका ॥ पूर्व का स्वामी सूर्य अग्निकोण का स्वामी शुक्र दक्षिण का स्वामी मंगल नैऋत का स्वामी राहु पश्चिम का स्वामी शनि वायव्य का स्वामी चंद्रमा उत्तर का स्वामी बुध ईशान का स्वामी गुरु ये दिशाओं के स्वामी जानना चाहिये ॥

ग्रहोंकीजात

ब्राह्मणौजीवशुक्रौच क्षत्रियौभौमभास्करौ
सोम सौम्यो विशौप्रोक्तौ राहु मंदौतथात्पजौ।

टीका ॥ बृहस्पति शुक्र यह ब्राह्मणजानिये-सूर्य मंगल ये क्षत्री बुध चंद्रमा ये वैश्य जानिये- राहु केत शनि ये शूद्र जानना ॥

ग्रहोंकेवर्ण

रक्तांगारकादित्यौ श्वेतौ शुक्र निशाकरौ
गुरुसाम्यौ पीतवर्णौ शनिराहु सितौ शुभौ ४ ॥

टीका ॥ सूर्य मंगल ये लाल वर्ण जानिये - बुध बृहस्पति ये पीला वर्ण जानिये - शनि राहु ये काला वर्ण जानना ॥

रविवारादि कर्मजानना

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्नि मंत्रौ
षधशस्त्र कर्म ॥ सुवर्णताम्रौर्णिक चर्मका
ष्ठ संग्राम पराद्यादित्यौ विद्ध्यात् ॥ १ ॥

टीका ॥ रवि वार के दिन राजा काऽभिषेक गीत बाजा पालकी चढ़ना राजा की सेवा गौ बैल का पालना अग्नि में हवन करना मंत्र उपदेश करना औषधि खाना शस्त्र बनाना दुकान का करना सोना तांबा ऊन चमरा काष्ट युद्ध प्रसंग ये रवि वार को कृत्य करना ॥ १ ॥

सोमवार के कर्म

पंण्याब्जमुक्ताजते क्षुभोज्यस्त्री हृष्ट क
स्यांबुविभूषणाद्याः ॥ गानं क्रतुक्षीरवि
कारशृंगी पुष्पांवरारंभणभिन्दुवारे ॥ २

टीका ॥ शंख कमल मोती रूपा स्त्रीभोग भोजन गंडे के रस की कृत्य हरा जलादि भोग अलंकार पशुादि गोरस गाना पुष्प वस्त्रये सोमवार में कृत्य करना चाहिये ॥ २ ॥

भौमवार

भेदानृतस्तेयविषाग्नि शस्त्र वध्याभिघाता
रुणाङ्गभंग ॥ सेनादिवेषाकरधातुहेम प्र
वालरत्तानिकृतैविदध्यात् ॥ ३ ॥ ; ; ; ; ॥

टीका ॥ मंगल को भेद करना चोरी अनृत विष अग्नि शस्त्र वध संग्राम सेनादि वेष खान धातु सोना मूंगा लाल वस्त्र रुधिर आ व यह कृत्य मंगलवार को करना ॥ ३ ॥

बुधवार

नैपुन्यपण्याध्ययनकलाश्च शिल्पादिसेवा
लिपिलेखनानि ॥ धातुक्रियाकांचनयुक्तसंधि
व्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः ॥ ४ ॥ ; ; ॥

टीका ॥ बुधवार में चतुराई पुण्य पढना चौसठ कला सीखनी चि त्रकारी सेवा लिखना धातु क्रिया सोने की सीप के मित्र कोकवा द विवाद करना चाहिये ॥ ४ ॥

गुरुवार

धर्मक्रिया पौषिकयज्ञविद्या मागल्यहेमा
वरवेश्यायात्रा ॥ रथाश्वभेषज्यविभूषणादि
कार्यं विदध्यात्स्फरमं त्रिवारे ॥ ५ ॥

टीका ॥ धर्म काम करना यज्ञ करना नवग्रह पूजा करना विद्या भ्यास करना सौभाग्य वस्त्र गृह का कर्म यात्रा रथ अश्व औषधि यह कृत्य गुरुवार में करना चाहिये ॥ ५ ॥

शुक्रवार

स्त्रीगीतिपुण्याभणिरत्नगंधवस्त्रोत्सवा
लंकरणास्त्रिकर्म ॥ भूपण्यगोकोशकृषिक्रियाश्च

सिद्धाति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥६

टीका ॥ शुक्रवार को स्त्री संग गावना शय्या मणि रत्न उत्साह अलंकार वाणिज्य कर्म गाई द्रव्य ये शुक्र को कृत्य करनी ॥६॥

शनिवार

लोहास्यसोसत्रपुशस्त्रदास पापानृतस्ते
य विषादविद्या ॥ गृहप्रवेशद्विपबंधदी
क्षास्थिरंचकर्मासुतवन्हि कुर्यात् ॥ ७ ॥

टीका ॥ शनि वार को लोहे का काम पत्थर का शीशे का काम तर वार दास दासी पापकर्म झूठ बोलना खारी विष का गृह प्रवेश हाथी बाँधन मंत्र उपदेश और स्थिर कर्म शनिवार को करना ॥७॥

वार देवता

सूर्य्यादितः शिव शिवा गुह विष्णु केन्द्र
कालः क्रमेणपतयः कथिता ग्रहाणाम ॥

टीका ॥ सूर्य का स्वामी शिव - चन्द्रमा का पार्वती - मंगल का स्कंद - बुध का विष्णु - गुरु का रुद्र - शुक्र का ब्रह्मा - शनि का चंद्रमा स्वामी यह ग्रहों के क्रम से स्वामी कहे मुनियों ने ॥

ग्रहों के अधि देवता

वन्हिंवुभूमि हरि शक्र शची विरंचि
स्तेषांपुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥ १ ॥

टीका ॥ सूर्य का अग्नि अधि देवता - चंद्रमा काजल - मंगल का भूमि - बुध का हरि - बृहस्पति का इंद्र - शुक्र का इंद्राणी और शनि का ब्रह्मा अधि देवता मुनिवरों ने ग्रहों के अधि देवता कहे ॥ १ ॥

काल परिणाम

पतंग शुन्यो दिवसाधि पत्यं निशाप्यरुश्चै
वृतुनिग्मभानोः ॥ रात्रिद्वयंचै कदिनंचसौ
मो पोषेग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ २ ॥ ४ ॥

टीका ॥ शनिश्चर का दिनवली - सूर्य का दिन रात्रिवली - चंद्रमा को

दिन रात्रि वली पोष ग्रह उदय भये पर ग्रष्ट प्रहर वली है ॥ १ ॥

वार दोष

नवार दोषाः प्रभवंति रात्रौ दैवेज्य दैत्येज्य
दिवाकराणाम ॥ दिवा पराणां कार्कजभूसु
तानां सर्व्वत्र निद्यो वुधवार दोषः ॥ ११५ ॥

टीका ॥ वृहस्पति शुक्र सूर्य इनको दिनमें दोष नहीं है रात्रि मे दोष है सोम मंगल इनको दिनमें दोष है रात्र में नहीं है और वधुवार को दि न रात्रिमें दोष है और शनि को दिनमें दोष है रात्रि में नहीं ॥ १ ॥

अथ वार कृत्यम्

सोम सौम्य गुरु शुक्र वासराः सर्व कर्म सुभ
वंति सिद्धिदाः ॥ भानु भौम शनि वासरेषु
च प्रोक्त मेव खलु कर्म्म सिद्धाति ॥ १ ॥

टीका ॥ चंद्रमा वुध वृहस्पति शुक्र ये सब कामों में सिद्धि के देने वाले हैं ॥ और शनि सूर्य मंगल ये कहे जो कर्म तिनमें सिद्धि देने वाले हैं ॥ १ ॥

॥ अथ वार परत्व तेल लगाने का शुभाशुभ फल ॥

रविस्तापं कांतिं वितरति शनी भूमितनयो
मृतिं लक्ष्मी सौम्यः सुरपति गुरु र्विघ्न हरणम्
विपत्तिं दैत्यानां गुरु रखिल भोगानुगमनं नृ
णां तैलाभ्यंगात्सपति कुरुते सूर्यतनयः ॥ ५

टीका ॥ रविवार को तेल लगावे तो सांप होय - सोमवार को शनी भावै मंगल को तेल लगावे तो मृत्यतुल्य कष्ट होय - वुधवार को तेल लगावे तो धन प्राप्त होय - वृहस्पति को लगावे तो हानि होय - शुक्र को लगावे तो दुःख होय - शनि को लगावे तो सुख पावे ॥ ५ ॥

रवौ दूर्वा गुरौ पुष्पं भौम वारे च मृत्तिका
भृगौ तु गोमयेदद्यात तैल दोषान विद्यते १

टीका ॥ रविवार को तेल लगावे ता दूर्वा डाल ले - मंगल को तेल लगावे तो मृत्तिका डाल ले - वृहस्पति को तेल लगावे तो पुष्प डाल ले

शुक्र को गोमय डालकर तेल लगावे तो तेल दोष दूर होय ॥ २

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
स्वामी	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	रुद्र	ब्रह्मा	चंद्र
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
काल वि.	८प्रहर	२रात्रि४प्र.	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिनदोष	रात्रिदोष	रात्रिदोष	रात्रिदोष	दिनदोष
कृत्य	उग्रकर्मसि.	सर्वकर्मसि.	उग्रकर्मसि.	कर्मसि.	कर्मसि.	कर्मसि.	उग्रकर्मसि.
तत्साध्यं.	ताप	शोभा	मृत्यु	धन	हानिः	दुःखम्	सुःखम्

अथ नक्षत्र ज्ञान

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक् विधूनो
भशोषितः स्याद्दुडु शोष संख्यया ॥

टीका ॥ चैत्र से आदि लेकर गत महीनों को दूना करे गई भई तिथि जोडे और १ धरायदे तब सत्ताईस २७ का भाग देय शेष रहे सो नक्षत्र जानिये ॥

अथ शुभाशुभ नक्षत्र ज्ञान

अश्विनीतुशुभा प्रोक्ता भरणीनाशकारिणी ॥
कार्यघ्नीकृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः
मृगः शुभास्तत श्चार्द्रा मध्यमस्तु पुनर्वसुः ।
पुष्यः शुभः सार्पभचा पूर्वाश्चुक नाशमृत्यदाः
उत्तरा हस्त चित्रास्तु विद्या लक्ष्मीशुभप्रदाः ।
स्वाती विशाखेत्वशुभे मैत्रं सर्वार्थ सिद्धिदम् ३
ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोयं क्षय नाशार्थ दानिदम ।
विष्णु ब्रह्मा विष्णुवश्च वृद्धि वृद्धिकर प्रदाः ४
वासवं वारुणं पौष्णं शुभं भद्रं मृति प्रदम ॥ ३ ॥
उत्तराभाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका ॥ ५ ॥

टीका ॥ अश्विनी शुभ की देनेहारी - भरणी और कृत्तिका का
दे नाश करनेहारी - रोहिणी और मृगशिर यह शुभ को देती
है - आर्द्रा मध्यम है - पुनर्वसु पुष्य ये शुभ को देते हैं - श्लेषा और
मघा पूर्वाफाल्गुनी यह तीनों शोक हानि मृत्यु की करने वा
ली हैं - उत्तरा हस्त चित्रा यह विद्या लक्ष्मी की करने वाली हैं -
ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढ ये क्रम से क्षय नाश अर्थ की हानि करने
वाली हैं - उत्तराषाढ और अभिजित् श्रवण ये बुद्धि वृद्धि क
रने हारे हैं - धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपद ये क्रम से शुभक
ल्याण मृत्यु के देने हारे हैं - उत्तराभाद्रपद और रेवती ये श्री
के और कामना के देने हारे हैं ॥ ५ ॥

नक्षत्रों के स्वामी

भेषा दास्वयमाग्नि कैन्द्र गिरिषा: प्रोक्ता अदि
त्यं गिरा: सर्पा: काव्यभुजोभगोर्यम रवित्वष्टृ वा
यामारुत: ॥ इन्द्राग्नित्वषमित्र इंद्र निऋतिर्नी
रंचविश्वे विधिर्वैकुण्ठोवसुपाश्वयजैक चरणा
हिर्बुध्न्य पूषा मिधा: ॥ २ ॥ ※ ※ ※ ※ ॥

टीका ॥ हस्त कहिये अश्विनी यम कहिये भरनी अग्नि कहि
ये कृत्तिका कर्क कहिये रोहिणी इंदु कहिये मृगशिर गिरिषा
कहिये आर्द्रा आदित्य कहिये पुनर्वसु अंगिरा कहिये पुष्य स
र्प कहिये श्लेषा काव्यभुज कहिये मघा भग कहिये पूर्वा फा
ल्गुनी अर्यमा कहिये उत्तराफाल्गुनी रवि कहिये हस्त त्वष्टा क
हिये चित्रा मारुत कहिये स्वाति इंद्राग्नि कहिये विशाखा मि
त्र कहिये अनुराधा इंद्र कहिये ज्येष्ठा निर्ऋत कहिये मूल नीर
कहिये पूर्वाषाढ विश्व कहिये उत्तराषाढ विधि कहिये अभिजित्
वैकुण्ठ कहिये श्रवण वसु कहिये धनिष्ठा वारुणी कहिये शतभि
षा अजैक चरण कहिये पूर्वा
भाद्र पद कहिये अहिर्बुध्न्य कहिये

उत्तराभाद्रपद पूषा कहिये रेवती ये नक्षत्रोंके स्वामी कहे

अधोमुख नक्षत्र ॥

मूलाग्नेयमघाद्वि दैवभरणी सर्पादि पूर्वात्र
यंज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हिनवकंमाना मि दं
कीर्त्तितम् ॥ वापी कूप तडाग गर्त परिखाखा
तौ निधेरुद्धति क्षेपौद्यूत विलप्रवेपु गणिता
रम्भः प्रसिध्यंतिच ॥ २ ॥

टीका ॥ मूल कृतिका मघा विशाखा भरनी श्लेषा तीनों पूर्वा ये अधो मुख नक्षत्र कहे इन नौ नक्षत्रों में वावडी कुआ तलाव गढेला खाई द्रव्य खोद के रखना जूआ खेलना विलमें प्रवेश करना गणित का आरंभ ये कर्म अधोमुख नक्षत्रों में शुभ हैं ॥ २ ॥

तिर्यङ्मुखन

ज्येष्टादित्य कारश्विनी मृगपुष्यः पौषाःअनु
राधा निलत्वष्टाख्यानि वदंतिभानि मुनयस्ति
र्यंमुखान्येषुच ॥ अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभ
षोरभ्रादि दांत्यश्वनौ गंत्रीयंत्रहल प्रवाहगम
नारंभाः प्रसिध्यंतिच ॥ ४ ॥ ॅ ॅ ॅ ॥

टीका ॥ ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृगशिर रवती अनुराधा स्वाति चित्रा इन नौ नक्षत्रों में घोड़ा हाथी ऊंट भैंस गधा वैल मेढा कुत्ता नाव यंत्र नागर धरना गमन ये कर्म करना ४

ऊर्ध्वमुखन ॥

पुष्यार्द्रा श्रवणोत्तराप्रोत भिषक्ब्राह्म ऋवि
ष्णुहयान्पूर्व्वास्यानिनवो दितानि मुनिभि
र्धिषायान्यथैतेषुतु ॥ प्रासाद ध्वजाद्यर्मवार
णगृह प्राकार सत्तोरणोछाया राम विधिर्हि
तोनरपतेः पट्टाभिषेकादिच ॥ ६ ॥

टीका ॥ पुष्य आर्द्रा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा उत्तराफा उत्तर

उत्तराभाद्रपद इन नक्षत्रों में देवालय बनाना ध्वजा ब
ना मंडप बनाना घर कोट भीति तोरण द्वार बाग राज्या
भिषेक ये करना शुभ है ॥ ६ ॥

ध्रुव स्थिर नक्षत्र

रोहिणी सहित मुत्तरात्रयं कीर्त्तयंतिभु
नयोध्रुवाक्षयेबुधैः ॥ बीजहर्म्यनगरा भिषे
चनाराम शांतिषु हितंस्थिरेषुच ॥ ७ ॥

टीका ॥ रोहिणी तीनों उत्तरा ये ध्रुव स्थिर कहे इन में बीज बोलना घर नगर इन में प्रवेश करना बाग बनाना शांति कर्म करना यह शुभ है ॥ ८ ॥

मृदु नक्षत्र

त्वाष्ट्र मित्र शांशि पृषु देवता न्यामनंति
मृनयोमृदुन्यया ॥ मित्र कार्य रतिभूषणां
बरोक्षीत मंगल्य विधानमेषुतु ॥ ९ ॥

टीका ॥ मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इन नक्षत्रों में मित्र कार्य स्त्री संग आभूषण वस्त्र धारण गाना नाना प्रकार के मंगल्य कार्य करना ॥ १० ॥

लघु संज्ञक

आश्विनीगुरुभमर्कदैवतंस्वामिजित्तु
द्युक्षतुष्टयंमतम् ॥ पण्यभूषणाकलारतौ
पंथशान शिल्पगमनेषु सिद्धिदम् ॥ १

टीका ॥ आश्वनी पुष्य हस्त अभिजित इन नक्षत्रोंमें आभूषण पहरना दुकान करनी कला सीखनी क्रीडा करनी औषधि करनी गान विद्या सीखनी प्रस्थान करना ये शुभ हैं ॥ २ ॥

तीक्ष्ण नक्षत्र

मूल शक्र शिव सार्प्य दैवतान्युल्वणपत्यथ
तीक्ष्ण संज्ञया ॥ भूतयक्ष निर्धिमंत्र साधनं

भेद बंधवध कर्म्म चात्रतु ॥१॥

टीका ॥ आर्द्रा श्लेषा ज्येष्ठा मूल इन नक्षत्रों में भूत यक्ष ग्रह की पीडा निवारण मंत्र साधन करना बंधन कर्म भेद कर्म करना यह शुभ है ॥ १ ॥

ध्रुव नक्षत्र

वैष्णव त्रय युताः पुनर्वसु मारुतं च ध्रुव
पंचकं त्विदम् ॥ हस्ति वाजि वरेषु वाह
नारामयान विधिषु प्रशस्यते ॥२॥२॥

टीका ॥ पुनर्वसु स्वाति श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रों में हाथी घोड़ा इत्यादि नाना प्रकार के वाहन बागीचे को जाना पालकी रथ बनाना ये विधि इनमें शुभ है ॥ २ ॥

उग्र नक्षत्र

पूर्विकात्रितयमार्तिकं मघेत्युग्र पंचकमि
दं जगुर्बुधाः ॥ शान्ति नाशु विष घात बंधनो
च्चाट शस्त्र दहनादि पुस्मृतम् ॥ १ ॥

टीका ॥ भरनी मघा पूर्वाफल्गुनी पूर्वाषाढ पूर्वाभाद्रपद इन नक्षत्रों में शठकर्म विषकर्म बंधन उच्चाट शस्त्र ये कर्म शुभ हैं ॥ १ ॥

मिश्र नक्षत्र

हव्य वाह युतं द्वि दैवतं मिश्र संज्ञ मथ
मिश्र कर्म्मसु ॥ स्वामिधान सम कर्मसा
धने कीर्ति तानि सकलानि सूरिभिः ॥ १

टीका

कृत्तिका विशाखा इन नक्षत्रों में अग्नि कार्य मिश्रका वृषोत्सर्गादि ये कार्य सिद्ध हैं ॥ १ ॥

॥ अथ नष्ट वस्तु प्राप्त प्रश्न माह ॥

तिथि वार च नक्षत्र ग्रह राशि समन्वितं ॥ दिक्सं
ख्या हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ एकेन भूत

लेद्रव्यं हयं चेद्भांड संस्थितं ॥ तृतीयेजल मध्य
स्थ मंतरिक्ष चतुर्थके ॥ तुषस्थं पंचमेतुस्यात्
षष्ठे गोमय मध्यगं। सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्ये
तत्प्रष्ण लक्षणम् ॥ १ ॥

टीका ॥ तिथिवार नक्षत्र प्रहर इनको जोड़े दश गुणा करे और सात का भागदे शेष बचेंतो एक बचे तो पृथ्वी में द्रव्य है दो बचें तो बासन में धरी है तीन बचें तो जलमें बस्तु है चार बचें तो अंत रिक्ष में पांच बचें तो भुष के मध्य में छः बचें तो गोबर के बीच में ७ बचेंतो राख के बीच में चीज जानना ॥ १ ॥

नक्षत्र परत्व प्रश्न

मघादि श्लाय मातंच समीपे वस्तु दृष्यते
हस्तादि वसु पर्य्यंत मन्य हस्तेच दृष्यते
पूर्ततारा द्यमांतंतु स्वगृहे वस्तु दृष्यते।
अग्न्यादिसार्प पर्यंतमदृष्टं दूर गंतथा २॥

टीका ॥ मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी पर्यंत इन नक्षत्रोंमें वस्तु जाय तो समीप दीखे हस्त नक्षत्र से धनिष्ठा पर्यंत नक्षत्रों में जो वस्तु जाय तो दिखाई भी नदे शतभिषा से लेके भरणी पर्यंत जो चीज जाय तो कहना कि घर मे ही है कृत्तिका से ले के श्लेषा पर्यंत जो चीज जाय तो दूर गई जानना ॥ २ ॥

अंधादि नक्षत्र संज्ञा

अंधकं तदनुमंद लोचनं मध्य लोचनम
तः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृतिभंचतु
ष्टयं सार्द्धि जिच्चगणैर्यत पुनः पुनः॥ १

टीका ॥ रोहिणी पुष्य उत्तराफाल्गुनी विशाखा पूर्वाषाढ धनिष्ठा रेवंती इन सात नक्षत्रों को अंधे जानिये । मृगशिर श्लेषा हस्त अनुराधा उत्तराषाढ शतभिषा यह मंद लोचन जानिये — आर्द्रा मघा चित्रा ज्येष्ठा अभिजित् पूर्वा

भाद्रपद भरनी ये मध्य लोचना जानिये - पुनर्वसु पूर्वा फा
ल्गुनी स्वाति मूल श्रवण उत्तराभाद्रपद कृतिका यह नक्ष
त्र सुलोचना जानिये ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥

अंधके पूर्वतो वस्तु मंद के दक्षिणे तथा
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरेतु सुलोचने १

टीका ॥ अंधे नक्षत्र मे वस्तु जाय तो पूर्व की ओर कहना घर से मंदे
नक्षत्र में दक्षिण की तरफ़ मध्य लोचन नक्षत्र में पश्चिम की त
रफ - सुलोचना नक्षत्र में उत्तर की तरफ़ जानना ॥ १ ॥

दृग्रार्द्रोद्या स्त्रिय स्तारा विश्वाखाद्या न पुंसका
मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥ ३ ॥

टीका ॥ आर्द्रा से आद लेजो दश नक्षत्र तिनमें वस्तु स्त्रीने ली
नी विशाखा से तीन नक्षत्र में जो वस्तु जाय पुरुष स्त्री दोजानना
मूल में से १४ नक्षत्र में जो चीज जाय तो पुरुष जानिये ॥

अंधके लभते शीघ्रं मंद वेच दिनत्रयम्
मध्यके च चतुष्षष्टी न प्राप्नोति सुलोचने

टीका ॥ अंधे में वस्तु जाय तो शीघ्र मिले मंदे नक्षत्र में जाय तो
तीन दिन तक खबर पावे मध्य लोचन में चौंसठ दिन तक
मिले सुलोचना में जाय तो नहीं मिले ॥ १

नक्षत्र संख्या

वह्नि त्रिऋत्विषु गुणेन्दु लताग्निभूत
बाणाब्धिनेत्र भू कु युगाब्धि रामाः
रुद्राब्धिराम गुण वेद श्रुत द्वि युग्म दंता
बुधैर्निगदिताः क्रम शोभतारा ॥ १ ॥

टीका ॥ अश्विनी के तीन तारा ३ भरणी के ३ कृतिका के ६ रो
हिणी के ५ मृगशिर ३ आर्द्रा के १ पुनर्वसु के ४ पुष्य के तीन ३
श्लेषा के ५ मघा के ५ पूर्वाफाल्गुणी के २ उत्तराफाल्गुनी के २ ह
स्त के पांच ५ चित्रा का १ स्वाति का एक १ विशाखा के चार ४

अनुराधा के ४ ज्येष्ठा के ३ मूल के ११ पूर्वाषाढ के ४ उत्तराषाढके ३ अभिजित् १ श्रवणके ३ धनिष्ठा के ४ शतभिषा के १०० तारे पूर्वाभाद्रपद के २ उत्तराभाद्रपद के २ रेवती के ३२ हैं ॥

अथ नक्षत्र की आकृति स्वरूप

तुरगमुखसदृक्षं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैनस्योत्तमांगेनतुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्रं भाति दीपोपमंभं शयन सदृशमन्यच्चात्र पर्य्यंकरूपम् ॥ १ ॥ हस्ताकारमृक्षं मौक्तिकसमंचान्यत्स्रवालीपमंधिष्ण्यं तोरणावस्थितंवलिनिभंसत्कुण्डलाभं परम् ॥ कुर्य्यक्केसरिविक्रमेणसदृशं शय्यासमानम्परंचान्यद्भूतिविलासवस्थितमतःशृंगानिभंव्यक्तिवत् ॥ २ ॥ त्रिविक्रमाभंच मृदंगरूपं दृक्तन्ततोन्यद्यमलं द्वयाभम् ॥ पर्य्यंकरूपं सुरजानुकारीद्वित्येवमश्वादिवचक्ररूपम् ॥ ३ ॥ ॥

टीका ॥ अश्विनी घोडा के आकार जानिये - भरणी योनि का आकार जानिये - कृत्तिका छुरा के आकार - रोहिणी छकडा के आकार जानिये - मृगशिर हिरन के आकार - आर्द्रा मणि का आकार जानिये - पुनर्वसु घर की समान - पुष्य बाण की समान जानिये - श्लेषा चक्र की समान - मघा घर की समान - पुर्वा फाल्गुनी मन्चान की समान - उत्तरा फाल्गुनी शय्या की समान - हस्त हाथ की तुल्य - चित्रा मोती की तुल्य - स्वाति मूंगे की समान - विशाखा तोरण की समान - अनुराधा वलिन की समान - ज्येष्ठा कुंडल की समान - मूल सिंह की समान - पूर्वाषाढ हाथी के दात की समान - उत्तराषाढ मन्चान की समान - अभिजित् त्रिकोणाकार - श्रवण त्रिकोणाकार - धनिष्ठा मृदंगाकार - शतभिषा वर्तुलाकार - पूर्वाभाद्र

शय्याकारमचान - उत्तराभाद्र पद यमलाकार - रेवती मर्दलाकार गोल यह नक्षत्रों के रूप कहे ॥

सं ख्या	नक्षत्र	शुभ अशुभ	स्वामी	मुख संज्ञा	रूप संज्ञा नाम	रूप संज्ञा नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आकृति	सं ख्या
१	अश्वि.	शुभ	अ.कु.	ति.मु.	लघु	क्षिप्र	मंदलो.	अश्वमु.	३
२	भरणी	नाश.	यम	अ.मु.	उग्र	क्रूर	मध्य.लो	पो.मु.	३
३	कृति.	अशुभ	अग्नि	ऊर्धोमु.	मिश्र	साधार	सुलोच.	छुराका	६
४	रोहि.	सिद्धा	ब्रह्मा	ऊ.मु.	ध्रुव	स्थिर	अंध	शंकटा	५
५	मृग.	शुभ	चंद्र	ति.मु.	मृदु	मैत्र	मंदलो.	हिरन	३
६	आर्द्रा	अशुभ	शिव	ऊ.मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	मणिस.	१
७	पुन.	मध्य	दि.मात्र	ति.मु.	चर	चल	सुलोच	गृहसम	४
८	पुष्य.	शुभ	गुरु	ऊ.म.	लघु	क्षिप्र	अ.लो.	धारसम	३
९	अश्लेषा	शोक	सर्प	अ.मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मं.लो.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाशु	पितर	अ.मु.	उग्र	क्रूर	मं.लो.	शाला	५
११	पूर्वा	मृत्य	भग	अ.मु.	उग्र	क्रूर	सुलोच	शय्या	२
१२	उत्त.फा	विद्या	अर्यमा	ऊ.मु.	ध्रुव	स्थिर	अ.सो.	पर्यंक	२
१३	हस्त	अशुभ	रवि.	ति.मु	लघु	क्षिप्र	अ.सो.	हंतसम	५
१४	चित्रा	शुभ	ब्रह्मा	ति.मु.	मृदु	मैत्र	मध्यलो	मोतीसम	१
१५	स्वाति	अशुभ	वायु	ति.मु.	चर	चल	सुलोच	विद्रुम	१
१६	विशा.	अशुभ	इंद्राग्नी	अधोमु.	मिश्र	साधार	अंधा	तोरण	४
१७	अनु.	सर्वसि	मित्र	ति.मु.	मृदु	मैत्र	मंदलो.	वलिनस	४
१८	ज्येष्ठा	क्षय	इंद्र	ति.मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो	कुंडल	३
१९	मूल	हानि	राक्षस	अ.मु.	तीक्ष्ण	दारुण	सलोच	सिं.पु.स	११
२०	पूर्वा.फ	हानि	उदक	अ.मु.	उग्र	क्रूर	अंधा	शय्या	४
२१	उत्त.फ	वृद्धि	वि.देवा	ऊ.मु.	ध्रुव	स्थिर	मंदलो.	हस्तीदंत	३
२२	अभिजि.	सिद्ध	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	मध्य	कोणस	०

२३	श्रवण	शुभ	विष्णु	ऊ·मु	चर	चल	सुर्ण	त्रिकोण	३
२४	धनिष्ठा	शुभ	वसु	ऊ·मु·	चर	चल	गंध	मृदंगा	४
२५	शत	कल्या·	वरुण	ऊ·मु·	चर	चल	मन्द	दुन्दाका	१
२६	पू·भा·	मृत्यु	अजैक	अ·मु·	उग्र	क्रूर	मध्यलो·	मंचाका	२
२७	उ·भा·	लक्ष्मी	अहिर्बु	ऊ·मु·	ध्रुव	स्थिर	सुलोच·	यमला	२
२८	रवती	कामदा	सूर्यः	ति·मु·	मृदु	मैत्र	गं·स्त्री	मृदंगा	३२

अथ नवीन वस्त्र धारणं

रोहिणीपुष्करपंचके श्विभेत्र्युत्तरेपिच
पनुर्वसुद्वये ॥ रवतीपुष्यदैवते चभेन
व्यवस्त्र परिधान मिष्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा अश्वि नी तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इन में नवीन वस्त्र पहरना शुभ है ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥

जीर्णे रवौ सतत मंबुभिरार्यमंदौ भौमे
शुचेबुधदिनेच भवेद्धनाय ॥ ज्ञानायमं
त्रिणिभृगौ प्रियसंगमाय मन्दे मलाय
च नवांबरधारणं स्यात ॥ २ ॥

टीका ॥ रविवार को नया वस्त्र पहरे तो जीर्ण होजाय - सोम वार को पानी से भीज जाय - मंगलवार को शोक होय - बुध वार को धन मिले - बृहस्पति को ज्ञान होय - शुक्र को नवीन वस्त्र प हरे तो प्रिया का संग होय - शनि को पहिरे तो मैला वस्त्र होय ॥ २ ॥

॥ मोती सोना मणि रत्न वस्त्र धारणं ॥

नासत्यपौष्णा वसुभकरपंचकेच मार्तंडु
भौमगुरुमंत्रिशशांकवारे ॥ मुक्तासुव
र्णविद्रुमदंतशंखरक्ताम्बराणि विधृता
न्यभवन्ति सिध्यै ॥ १ ॥

टीका ॥ अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा - रवि भौम गुरु शुक्र सोम इन वार नक्षत्रों में सोना मोती मूंगा मणि हाती दांत शंख ये पहरना और लाल वस्त्र पहरना शुभ है ॥ १ ॥

मद्यारंभ करण

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरहूते याम्येसीर्प्येनै
ऋते चैवधिषाये ॥ पूर्वास्व्येषु त्रिष्वपिश्रे
ष्वउक्तौ मद्यारंभः कालविद्भिः पुराणैः १॥

टीका ॥ आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी श्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें मद्य काढना शुभ है ॥ १ ॥

औषधिग्रहण नक्षत्र

पौष्ण हुये चादितिभे हुयेचहस्तत्रयेचश्रु
वणत्रयेचु ॥ मैत्रेचमूलेचमृगेचशस्तंभे
षज्यकर्मप्रवदन्तिसन्तः ॥ २ ॥

टीका ॥ रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रास्वातिश्र वण धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मूल मृगशिर इन नक्षत्रों में औषधी कर्म करना शुभ है ॥ २ ॥

पुंसवन नक्षत्र

श्रवणः सकरः पुनर्वसु र्निऋतेर्भन्चस
पुष्य कोमृगः ॥ रविभूसुत जीव वासराः
कथिताः पुंसवनादि कर्मसु ॥ १ ॥

टीका ॥ श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर रवि भौम गुरु ये वार नक्षत्र पुंसवन कर्म में शुभ हैं ॥ १ ॥

॥ कर्णवेधः ॥

पौष्णा वैष्णवकरा श्विनि चित्रा पुष्य
वासव पुनर्वसुमैत्राः ॥ सेन्दवे श्रवणा
वेधविधौ द्वयोः प्रीतिमनुयो हि शिशुनाम्

टीका ॥ रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धानष्ठा पुनर्व सु अनुराधा मृगशिर ये नक्षत्र कर्णवेध में शुभ हैं ॥ १ ॥

अन्नप्राशन

रवती श्रुत पुनर्वसु हस्त ब्राह्यतः एषगपि
हितयेच ॥ व्युत्तरेषु गदितं हि नवान्नप्राप्
नंतु ऋषिभिः एथुका नाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ रेवती श्रवण पुनर्वसु रोहिणी मृगशिर आद्रा तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में अन्न प्राशन शुभ है ॥ १ ॥

षष्टाष्टमे मास्यथच मृगद्दशां पञ्चमा दौजमासे ॥ ५ ५ ॥

(टीका)

बालक को छेठवां आठवें महीने में अन्न प्राशन कराना कन्या को पां चवे महीने से विषम मास में प्रथम शुभकर्म मुंडन कर्म करावे ॥

पुष्ये पौष्णो चाश्विनीष्वेन्दवे च पाके हस्ताद्ये
त्रिकेभष्व दित्यः ॥ क्षौरंकार्यं वैष्णवाद्यत्रयेच
मूलाभौमादित्य पातं गिवारान् ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वा ति पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा - मंगल आदित्य शनि इन वारों को छोड के शुभ हैं ॥ १ ॥

भानुर्मासंक्षयं यति तथा सप्त मार्त्तंड सूनुर्भौ ।
मश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पंचमासान् ॥
सप्तैवेन्दुर्दशासुरगुरः शुक्र एकादशेति प्राहुर्गो
ग प्रभृति पुनयः क्षौरकार्यं षुनूनम् ॥ ५ १ ५ ॥

टीका ॥ रविवार को हजामत बनवावे तो एक महीना आयु में घ टै - शनिवार को हजामत बनवावे तो सात महीना आयु में घटे हैं - मंगल को हजामत करावे तो आठ महीना घटें - बुध को पां च महीना बढ़ें - सोमवार को हजामत करावे तो ७ महीना बढ़ें - बृहस्पति को १० महीना बढ़ें - शुक्र को ११ महीना बढ़ें हैं ॥ १ ॥

॥ समश्रु कर्मसु वर्ज्यो ॥

भद्रा पक्षांत रिक्ताव्रत दिनवसुभू श्राद्ध षष्ठी पुरा त्रौ संध्यायातारभास्वत पानिपु घटधनुःकर्क कन्यागतेर्के ॥ जन्मर्क्षे जन्ममासे सुरदिनयज ने भूषितोग्राम यायीभुक्तोभ्यक्तोषिभिक्षः सम दिनरिजिगः पूमश्रु कार्यंन कुर्य्यात् ॥ २ ॥ ५ ॥

टीका ॥ भद्रा में पूनों मावस में चौथ नौमी चादश रिक्ता में व्रत के दिन में अष्टमी पडवा में श्राद्ध के दिन में षष्ठी में रात्रिमें संध्या समय में व्यतीपात में दुष्ट योग में रवि मंगल सेनि इन वारन में कर्क कन्या धन कुंभ इनके सूर्य में जन्म नक्षत्र में जन्म मास में देवता के दिन में हवन कर्म में अलंकार धारण में यात्रा कर ने के समय में भोजन करे पर उबटना लगाये पर अभिषेक के पीछे मंगल कार्य में स्त्री रजस्वला के सम दिन में क्षौर कराना नहीं चाहिये ॥ २ ॥

श्लोकः

ब्राह्मणा नरपते र्द्विजन्मनांदाह कर्मणृत सूतकेषुच ॥ बंधमोक्षमखदीक्षणो षु चक्षौरमिष्टमखिलेषुतुष्टिदम् ॥ १ ॥

टीका ॥ ब्राह्मण राजा इनकी आज्ञा से क्षौर शुभ है दाह कर्म में सूतक के अंत में बंदी खाने से छूटने के समय यज्ञ में दी क्षा में क्षौर करना श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

तारा शुद्धं क्षौरं रवि गुरु शुद्धा व्रत दीक्षा शुक्र विशुद्धि यात्रायां सर्वे शुद्धिं प्राप्नाकेन

टीका ॥ तारा शुद्ध होय तो क्षौर शुभ है सूर्य वृहस्पति शुभ होय तो व्रत दीक्षा शुभ है शुक्र शुक्र शुभ होय तो सर्व शुभ यात्रा करना शुभ जानये चंद्रमा शुभ होय तो सर्व शुभ कहना चाहिये ॥ १ ॥

॥ दंत बंधनं ॥

येषु येषु प्रसंपृंति क्षौर कर्म महर्षयः
तेषु तेष्वेव शंसंति नख दंता दि लेखनं १

टीका ॥ जो वार नक्षत्र क्षौर कर्म में कहे हैं ऋषयोने सोई वार नक्षत्र दांत बांधने में और नख काटने में शुभ हैं ॥ १ ॥

मौंजी बंधन

सौम्य पौष्णो वैष्णवे वासवाख्ये हस्त स्वा
तीत्वाष्ट पुष्याश्विभेषु ॥ रक्षेदित्यांभरव
लावधमाक्षौ संस्मर्यते नूनमाचार्य वर्यैः ॥ १

टीका ॥ मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रों में मौंजी बंधन शुभ है ॥ १ ॥

विवाह नक्षत्र

मूल मैत्र मृग रोहिणी करैः पौष्ण मारुत
मघोत्तरा न्वितैः ॥ निर्विधाभिरूडुभिर्मृगी
दृशा पाणि पीडन विधिर्विधीयते ॥ १ ॥

टीका ॥ मूल अनुराधा मृगशिर रोहिणी हस्त रेवती स्वाति मघा ये नक्षत्र वेध विना विवाह में शुभ है ॥ १ ॥

अग्नि होत्र ग्रहण करना

प्राजापत्य पूषभे सद्वि दैवे पुष्ये ज्येष्ठा स्वैं
द्वे हास्तिकासु ॥ अन्याधानं चोत्तराणां त्रये
विश्रेष्ठं प्रोक्तं प्राप्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥ १ ॥

टीका ॥ रोहिणी रेवती विषाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर हास्ति का तीनों उत्तरा इनमें अग्नि होत्र कर्म आचार्यों ने शुभ कहा है १

विद्यारंभः ॥

मृगादि पंच स्वपिभेषु मूले हस्ता
दिके चाश्वितये श्विनीषु ॥ पूर्वात्रये च श्रवणे च
तद्वद्विद्या समारंभमुशंति सिद्धौ ॥ १ ॥

टीका ॥ मृगशिरआर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा मूल हस्त अश्विनी तीनों पूर्वा चित्रा स्वाति श्रवण इन नक्षत्रोंमें विद्यारंभ शुभ कहा है १

श्लोकः

विद्यारंभे सुरगुरुसितश्चेष्वभीष्टार्थदायी कर्त्ता
स्यषुश्चिरमपिकरोत्यंशुभान्मध्यमोऽत्र ॥ नीरा
हांशुभवतिजडतापंचतामूमिपुत्रेछायासू
नावपिचमुनयःकीर्त्तयंत्येवमाद्याः ॥ १ ॥ ४ ॥

टीका ॥ विद्यारंभ करने में बुध बृहस्पति शुक्र ये शुभ हैं आयुके देनेवालेहैं ॥ और सूर्य को मध्यमहै। सोमवार को विद्यारंभ करे तोजड़ रहे ।और मंगल शनिश्चरको विद्यारंभ करेतोमृत्युके तुल्य कष्ट पावै ॥ १ ॥

॥ ज्ञान विद्या सीखना ॥

हस्तस्तिष्यो वासवंचानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं
वारुणंचोत्तराच्च ॥ पूर्वाचार्य्यैःकीर्त्तितास्त्रं
द्रुवर्त्तिन्यारंभेशोभनोऽत्रस्मृतर्गः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शतभिषा तीनों उत्तरा और चंद्रमा शुभ होय तो इसमें गाना सीखना अस्त्र वश्य करके शुभ है ॥ १ ॥

॥ सर्पदंश विचारः ॥

यःकृत्तिकामूलमघाविषाख्यामार्गेतुकार्द्रासुभुजंगसृष्टः
सवैनतेयेनसुरक्षितोपिप्राप्नोतिमृत्योर्वदनंमनुष्यः ॥ १

टीका ॥ कृतिका मूल मघा विषाख्या श्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रों में जो सर्प काटे तो गरुड भी रक्षा करे तो न जीवै ॥ १ ॥

॥ रोगोत्पत्ति शुभाशुभ ॥

स्वातिश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषुप्राप्तेभौमेसू
र्य्यजेसूर्यवारे ॥ नन्दारिक्तास्ववरोगस्य
वाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयःपूंकरोराक्षितोपि ॥ २ ॥

॥ टीका ॥

स्वाति श्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा भौम शनि रविवा
र नंदा तिथि १।६। ११ रिक्ता ४। ९। १४ इनमें तो रोग

उत्पन्न होय तो मृत्य जानियेजो शंकर रक्षा करेंतो भी नजीवे ॥३॥

व्याधुत्पत्तिर्यस्य पौषो सभैत्रे प्राणत्राणंजाय
तेतस्यक्षच्छ्रात ॥ वैश्ये सौम्येरोग मुक्तिस्तक्ष मा
साद्विंशत्यः स्याद्वासराणां मघास्तु ॥ १ ॥ ४ ॥

टीका ॥ जो रोग रेवती अनुराधा में उत्पन्न होय तो प्राणांतक क
ष्ट होय उत्तराषाढ मृगशिर इनमें रोग होय तो एक महीना में अ
च्छा होय और मघा में रोग होय तो वीस दिनमें आराम होय इस
में संशय नहीं ॥ १ ॥

पक्षाद्धस्तेवासवेसद्वि दैवे मूलाश्विन्योरश्वि न
धिष्ण्येनवाहात ॥ याम्येत्वाप्टे वैष्णवेवारु
णेचनैरुज्यंस्यान्नूनमेकाद्शाहात ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त में रोग होय तो १५ दिनमें अच्छा होय-धनिष्ठा वि
शाखा मूल अश्विनी भरणी चित्रा श्रवण शतभिषा इनमें रोग होय
तो ग्यारह ११ दिन में अच्छा होय ॥ १ ॥

अहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेसभागे प्राजापत्यांदित्य
योःसप्तरात्रात ॥ रोगान्मुक्तिर्जायतेमानवानां
निःसंदिग्धंजल्पितं गर्ग मुख्यैः ॥ १ ॥ ४ ॥

टीका ॥ उत्तराभाद्रपद पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इ
न में जो रोग होय तो सात दिन में निःसन्देह अच्छा होय ॥ ऐसा
गर्गादिक मुनि कहते हैं ॥ १ ॥

रोग मुक्ति स्नान

हृद्दीर्घारेभार्गवेत्वश्रुवेषुसार्पादित्यस्वाति
युतेषुभेषु ॥ पित्र्यैचांत्ये चैवकुर्यात्कदा
चिन्नैवस्नानंरोग मुक्तास्यजंतो ॥ १ ॥

टीका ॥ सोमवार शुक्रवार और ध्रुव नक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा
श्लेषा पुनर्वसु स्वाति भरणी रेवती इन में रोग मुक्त मनुष्य

को स्नान करावना शुभ है ॥ १ ॥

लग्नेचरेसूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ
चंद्रबलेचहीने ॥ केन्द्रत्रिकोणार्थगतेच
पापेस्नानंहितंरोगविमुक्तकानाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ चर लग्न में मेष कर्क तुल मकर रवि भौम गुरु ये वार हों हीनबल चंद्रमा हो केंद्र में १।४।७।१० त्रिकोण में ९।५ अर्थ २ दूसरे घर में पापग्रह होये तो रोगी को स्नान करावना शुभ है ॥ १ ॥

लता ओषधी वृक्ष लगाना

सावित्र तिष्याश्विनि वारुणानिमूलंवि
शाखा चमृदुध्रुवाणि ॥ लतौषधीपादपरो
पणेषुशुभानिभानिप्रतिपादितानि ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त पुष्य अश्विनी घृतभिषा मूल विशाखा और मृदु ध्रुव संज्ञक इन नक्षत्रों में लता ओषधी पादप लगानी शुभ है

हल चलाने के न.

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलेमघा विशाखा
सहितेषुभेषु ॥ हलप्रवाहं प्रथमंविद
ध्यान्नीरोगमुष्कान्वित सौरभयै ॥ १ ॥

टीका ॥ मृदु. ध्रुव. क्षिप्र. चर संज्ञक नक्षत्रों में और मघा विशाखा मूल इन सहित नक्षत्रों वलवान् वैलन करके प्रथम हल चलावना शुभ कहा है ॥ १ ॥

बीज बोवना

हस्ताश्विपुष्योत्तरारोहिणीषु चित्रानुराधा
मृगरेवतीषु ॥ स्वातौधनिष्टासुमघासु मू
लेबीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रतिष्ठाः ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त अश्विनी पुष्य तीनों उत्तरा रोहिणी चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती स्वाति धनिष्टा मघा मूल इन नक्षत्रों में बीज बोवना शुभ है

तृण काष्ठादि संग्रह

वासवोत्तरदलादि पंचके याम्य दिग्गमन
गेहगोपनम् ॥ प्रेतदाहतृणकाष्ठ संग्रहः
पूष्यका वितरणं च वर्जयेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ धनिष्ठा आधी पिछली से लेके पाँच नक्षत्र पंचकके हैं ध॰ श॰ पू॰ उ॰ रे॰ इनमें घर न छवावे छप्पर न बनावे प्रेत दाह न करे ईंधन काष्ठ ग्रहण न करे खाट न बुनावे दक्षिण दिशा को न जावे ये वर्जित हैं ॥ १ ॥

हाथी लेना देना

हस्तेषु चित्रासुतथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये
च पुनर्वसौ च ॥ प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुंज
राणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥ १ ॥

टीका ॥ हस्त चित्रा अश्विनी स्वाति पुष्य पुनर्वसु इन नक्षत्रों में हाथी का सिंगार करना अलंकार पहराना ये गर्ग मुखिया ऋषि कहते हैं ॥ १ ॥

अश्व लेना देना

पुष्य श्रविष्ठाश्विनि सौम्य भेषु पौष्णानि
लादित्य कराख्येषु ॥ सवारुणर्क्षेषु बुधैः
स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमानाम् १ ॥

टीका ॥ पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृगशिर रेवती स्वाति पुनर्वसु हस्त शतभिषा इन नक्षत्रों में घोड़े का सिंगार करना शुभ है ॥ १ ॥

गवादि पशुओं का लेना देना

चित्रोत्तरा वैष्णव रोहिणीषु चतुर्दशी दर्श
दिवाष्टमासु ॥ ग्राम प्रवेशं गमनं प्रदध्या
द्धौमान्यशून्यं न कदाचिदेव ॥ १ ॥

टीका ॥ चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी - चौदश अमावस सं॰ दिन अष्टमी इनमें पशुको गांव भेजना वा नगरमें प्रवेश करना

यह वर्जित हैं ॥ १ ॥

पूर्वा वासव करेषु विशाखा पुष्य वारुण
पुनर्वसुश्रेषु ॥ अश्वि पूषभयुतेषुविधेयो
विक्रय क्रय विधिः सुरभीणाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इननक्षत्रोंमें गायबेचना खरीदना शुभ है ॥ १ ॥

राज्याभिषेक

मैत्रपुष्क रपुष्य रोहिणीवैष्णावेषुति
स्रषूत्तरासुच ॥ रेवतीमृग शिरा श्विनी
पुष्यश्चाभृतांसम भिषेकदृष्यते ॥ १ ॥

टीका ॥ अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनी इनमें राजा को गद्दी पर बैठाना अभिषेक करना शुभ है ॥ १ ॥

राजा का दर्शन

सौम्याश्वि तिष्य श्रवण श्रविष्ठा हस्तध्रुव
त्वाष्ट्रचपूषभानि ॥ मित्रेणयुक्तानिनरश्व
राणां विलोकनेभानि शुभ प्रदानि ॥ १ ॥

टीका ॥ मृगशिर अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त ध्रुव गण चित्रा रेवती अनुराधा इनमें राजा का दर्शन करना शुभ है ॥ १ ॥

दूजके चंद्रमा का फल

रौद्राद्धियाम्यानिल वारुणेन्द्र्यान्यादुर्जे घन्या
नितथा वहंति ॥ ध्रुवद्विदैवादितिभानिनूनंस
मानि शेषाणिपुनर्मुनीन्द्रैः ॥ १ ॥ बृहत्सुधा
न्यंकुरुतेसमर्घेजघन्यधिष्ण्येभ्युदितो म
हर्घः ॥ समेषुधिष्ण्येषुसमंहिमांशुर्वदंति
सन्दिग्धमिदम्महान्तः ॥ २ ॥ ॰ ॰ ॥

टीका ॥ श्लेषा भरणी स्वाति शतभिषा ज्येष्ठा यह नक्षत्र

जघन्य कहिये या में जो चंद्रोदय होय तो मास में महँगा कहिये तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु ये बृहत्संज्ञक होंय हैं इनमें चंद्रोदय होय तो समर्घ होय शेष नक्षत्रों में रहै तिनमें जो चन्द्रमा उदय होय तो सम संज्ञक कहिये तिनमें सम कहना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

राशि परत्व चंद्रोदय

मीनमेषोदितश्चन्द्रः सततन्दक्षिणोन्नतः
शेषोन्नताश्चोत्तरायां समताहा (कुंभयोः॥१
विडवरुसमे चन्द्रे दुर्भिक्षन्दक्षिणोन्नते।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यमुत्तरोन्नत्यचंद्रमाः२

टीका ॥ मेष मीन का चंद्रमा शुक्ला पक्ष की दूज को उदय होय तो दक्षिण को ऊँचा जानिये जिसमें महंगा दुर्भिक्ष की तुल्य कहना मिथुन से लेके मकर पर्यंत जो चंद्रमा दूज को उदय होय तो उत्तर को ऊँचा कहिये तो सुभिक्ष सुकाल कहना आरोग्य कहिबा और वृष कुंभ में जो चंद्रमा दूज को उदय होय तो समता जानिये वैश्यन को श्रेष्ठ राजान को कलह कारक कहिये शुदी दूज को चंद्रोदय फल जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

द्रव्य स्थापित करना

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्तद्रविणंप्रयुक्तम् ॥ हस्तेन विन्यस्त
वसुप्रनष्टंनलभ्यतेतन्नियतंकदाचित१

टीका ॥ साधारण संज्ञक उग्र, ध्रुव, दारुण दुन नक्षत्रोंमें जो द्रव्य अपने हाथ से गाढ के रक्खी सो कभी न मिले ॥ १ ॥

ऋण वर्जित

ऋणंभौमेनगृह्णीयान्नुदयंबुधवासरे ॥ ऋ
णछेदंकुजेकुर्यात संचयंसोमनंदने ॥ संक्रांति
वारेकरनेभरण्यांसूर्य्यस्यवारेनऋणंशुभाय१

टीका ॥ मंगल के दिन धन करण करके न ले बुध को नदे धन काऊ को संक्रांति को रविवार को भरणी में करण न करे कभी ॥ १

चूल्हा पूजन न.

हस्त पुष्योनुराधा च वायु विष्णुरवे र्दिनम्
रिक्ता षष्ठाष्टमी त्याज्या चुल्ही पूजन मिष्यते

टीका ॥ हस्त पुष्य अनुराधा स्वांति श्रवण रविवार इनमें चूल्हा को पूजे रिक्ता षष्ठ अष्टमी इनको छोड़ के शुभ है ॥ १ ॥

मार्जनी अर्थात् बुहारी का

अश्विनीमृग पुष्येषु अनुराधोत्तरात्रये ॥
मार्जनीबंधनंकुर्याच्छुभा वारे शुभेतिथौ १

टीका ॥ अश्विनी मृगशिर पुष्य अनुराधा तीनों उत्तरा शुभ वार शुभ तिथि में बुहारी का बाँधना शुभ है ॥ १ ॥

काष्ठ स्थापन मु.

सूर्यर्क्षादृक्षभैरधस्थलगतैः पाकोरसैः
संयुतः भूतीर्यैयुग्ममितैः सवस्य दहनंमध्ये
युगैः सर्पभैः ॥ प्रागाप्रागादिषुवेदभैः स्वसु
हृदांस्यात्संगमोरोगभीः क्काथादैः करणं
सुखं निगदितं काष्ठादि संस्थापने ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

सूर्य के नक्षत्र से लेकें छः नक्षत्र अधस्थल के जानिये इनमें रस सहित पाक होय ॥ चार नक्षत्र सिर के हैं तिनमें जो काष्ठ संग्रह करे तो मुरदे के जलाने में जाय है ॥ और बीच के चार नक्षत्र में जो काष्ठ स्थापन करे तो सुहृदों का संग होय और दक्षिण के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो रोग और भय होय ॥ पश्चिम के चार नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो क्काथादिकउ० ॥ उत्तर के चर नक्षत्र में काष्ठ स्थापन करे तो सुख से व्यंजन में लगै ॥ १ ॥

पुष्यनक्षत्रकेगुणदोष

परकष्टं निखिलं निहंतिपुष्योनस्वलुनिहंति
परंतुपुष्यदोषम् ॥ ध्रुवमस्तकरोष्टमेपिपु
ष्येविहितमुपैतिसदैवकर्म्मसिद्धम् ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य नक्षत्र दूसरे के दोष को और अष्टम स्थान स्थित जो चंद्रमा तिसके दोष को दूर करता है परंतु उसी नक्षत्र का दोष होय तो दूर नही होता है और पुष्य नक्षत्र में किया कार्य सिद्ध होता है ॥ १ ॥

सिंहोयथा सर्व चतुष्पदानां तथैव पुष्यो
बलवानुडूनाम् ॥ चंद्रे विरुद्धेप्यथगोच
रेपि सिद्धांतिकार्य्याणि हतानि पुष्ये १ ॥

टीका ॥ जैसे सब चौपायों में सिंह बलवान है तैसे सब नक्षत्रोंमें पुष्य बलवान है और पुष्य में किया कार्य और गोचर हत दोष और चौथा अष्टम वार है चंद्रमा होय तो भी यह श्रेष्ठ फल के देने वाला है ॥ १ ॥

ग्रहेणविद्धोप्यशुभान्वितोपिविरुद्धतारो
पिविलोमगोपि ॥ करोत्यवश्यंसकलार्थ
सिद्धिंविहायपाणिग्रहणन्तुपुष्यः ॥ १ ॥

टीका ॥ ग्रह करिके विद्धा भी होय और ग्रह करके युक्त भी होय तो भी शुभ है अथवा वार इस से प्रतिकूल होय तो भी पुष्य नक्षत्र कार्य को सिद्ध करे है परंतु विवाह में शुभ नहीं है पुष्य नक्षत्र यामें वर्जित है ॥ १ ॥

योग प्रकरणं

अथ प्रति दिन योग जाननेकीरीति

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चांद्रमेवच्चगणे
येत्तद्युतिं कुर्य्याद्योगस्याद्दस्रशेषतः ॥ १ ॥

टीका ॥ पुष्य नक्षत्र से ले सूर्य के नक्षत्र ताईं गिनें और श्रवण

नक्षत्र से लेके चंद्रमा के नक्षत्र तांई गिने दोनों की संख्या को जोड़ देना सत्ताईस का भाग देना बाकी रहै सो योग जानना ॥ १ ॥

योगोंके नाम

विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा । अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च । गंडो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातोऽहर्षणस्तथा । वज्रसिद्धिव्यतीपातो वर्यानः परिघः शिवः । सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मैंद्रो वैधृतिः क्रमात् । सप्तविंशतियोगास्युः कुर्युर्नामसमंफलम् ॥ १ ॥

टीका ॥ विष्कुंभ १ प्रीति २ आयुष्मान ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतीपात १७ वर्यान १८ परिघ १९ शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्म २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ये जो सत्ताईस योग हैं सो नाम के समान फल को करें हैं ॥ १ ॥

योगों में घटिका वर्जनीया

विरुद्धसंज्ञाइहयेचयोगास्तेषामनिष्टः खलुषोडशाद्य ॥ सवैधृतिस्तुव्यतिपातनामासर्वोप्यनिष्टः परिघस्यचार्द्धम् ॥ तिस्रस्तुयोगेप्रथमेचवज्रेव्याघातसंज्ञेनवपंचशूले ॥ गंडेतिगंडेचषंडेचनाडयः शुभेषुकार्य्येषुविवर्जनीयाः ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ विरुद्ध संज्ञक योगों का आदि का चतुर्थांश शुभ कार्यमें वर्जै तहै और व्यतीपात वैधृति ये संपूर्ण वर्जित हैं और परिघ का पूर्वार्द्ध वर्जितहै और विष्कुंभ की ३ घड़ी वज्र की ४ घड़ी व्याघात की ५ गंड की ६ अतिगंड की ६ शूल की १५ ये शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥ २ ॥

करण जानने की रीति

गततिथयो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः

एकोनाःसप्तहृच्छेषाःकरणंस्याद्ध्रुवादिकम्
टीका ॥ गद्धभई तिथि को शुक्ल पक्ष की परिवा से लेके दूनी करे एक घटा देना सात का भाग देना शेष रहे सो करण जानिये ॥

नाम करणों का

ववाव्हयं बालव कौलवाख्यं ततोभवेत्तैतल
नामधेयम् ॥ गराभधानंवणिजंच विष्टिरित्या
हुरार्याःकरणानिसप्त ॥ शंतेकृष्णचतुर्दश्यां
शकुनिर्दृष्टभागयोः ॥ ज्ञेयंचतुष्पदंनागंकिं
स्तुघ्नंप्रतिपद्दले ॥ ॥ १ ॥ २ ॥ ; ; ; ॥

टीका ॥ वव १ बालव २ कौलव ३ तैतल ४ गरल ५ वणिज ६ विष्टी ७ ये सात करण चर संज्ञक जानिये और कृष्ण पक्ष की चौदश के पिछले दल में शकुनि करण जानिये और मावस को चतुष्पद भाग ये दोनों दल में जानिये और पड़वा के पहले दल में किस्तुघ्न करण जानिये ये चार करण स्थिर संज्ञक जानिये ॥ १ ॥ २ ॥

करणों के स्वामी

इंद्रोब्रह्मामित्रनामर्यमाभूः श्रीःकीनाशश्चे
तितिथ्यर्द्धनाथाः ॥ कल्पद्रुमाख्यौसर्पवायु
स्तथैवयेचत्वारस्तेस्थिराणांचतुर्णाम् ॥ १ ॥

टीका ॥ वव का इंद्र स्वामी - बालव का ब्रह्मा - कौलव का मित्र तैतल का सूर्य - गर का भूमी - वणिज की लक्ष्मी स्वा. विष्टी का यमराज - शकुनि का काल स्वा. - चतुष्पद का वैल स्वा. - नाग का सूर्य स्वामी - किस्तुघ्न का वायु स्वामी ये चार स्थिर स्वामी जानिये १

करणों की कृत्य

पौष्टिकस्थिरशुभानिववाख्येबालवेद्विजाह्व
तान्यपिकुर्यात् ॥ कौलवेप्रमदमित्रविधानं तै
तिलेशुभगताश्रयकर्म ॥ गरेच बीजाश्रयक
र्मणांनिवाणिज्यकेस्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ॥

न सिद्धिमायाति कृतं च विफलं विषारिघाता
दिषु नच सिद्धिः॥ मंत्रौषधानि शकुनौतुसर्पो
दिकानि॥ गोविप्र राज्यपित्र्यकर्मचतुष्पदेति
सौभाग्य दारुणधृति ध्रुव कर्मनागे कि स्क-
ध्न नाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यम्॥ ३॥

टी०॥ चर करण में पौष्टिक शुभ कर्म करे--बालव में ब्राह्मनो हित कर्मादानादिक करे--कौलव में उन्माद पूर्वकभिव कर्म करे--तैत ल में विवाहादि शुभ संगत्त कर्म करे--गर करण में बीजवोडनाहल चलानाये कर्म करें--वनिज में देवप्रतिष्ठा दुकान के व्यापार के कर्म करे। विष्ठि में शुभ कर्म न करना जादू घात क्रूर कर्म करना सि द्धहै--शकुन में मंत्र औषधी ग्रह पूजादिक कर्म करना--चतुष्प द में गो ब्राह्मण पित्र संबंधी कर्म करे--नाग में सौभाग्यकर्मयुद्ध में जाना धीरता विद्याभ्यास ये कर्म करना॥ ३॥

भद्रा विचार तिथि मान

कृष्णेग्नि दिग्भायो रूर्ध्वं सप्तमी भूतयोरधः॥
शुक्ले वेदाग्नयो रुर्ध्वं भद्रा शाग्वस्क पूर्णयोः २

टी०॥ कृष्ण पक्ष में तीज और दशमी को उत्तर दल की भद्रा जानिये॥ और सप्तमी चौदश को पूर्व दल की भद्रा जानिये--शुक्ल पक्ष में १४ ।११ को परदल की भद्रा जानिये--और शुक्ल पक्ष में अष्टमी पूनों को पूर्व दल की भद्रा जानिये॥ २॥

मनु वस्क मुनि तिथिषु युग दश शिव गुणा
संख्या स्क तिथिषु पूर्वान्याः॥ शायाति विष्टि
रेषा पृष्ठे शुभदा पुरस्त्व शुभाः॥ २॥ ५॥

टी०॥ चौदश अष्टमी सप्तमी पूनो चौथ दशमी एकादशी तीज इन तिथों में भद्रा पूर्व दल परदल की जानिये--भद्रा की पूंछ शुभ है और मुख भद्रा का अशुभ है॥ २॥

पंचांग

दिवा सर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ॥
सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् १

टी०॥ दिन में सर्प मुखी भद्रा जानिये - रात्रि में विच्छू संज्ञक भद्रा जानिये - दिनमें भद्रा मुख त्याज्य है - रात्रि में पूंछ त्याज्य है ॥ १॥

रात्रि भद्रा यदा ह्नि स्याद्दिवा भद्रा यदा निशी।
न तत्र भद्रा दोषः स्यात्सर्वकार्यार्थिसाधयेत् २

टीका॥ दिनकी भद्रा रात्रमें होय और रात्रि की भद्रा दिन में होय तो भद्रा का दोष नहीं ॥२॥

भद्राका शरीर विभाग

नाड्यस्रूपंच वदने यगले तथैकावक्षोर
सैकसहितं नियतंच तस्याः॥नाभ्यांकटौच
डयपुच्छ लताचतिस्रोविदुर्बुधैरभिहिता
ङ्गविभागरूपः॥२॥ २॥ २॥ २॥ २॥

टीका॥ मुख की पांच घरी गले की एक घरी वक्षस्थल की ग्यार ह घरी नाभ की ४ घरी कमर की ६ घरी पूछ की तीन घरी यह घरी भद्रा के अंग की कही ॥ २॥

भद्राके अंगका फल

मुखे कार्यध्वंसिर्भवति मरणंचायगलके
धनाहानिर्वक्षस्यथ कटितटेबुद्धि विलयः॥
कलिर्नाभौ देशे विजय मथ पुच्छेचजगदुः
शरीरे भद्रायाः पृथगिति फलं पूर्वमुनयः १

टी०॥ मुख की घरी में कार्य नाश करे - गले की घडी मरण का फल दे - वक्षस्थल की घडी धन का नाश करे - कमर की घरी बुद्धि का नाश करे - नाभि की घडी कलह करे - पूंछ की घडी विजय करे - भद्रा के शरीर का यह फल पूर्व मुनि कहते है ॥ १॥

चतुर्जन्य भद्रावास फल

मीनेमेषालि कर्के शशिनि वसतिस्वर्गसंस्था

पितृविष्टिःकन्यायातौलिसंस्थेधनुमिथुनग
तेनागलोकेनिवासः॥कुंभेसिंहेवृषेवामक
रमुपगतेराजतेमृत्युलोकेभद्राचंद्रप्रभावाद्वि
मकरतनयानोशुभालोकिकेस्यात् ॥२॥

टी०॥मेष मकर वृषकर्क इनकेचंद्रमामेंस्वर्ग में भद्रा का वासा-कन्या मिथुन तुला धन इन में पाताल में वासा-कुंभ मीन सिंह वृश्चिक इन में मृत्यु लोक में वासा भद्रा का जानिये ॥२॥

स्थानभद्राफलं

स्वर्गेभद्राभवेत्सौख्यं पातालेचधनागमः॥
मृत्युलोकेयदाभद्राकार्यसिद्धिस्तदानहि १

टीका॥स्वर्गकी भद्रा में कार्य शुभ है-पातालकीभद्रामेंधनकाश्रागमन होयहै-मृत्युलोक की भद्राकार्यका नाशाकरेहै ॥१॥

वारानुसारभद्राकानाम

सोमेशुक्रेचकल्याणीशनौचैवतुवृश्चिकी
गुरौपुण्यवतीज्ञेयाचान्यवारेषुभद्रका॥ १

टी०॥सोम शुक्र काभद्रा कल्याणीनाम कहैंतहैं शनिवार की वृश्चिक नाम कहावे-वृहस्पतिवार को पुण्यवती जानिये-रवि बुध मंगल वार की भद्रा नाम कहिये ॥१॥

दैत्येन्द्रैःसमरेभरेषुविजितेष्वीषःक्रुधाह
छवान्स्वंकायात्किलनिर्गतास्वरसुरवीलां
गूलीनीचक्रयान्॥विष्टिःसप्तभुजामृगेन्दु
गलकाक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नीमुदितैःसु
रैस्तुकरणाग्रांतेनियुक्तातुसा॥२॥ ५॥

टीका

देवता और दैत्यों में बडा घोर युद्धभयातिस समय देवताओं की हार भई उस में शिवजी के क्रोध करने से उन की देह में से एक स्त्री गर्दभ मुखी पुच्छवती पहिये के समान चरण जिस के

ऐसी थिरी नाम जिसकी सात भुजा हिरन की सी गरदन पत ला सूका सा उदर जिस का प्रेतके ऊपर चढी भई दैत्यों को वध करने वाली देवताओं ने असन्न होकर अपने कानों से लगा- या इस से भद्रा नाम करण भया ॥२॥

भद्रा का अंग				फल		चंद्रमा		वास	
विजय	२	पृष्ठ	११	ब्रह्म स्थल	धन नाश	मेष मकर	वृष कर्क	स्वर्ग	कार्य शुभ
उद्दि नाश	६	कमर की	९	गला	मरण	कन्या तुला	मिथुन धन	नागे	धन लाभ
कलह	४	नाभि	५	सुख	कार्य ध्वंस	कुंभ हस्थिन	मीन सिंह	मृत्यु	कार्य नाश

भद्रा का फल

भद्रा नाम चार पर		शुक्लपक्ष		कृष्णपक्ष		फलाफल
वृश्चिक	कल्याणी	८ १५	पूर्वार्द्ध	३ १०	उत्तरा०	दिन की भद्रा रात्रि में शुभ है
धनि	हृष्टिकी	११ ४	उत्तरा०	७ १४	पूर्वार्द्ध	रात्रि की भद्रा दिन में शुभ है
कुंभ	भद्रा	०	०	०	०	तहां भद्रा का दोष नहीं है

करणों के नाम तिथि स्वामी

शुक्लपक्ष				कृष्णपक्ष				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरदल		पूर्वदल		उत्तरदल				
१	स्थि	०	०	०	०	०	०	किंस्तुघ्न	वायु	० ० ० ०
५	८	२	२१	४	११	७	०	बव	इंद्र	व्रत उत्साह देव कर्म
२	२३	५	२०	१	८	५	२१	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्म कर्म
६	११	२	८	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उत्सार मित्र का
३	२०	६	१३	२	९	५	१२	तैतल	सूर्य	विवाहादि
७	१४	३	१९	६	१३	२	९	गरल	भूमि	बीज बोना
४	२१	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देव कर्म

शु ११
शु १०

९	१५	४	११	७	१४	३०	२०	विष्टी	यम	सर्वकर्मवर्जित
स्थिर	०	०	०	०	०	०	०	पशु	काल	औषध
स्थिर	०	०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	युद्धसौभाग्य

वारानुसारसंक्रांतिनाम

घोरारवौ ध्वांक्ष्य मृतद्युतौच संक्रांतिवारेच
महोदरीस्यात्॥ मंदाकिनी चेचगुरौचनंदा
मिश्राभृगौराक्षसिचार्कपुत्रे॥२॥५॥१॥

टी०॥रविवार को घोरा नाम संक्रांति-सोमवार को ध्वांक्षी नाम-मंगल को महोदरी-बुध को मंदाकिनी-बृहस्पति को नंदा नाम शुक्र को मिश्रा नाम-शनिश्चर को राक्षसी नाम जानिये॥१॥

नक्षत्रोंके अनुसारसं.

उग्रक्षिप्रचरैर्भैत्र ध्रुव मिश्राख्यदारुणैः॥
ऋक्षैः संक्रांतिरर्कस्य घोराद्याः क्रमशोभवेत्

टी०॥उग्रसंज्ञक नक्षत्रों में घोरा नाम क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में ध्वांक्षी नाम जानिये-चर संज्ञक नक्षत्रों में महोदरी नाम ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में मंदाकिनी नाम-ध्रुव संज्ञक नक्षत्र में नंदा नाम-मिश्र संज्ञक नक्षत्र में मिश्रा नाम जानिये-दारुण संज्ञक नक्षत्र में राक्षसी नाम जानिये॥१॥

संक्रांतिफलं

ध्वांक्षीवैभूयान्सुखयतिमहोदर्यलंचौरसार्थं
घोराशूरानथनरपतीनेवमन्दाकिनीच।नंदा
रत्यान्द्विजवरगणान्मिश्रकारव्यापशूंश्चसौ।
डालांश्चप्रकृतिमखिलांराक्षसीसंचितताच।२।

टीका॥ध्वांक्षी नाम वैभूयों को सुखदेय-महोदरी चोरों को सुखदेय-घोरा शूद्रन को सुखदेय-मंदाकिनी राजाओंको सुखदेय-नंदा ब्राह्मणों को सुखदेय-मिश्रा नाम्नी पशुओं

को सुखदेय-राक्षसी चांडालों को सुख देती है ॥ २॥

कालफल

पूर्वान्ह कालेनृपतिद्विजेन्द्रान्मध्यंदिनेचा
पराह्णेवैश्यांपरान्हे॥शूद्रान्रवावस्तमितेप्रदो
षेपिशाचकान्रात्रिचरान्निशीथे॥२॥
नरादिकाँश्चापररात्रकालेप्रत्यूषकालेप
शुपालकाँश्च॥संक्रांतिरर्कस्यसमस्तलि
गाप्रभातसंध्यासमयेनिहंति॥२।२॥

टीका॥पूर्वान्ह काल में ब्राह्मण और राजाओं को सवाई-मध्या न्ह में वैश्यों को-अपरान्ह में शूद्रों को-प्रदोष में पिशाचों को-अर्द्धरात्रि में राक्षसों को-अपररात्रि में नरों को-प्रत्यू ष काल में पशुपाल कों को ॥ २॥ २॥

दिशा को मुख

अर्केशुक्रेमुखंपूर्वेसौम्येभौमेचदक्षिणो
पश्चिमोचंद्रेमुखंपश्चाद्गुरौचैवोत्तरामुखी॥२

टीका॥सूर्य शुक्र को पूर्व मुख जानिये-बुध मंगल को दक्षिण मुख जानिये-सोम शनि को पश्चिम मुख जानिये-बृहस्पतिको उत्तर मुखी संक्रांति जानिये ॥ २॥

वारनक्षत्रों के अनुसार संक्रांतिफल

वार	उग्र	नाम	काल	दिशा	फल	फल
रवि	क्षिप्र	घोरा	पूर्वान्ह	पूर्वको	शूद्रसुख	विप्र राजा·
चंद्र	चर	ध्वांक्षी	मध्यान्ह	पश्चिम·	वैश्योंको	वैश्योंको
मंगल	मैत्र	महोदरी	अपरान्ह	दक्षिण·	चोरोंको	शूद्रोंको
बुध	ध्रुव	मंदाकिनी	प्रदोष	दक्षिण·	राजाओं·	पिशाचों·
बृहस्प·	मिश्र	नन्दा	अर्द्धरात्रि	उत्तरको·	द्विजगण	राक्षसों·
शुक्र	दारुण	मिश्रा	अपररात्रि	पूर्वको·	पशुओंको	नरोंको
शनि	नक्षत्र	राक्षसी	प्रत्यूषका	पश्चिम·	चांडालों·	पशुपालों·

॥ अथकरणअनुसारसंक्रांतिस्थिति।
चतुष्पदेतैतिलनागयोश्चसुशौरविःसंक्र
मणंकरोति॥ विष्टावारव्येचगरावृव्येच।
सवालवारव्येस्थितएवविष्टी॥ २॥ ५॥

टी०॥चतुष्पद तैतिल नाग इन भैसुत्र संक्रांति-गरल वणिज विष्टि बव बालव इनमें निविष्ट जानिये -कौलव किंस्तुघ्न शकुन इन में ऊभी संक्रांति जानिये ॥२॥ फल

किंस्तुघ्नशकुनेवणिक्कौलवारव्येचो
र्ध्वस्थितस्यस्वलुसंक्रमणंरवेस्यात्॥३
धान्यार्घविष्टिषुभवेत्क्रमशस्तत्रनिष्टोम
ध्येवतैतिमुनयःप्रवदन्तिपूर्वे॥२॥५॥

टी०॥धान्य अर्घ २५ मुहूर्ती-समर्घ ४५ मुहूर्ती-सम ३० मुहूर्ती-इसरीति से फल जानिये ॥२॥ वाहनं

सिंहोव्याघ्रोवराहश्चगर्दभःकुंजरस्तथा॥४
महिषीघोटकश्चाव छागोवृषभकुक्कुटौ॥३
गजोवाजिर्वृषोमेषःखरोष्ट्रोकेसरीक्रमात्
शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्चवदादितः॥४॥

टी०॥बव में सिंह-बालव में व्याघ्र-कौलव में वराह-तैतिल में गर्दभ-गरल में हस्ती-वणिज में महिषी-विष्टी में घोडा-शकुन में कुक्कुट-॥उपवाहनं॥बव में गज-बालव में अश्व-कौलव में बैल-तैतिल में मेढा-गरल में गर्दभ-वणिज में ऊंट-विष्टी में सिंह-शकुन में शार्दूल-चतुष्पद में महिष-नाग में व्याघ्र-किंस्तुघ्न में वानर॥संक्रांति वाहन फल॥बव बालव में भय होता है-कौलव चतुष्पद में पीडा होती है-तैतिल विष्टी में सुभिक्ष होता है-गरल में लक्ष्मी प्राप्ति होय नाग शकुन में स्थिरता-वणिज में क्लेश जानना चाहिये॥ किंस्तुघ्न में मृत्यु जानना ॥४॥

फलं॥ गजेलक्ष्मीर्हये स्थैर्यं घोटके वाहनेतथा ॥
सिंहे व्याघ्रे भयंप्रोक्तं सुभिक्षंगर्दभे शुभे ४॥
वाराहे महती पीडा जायते मेष वाहने ५॥
महिष्यांचभवेत्क्लेशः कुक्कुटे मृत्युरेवच ५॥

टीका॥ वाराह में महती पीडा - मेष में पीडा - महिष में क्लेश - कुक्कुट में मृत्यु के समान क्लेश जानना॥ ५॥

संक्रांतिके वस्त्र

श्वेतपीतहरितंच पांडरंरक्तश्यामसितं
वह्निवर्णम्॥ कंवलो विवसनं धनवर्णान्यं
शुकानिचववादितः क्रमात्॥१॥२॥

टी०॥ वव में श्वेत वर्ण - बालव में पीत वर्ण - कौलव में हरित - तैतुल में पांडुर - गरल में रक्त - वणिज में श्याम वर्ण - विष्टी में काला - शकुन मे चित्र विचित्र - चतुष्पद में कंवल - नाग में नग्न - किंस्तुघ्न में धन वर्ण जानो॥२॥

आयुध

भुशुंडीच गदा खड्गदंडो दंडतोमरान्॥
कुंत पाशांकुशास्त्रंचवाराश्चैवायुधंववात्

टी०॥ वव में तोप - बालव में गदा - कौलव में खड्ग - तैतल में दंड - गरल में धनुष - वणिज में तोमर - विष्टी में बरछी - शकुन में पाश - चतुष्पद में अंकुश - नाग में तलवार - किंस्तुघ्न में बाण॥ २॥

भोजन का पात्र

सौवर्णीरजतं ताम्रंकांस्यं लोहंचखर्परम्
पत्रंवस्त्रंचराभूमिः काष्ठपात्रंववादितः॥

टी०॥ वव में सोने का - बालव में रूपा - कौलव में तांबा - तैतल में कांसा - गरल में लोहा - वणिज में ठीकरा - विष्टी में पत्र - शकुन में वस्त्र - चतुष्पद में कर - नाग में भूमि - किंस्तुघ्न में काष्ठ पात्र जानो॥

संक्रांति का भक्ष्यपदार्थ

अन्नंच पायसंभक्ष्यंपक्कान्नंचपयोदधि॥

चित्रान्नगुड मृध्वाज्यं शार्करानुववादितः॥
री०॥ववमें अन्न·बालव में वायस·कौलव में भस्म पदार्थ तैतल में पक्कान्न·गरल में दुग्ध·वणिज में दही·विष्टी में चित्रान्न·शकुन में गुड चतुष्पद में सहत नाग में घृत·किंस्तुघ्न में शर्करा॥१॥

संक्रांति के गंधलेपन

कस्तूरीकुंकुमंचैव चंदनंमृत्तिका तथा
गोरोचन मलयजं हरिद्राचतथांजनम्
सिंदूरम गुरुश्चैव कर्पूरं ज्ञववादितः॥१

री०॥ववमें कस्तूरी·बालव में कुंकुम·कौलव में चंदन·तैतिल में माटी·गरल में गोरोचन·वणिज में मलयावर·विष्टी में हलदी·शकुन में सुरमा·चतुष्पद में सिंदूर·नाग में अगर·किंस्तुघ्न में कपूर॥

संक्रांतिजाति माह

देवभूतादि विहग पशवो मृगएवच॥
ब्रह्मक्षत्रिय विट्शूद्रमिश्रजातिववादितः१

री०॥ववमें देवता·बालव में भूत कौलव में पक्षी·तैतिल में पशु·गरल में मृग·वणिज में ब्राह्मण·विष्टी में स्त्री·शकुन में वैश्य·चतुष्पद में शूद्र·नाग में मिश्रज·किंस्तुघ्न में अंत्यज॥१॥

संक्राति के पुष्प माह

पुन्नागजाती वकुलाश्च केतकीबिल्वस्तथा
र्कःकमलंचदूर्वा॥मल्लीतथा पाटलिका
जपाचववादि पुष्पाणिच्च क्रोजयेतु॥१॥

री०॥ववमें पुन्नाग·बालव में जाई जुई·कौलव में वकुला·तैतल में केतकी·गरल में बेलपु·वणिज में अर्क·विष्टी में कमल·शकुन में दूर्वा·चतुष्पद में मल्लिका·नाग में पाटलपुष्प·किंस्तुघ्न में गुड हलका पुष्प

संक्रांति के भूषण

नूपुरं कंकणं मुक्ता विद्रुमंमुकुटंप्रणिम्
शुंजावरा टंकानीलं गारुत्मंरुक्मकंववात्

टी०॥ ववमें नूपुर · वालव में कंकना · कौलव में मोती · तैतिल में मू
गा · गरल में मुकुर · वणिजमें मणि · विष्टी में गोगची · शकुनमें कौ
डीका · चतुष्पद में नीलक · नाग में पन्ना · किंस्तुघ्न में सोनेका ॥ १॥

संक्रांतिकी कचुकी

विचित्र वर्णा मुक भूर्ज पत्रिका सीतानया पाट
ल नील वर्णा ॥ कृष्णाजिनं चर्म वल्क पांडुरा
ववादिनश्चैव तु कंचुकी स्यात् ॥ १ ॥ ॥

टी० ॥ ववमें विचित्र · वालव में पट्ट उणा · कौलव में हरित वर्णी तैतल
में भोजपत्र · गरल में सेत · वणिज में पाढल · विष्टी में नीला · शकुन
में काली · चतुष्पद में अंजनी · नाग में वल्कल · किंस्तुघ्न में पांडुर ॥ १

संक्रांतिकी अवस्था

शिशुः कुमारीच गनालका युवा प्रौढाप्रगल्भा
पतनश्च वृद्धा ॥ वंध्याच वंध्याति सुतार्थिनी
च शकुनाजकाचैव फलं शुभं ववात् ॥ १॥

टी० ॥ वव में बालक · वालव में कुमारी के मत में गतालका · तैतिल
में युवा · गरल में प्रौढा · वणिज में प्रगल्भा · विष्टी में वृद्धा · शकु
न में वंध्या · चतुष्पद में अति वंध्या · नाग में सुतार्थिनी · किंस्तु
घ्न में शकुनि का सुवासनी ॥ १॥

फलश्रुति

वाहनादि बुधैर्ज्ञेय मथो संक्रांतु लक्षणः ।
वाहनादिक वस्तूना संक्रमातु विनाशना १

टीका ॥ संक्रांति जिस वाहन पर स्थित हो और जो वस्तु धारण
करती होय उस का नाश कहना ॥ १॥

संक्रांति कितने मुहूर्त की होती है

संक्रांतौ मूर्ति भेदा हर पवन यमे वारुणे सार्पि रौद्रे
रुद्रा पत्येंद्र संज्ञागुरु कर पितृ भे चाग्नि दस्रे च सौम्ये
त्वाष्ट्रे भैत्रे च मूले मुनि वसु वसुधा त्रीणि पूर्वाख रामे

ब्राह्मे दित्ये द्विदैवे भवति शरकृतादुत्तरानीणि ऋक्षं
वाणवेदैः समर्घं स्यान्मध्यस्थे व्योमरामयोः॥
मूलौ पंच दशे याते दुर्भिक्षञ्च प्रजायते ॥ २॥

टीका॥ आर्द्रा स्वाति भरणी शतभिषा श्लेषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में जो संक्रांति अर्केनो १५ मुहूर्ती संक्रांति दुर्भिक्ष करने वाली जानिये - पुष्य हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रों में संक्रांति अर्केनो ३० मुहूर्ती जानिये साधारण फलके देने वाली है, रोहिणीपुनर्वसू विशाखा तीनों उत्तरा इन में संक्रांति अर्केनो ४५ मुहूर्ती जानिये-ये सुभिक्षकार्य देने वाली होती है ॥ २॥

करण	बव	बाल	कौल	तैतल	गरल	वणि	विष्टी	शकु	चतु	नाग	किंस्तु
स्थित	भिव	भि	क	सु	नि	नि	नि	उ	सु	सु	क्षभी
फल	मध्य	मध्य	मदि	सम	महंगा	महंगा	सम	महंगा	सम	सम	महंगा
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वाराह	गर्दभ	हस्ती	महिष	घोड़ा	कुत्ता	मेढा	बैल	मृगा
उपवा	हाथी	घोडा	बैल	मेढा	गधा	ऊंट	सिंह	शूद्र	मंहि	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	मरण	लक्ष्मी	क्लेश	क्षुभि	स्थैर्य	पीडा	स्थैर्य	भस्म
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	श्याम	चित्र	कर्म	नग्न	धनवत्
आयु	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	केतु	पाश	खड्ग	शंबु	बाण
पात्र	सोना	रूपा	तांबा	कांसा	लोहा	हीरा	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठपा
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वा	पय	दही	चित्रा	गुड	मधु	घृत	खांड
लेपन	कस्तू	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोच	अलक्त	हल्दी	सुरमा	सिंदूर	अगर	कर्पूर
वर्ण	देवता	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्रस्त्री	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	स्त्रिका	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जया
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	शृंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलम	परन	सुवर्ण
कंचुकी	चित्रित	पर्ण	हरित	गलाब	सीप	पाटल	नील	कृष्ण	अंजन	चल्क	पांडुर
वय	बाला	कुमा	गताल	युवा	प्रौढा	अगल्भ	वृद्धा	वंध्या	अ.वं	प्रवत्ती	सुवासनी

संक्रांतिकादूसराप्रकार

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकम्
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपंचमहर्घता१

टीका॥गये मास की संक्रांति का दिन नक्षत्र और प्राप्त संक्रांति का दिन नक्षत्र इन दोनों का अंतर करने से जो तीन वा दो होंय तो सस्ता जानना और चार पांच जो अंतर आवे तो महंगा जानिये ॥१॥

धान्यविचारः

संक्रांतिनाड्यातिथिवारऋक्षधान्याक्षरंचहि
हरेत्त्रिभागम्।अन्यच्च।संक्रांतिनाडीनवमिश्रिता
चसप्ताहृताप्तावशकभाजिताचएकेमहर्घे२
द्वितीयेचसौम्यंशून्येमहर्घेमुनियोवदंति२

टीका॥संक्रांति की घरी और गत तिथि वार नक्षत्र धान्य के नाम अक्षर इनको एकत्र कर तीन का भाग दे-दूसरा मतान्तर॥ संक्रांति की घडियों में ९ मिलावे सात गुना करे और तीनका भाग दे शेष बचे सो फल कहना-एक बचे तो सस्ता और दो बचें तो सम-तीन बचें तो महंगा कहना चाहिये ॥२॥

नक्षत्र के अनुसार संक्रांतिकीपीडा

संक्रांत्यृक्षनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि॥
त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं त्रिकंषट्कं पुनःपुनः।१।
पंथाभोगोव्ययावस्त्रंहानिश्चविपुलंधनम्

टीका॥संक्रांति के पहले नक्षत्र से लेके अपने नक्षत्र ताईं गिने इस रीति से उस का विचार करे पहले तीन ३ में पंथा चलावे दूसरे ६ में भोग मिले तीसरे तीन में वस्त्र चौथे ६ में हानि जानिये पांचमें ३ त्रिक में धन प्राप्ति जानिये इसी रीति से सब नक्षत्रनमें जानना॥

जन्मनक्षत्रोंका फल

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यतिथौसंक्रमणंभवेत्
तन्मासाभ्यंतरे तस्यवैरंक्लेशंधनक्षयः१

टीका॥ जाके जन्म नक्षत्र विषे संक्रांति अर्के उसका किसीसे वैर हो य जिस के जन्म मास में संक्रांति का संभव होय तो क्लेश करना - ऐसे जन्म दिन में संक्रांति पडे तो धन का नाश होय ॥२॥

संक्रांति का स्वरूप

षष्टियोजन विस्तीर्णा संक्रांतिः पुरुषाकृतिः
एकवक्त्रा नव भुजा लंबोष्ठी दीर्घ नासिका १
पृथ्वाल्लोकाभ्रमंत्येव गृहीत्वा खर्पणं करे।
एवं संक्रमणे यस्याः फलमुक्तं मनीषिभिः २

टीका॥ संक्रांति का शरीर ६० योजन का लंबा है और पुरुष की समान चौडा एक मुख है और नौ भुजा हैं ओठ नासिका लंबी है और खप्पर हाथ में लिये है और सब लोकों में फिरे है॥ १॥२॥

(संक्रांति का चंद्रमा से फल कहें)

मेषालिकर्केचतथैव रक्तंचापेचमीनेचतुलेच
पीतं॥चंद्रेवृषे स्त्री मिथुनेच श्वेतं कुंभेत्वनक्रेच
घटेचसिंहे॥ १॥रक्ते फलंभवेद्दुःखं श्वेतंचैवसुख
प्रभं॥पीतेश्रीस्तुनयाप्रोक्ताश्यामेमृत्युर्नसंशयः २

टीका॥ मेष वृश्चिक कर्क इन राशिन के चंद्रमा में संक्रांति का प्रवेश होय तो रक्त वर्ण जानिये - रक्त वर्ण दुःख दायक है॥ और धन मीन तुला के चंद्रमा प्रवेश होय संक्रांति तो पीत वर्ण जानिये - सो पीत वर्ण लक्ष्मी देता है। और वृष कन्या मिथुन के चंद्रमा में संक्रांति होय तो श्वेत वर्ण जानिये - सो श्वेत वर्ण सुख प्रभ देता है॥ और सिंह मकर कुंभ इन के चंद्रमा में संक्रांति होय तो काला वर्ण जानिये - सो काला वर्ण मृत्यु का दाता है॥ २॥२॥

राशि अनुसार चंद्र फल

याम्येनहिमरश्मिमालिनासंक्रमोभवति
निम्नरोचिषा॥नारुणंफलमवाप्नुयान्नरः
साध्वसाध्वपिवश्येन पीतगोश्च २॥ ३॥

टी०॥जैसा चंद्रमा भला वा बुरा होय तैसा संक्रांति फल की देनेवाली होती है॥१॥

संक्रांति पुण्य काल

पूर्वतोहि परतोश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिका
स्तु षोडश॥अर्द्धरात्रि समयादनंतरं सक्रमे
दहनिहि पुण्यदम॥१॥

टी०॥संक्रांति के समय से दोनों ओर पुण्य काल की घरी सोलह सोलह होती हैं और आधी रात से पीछे वा पहले संक्रांति होय तो दोनो दिन पुण्य काल कहना आधी पीछे दूसरे दिन पुण्यकाल आधी पहले पहले दिन पुण्य काल॥१॥

चंद्रग्रहण प्रकरण

भानोः पंचदशे करक्षे चंद्रमा यदिनिष्ठती॥
पौर्णिमास्यानिशाशेषे चंद्रग्रहणमादिशेत्

टीका॥सूर्य से १५ पंद्रहवें नक्षत्र में जो चंद्रमा होय तो पूनों के अंत में पडवा की संधि में चंद्र ग्रहण होय॥२॥

सूर्यग्रहण प्र०

आधोनंग्रस्तनक्षत्रा षोडशं यदिसूर्यभात्
अमावास्यादिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत्२

टीका॥सदैव महीनों की मावस के दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशि के होते हैं परंतु अमावास्या के दिन सूर्य नक्षत्र और दिवस का नक्षत्र एक होय तो अमावास्या को पड़वा की संधिमें सूर्य ग्रहण होता है उस दिन सूर्य नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र देखिये उसमें से १२ काटि शेष १६ वां और सूर्य नक्षत्र १६ सोलहवां होय तो वही सूर्य्य ग्रहण होता है॥२॥

राशि अनुसार ग्रहण शुभाशुभ फलं॥
त्रियद दृष्णायो पगतं नराणांशुभप्रदस्याद्ग्रह
णंरवींदोः॥ द्विसप्तनन्देषुचमध्यमंस्यात्।
शेषेष्वनिष्टं मुनयो वदंति॥ २॥ २॥१

सूर्य अथवा चंद्र ग्रहण अपनी राशि से जिस राशि पर होय

उसका शुभाशुभ फल विचारिये तीसरी छठी दशमीराशिपर होय तो शुभ जानिये दूसरा सातवां नवमां मध्यम है पहला चौथा पांचवां आठवां ग्यारहवां बारहवां ये अधम हैं ॥२॥

दूसरापक्ष

ग्रासान्नतीर्योडुसमगश्चतुर्थस्तथाधसंस्थः
शुभदःखरांशः॥ ग्रासाद्विः पंचनवर्तुम
ध्वमाप्तोधमोक्काश्चवुधैश्चशेषाः॥१

टीका॥ जिस राशि पर सूर्य ग्रहण होय उससे अपना राशि नक्षत्र तक गिनो १।८।४।११ ये उत्तम हैं और ५।८।६ ये मध्यम है और २।७।१०।१२ ये अधम हैं जैसी राशि होय तैसी फल होता है॥१

ऋतुधर्म प्रकरण

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रंचचतुर्गुणम्
वारःषड्गुणोज्ञेयो मासश्चाष्टगुणःस्मृतः
वस्त्रंशतगुणं विद्यादतोनंचनतोधिकम्
ऋतौवैप्रथमेचैत्रे वैधव्यंजायते ध्रुवम्॥

टीका॥ तिथिका एक गुना फल नक्षत्र का ४ चौगुना वार का ६ गुना मास का आठ गुना ८ वस्त्र का सौ १०० गुणा अधिक फल जो ऋतु पहले चैत्र में होय तो वैधव्य करे अच्छेमें अच्छा फल बुरे में बुरा फल जानिये॥२॥

वैशाखेधनवृद्धिस्याज्ज्येष्ठेरोगान्विताभवेत्
आषाढेमृत्यवस्तत्रश्रावणेधनसंयुता १
भाद्रेचदुर्भगानारीआश्विनेधनधान्यभाक्
कार्तिकेनिर्धनानारीमार्गशीर्षेबहुप्रजा २
पौषेचपुत्रलानारीमाघेपुत्रवतीभवेत्॥
फाल्गुनेऽपत्यसंपन्नाक्षयंमासफलंबुधैः ३

टीका॥ चैत्र में रजोवती होय तो विधवा जानिये-वैशाख में रजोवती होय तो धनवती-ज्येष्ठ में होय तो रोगवती-आषाढ में रजु होय

श्रावण में लक्ष्मी - भादों में दरिद्र - आश्विन में धनवान - कार्तिक में निर्धना - मार्गशिर में प्रजावती - पौष में व्यभिचारिणी - माघ में पुत्रवती - फाल्गुण में रजोदर्शन होय तो पुत्र संपन्न जानिये ॥३॥

तिथिफलं

प्रतिपदि द्वितीयायांनुदुःखिनी ॥
तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् १
पंचम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी
सप्तम्यां सुप्रजानारी चाष्टम्यां राक्षसीतथा २
नवम्यां विधवानारी दशम्यां सौख्यभोगिनी
एकादश्यां सुचिर्नारी द्वादश्यां मरणंध्रुवम् ३
त्रयोदश्यां शुभाप्रोक्ता चतुर्दश्यां प्रकीर्तिता ॥
पूर्णिमास्यामसावस्यां शुभंचाशुभमेवच ७

टीका॥पडवा में रजोदर्शन होय तो सुचिशोक के करै जानिये - दूज तीज में दुखिया तृतीया में पुत्रवती - चौथ में विधवा पांचे में सुहागन छठ में कार्य नाशिनी सातें में उत्तम संतान आठें में राक्षसी - नोमी में विधवा - दशमी में सुख भोगिनी - एकादशी में सुचि और द्वादशी में मरण - त्रयोदशी में शुभ - चौदश में व्यभिचारिणी - दूनों में शुभ और मावस में अशुभ जानिये ॥७॥

संक्रांत्याग्रहणेचैवचैरिणीचगलालका।

टीका॥संक्रांति में प्रथम रजोदर्शन होय तो चैरिणी होय और ग्रहण में होय तो विधवा का योग जानना चाहिये॥

वारफलं

आदित्ये विधवा नारी सोमेचैवसुतप्रजा॥५॥
मंगले आत्मघातीस्याद्बुधेकन्याप्रसूस्मृता:
गुरुवेचसुतःप्राप्तिःकन्यापुत्रयुतासुभो॥६॥
मंदेचपंचत्वंनारीस्तेयं वारफलंशुभम्।७

टीका॥रविवार में प्रथम रजोदर्शन होय तो विधवा होय - सोमवार

में मृतप्रजा मंगल में आत्म घातनी बुध में कन्या संतति होय बृहस्पति में पुत्र प्राप्ति होय शुक्र वार में कन्या शनि में अभि चारिणी ॥ ९॥

नक्षत्रफलं

अश्विन्यां शुभगा नारी भरण्यां विधवा भवेत्॥कृतिकायां च वंध्यास्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी ॥२॥ मृगेद्रि॰ रिद्रसुतोक्ताचार्द्रायां क्रोधकारिणी॥पुनर्वसौ पुत्रवती पुष्ये पुत्र धनेश्वरी॥३॥आश्लेषायां भवेद्ध्यामा यां चार्य संयुता॥पूर्वायां चार्ययुक्तास्त्री उत्तरायां सती या॥४॥हस्ते पुत्र धनैर्युक्ता चित्रायामनुचारिणी॥स्वा त्यां गर्भवती विद्धा रवायां तु निष्ठुरा॥५॥मैत्रे च॥ दुर्भगा नारि ज्येष्ठायां विधवा भवेत्॥मूले पतिव्रता ध्रौ पूर्वा सौभाग्य भोगिनी॥६॥उत्तरार्थवती प्रोक्ता श्र वणे भाग्य संपदा॥धनिष्ठायां शुभा नारी पूते भद्रान्वि तावुधैः॥७॥पुंभे चोक्ता कामिनी तु उभे लक्ष्मी युता शुभा॥रेवत्यां पति रिक्ता तु ज्ञेयं भानां फलं बुधैः॥७॥ रीका॥अश्विनी में प्रथम ऋतु स्नान होय तो शुभ है भरणी में विध वा कृतिका में वंध्या रोहिणी में प्रिय भाषिणी मृगशिर में दरिद्रनी आर्द्रा में क्रोधनी पुनर्वसु में पुत्रवती पुष्य में पुत्र धन श्लेषा में वांझ मघा में धन पूर्वा में अर्थवती उत्तरा में पतिव्रता हस्त में पुत्र वती धनवती चित्रा में मन की इच्छा से चलने वाली स्वाति में अन्य गर्भवती विशाखा में कठोर चित्त और अनुराधा में दुर्भागिनी - ज्येष्ठा में विधवा मूल में पतिव्रता पूर्वा में सौभाग्यवती उत्तराषाढ में लक्ष्मीवान् श्रवण में भाग्यवती धनिष्ठा में शुभ शतभिषा में शुभ पूर्वाभाद्र में उत्तम उत्तरा भाद्र में लक्ष्मी रेवती में पतिरहित ७

योगफलं

आद्यतौ विधवा नारी विष्कुंभे चरजस्वला॥प्रीतौ हर्षीत्यानुदं पत्योरायुष्मांस्तु धनप्रदः॥सौभाग्ये

पुत्रयुक्तातु शोभने मंगलान्विता॥अतिगंडेतु विधवा सुकर्मणितु शोभना॥धनौसंपत्तियुक्तास्यू लेरोगयुताभवेत्॥गंडेदुःखान्वितानारी वृद्धौ पुत्रान्विताभवेत्॥ध्रुवेतु शोभनानारी व्याघातेभर्तृघातकी॥हर्षणेहर्षयुक्तातुवज्रेवैधव्यमाप्नुयात्॥सिद्धौपुत्रान्वितानारीव्यतीपातेविभर्तृका॥मृतवत्सावरीयाणेपरिघेचाल्पजीविनी॥शिवेपुत्रवतीनारीसिद्धेशीघ्र फलान्विता॥साध्येधर्मपरानारीशुभेऽशुभगुणान्विता॥शुक्लेशुभकरानारीब्रह्मणिस्वपतिरता॥ऐंद्रेदेवररताचवैधव्यंवैधृतौस्मृतम्॥१

टीका॥विष्कुंभमें प्रथम रजोदर्शन होयतो विधवा जानिये-प्रीति योगमें पति को प्यारी-आयुष्मान्में धनप्राप्ति-सौभाग्यमें पुत्रवती-शोभनमें मंगलदायिनी-अतिगंडमें विधवासुकर्मामें शुभता-धृतिमें संपत्ति युक्त-शूलमें रोग होय-गंडमें दुःखान्वित-वृद्धिमें पुत्रयुक्त-ध्रुवमें शुभ-व्याघातमें पतिघातनी-हर्षणमें हर्षयुक्ता-वज्रमें वंध्या-सिद्धिमें पुत्रयुक्ता-व्यतीपातमें पतिरहिता-वर्याणमें मृतपुत्रा-परिघमें अल्पजीविनी-शिवमें पुत्रवती-सिद्धिमें शीघ्र फला-साध्यमें अधमपरा-शुभमें शुभगुणयुक्ता-शुक्लमें शुभकर्मपरा-ब्रह्ममेंनिजपतिरहिता-ऐंद्रमें देवररता-वैधृतिमें विधवा होय॥१॥

करणफलं

बवेप्रोक्तातुवंध्यास्त्री बालवेपुत्रसंपदः॥कौलवेपुंश्चलीनारीतैतिलेचारुभाषिणी॥गरेचगुणसंपन्नावणिजेपुत्रिणीस्मृता॥विष्टेचमृतवत्साचशकुनौकामपीडिता॥चतुष्पदेशुभानारीनागेपुत्रवतीभवेत्किंस्तुघ्नेव्यभिचारीतु करणानामशुभं फलम्॥१॥

टीका॥बवकरणमें प्रथम रजोदर्शन होयतोस्त्रीवंध्याहोय-बालव

में पुत्र की प्राप्ति - कौलव में वेश्या - तैतिल में प्रिय भाषिणी - ग रल में गुण संपन्न होय - वणिज में पुत्रिणी - वृष्टि में मृतवत्सा - भद्रा में कामातुरा - चतुष्पद में सुभगा - नाग में पुत्र वती - किंस्तुघ्न में अभिचारिणी ॥२॥

रात्रिफलं

अभिचारीनुमेषस्याद्वृषभेसुखभोगिनी॥मिथु
नेधनयुक्तोक्तःकर्कटेदुःखितावुधैः॥सिंहेपुत्र
वतीनारीकन्यायांमानिनीशुभा॥तुलेविवाह
णानारीवृश्चिकेअभिचारिणी॥धनेपतिव्रता ज्ञे।
यामासतीमान्वनक्रके॥कुंभेधनवतीज्ञेयामी
नेचचपलावुधैः॥२॥

टीका॥ मेषराशि में रात्री होय तो अभिचारिणी - वृष में सुख भोगिनी - मिथुन में धनयुक्ता - कर्क में दुखी - सिंह में पुत्रवती - कन्या में अभिमानी - तुला में कुचालनी - वृश्चिक में नारिणी - धन में पतिव्रता मकर में कुलांगी - कुंभ में धनवती - मीन में चपला ॥२॥

होराफलं

सूर्येरुग्व्याधिसंयुक्ता चंद्रे होरे पतिव्रता ॥
कुजे होरेतुदौर्भाग्यं बुधे होरेतु पुत्रिणी २
जीवे सर्वसमृद्धिस्याद्भृगौ सौभाग्य मेवच ॥
शनौ सर्व विनाशाय होरे भस्य फलंबुधैः ।२।

टीका॥ रवि की होरा में प्रथम रजो दर्शन होय तो रोगणी जानिये - चंद्र की में पतिव्रता मंगल की में दुर्भगा होय - बुध की में पुत्रिणी - गुरु की सिद्धदाई शुक्र की सौभाग्य शनि की सर्व नाशक ॥ २॥

लग्न फलं

मेषलग्नेसुरिद्वाचवृषभेधनसंयुता॥कामिनी
मिथुनेलग्नेकर्कटेपतिनाशिनी॥सिंहेपुत्रप्रस्
ताचपतियुक्ताचकन्यके॥तुलेचेबंधतादायीवृ-

स्त्रिकेरद्रदुःखिनी॥धनलग्ने धनैश्वर्यंमकरेकर्कणा
भवेत्॥कुंभेवंध्यद्वयेप्रोक्तं मीनेसर्वगुणान्विता॥४॥

टी०॥मेष लग्न में रजोधर्म होय तो दरिद्रणी-वृष में धनयुक्त मिथुन में कामिनी कर्क में पतिनाशिनी सिंह में पुत्र प्रसूता कन्या में पतिव्रता तुला में अंधता-वृश्चिक में दरिद्र का दुःख-धन में ऐश्वर्य मकर में कर्कशा कुंभ में दोनों वंध्या की नाश करता-मीन में गुणवती॥४॥

ग्रहोंके फल

लग्ने राहुश्चसौरिश्च रविचन्द्रौ तथैवच॥५॥
तदास्याविधवानारी सर्वसौभाग्यवर्जिता॥

टीका॥जिस लग्न में प्रथम स्त्री रजस्वला हो तिस लग्न में राहु शनि रविचंद्र ये चार वा ग्रह स्थित होंय तो वह स्त्री विधवा होय॥२॥

रक्तदर्शनफलं

प्रथमेरोगिलंविंदुमात्रेणास्तेरिणीचाल्परोगिला
रक्तेरक्तेभवेत्पुत्रःकृष्णेचैवमृतप्रजा॥५॥
पिच्छलीचभवेद्वन्ध्याकाकवंध्याचपांडुरे॥
पीतेदुश्चारिणीज्ञेयासुभगागुंजसन्निभे॥
सिंदूरवर्णेरक्तेतुकन्यासंततिरेवच॥३॥

टीका॥प्रथम ऋतुदर्शन के समय रक्त विंदुमात्र और अल्पवर्णी हो यतो स्त्री व्यभिचारिणी होय और रक्त वर्ण रुधिर होतो पुत्रवती काला वर्ण रुधिर होयतो मृतप्रजा पिच्छला कहिये गाढा होय तो वंध्या पांडुर होयतो बांझ और पीला होय तो दुश्चारिणी और गुंजा की तुल्य होय तो सुभा सिंदूर वर्ण होय तो कन्या प्रसूता-इस प्रकार रक्त दर्शन का फल जानना चाहिये॥३॥

कालफलं

पूर्वान्हे सुभगाप्रोक्तामध्यान्हेचैवनिर्धना॥
अपरान्हेसुभाचैवसायान्हेसर्वभोगिनी॥
संध्ययोरुभयोर्वेश्यानिशीथेविधवाभवेत्॥

पूर्वरात्रेतथा वंध्या दुर्भगासर्वसंधिषु॥

टीका॥जिस स्त्री को प्रथम रजो दर्शन प्रातःकाल होय तो सुभगा जानिये-मध्यान्ह में निर्धना जानिये-तीसरे पहर में सुभगा जानिये-संध्या को होय तो सर्व भोगवती-और दोनों संधि में होय तो वेश्या के तुल्य-आधी रात्र में होय तो विधवा-पहली रात्रि में होय तो वांझ-सर्व संधि में होय तो दुर्भागिनी जानिये ॥१॥

पहिरे हुये वस्त्रों का फल

सुभगा श्वेत वस्त्राच रोगिणी रक्त वस्त्रका॥
नीलांबर धरा नारी विधवा सुख वंतिका॥
भोगिनी पीत वस्त्राच मिश्र वस्त्र वरस्त्रिया॥
सूक्ष्मास्थान्सूक्ष्म वस्त्राच दृढ वस्त्रापतिव्रता॥
दुर्भगाजीर्ण वस्त्राच सुभगा मध्य वाससा॥
धौत वस्त्रा सुभानारी मलिनी मलिना भवेत्

टीका॥प्रथम रजो दर्शन के समय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तो सुभगा लाल पहिरे होय तो रोगिनी-नीले वस्त्र पहिरे होय तो विधवा-पीत वस्त्र पहिरे होय तो भोगवती-मिले रंग का वस्त्र होय तो पतिव्रता-सूक्ष्म वस्त्र होय तो कृपणी-मोटा वस्त्र होय तो पतिव्रता-जीर्ण वस्त्र होय तो दुर्भागिनी-मध्यम वस्त्र युत होय तो सुभगा-धुले वस्त्र युत होय तो सुभ-मलीन वस्त्र पहने होय तो मलीन जानिये ॥२॥

गर्भाधान मुहूर्त्त

ऋतौतु प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्रे शुभे दिने॥
मघा मूलाश्वपक्षांते मुक्तावंदे वलेसति १

टीका॥प्रथम ऋतु दर्शन के समय पुरुष नक्षत्र और शुभ दिन मघा मूल रेवती श्रवण चास्या पूरिमा इन को छोडि करगर्भाधान करना शुभहै ॥१॥

ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणांरात्रयःषोडशस्मृताः
तासामाद्यास्तुनस्रस्तुनिंदितैकादशीचया१।

त्रयोदश्यांचशेषास्युःप्रथमादशवासराः
तस्माद्विरंचांडालीपुत्रिणांपरिवर्जयेत्।

टीका॥स्त्रियों के ऋतु धर्म से स्वाभाविक १६ सोलह रात्रि होती हैं उनमें से प्रथम की रात्रि पुत्रवती की चांडाल संज्ञा ब्रह्म घात की रजकी चौथी ग्यारही तेरहीं ये दिन वर्जित हैं और बाकी रही दश रात्रि सो शुभ हैं ॥२॥

रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जितः ॥
पंचम्यांपुत्रिणीनारी षष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः
सप्तम्यामपुत्रजातोवीरश्चाष्टम्यांमीश्वरःपुमान्।
नवम्यांशुभगानारी दशम्यांश्वरःसुतः ॥
एकादश्यामधर्म्मात्मीद्वादश्यांपुरुषोत्तमः ॥
त्रयोदश्यांस्मृतापापाकर्त्रीसकरकारिणी ॥
धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्चआत्मवेदीदृढव्रतः ॥
प्रजायतेचतुर्दश्यांपंचदश्यांपतिव्रता ॥
आत्मनःसर्वभूतानांषोडश्यांजायतेपुमान्।

टीका॥चौथी रात्रि में स्त्री संगम करेतो पुत्र अल्पायु धनवर्जित हो-पांचमी रात्रि में पुत्रवती हो-छठी रात्रि में मध्यमपुत्र-सातमी रात्रि में पुत्र होय-आठमी रात्रि में ईश्वर का भक्त होय-नवमी रात्रि में सौभाग्यवृद्धि होय दशमी मे गुणवान् पुत्र-ग्यारहवीं में अधर्मी पुत्र-बारहवीं में उत्तम पुरुष-तेरवीं रात्रि में पाप कर्त्ता कन्या हो-चौदहवीं रात्रि में धर्मात्मा कृतज्ञ व्रत करने हारा पुत्र होय ॥ पद्रहवीं रात्रि में पतिव्रता-षोडशी रात्रि में सब जीवों का आत्म न देने वाला पुत्र होय ॥ ४ ॥

निषेककेतिथिवारकाफलं
षष्ठ्यष्टमी पंचदशी चतुर्थी चतुर्दशी मप्यु
भयत्रहित्वा॥शेषाःशुभास्तु स्त्रियश्चोक्ति
येकेवाराःशशांकार्यसितेन्दुजाश्च ॥२॥

री०॥ षष्ठ अष्टमी भूतों मावस चौथ चौदश इन तिथोंको छोड कें शेष तिथि शुभ हैं और सोम गुरु शुक्र बुध ये वार निषेक में शुभ हैं

नक्षत्र

विष्णु अजेश रवि मित्र समीर पौष्ण भूलो नरा वरुण भानि निषेक कार्ये ॥ पूज्यानि पुष्य वसु धीत करास्वचित्रा दित्याश्च म ध्यम फला विफलास्युरन्ये ॥२॥ ५५५

टीका॥ श्रवण रोहिणी हस्त अनुराधा स्वाति रेवती मूल तीनों उत्तरा शतभिषा ये नक्षत्र उत्तम हैं॥ और पुष्य धनिष्ठा मृगशिर अश्विनी चित्रा पुनर्वसु ये मध्यम जानिये-और शेष नक्षत्र अधम जानिये। वैधृति संक्रांति महापातआदि दुष्ट योग आठकाअंत पूर्व दिवसजन्म नक्षत्र ये वर्जित हैं। और जिस लग्न में विषम स्थानी न वांश में उच्चि बृहस्पति वा सूर्य चंद्रमा होंय तो पुत्र प्राप्ति होय औ रयही ग्रह सम राशि के होंय तो कन्या की प्राप्ति करे ॥२॥

प्रथम गर्भिणी के पुंसवनादि संस्कार

मूलादि त्रितये करे श्रवणके भाद्र द्वयार्द्रत्रये रेवत्यां मृग पंचके दिनकरे भौमे न रिक्तातिथौ नेत्रेमास्यथ वाग्निभास्ति धनुषीस्त्रीमीनयोश्च स्थिरे लग्ने पुंसवनं नयेवशुभदं सीमंकर्माष्टमे

टीका॥ मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ हस्त श्रवणा पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिर और रवि भौम ये वार और रिक्ता तिथि ये वर्जनीयहैं गर्भाधान होने पर्यंत दूसरे अथवा तीसरे मास और कन्या धन मीन ये स्थिर लग्न ये पुंसवन कर्म को कहे हैं और इन्हीं लग्नों में सीमंत कर्म करना अष्टम मास में वार फलम् ॥२॥

मृत्युश्चसौरेर्लग्न हानिरिंदोःप्रज्ञास्मृतिःपुंस

वेगुरुभस्य ॥ काकीच वंध्याभवतीरवि
केस्त्रीपुत्रलाभोरविजीवभौमे ॥१॥

टीका॥शनिवार को पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु-चंद्रवार को शरीर ना
श-बुध को पुत्र नाश-शुक्र को काक वंध्या-रवि जीव भौम इन
में पुत्र लाभ-परंतु चंद्रमा शेष सोम दुष्ट योगादि वर्जनीय है कहे
जो नक्षत्र तिन में अरु शुभ दिन में पुंसवन कहिये जिस मुहूर्त्त में
गर्भ की स्थिति कही उसी में अनवलोमन कर्म भी युक्त है ॥ १॥

अन्यमतसे

चतुर्थे षष्ठमे मासे भाजि सौरेण गर्भेप्रथमंविधेयम्।
सीमंत कर्म द्विज भामिनीनां मासेष्टमेविष्णुबलिंचकुर्यात्

टीका॥प्रथम गर्भ धारण होने से चौथे छठे आठ में ऐसे समयों
र मासों में आठ मास पर्यंत स्त्रियों का सीमंत कर्म और
विष्णु बलि करना उचित है ॥ २॥

सीमंते तिथ्यहस्तादितिहरिशशिभत्यो
ष्णविद्धान्नरिक्ष्या॥पक्षच्छिद्राच रिक्तापित्
तिथिमपहायापराःसुःप्रशस्ताः॥१॥ ५

टीका॥सीमंत कर्म में पुष्य हस्त पुनर्वसु श्रवण मृगशिर रेवती
रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभ हैं और पक्षछिद्र तथा रिक्ता
तिथि को छोड़ि कें शेष तिथि शुभ जानिये ॥१॥

पक्षछिद्रा तिथि

चतुर्दशीचतुर्थीच अष्टमीनवमीतथा ॥
षष्ठीचद्वादशीचैव पक्षछिद्राह्वयास्मृताः
कुमारेतास्तिथिषुवर्जनीयाश्चनाडिकाः
भूताश्चमनु तत्वांकदण्डाशेषास्तुशोभनाः२

टीका॥चतुर्दशी की प्रथम १४ चौदह घडी और चौथकी ८ घड़ी
अष्टमी की १४ घरी नवमी की २४ घड़ी षष्ठी की ६ घड़ी द्वादशी
की १० घड़ी ये वर्जनीय हैं शेष शुभ हैं ॥ २॥ २॥

गर्भिणी के धर्म

भूम्यांचैवोच्चनीचायामारोहणावरोहणे॥नदीसंतर
णंचैवशाकटारोहणंतथा॥उग्रौषधंतथाक्षारंमैथुनं
भारवाहनं॥छत्तेपुंसवनेचैवगर्भिणी॥परिवर्जयेत्१

टीका॥पुंसवन कर्म करे पीछे गर्भिणी स्त्री को ऊंचे नीचे उतार ना चढाना भाग कर चलना नदी तैरना गाढी पर बैठ कर चल ना तीक्ष्ण औषधी तथा क्षार आदि खाना मैथुन करना बोझा उठाना ये कर्म उचित नही हैं सो वर्जित हैं ॥ १॥

गर्भिणीकाप्रश्न

नामाक्षराणि त्रिगुणी कृतानिलुरंग देशेनि
थिभिश्रितानि॥अष्टोद्धृतेलब्धभवेच्चशून्ये
षंसमेचकन्याविषमेचपुत्रः॥ २॥ ५

टीका॥गर्भिणी के नाम के अक्षर तिगुने करे जिसमें चोरा के ना म के अक्षर और देश के अक्षर मिलावे और वर्त्तमान तिथि मि लावे आठ का भाग दे शेष अंक बचे सम तो कन्या का जन्म और विषम अंक बचे तो पुत्र उत्पन्न होय॥ १॥

प्रसूता के स्थान प्रवेश के नक्षत्र

रोहिणीमृगंरेवतीस्वातिवारुणायोरपि॥पुनर्वसौपु
ष्यहस्तधनिष्ठात्रयंत्रासुच॥मैत्रेन्द्राग्नेयाश्विन्यांस्व
निकागारवेशनं॥प्रसूतिसंभवेकालेसद्यएवप्रवेशयेत्॥

टीका॥रोहिणी मृगशिर रेवती स्वाति शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त धनिष्ठा तीनों उत्तरा अनुराधा चित्रा अश्विनी यह नक्ष त्र प्रसूति का भवन के प्रवेश में कहे हैं प्रसूति संभव के सम यमें यह नक्षत्र विचार तत्काल प्रवेश करे॥ १॥

प्रसूति समय का प्रश्न

मीनेमेषेस्त्रियोज्ञेयाचतस्रोवृषकुंभयोः॥४
तुलाकन्यकयोःसप्तचाराणाव्याधनकर्कयोः१

अन्यलग्नेभवंलिख्वा एवं ज्ञेयं विचक्षणैः।
यथाऽऽदर्शआश्रय्याभौमेखड्गभंगता
रविस्थानेभवेद्दीपःशनिस्थानेतुनालकम

टीका॥मीन अथवा मेष में प्रसव होय तो उस समय में स्त्री दो जानिये और वृष कुंभ में प्रसव होय तो चार स्त्री जानिये तुलाकन्या होय तो सात स्त्री जानिये धन कर्क होय तो पांच स्त्रीजानिये पोष लग्नों में तीन स्त्री जानिये-जन्म कुंडली के ग्रहोंकीस्थितिसे जिस दर्पण में राड होय उस दर्पण में छुरया का जानना जोलग्न में भंग ल होय तो खड्ग का अंग भंग कहना जिस दर्पण में सूर्य होय उसी दर्पण में दीपक जानिये जिस दर्पण में शनि होय उसीदर्पण में बाल क का नाल जानिये वा लोहा जानिये ॥१॥

तिथिगंडांत

पूर्णिमंवास्ययोरन्त्यघटिकासंधिनाडिका
गंडांतमृत्युदंजन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥२॥

टी०॥पूर्णिमा के अंत में घटिका प्रतिपदा के आदिकीघटी और ऐसे ही दोनों की संधि इस क्रम से पंचमी षष्ठी दशमीएकादशी इन की संधिकी दोदोघटी शुभकर्ममें वर्जनीयहैं इनकोगंडांतकहतेहैं १

लग्न गंडांत

कुलीरसिंहयोःकीटचापयोमीनमेषयोः॥
गंडांतमंतरालंस्याद् घटिकार्धं मृतिप्रदम् १

टीका॥कर्क सिंह इन दोनों की आधी घरी धन मीन इनकीमेष इन की संधिमें मृत्यु प्रद जानिये ॥१॥

नक्षत्र गंडांत

पौष्णाश्विन्योःसर्पिपित्र्ययोर्योश्चयच्च ज्यैष्ठ
मूलयोरंतरालमानिगंडांतस्याच्चनाडिके
हियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥१॥

टीका॥रेवती अश्विनी इनकोमिलानेसे आश्लेषा मघा

हूनवे। ४ घडी यह गंडांत की है तिथि गंड भगंदलाख्य गंड ये त्रिविध गंडांत जानिये माता विचाह जन्म काल इन में वर्जित है ॥२॥

गंडांत शुभाशुभफल

अश्विनी मघा मूलानां पूर्वार्द्धे वाध्यते पिता।
पूषादित्यं च पश्चार्द्धे जननी चाश्यते शिशोः॥
सर्वेषांगंड जातानां परित्यागो विधीयते॥
वर्जयेद्दर्शनं षण्मासंतच्चयाऽभ्यासिकंभवेत्॥१

टीका॥ अश्विनी मघा मूल इन के पूर्वार्द्ध में जन्म होय तो पिता को अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन के उत्तरार्द्ध में जन्म होय तो माता को अशुभ और गंडांत में जन्म होय तो बालक को त्याग करना अथवा छः मास तक न देखना ॥१॥

कृष्णचतुर्दशीजन्मफल

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यां प्रसूतेःषड्विधंफलं॥चतुर्दशीच षड्भागांकुर्यादादौशुभंस्मृतम्॥द्वितीयेपितरंहंतितृतीये मातरंतथा॥चतुर्थेमातुलंहंतिपंचमेवंशनाशनं षष्ठेच धनहानिःस्यादात्मानोवंशनाशनम्॥२॥

टीका॥ कृष्ण चतुर्दशी के छः खंड दश दश घडी के होते हैं पहले खंडमें जन्म होय तो शुभहै दूसरे खंडमें पिता को अशुभ तीसरे खंड में माता को चौथे में मामा को अशुभ पांचवे खंड में वंश नाशन छठे में धनहानि करे ॥१॥२॥

अमावास्या केजन्मका फल

श्वानीवाल्यांप्रसूताश्वदासीभार्यापशुस्तथा॥गजाश्वमहिषीचैव पुत्रस्यापि श्रियंहरेत्॥कुहूप्रसूतिर्मित्यर्थंसर्वदोषकरीस्मृता॥यस्यप्रसूतिरेतेषांतस्यायुर्धनंनाशनं॥सर्वगंडंसमस्तंचदोषंतुप्रबलोभवेत्॥१

टीका॥ चतुर्दशी युक्त अमावास्या को दासी अथवा भार्या गाय घोडी घोडा भैंसा जो इन में प्रसूती होय तो इंदु की भी संपति

हरसे और अमावास्या में केवल जन्म होय तो बहुत से दोष लगें और जिस के इन में प्रसूति होय तो उस की आयु धन का नाश होय। और गंडांत में प्रसूति होय तो बहुत से दोष जानिये॥ २॥

दिन क्षयादि फलं

दिन क्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ॥ मूलेगंडेतिगंडेच परिघे यमघंटके॥ कालगंडे मृत्यु योगे। दग्ध योगे सुदारुणे॥ तस्मिन गंडे दिने प्राप्ते प्रसूति र्यदि जायते॥ अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुता सती

टीका॥ दिनक्षय व्यतीपात व्याघात विष्टि वैधृति गंड मूल अति गंड परिघ यमघंट कालगंड मृत्यु योग दग्धयोग दारुण योग इनमें कन्या होय तो बड़ा पापी और प्रसूता स्त्री को भी पाप युक्त जानिये॥ २॥

ज्येष्ठा नक्षत्र के जन्म का फल

ज्येष्ठा दौ जनने माता द्वितीये जनने पिता॥ तृतीये जनने भ्राता स्वयं माता चतुर्थके॥ आत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्र क्षयो भवेत्॥ सप्तमे चोभय कुलं ज्येष्ठ भ्रा तरमष्टमे॥ नवमे श्वसुरं हंति सर्वहानि र्दशांशकम्॥ १

टीका॥ ज्येष्ठा नक्षत्र में जिस का जन्म होय तो उस नक्षत्र की छः छः घडियों का भाग कर फल जानना पहली छः घरी में माता को अशुभ दूसरी छः घरी पिता को तीसरी छः घडी मामा को चौथी माता को पांचवीं बालक को छठी वंश गोत्र को सातवीं पिता को आठवीं बड़े भाई को नवीं सुसुर को दशमी सब को बुरी है॥ १॥ २॥

मूल नक्षत्र जन्म फलं

मूलं स्तंभं च शारवा पत्रं पुष्पं फलं शिरवा। वेदाश्रमु नयश्चैव दिशाश्च वसवस्तथा। नंदा बाण रसारुद्रा मूलभे दाः प्रकीर्तिताः॥ मूले मूल विनाशाय स्तंभे हानिर्धनस्य

यः॥ सन्धि भ्रातृ विनाशाय शारवा मातुर्विनाशकृत्। पुत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्पे च नृप वल्लभः॥ ३॥

फलेषुलभते राज्यंश्लिष्वायामल्पजीवितं ॥

टीका॥मूल नक्षत्र की वृक्ष कल्पना करते हैं तिस की ६० घरी इस भांति जानना-पहली ४ घरी मूल की इन मे जन्म होय तो नाश करे दूसरी सात घड़ी स्तंभ की तिस में जन्म होय तो हानि करे-तीसरी १० घड़ी त्वचा की तिस में जन्म होय तो भ्राता को अशुभ है-चौथी ८ घड़ी शाखा की तिस में माता के अशुभ-पांचवीं ८ घड़ी पत्र की तिस में पितृवर्ग नाश करे-छठी ५ घड़ी पुष्प की तिस में राजा का मंत्री-सातवीं ६ घरी फल की तिस में राज्य प्राप्ति करे-आठवीं ११ घरी श्लिष्टा की तिस में बालक अल्पायु जानिये ऐसे ६० घरी का विचार जानिये ॥१॥

जन्म समय में मूल किस लोक में सो जानना।

वृषादि सिंहेषु घटेच मूलेदि विस्थितंयुग्मतुलांगनात्य॥
पातालगंमेष धनुःकुलीरनक्रेषु मर्त्यंष्वलि संस्मरंति।१।

टीका॥वृष सिंह वृश्चिक कुंभ इन में जन्म होय तो स्वर्ग में मूल जानिये तिस का फल राज्य प्राप्ति करावे-मिथुन तुला कन्या मीन इनमें जन्म होय तो पाताल में मूल जानिये तिस का फल धन प्राप्ति करे-मेष धन कर्क मकर इनमें जन्म होय तो मृत्युलोक में मूल जानिये तिस का फल कुटुंब नाश करे ॥२॥

श्लेषानक्षत्र कानरकारचक्रम्

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगंचबाहुहृज्जानुगुह्यपदमि
त्यहिदेहभागः॥वाणाद्रिनेत्रद्रुनभुक्मुनिनागरुद्र
षण्मदंपंचधिरसःक्रमशश्लुनाड्यः॥राज्यंपित्तक्षयो
मातृनाशःकामक्रियारतिः॥पित्तभक्तोबलीस्वघ्नं।
त्यागीभोगीधनीक्रमात्॥१॥२॥५॥५

टीका॥श्लेषा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में जन्म मस्तक की जिसमें राज्यप्राप्ति-दूसरी ७ घड़ी मुख की तिस मे पिता को अशुभ-तीसरी २ घड़ी माता को अशुभ-चौथी ३ घड़ी ग्रीवा की परस्त्रीरत-पांचवीं ४ घड़ी कंधों की पित्तभक्त-छठें ९ घरी भुजा की बली कहना-सातवें ११ घड़ी

हृदयकी तिसमें आत्म घाती - आठवीं ६ घरी जानु की तिसमें त्यागी नवमी ९ घरी गुप्त की भोगी दशमी ५ घरी पांव की धन वान जानना जिस विभाग में जन्म होय तिस विभाग के अनुसार फल जानना ॥

अथ जन्म काल में जैसे ग्रह परे होंय तिस का फल ॥

तनुस्थान ॥ लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेंग पीडा मृत्यो सुतो वितनुते रुधिरप्रकोपं ॥ छायासुतः प्रकुरुतेवदनेदुःखभाजं जीवेंदुभार्गवबुधाः सुखकांतिदास्युः २ ॥ धनस्थान ॥ दुःखाव हापन विनाशकरा प्रदिष्टा वित्तेस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः चंद्रोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवा नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थः २ सहज स्थान ॥ भानुः करोति विरुजं रजनीकरोपि कीर्त्तीयुतं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपं ॥ ऋक्षेंदुबुधः सुधिषणांसुवि नीतवेषं स्त्रीणां प्रियंगुरुकवीरविजस्तृतीये ३ सुहृत्स्थान ॥ आदित्यभौमशनयः सुखवर्जितांगं कुर्वंतिजन्मनिनरं सुचिरंचतुर्थे सोमोबुधः सुरगुरुर्भृगुनंदनोवा सौख्यान्वितंचनृपकर्मरतं प्रधानं ४ सुतस्थान ॥ पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतंबुधश्चस्वल्पात्मजं निधनतनुजावपुत्रं ॥ शुक्रेंदुदेवगुरुवः सुतधामसंस्थाः कुर्वंतिपुत्रबहुलं सुखिनंसरूपम् ५ रिपुस्थान ॥ मार्तंडभूमितनुयोहतशत्रुपक्षं पंगुर्नरंरिपुगृहेष्यति पूजनीयं ॥ काव्येंदुजौमतिविहीनमनल्परोगं जीवःकरोतिविकलेमरणं शशांकः ६ जायास्थान ॥ निर्मांसभौमरविजाः किलसप्तमस्थाजायांकुकर्मनिरतांननुसंततिंच ॥ जीवेंदुभार्गवबुधाबहुपुत्रयुक्तां रूपान्वितांजनमनोहररूपशीलाम् ७ मृत्युस्थान ॥ सर्वेग्रहादिनकरप्रमुखानितांतं मृत्युस्थितानिननुते किलदुष्टबुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिं सौख्येविहीनमतिरोगगरीः रुपतम् ॥ ८ ॥ धर्मस्थान ॥ धर्मस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वंतिधर्मरहितं विमतिंकुशीलम् ॥ चन्द्रोबुधोभृगुसुतस्मरराजमंत्री धर्मक्रियाकनिरतंकुरुतेमनुष्यं

स्थान ॥ ६ ॥ कर्मस्थान ॥ आदित्य भौम स्थानयः किल कर्म सं
स्थाः कुर्युर्नरं वद्ध कर्मरतं कुपुत्रम् ॥ चंद्रः सुकीर्ति सुश्री
नावद्ध चित्तयुक्तं रूपान्वितं बुधगुरं शुभकर्म भाजम् ॥ १०
लाभस्थान ॥ लाभस्थितो दिनकरो नृपलाभयुक्त नारा प
तिर्वद्ध धनं क्षितिनिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेक सुभगं च
धनायुषीज्यः शुक्रः करोति सगुणं रविजः सुकीर्तिम् ॥
११ ॥ व्ययस्थान ॥ सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशीलं का
णं शशी क्षितिसुतो वद्ध पापभाजम् ॥ चंद्रांगजो गतधनं
विषणं कृशांगं शुक्रो वद्ध व्ययकरं रविजः सुतीव्रम् १२
राहु केतु फलं सर्वं मंदवत्कथितं बुधैः ॥ इति जातके ॥ ॥
टीका ॥ जन्म काल में जन्म कुंडली पुरुष की में जो ग्रह परे तिनका
फल १२ घरन में क्रम से इस कोष्टक में पृथक् पृथक् जानना और
राहु केतु का फल शनिश्चर के फल के तुल्य फल जानना ॥

जन्मकालमेंमृत्युकारकग्रह

चंद्रोष्टमंच धरणी सुतसप्तमंच राहुर्नवंच शनि
र्जन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तु पंचभृगुषष्ठबुधः ॥
अनर्थजातो न जीवति नरः भवंति सन्तः ॥ १ ॥

(टीका)

जन्म लग्न में चंद्रमा अष्टम में भौम सप्तम में राहु नवम में शनि ९ लग्न
में गुरु १ छठें शुक्र चौथे बुध ऐसे ग्रह जिस के पडे होंय तो मृत्यु पावैं १

सं॰ स्था॰	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श॰ रा॰ के
१ तन	देह पीडा	कांति सुखं	रक्त कोप	कांति सुखं	कांति सुख	कांति सुख	अतिदुख स्वराय
२ धने	अतिदुख धननाश	संपतिकी वद्धप्राप्ति	दुख धन नाशक	नानाप्रका रकेदुःख	नानाप्रका संतान श॰	नानाप्रका संतानसुख	अतिदुख धननाश
३ धैर्य	निरोगी	कीर्ति जागा	शौर्य शुक्र	सद्बुद्धि	सुबुद्धि	नानाविध धान्य	सुभोक्ते रिय

संस्था	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	श.रा.के
४ सुहृत्	पीडा वहु कारक	सुखभोग	पीडा कारक	सुखभोग	सुखभोग	सुखभोग	पीडा कारक
५ पुत्र	रोगपुत्र चिंता	वहुपुत्र	संतान रहित	अल्प पुत्र	वहुपुत्र	वहुपुत्र कन्या	संतति विलंव
६ शत्रु	शत्रुनाश क	दुःखभर शातुल्य	शत्रु ना शः	बुद्धि हीन	शरीर विकल	बुद्धिही न	शत्रुगृह पूज्य
७ जया	स्त्रीदुखा संतान	रूपवती स्त्री	स्त्रीदुखा	स्त्रीरूपवा न्वहुपुत्र	मनहरण सुखभोग	सुख	दुष्ट स्त्री पुत्रयो.
८ मृत्यु	स्थान घाती	सव पीडा	गृहों का सुख राह	फलएत रोगी	कसमभ ऐसा	दुष्टखल जा.	विघ्नान नासव.
९ धर्म	अधर्मी दुष्टशी.	धार्मिक होय	दुष्ट धर्म रहित	धर्म में प्रीति	धर्मेती र्थ	धर्म प्रीति	दुष्ट बुद्धी
१० कर्म	दुष्ट पुत्र	कीर्त वान्	कुल दीपक	कीर्ति वान्	शुभ कर्मी	संपति वान्	दुष्ट स्वभाव
११ आय	राजसी कर्म	वहु लाभः	पृथ्वी लाभः	विवेक युक्तः	आयु वृद्धिः	गुणवान् पुत्र	कीर्ति वान्
१२ व्यय	दुष्ट खर्च	नेत्र पीडा	पापी रोग	धन हीन	कृपता शरीर	व्याधि युक्तः	सत खर्च मे प्रीति

जन्मलग्नमें स्त्रीके मृत्युकारक ग्रह ॥

षष्ठेचभवने भौमो राहुःसप्तम संभवः ।
अष्टमेच यदा सौरिस्तस्यभार्यान जीवति १

टीका ॥ जन्म लग्न से छठ मे स्थान भौम राहु और सातवें हो स्थानि आठवें स्थान पड़े तो उसकी भार्या न जीवे ॥ यह वचन पुरुष जातक में कहा है ॥ २ ॥

पराक्रमीअपराक्रमीग्रह

मूर्तौशुक्रबुधोयस्यकेंद्रेचैवबृहस्पतिः ॥

दशमेंगारकोयस्यसलेयःकुलदीपकः१

टी०॥लग्न में बुध शुक्र हों केंद्र में १।४।७।१०बृहस्पति हो मंगल दश में होय तो उस बालक को पराक्रमी और कुलदीपक जानियें॥१॥

नवशुक्रोबुधोनैवनास्तिकेन्द्रेबृहस्पतिः
दशमेऽङ्गारकोनैवसज्जातःकिंकरिष्यति

टी०॥जिस बालक को लग्न में बुध शुक्र न होंय केन्द्र में बृहस्पति नहो दशमें मंगल न हों तो उस बालक का जन्म वृथा है

जातिभ्रंशकारकयोग

धनस्थानेयदासौरिःसैंहिकेयोपरालजः
शुक्रेगुरुःसप्तमेचन्द्रसौरिचंद्रकोबुध
पुत्रेवापिवेश्यासुतसदारतिः।अग्निर्विशति
मेवर्षेम्लेच्छोभवतिनान्यथा २

टी० जिसके धन २ स्थान में शनि राहु मंगल अरु सप्तम स्थान में गुरु शुक्र अष्टम स्थान में सूर्य चंद्रमा ऐसे ग्रह होंतो बालक को जातिभ्रंश कहना २० वर्षकी अवस्था जानियें॥

माता पिता के नाशक ग्रह

षष्ठेचद्वादशेयदा पापग्रहो भवेत्
तदा मातृभयंविद्याच्चतुर्थदशमेपितः२॥

टी० जो छठे और बारहे स्थान में पापग्रह होय तो माता को अशुभ चौथे दशमें पापग्रह होय तो पिता को अशुभ जानो॥ मृत्युकारक

अर्कीराहुःकुजःसौरिर्लग्नतिष्ठतिपंचमे
पितरंमातरंहंतिभ्रातरंस्वपुत्रमात्मन

टी० जो सू०रा०मं०श०ये लग्न से पंचम स्थान में पडे होंतो क्रम से से पिता राहु से माता भौम से भ्राता शनि से अपने बालक को ३

लग्नस्थानेयदासौरिःषष्ठेभवतिचंद्रमा
कुजस्तुसप्तमस्थानेपितातस्यनजीवति२

टी० जिस बालक के जन्म लग्न में शनि छठे स्थान चंद्रमा सातमे मंगल होय तो पिता नजीवे॥

पातालस्थे यदा राहु स्त्रेन्दुः षष्ठाष्टमेपि च
पापदृष्टोपि शेषेण सद्यः प्राणहरः शिशोः

टी०॥जन्मलग्न से सातवें राहु और छठे आठवें चंद्रमा हो ग्रह पाप दृष्टि से दे खेते होंय तो बालक की मृत्यु होय अथवा होनेही लग्न में राहु होय चंद्रमा छठे होंय पाप ग्रह की दृष्टि होय तो मृत्यु जानियें ॥१॥

जन्मलग्नेयदा भौमश्चाष्टमेचबृहस्पतिः
वर्षेचद्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शंकरः१

टी०॥जन्म लग्न में मंगल होय आठमें स्थान में बृहस्पति होय पाप ग्रह की दृष्टि होय तो बारह वर्ष में मृत्यु जानियें॥१॥

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः
वर्षेचद्वादशे मृत्युर्दैवोवैरक्षितायदि।२

जो शनि के घर में सूर्य होय और सूर्य के घरमें शनि होय तो बारह वर्ष में मृत्यु जानियें ॥

षष्ठाष्टमस्तथा सूर्योजन्मकालेयदा बुधः
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः३

में छठे आठवें जो बुध हों तो चौथे वर्ष मृत्यु पावे जो शं॰स॰ तोभी ३॥

भौमक्षे यदा जीवः षष्ठाष्टासुच चंद्रमाः
वर्षेऽष्टमेपि मृत्युर्वैईश्वरो रक्षिता यदि १

ल के घर में बृहस्पति हो और छठे आठवें चंद्रमा हो कोई ग्रह दे-
हो तो ईश्वर रक्षित बालक भी ८ वर्ष में मृत्यु होवे ॥२॥

दृश्यमोपि यदा राहुर्जन्मलग्नेयदा भवेत
वर्षेतुषोडशेज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्यच ॥

नग्न से सातवें राहु होंय अथवा लग्नमें ही होतो १६ वर्ष में मृत्यु

ग्रहों की दृष्टि

एकदृष्टिर्द्वयेत्रीये द्विपादृष्टिर्नवपंचमे।
त्रिपाद दृष्टिश्चतुरष्टकेच संपूर्ण दृष्टिः समसप्तकेच
शनिस्त्वेकादशे पूर्णादृष्टि जीवस्य कोणके

बुधैर्ज्ञेया पूर्णादृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके।१।

टी० जन्म लग्न से दशमे तीसरे स्थानजौन सेग्रह होंय वेएक पाद दृष्टि सेजन्मलग्न को देखते हैं इसी क्रम से ८वें ५वें स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टि से देखते हैं और चौथे आठवें स्थान जो ग्रह पडे होंय तो त्रिपाद दृष्टि से देखते हैं और सातवें स्थान में पूर्ण दृष्टि से चार चरण जानिये- और शनि एकादश वा तीसरे होंय तो पूर्ण दृष्टि लग्न को देखनाहै और पांचवें ८ वें गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता है और चौथे आठवें मंगल पूर्ण दृष्टि से देखनाहै ॥१॥

ग्रहोंका उच्चनीचत्व

रविर्मेषे तुले नीचो वृषे चंद्रस्तु वृश्चिके॥ भौमश्च मकरे कर्के च स्त्रियां सौम्येऽङ्गनेतथा॥ गुरुः कर्के च मकरे च मीन कन्ये सितस्यच॥ मंदस्तुलायां मेषेच कन्याराङ्गृहस्यच राहुर्युग्मेतुचापेचतथोक्तंकुजं फलम्। प्रोक्तं ग्रहाणामुच्चत्वंनीचत्वंच क्रमादुबुधैः॥

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	रा	सू	के	सू
उच्च	मेष	वृष	मकर	कंन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथु	धन	कंन्या	मि·	मीन	धन
नीच	तुला	वृश्चि	कर्क	मी·	मी·	कं·	मे·	ध·	मि	०	०	मी·	मिथुन

जन्मलग्न का फल

मेषेदैन्यमुपैतिगर्वितवृषोनानामतिर्मिन्मथे सूरःकर्कचके धतीचवनयेकन्याचमायान्विता सत्यंचैवतुलेत्वलौमलिनतापापान्वितंवैधनु र्मूर्तौयंमकरेघटेत्वतुरलामीनेत्वधीरामतिः १

टी० मेष में जन्म होय तो हीन वृष में गर्विता मिथुन में नाना बुद्धि कर्क में शूरता सिंह में स्थिरता कन्या में असत्य वादी तुला में सत्यवादी वृश्चिक में मलीन धन में पापी मकर में मूर्ख कुंभ में चतुर मीन मीन में धीर वीर १॥

स्त्रीजातक

तनुस्थानेमूर्तौकरोतिविधवांदिनकृत्कुज[illegible]

र्विनष्टतनयांरविजोदरिद्रां। शुक्रःशशांकतनयश्चगुरू
असाध्यीमाणःस्वयंचकुरुतेचचशत्रवीशः।२।धनस्थान
कुंजेनिभास्करशशीनेअररंद्रभौमादारिद्र्यदुःखमतुलंनि
यतंद्वितीये।वित्तेस्त्रीमविधवांगुरुःशुक्रसौम्यानारींश्र
भूतनयांकुरुतेशशांकः।३।सहजस्थानेसूर्येन्दुभौमगु
रुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्यस्त्रियंकरसुतांधनभागिनींच।
सत्यंदिवाकरसुतःकुरुतेधनाढ्यांलक्ष्मीहरातिनियतंकि
लसौंहिकेयः।४।सुहृत्स्थानेस्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुतेचतुर्थेदौ
र्भाग्यंशुक्रकिरणांकुरुतेशशीनेचरंद्रेविनष्टतनयांक्षितिजो
ल्पबीजांसौम्यान्वितांभृगुसुरेज्यवधास्त्रकुर्युः।५।सुतस्था
नेनष्टात्मजांरविकुजौखलुपंचमस्थौचंद्रात्मजोवद्धसु
तांगुरुभार्गवौचनरंद्रदातिमरणंरविजस्तुरोगंकन्या
प्रसूतिनिरतांकुरुतेशशांकः।६।रिपुस्थानेषष्ठस्थितो
ऽर्कनिदिवाकरःरंद्रभौमाजीवस्तथावद्धसुतांधनभागि
नींच।चंद्रःकरोतिविधवामुशनादरिद्रांवेश्याशशांकन
यःकलहप्रियांच।७।जायास्थानेसौम्यगुरुजीवबुधरंद्रःखौ
शुक्रारबुःप्रस्तयमरणंखलुसप्तमस्थाः।वैधव्यबंधन
भयंक्षयविन्नाशंव्याधिप्रवासमरणंनिधनंक्रमेण।८।
मृत्युस्थानेस्थानेवभेगुरुबुधौनिधनेवियोगंमृत्युंशशी
भृगुसुतश्चनयैवरंद्रः।सूर्यःकरोतिविधवांधननीकुज
श्चसूर्यात्मजोवद्धसुतांधनिवल्लभांच।९।धर्म।धर्मस्थितभृगु
दिवाकरभूमिपुत्रजीवाःसुधर्मनिरतांशशिजःसुभोगां।रंद्र
श्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यानारीप्रसूततनयांकुरुतेशशां
कः१०।कर्म।रंद्रनभस्थलगतेविधवांकरोतिपापेक्षितेन
रकरश्चशनैश्चरश्चमृत्युंकुजोऽर्थरहितांकुटिलांचचंद्रःशेषग्र
हाधनवतीवद्धवल्लभांच।११।आय।आयुरविर्वद्धसुतांधनी
चंद्रःसुचान्वितांस्त्रिनिसुतोरविजोधनाढ्यांआयुष्मतीसु

रगुरुर्मृगुजः सुपुत्रो राहुः करोति सुभगां सुखनीं बुधश्च ११ ओ
नव्ययवती दिनकृद्रिद्रांवंध्यांकुजः परतां कुदिलांच राहुः॥ सा
तिलेन्यधिजा बहुपुत्रपौत्रा युक्तांविधुः प्रकरुते व्ययगोदिलांधाम् १२

स्थान	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्प.	शुक्र	शनि	राहु केतु
१तन	विधवा	आयुना.	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रनी	पुत्रनाश
२धन	दुःखी	बहुपुत्र	दरि.दुख	सौभाग्य	संपत्ति	सौ.संप.	दरिद्रनी	दरि.दुखी
३सहज	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	पुत्रधन	लक्ष्मी	लक्ष्मीवान
४सुख	दरिद्रनी	दुर्भगा	अल्पसं.	सुखी	अतिदुखी	अतिदुखी	दुःखभ्र.	पुत्रनाश
५सुत	पुत्रनाश	कंन्यासं	पुत्रनाश	बहुप्राप्ति	बहुफला	पुत्रकष्ट	रोगिनी	मरणभय
६रिपु	धन	विधवा	धनवती	कलह	धन	दरिद्रनी	धनवती	धनवती
७जाया	रोगिनी	प्रवासि.	विधवा	नाशक.	भयबंधन	मृत्युदा	विधवा	वित्तनाश
८मृत्यु	विधवा	मरण	धनवती	स्वजन	वियोग	मरणादि	संतान	मरण विघ्न
९धर्म	धर्म	पुत्रवती	धर्मकार्य	उत्तमभो.	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	बांझ	बांझ
१०कर्म	पापमति	अग्निचा.	चंडाली	धनवती	धनवती	वरश्रेष्ठ	पापमति	विधवा
११लाभ	अतिपुत्र	लक्ष्मी	पुत्रवती	सुखी	आयुवती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२व्यय	खचनी	दिनांध	अग्निचा.	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्चिनी	अग्निचारती

(अथोत्तरो महादशा)

आर्द्रादिपुनर्वसुपुष्य श्लेषा तुरंवेदशा। मघापूर्वोत्तरा
चैत्र चंद्रस्यचदशानथा। हस्तेविशाखा त्रिचाचसानी
भौमदशास्मृताः। ज्येष्ठानुराधामूलेचसौम्यस्यदशा
बुधैः॥ अभिजिच्छ्रवणाः पूषाजमाचैव भगेर्दशाः। धनि
ष्ठा शतताराच पूर्वाभाद्र पदागुरोः। उभाभूमा॥ श्विनीका
लराहोश्चैवदशास्मृताः। कृत्तिकारोहिणी चोक्ता मृग
शुक्रदशानुधैः। एषांभानांक्रमेणैवज्ञेया सूर्यादिका
दशाः। कुजजाअशुभाप्रोक्ता शुभस्यात्सोम्यवेटजा संख्या
काक्रममहादशा॥श्लोकः। सूर्यस्यषट्वर्षाणि चंद्रोदश च
दशैवच १५ भौमस्य वसु वर्षाणि ८ राहुश्चंद्र ७ बुध

सच।मंदस्यदृग्१०वर्षाणिगुरोश्चैकोनविंशति
एहोर्हृदृग्वर्षाणि शुक्रस्यैकत्रिंशति॥१॥

(अष्टोत्तरी महादृग्)

सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष ६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१
आर्द्रापु-नर्वसु-श्लेषा	मघापू-र्वाउत्त रफाल्गु नी	हस्तचि त्रा स्वा-तिविशाख	अनुराधा ज्येष्ठा मूल	पूर्वाषा उ.षा. अभि.श्रव ण	धनिष्ठा शतभि. पूर्वाभा द्रपद	उत्तरा.भा. रेवती.अ. श्वनी भरणी	कृतिका रोहिणी मृगशिर

(अंतर्दृग् लाने का क्रम)

महादृगास्वस्वदृग्वर्षनिघ्नाभक्ताःस्ववाहृ
गणैभिःसमाघ्नाः॥अंतर्दृगास्युर्गगनेचर
गंतदेक भावोहि महादृग्स्यात्॥१॥

री० दृग् के वर्षों से दृग् के वर्षों को गुणाके १०८का भाग देना जो मिले उसे वर्ष जानो फिर बारह गुणा करे २०८का भाग दे मिले सो महीना फिर तीस गुणा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले उसे दिन जानना फिर आठ गुणा करे एक सौ आठ का भाग दे जो मिले सो घडी जानना फिर ६० गुणा करे एकसौ आठ का भाग दे जो मिले सो पल जानना फिर वर्ष मास दिन घडी पलों को सूर्य में संयुक्त करना अंतर्दृग् इसरीति से सबको जानना चाहिये ॥१॥

सूर्य की महादृग् वर्ष ६ - आर्द्रा पुनर्वसो पुष्य श्लेषा इन नक्षत्रोंमें

सूर्यः	चंद्रः	भौमः	बुधः	शनिः	गुरुः	राहुः	शुक्रः
०	०	०	०	०	१	०	१
४	१०	५	११	६	०	८	२
०	०	२०	२०	२०	२०	०	०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

चंद्रमा की दशाके वर्ष १५ मघा पूर्वाफाल्गुनी - उत्तराफाल्गुनी

चंद्रमा	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य
१	१	३	१	२	१	२	०
१	१	४	४	७	८	११	१०
०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

मंगल की दशा के वर्ष ८ हस्त चित्रा स्वाति विशाखा ये नक्षत्र

मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र.
०	१	०	१	०	१	०	१
७	३	८	४	१०	६	५	१
३/	३	२६	२६	२०	२०	२०	१०
२०	२०	४०	४०	०	०	०	०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

बुधकी दशा के वर्ष १७ अनुराधा ज्येष्ठा मूल ये नक्षत्र

बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
१	१	३	१	३	०	२	१
८	६	१२	१०	३/	११	४	३/
३/	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३/
२०	४०	४०	०	०	०	०	२०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

शनि की दशा के वर्ष १० - पूर्वाषाढ उत्तरा षाढ

अभिजित्श्रवणा ये नक्षत्र

शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध
०	१	१	१	०	१	०	१
१७	१	१	११	६	४	८	६
३	३/	२०	२०	२०	२०	२६	२६
२०	२०	०	०	०	०	४०	४०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

गुरुकी दशाके वर्ष १९- धनिष्ठाशतभिषापूर्वाभाद्रपदयेनक्षत्र

गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
३	२	३	१	२	१	२	१
४	१	८	०	७	५	११	८
३	१०	१०	१०	१०	१५	१६	१०
२०	०	०	०	०	५०	४०	२०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

राहुकी दशाके वर्ष १८- उत्तराभाद्रपद रेवती अश्विनी भरणीये

राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
१	२	०	१	१	१	१	२
४	४	८	८	१०	१०	१	१
०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

शुक्रकी दशाके वर्ष २०- कृत्तिका रोहिणी मृगशिरयेनक्षत्र ॥

शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु
४	१	२	१	३	१	३	२
१	२	११	६	३	११	८	५
०	०	०	१०	२०	१०	१०	०
शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

विंशोत्तरीदशा

जयनोनजन्मभंकहृतक्रमसोर्केन्दुकुजागुरूरयः
शनिचंद्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तुदशाधिपास्क्रमात्

टी० अश्विनी से लेके जन्मनक्षत्र तकजो संख्या होय तामें २ घटाय देय फिर ८का भागदें शेषरहें जो सू·चं·मं·रा·बृ·शु·बु·के·शु·ये दशा पति जानो ॥ (दशाका भुक्तभोग्य)

ऋतुद्विगिरयोधृतिर्नृपतिर्धृतिर्मेघहयानस्वा
समाःकृतनोहिमताऽधाद्रिभाजनिभस्थाघटिकाःस
मानाःभभोगोनभक्ताःफलंभक्तपाकस्तदूनादशा

कैसे दूनादशा सा भवत् भोग्य संज्ञा ॥

टीका॥ जिस नक्षत्र में जन्म होय उसे पूर्व के नक्षत्र की घडियों को साठ से घटावे शेष रहे जिस में जन्म नक्षत्र की घडी जोडे तो सव नक्षत्र होय और उस में इष्ट जोडे तो गत नक्षत्र होय गत नक्षत्र को दशा के वर्ष से गुणा करे सव नक्षत्र का भाग देवे तो वर्षादिक आवे उन को दशा पति के वर्ष में घटाय दे शेष रहे सो भोग्य दशा जानि ये इसी रीति से सब ग्रहों की दशा जानना चाहिये ॥१॥

कृत्तिकादि क्रमेणैव क्षेयाविंशोत्तरी दशा
अंतर्दशा युता वर्ष मास वासर वर्तिताः ॥ १

टीका॥ कृतिका नक्षत्र से लेकें भरणी पर्यंत २७ नक्षत्र दशा के पतिओं को क्रम से इस कोष्ठक में जानना चाहिये ॥ १॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
कृ उ उ	रो ह अ	मृ वि ध	आ स्रा यू	पु वि पू	पु ऽनु उ	श्ले ज्ये रे	म मू अ	पू पू भ

दशा से दशा को गुने ३२० का भाग देवो अंतर्दशा के वर्ष पावे फिर १२ से गुणा करे १२० का भाग देवो महीने पावे फिर तीस गुणा करे १२० का भाग दे दिन पावे इसी रीति से अंतर्दशा जानना अंतर्दशा को॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	योगि
० ३ ६	० ६ ०	० ४ ६	० १० २४	० ९ १८	० १९ २३	० १७ ६	० ७ ६	० २ ०	० ९ ०

चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	योगि
० २०	० ७	१ ६	१ ४	२ ७	२ ५	० ७	१ ८	० ६	० ०

मंगल	राहु	दृह-	शुलि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्रमा	योगिनी
०	१	०	२	०	०	१	०	०	७
४	०	११	[illegible]	११	४	[illegible]	४	७	०
२७	२८	६६	[illegible]	२७	२७	०	६६	०	०

रा.	ह.	शु.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	यो
१	२	२	१	१	२	०	१	१	१८
३	४	११	६	०	०	११	०	०	०
१६	२४	६६	१६	१८	०	२४	०	१८	०

बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ह.	शु.	यो.
२	१	१	०	१	१	२	३	२	१८
४	११	०	११	७	०	०	६	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ह.	शु.	यो.
२	१	२	२	३	३	४	४	३	२०
०	११	२	३	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	ह.	शु.	बु.	यो.
०	२	२	०	०	१	०	१	२	७
४	०	६	०	४	०	११	६	०	०
२७	०	६६	०	२७	१८	६६	०	०	०

शु	सू.	चं.	मं.	रा.	ह	शु	बु	के.	यो.
२	१	२	२	३	३	४	३	२	२०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

महादशाओरअंतर्दशाकाफल
देशांतरंचनिजबंधुवियोगदुःखंउद्वेगरोगभय
चौरभवाच्चपीडा॥पूर्वस्थितस्यनिखिलस्यध
नस्यनाशोभानोर्दशाजननकालदशाभवंति१
टी०॥देशांतरवासभ्राताकावियोगदुःखमनकाउद्वेगरोगभयचो
रपीडासंचितधनकानाश होयसेरविदशाका फलजानिये॥१॥
हेभारिभूलवरवाहनयानलाभःशत्रुभ्रतापबलवृद्धिपरंपरांच
इष्टान्नदानशयनासनभोजनानिनूनंसदाशशिदशागमनभवंति
टीका॥सुवर्णादिक ऐश्वर्यका और अश्वगजपालकी इत्यादिवा
हनोंकालाभ होय शत्रुकी हार और बलकीवृद्धि और नानाप्रकार
के सरस अन्न दान शयनस्थान उत्तम आसन और भोजनयह सब
चंद्रमाकी दशामें प्राप्ति होती है॥२॥
भूपालचोरभयवन्हिकृताच पीडासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता
चिंताज्वरश्चदुष्कष्टदरिद्रयुक्तःस्यात्सर्वदाकुजदशाननेभवंति१
टीका॥राजाचोर अग्नि से पीडा सर्व अंग रोग सदादुखी और नाना प्र
कारकी चिंताज्वरकष्टदरिद्र ये मंगल की दशामें जानिये॥३॥
दीनोनरोभवतिबुद्धिविहीनचिंतासर्वांगरोगभयदुः
खसुदुःखितत्वाच॥पापानिबंधवधकष्टदरिद्रयुक्तं
राहोर्दशाजननकालदशाभवंति॥४॥५॥६॥
टीका॥मनुष्य बुद्धि हीन और दीन होयचिंताहोय सर्व शरीरको रोग
भयरहे और दुःखबंधनकष्टबहुतदरिद्रतायेराहुकी दशामेंजानिये
राज्याधिकारपरिवर्धितचित्तवृत्तिंधर्मोधिकारपरि
पालनसिद्धिबुद्धिम्॥सद्विग्रहोपिधनधान्यसम्
द्धिनाचस्याद्विवागुरुदशागमनेभवंति॥५॥
टीका॥राज्याधिकार चित्तकी वृत्तिमें वृद्धि धर्ममें नेष्ठा शरीर
की और धनधान्यकी वृद्धि यह गुरुकी दशामें जानिये॥५॥
मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्भिचेचबन्धुव

चनेषचयुद्धवृद्धि॥सिद्धंचकार्यमपियत्नसद्भावि
नष्टंस्यात्सर्वदाशनिदृष्टागमनेभवंति॥६॥

टी०॥झूठावादविवाददूसरेको मारनाबांधनाधनकीहानिमित्रबंध
सेलड़ाईकीवृद्धिसिद्धकार्यकानाशयहशनिदृष्टाकाफलजानिये ६॥

दिव्यांगनाभव्यसंगमकौलिसौख्यंनानाविलास
भूमिलाभमनोभिरामैः॥हेमादिरत्नविभवागमको
शाध्यानंस्यात्सर्वदाबुधदृष्टागमनेभवंति॥७॥

टी०॥सुंदरस्त्रीकासुखऔरसबप्रकारकेभोगविलाससुवर्णऔररत्ना
दिककीप्राप्तिधनसंग्रहईश्वरस्मरणायेबुधकीदृष्टाकाफलजानना७

भार्यावियोगजनितंचशरीरदुःखंद्रव्यस्यहानिस्व
स्थिकरंपरांच॥रोगाग्निबन्धकलहंत्रविदेशगत्व
केतोर्दृष्टेजनन कालदृष्टा भवंति॥८॥

टीका॥स्त्रीवियोगसेशरीरपीडाद्रव्यकीहानिकरेकलह देशां
तरगमन करेयहकेतुकीदृष्टामेंफलजानिये॥८॥

श्रीरामवृद्धिंपरिसर्वशरीरवृद्धिंश्वेतातपत्रधन
धान्यसमाकुलंच॥श्रायुःपुत्रपौत्रसुखं
करांडव्यंचभार्गवदृष्टागमनेभवंति॥९॥

टी०॥वागआदिस्थानकीप्राप्तिशरीरपुष्टिश्वेतछत्रकीप्राप्तिधनधा
न्यकीवृद्धिआयुकीपुत्रपौत्रकीवृद्धिद्रव्यप्राप्तियेशुक्रकीदृष्टाकाफल

योगिनीदृष्टाक्रम

सूर्क्षःपिनाकिनयनैःसंयोज्यवसुभिर्भजेत्॥
योगिन्यृक्षेसमारब्धाशून्यंपतितसंकटा १

टीका॥अश्विनीसेजन्मनक्षत्रकीसंख्यामेंतीनमिलावे आठकाभा
गदेशेषअंकबचेंसोयोगिनीदृष्टाजानिये जोशून्यबचेतोसंकटा
कीदृष्टाजानिये॥१॥ (योगिनीकेनाम)

मंगलापिंगलाधान्याभ्रामरीभद्रिकापिच॥
उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदृशास्मृताः२

एकद्वित्रीणिचेदाश्च पंचषट्सप्तमानिच ॥
अष्टवर्षाणिहिभवेन्मंगलादानुक्रमात २

टीका ॥ मंगला १वर्षकी पिंगला २वर्षकी धान्या ३वर्षकी ४वर्षकी भ्रामरी ५वर्षकी भद्रिका ६वर्षकी उल्का सिद्धा ७वर्षकी संकटा ८वर्षकी ये योगिनी दशा के वर्ष और नाम कहे हैं ॥२॥

अंग	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	योगि
मंगला	१०	४०	६०	१६०	२४०	३६०	४८०	६४०	०
पिंगला	२०	६०	१२०	२००	३००	४२०	५६०	८०	०
धान्या	३०	८०	१५०	२४०	३४०	४८०	७०	१६०	०
भ्रामरी	४०	१००	१८०	२४०	४००	६०	२४०	३४०	०
भद्रिका	५०	१२०	२१०	३२०	५०	१२०	२१०	३२०	०
उल्का	६०	१४०	२४०	४०	१००	१८०	२८०	४००	०
सिद्धा	७०	१६०	३०	८०	१५०	२४०	३५०	४६	०
संकटा	८०	३०	६०	१२०	२००	३००	४२०	५६०	०
योगिनी	३६०	७२०	१०७	२४४०	१८००	२१६०	३५२०	२८८०	०

योगिनी दशा का फल

मंगला मंगलानंदयशोद्रव्यविलासदायिनी ॥ पिंगलानयनरोगव्याधिमानसोदुःखसंभ्रमौ ॥ धान्या धनसुहृद्बंधुरूपसीमंतमीकरी ॥ भ्रामरीजन्मभूमिभ्रमयेत्सर्वतोदिशम् ॥ भद्रिकासुखसंपत्तिविलासवशकारिणी ॥ उल्काऽन्यधनारोग्यहारिणीदुःखकारिणी ॥ सिद्धासाधयतेकार्यं नरणांदेवसुरक्षवेत् ॥ संकटासंकटेव्याधिमरणक्लेशकारिणी ॥ २

टी० मंगला आनंद यश द्रव्य प्राप्ति की करावने हारी और पिंगला रोग की करन हारी धान्या धन सुत की देन हारी भ्रामरी दिशाओं में भ्रमि कराने हारी भद्रिका सुख संपत्ति विलास की करने हारी ॥

उल्कापात द्रव्य हरने वाली राज्य भयकरने वाली सिद्ध कार्यकी सिद्ध करने वाली संकटा व्याधि मरणक्लेश की देनेहारी ॥२॥

वर्षदशाका फल

रविर्दिननवसंख्यःचंद्रमाव्योमवाणो क्षितितनयगजा भ्रवी चंद्रजःषट्शराब्ध॥शनिरस संख्या वाक्षतिर्नाग वाणौर्नयनयुगकराब्धिःसप्तनिःशुक्रसंख्या॥ ३॥ च्च॥जन्मनाविंशतिर्सूर्यैन्तृतीयेदशचंद्रमाः॥चतु र्थेचाष्टभौमेचषष्ठे बुधचतुर्थकं॥सप्तमंदशसौरिस्या न्नवमेचाष्टमेगुरौः॥दशमेराहुविंशत्यात्तदूर्ध्वंतुभृगोर्द शा ३ फलं॥पंथाभोगोनुतापश्चसौख्यंपीडाधनंच मान्॥नाशःशोकश्चसौख्यंचजन्मसूर्यदशाफलम्॥४

टीका॥सूर्यकी १०दिनकीदशाजानिये-चंद्रमाकी ३० दिनकीदशा मंगलकी २८दिनकी-बुधकी ३२दिनकी-शनिकी ३६दिनकी-बृहस्पतिकी ३८ दिनकीदशाजानिये-राहुकी४२दिनकीदशाजा निये-शुक्रकी२०दिनकी दशाजानिये-सूर्यकीदशामें मार्गचले चंद्रमामें भोग प्राप्तिहोय-मंगलकीदशामें रोग शोक झगड़ा बुधकीदशासुखकारक-शनिकीदशा पीड़ाकारक-गुरुकी दशाधनदेनेवाली राजासे मिलाप करावे-राहुकीदशामें ना नाप्रकारके शोच उपजें-शुक्रकीदशामें शुभहोय ॥४॥

(ग्रहोंकी नित्यदशाकाप्रकार)

तिथिवारंचनक्षत्रंनामाक्षरसमन्वितं॥नवभिस्तु हरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते॥रविचंद्रोभौमराहुगुरुर्म न्दकेसितौ॥क्रमेणोक्तदशाज्ञेयाफलंपूर्वोक्तमेवहि

टीका॥गई भई तिथि और वार और नक्षत्र अपने नाम के अक्षर इन सबको जोड़ के इकट्ठा करे और ९ का भागदेशेष जोरहें सो सूर्यादिद शापतिजानिये-दूसीप्रकारनित्यदशाक्रमसेजानिये और वर्षदशा के अल्प फलजानना चाहिये॥

(दूसरामुहूर्त्त)

जन्मतारात्चतुर्गुण्यंतिथिवारसमन्वितं॥नवभिस्तुहरे
द्भागंशेषं दिन दृश्योच्यते॥२॥रविणा शोकसंतापौभृ
गुणांके क्षेम लाभकौ॥भूमिसुते तुमृत्युःस्याद्बुधेप्रज्ञा
विवर्द्धनं॥गुरौ वित्तभृगौ लौख्यं शनौ पीडानसंशयः
राहुणांघात पानोक्त केतौ मृत्युर्दृशाफलम्॥२॥३
टीका॥जन्म नक्षत्र को चौगुना करै और गततिथि वार मिलावे नव
का भागदे १शेष रहे तो सूर्य की दशा जानिये शोक संतापकारक २बचें
तो चंद्रमा की दशा लाभ कारक और ३बचें तो मंगल की दशा मृत्यु
कारक ४बचें तो बुध की दशा बुद्धि वृद्धिकारक ५बचें तो गुरु की
दशा धन की प्राप्ति करे ६बचें तो शुक्र की दशा सुख कारक ७बचें
तो शनि की दशा पीडा कारक है ८शेष रहें तो राहु की दशा घातक है
९बचें तो केतु की दशा मृत्यु कारक फल जानना॥ १।२॥ ३॥

(गोचर प्रकरण ग्रह कितने मास एक २राशि को भोगें हैं)

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासंतुमंगलः॥त्रयोदशगुरु
श्चैवसपादद्वेदिनेशनी॥२॥राहुरष्टादशन्मासान्त्रिंश
न्मासान्शनैश्चरः॥राहुवत्केतुरुक्तंस्तु राशिभोगाःप्रकी
र्तिताः॥३॥फलं॥सूर्यःपंचदिनंशशी त्रिघटिकाभौमो
ऽष्टैवासरंसप्ताहंह्यसनाबुधस्त्रयदिनंमासद्वयंवैगुरोः
षण्मासंरविजस्यैवसप्तनंस्वर्भानु मासद्वयेकेतोश्चैव
तथाफलंपरिमितंज्ञेयंग्रहाणां फलम्॥१॥ ॥ ॥

राशिप्रवेशेसूर्यांशैमध्येशुक्रबृहस्पतिः ॥
राहुश्चंद्रः शनिश्चांतेसौम्यश्चैवसदाशुभम् ३।

टी०॥गोचर ग्रहों के दिनों की संख्या का क्रम लिखते हैं-सूर्य १मास
में एक राशि भोगता है उस में पहले पांच दिन फल देता है-चंद्रमा
सवादो दिन एक राशि भोगता है-अंत में तीन घरी फल देता है-
मंगल डेढ मास एक राशि भोगता है पहले आठ दिन फल देता है-
बुध एक मास एक राशि भोगता है और सब दिन फल देता है-॥

गुरु१३ महीना एक राशि भोगता है तिसका फल मध्यमें दो मास जानिये-शुक्र एक मास एक राशि भोगता है और मध्यमें सात दिन फल देता है- शनि ३० मास एक राशि भोगता है सो अंत के छः महीने फल देता है-राहु केतु १८अठारह महीना एक राशि भोगते हैं- अंत में दो मास फल देते हैं ७२॥

(द्वादशभवनों के नाम फल)

तनुधनसहजसुहृत्पुत्ररिपवश्चजायामृत्युधर्म कर्मव्ययाख्यानिद्वादशभवनानि॥फलम्॥१ सूर्यःस्थानविनाशभयंश्रियंमानहानिंभयदैन्यम्॥चि जयंमार्गपीडांसुहृत्तं हानिंसिद्धिंमातृसुखहानिम्॥२॥ चंद्रोलाभधनंसौख्यंरोगंकार्यंक्षतिंश्रियम्॥श्रियंमृ त्युंनृपभयंसुखंमायव्ययंक्रमात्॥३॥ भौमोरिभीतिं धनलाभमर्थंभयंतथार्थंक्षतिमर्थलाभम्॥धनात्यं शत्रुभयंचपीडांशोकंधनंहानिमनुक्रमेण॥४॥बुध लाभंधनंमध्यभीतिंधनरुजंस्थानभयोचपीडाम्॥ अर्थरुजंसौख्यमथात्मसौख्यंअर्थक्षतिंजन्मगृहात् करोति॥५॥गुरुर्भयंधनंक्लेशंधननाशंसुखंशुभम्॥ मानरोगंसुखंदैन्यंलाभंपीडांचजन्मभात्॥६॥कविः शत्रुनाशंधनंसौख्यमर्थंक्षुत्पित्तरियोःसाध्यंशोक मर्थम्॥हृद्रुक्लाभंविपत्तिंधनाप्तिंधनाप्तिंतनो॥ त्मात्मनोजन्मराशेः॥६॥सर्वनाशंप्राप्तिर्विघ्नता प्तिंविपत्तेधनंशत्रुवृद्धिंक्षुताद्यैःअवृद्धिम्॥श्रियंदो षसंधिंरिपुंद्रव्यशेषंतथाशौर्यनाशंधनंबहुनर्थम् ॥७॥राहुहानिंनयांत्यंधनंवैरंशत्रुश्रियम्॥कलि वसंचदुरितंवरंसौख्यंसुखंक्रमात्॥८॥ केतुःक्रमा द्रुजंवैरंसुखंभीतिंभ्रुवंधनम्॥गतिंगदंदुष्कृतंच शोकंकीर्तिंस्वधातुम्॥९॥इति द्वादशफलम्॥

टीका

नाम	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तन	नाश	अन्न	शुभ	बंधन	भय	शुभ	सर्व	हानि	रोग
धन	भय	धन	धन	धन	धन	धन	वित्त	धन	वैर
सहज	धन	सुख	धन	भीति	क्षेप	सौख्य	धन	धन	सुख
सुहृत्	मान	रोग	भय	धन	धन	धन	शत्रु	वैर	भय
सुत	दैन्य	कार्य	अर्थ	रोग	सुख	पुत्र	सुत	शुचि	शुचि
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थान लाभ	शुचि	पुत्र	धन	लक्ष्मी	धन
जाया	मार्ग	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	रिपु	दोष	कलह	मार्ग
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शुभ	अर्थ	रोग	भय	रिपु	धन	रोग
धर्म	पुण्य	राज	पीडा	रोग	सुख	शोक	धन	पाप	दुष्ट
कर्म	लाभ	लाभ	धन	सौख्य	लाभ	महाब	धन	सौख्य	शोक
आयु	लाभ	लाभ	धन	सौख्य	लाभ	महाब	धन	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानि	खर्च	हानि	नाश	पीडा	महाब	धन	शुचि	शत्रु

(गोचरके ग्रहोंका फल इस चक्रमें देखलें)

जन्मर्क्षेच शशांकेनु पंचकर्माणि वर्जयेत् ॥
यात्रांयुद्धंविवाहंच क्षौरंचगृहवेशनम्।१।

टीका॥जन्म के चंद्रमा में पांच कर्म न करे यात्रा युद्ध विवाह क्षौर गृहप्रवेश यह पांच कर्म वर्जित हैं ॥१॥

अभिषेकेनिषेकेचप्राशनेव्रतबन्धने ॥
पाणिग्रहे शशांकेचचंद्रहास्यागःशुभः१

टी०बारहवें चंद्रमा में यह कर्म करने शुभ हैं राजाभिषेक गर्भजन्म संस्कार अन्न प्राशन यज्ञोपवीत विवाह यात्रा ये कर्म करने शुभहैं

द्वितीयंचनवमेशुक्लेश्लेष्मांशुरुच्यते ॥
अष्टमेद्वादशेकृष्णेचतुर्थेश्लेष उच्यते ॥
शुक्लपक्षेबलीचन्द्रःकृष्णेतारा बलीयसी

टी०॥दूसरा पांचमा नौमा चंद्रमा होय तो शुक्लपक्षमें श्रेष्ठ जानिये

तैसेही कृष्ण पक्ष में आठवां बारहवां चौथा क्षेष जानिय परंतु शुक्ल पक्ष में चंद्रमा का बल कृष्ण पक्ष में तारा का बल जानिये ॥१॥

ये खेचरा गोचरतोयवर्गे दृग्गोचरा ह्याप्यशुभा भवंति
दानादिभातेसुतरांप्रसन्नास्तेषामुनादानविधिब्रवीमि॥२

टीका॥जो ग्रह गोचर में अशुद्ध वर्ग में दृग्गोचर में नेष्ट होय तिस के प्रसन्नता के लिये दान विधि कहते हैं ॥२॥

(वारों के अनुसार दान)

भानुस्तांबूलदानाद्पहरतिहरणंचंदनंवासरोत्थंसोमः
क्षीरान्नाद्दानादवनिवरसुतोभोजनात्पुण्यदानात्॥सौ
म्यःशास्त्रस्यमंत्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवःशुभ्रवस्त्रात्
लक्ष्मीनात्यभीतेदिनकरतनयोब्रह्मणस्तापरेच॥२॥

टीका॥रविवार को तांबूल देना सोमवार को चंदन देना मंगल को भोजन गुड़ धानी बुध को शास्त्रोक्त मंत्र जपकराना गुरु को शिवजी की आराधना वेसन का लड्डू शुक्र को श्वेत वस्त्र खीर भोजन घृतिको तेल लगाना और ब्राह्मण को प्रसन्न करना इंडीत करना ये सब अशुभ फल को दूरिकरि शुभ फल देताहै ॥२॥

(ग्रहों के दान और जप)

माणिक्यंगोधूमसवत्सधेनुःकौरूंभवस्त्रंगुडहेमताम्र
मारक्तकंचंदनमंबुजंचददातिदानंहिरवेःप्रियाय॥१॥
सद्रंशपात्रस्थितमंडलाढ्यंकर्पूरमुक्ताफलशंखशुभ्रम्
श्वेतोमयुक्तंवृषभंचरौप्यंचंद्रायदद्यात्तदुलपूर्णकुंभम्॥२
प्रवालगोधूममसूरिकाभ्रवस्त्रोरुताम्राणिगुडःसुवर्णम्
मारक्तवस्त्रंकरवीरपुष्पंताम्रंचभौमायवदंतिदानम्॥३
मुद्गंचनीलंकिलधौतकांस्यंसुवस्त्रान्यगारुत्मतसर्वपुष्पम्
हासीचदंतोहिरदश्चनूनंवदंतिदानंबिधुनंदनायम्॥४
शर्कराचरजनीतुरंगमःपीतधान्यमपिपीतमम्बरम्।
पुष्करागलवणंसकांचनंपीतयेगुरुवेःप्रदीयताम्॥५

चित्रांबरंशुभ्रतरत्नरंगमंधनुश्चवज्रंजतंसुवर्णं॥ स
नंदुलानुत्तमगंधशुक्लंवस्तिदानंभृगुनंदनाय॥६॥मा
षाश्चतैलंविमलेंदुनीलंनिलाःकुलत्थामहिषीबलो
हंकृष्णाचधेनुःप्रवरंतिलानंदृष्ठायदानंरविनंदनाय ७
गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैलामलकंबलाश्चनि
लाश्चतैलंखलुलोहमिश्रंतर्भानवेदानमिदंवदंति ८
वैडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसकंबलाश्चापिमहीमृगश्च॥
छत्रंचकेतोःपरितोषहेतोःछागस्तदानंकथितंमुनीद्रैः

(ग्रहांकाजप)

रवेःसप्तसहस्राणिचंद्रस्यैकादशोवतु॥भौमेदशस
हस्राणिबुधेचाष्टसहस्रकं॥एकोनविंशतिर्नित्यंजीवशुक्रे
एकादशोवतु॥त्र्योविंशतिमंदेचरहोरष्टादशोवतु॥के
तोःसप्तसहस्राणिजपसंख्याप्रकीर्तिताः॥१०॥१०॥

नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	माणिक	मोती	मूंगा	नीलावै.	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	वैडूर्य
	गेंहूं	चांवल	गेहूं	मूंग	चनाद.	चांवल	तिलतेल	तिलतेल	तिलतेल
	गोवस्त्र	वैलवस्त्र	लालवे.	कांसा	घोडा	गाय	नीलवस्त्र	कं.पात्र	कंचुक
रत्न	रक्तवस्त्र	कपूर	गुड	घृत	पीतव.	रूपा	कुलत्थी	लोहा	कस्तूरी
	सोनां	रूपा	तांबेरू.	मरकत	नमक	घोडा	भैंस	कालाकु	मेंढा
	लालचं	घृत	घृत	कांसी	पुखराज	चंदन	लोहा	घोडा	मृगचर्म
	कमल	सकरा	रक्तवस्त्र	हाथी	सोना	पान	गोदुग्ध	हस्ताक्ष.	छुरी
	मूलस्थ	वस्त्र चं.	रक्तचंदन	वस्त्रयुग्म	घीपात्र	धनुष	नीलम	नीलवस्त्र	सप्तधा
जप	७००००	११०००	१०००	९०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

(ग्रहपीडानिवारणार्थ)

देवब्राह्मणवंदनागुरुवचःसंपादनात्सत्यहंसाभूता
मपिभावणाच्छुतिरवःज्ञेयःकयाकारणात्॥होम।
दध्यरदर्शनात्प्युचिमनोभावाज्जपादानतोनोकुर्व-

तिकदाचिदेवपुरुषस्यैवंग्रहापीडनम् ॥२॥

टीका॥देवता ब्राह्मण इनको आदरपूर्वक नमस्कार करना दिन दिन गुरुके साधुके वचन मानना कथा श्रवण करना होम यज्ञके दर्शन करना और मन को शुद्ध रखना ग्रहों के निमित्त जपदान करना इन बातोंसे सब पीडा दूर होय और शुभ फल प्राप्ति होय ॥ २॥

जातकर्म

जाते पुत्रे पिता कुर्यान्नांदि श्राद्धं विधानतः
जातकर्मततः कुर्यादन्यैरर्त्वभनात्पुरा ॥ १॥

टी०॥पुत्र के उत्पन्न होने पर पिता तत्काल नांदी श्राद्ध विधिपूर्वक करे तिसपीछेजबतक कोई अन्यजातबालक का स्पर्शनकरे उसेप्रथमजात कर्म कहतेहैं ॥१॥

नामकरण

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा-
दित्याख्येषुचनाम कर्मशुभदंयोगेप्रशस्तेतिथौ
रिक्तेहारहिते तथान्यदिवसेशुक्लेतथैकादशे गो
सिंहालिघटेषुस्थिरर्क्षदिवसेजीवेशशांकेपिच ॥१॥

टीका॥पुष्य हस्त चित्रा स्वाति अनुराधा मृगशिर ज्येष्ठा धनिष्ठा तीनों उत्तरा पुनर्वसु येनक्षत्र नाम करणी में शुभहैं और जन्मसे ११ तथा १३ दिन अथवा १६।२०।२१।२७ ये दिवस नाम करणीमें शुभ हैं और वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये लग्न शुभहैं और रवि बुध गुरु शुक्र सोम ये वार शुभ हैं और रिक्ता विनातिथि और दुष्ट योगादि नाम कर्म में वर्जित हैं सो बुधिजन इसको विचार के कहें ॥ १॥

(अब कहंहड चक्र नाम के लिये कहेंहैं)

चूचे चोलाश्विनी ओकारली लूले लोभरणी यघा आर्द्रा
ऊरुङ्केनिकासाछोवावीवूतुरोहिणी ॥२॥वेवोकाकी
मृगशिरः कूघङङ्केतथार्द्रिका॥कैकोहाहीपुनर्वसुहू
हेहोडातुपुष्यभंडीडूडेडोतुश्लेषामामीमूमेमटाल्प
लामोराटीटूपूर्वाफल्गुटेटोपायुत्तरंतथापूषणाठाहस्त-

नारा पेपो शरी नु चित्रका॥४॥ रूरे रोतास्मृती स्वातीनी तूने नो विशाखिका॥ नानी नूनेनु राधार्द्धं ज्येष्ठा नो यायी यूस्मृ ना॥ये यो भावी मूलनारा पूर्वाषाढ वुधा फड़ा॥५॥ भे भोजा ज्युत्तराषाढाजूजे जौरवाभिजिद्भवेन्॥ खीखूसेखो श्रवणभं गागीगूगे धनिष्ठिका॥६॥ गोसासी सूशतभिषक सेसोद्रा दी पूर्वभाद्रा दूजञ्योत्तराभाद्रदेदो चाचीतु रेवती॥७॥

दी०॥ इस की टीका को क्रम से समझना नाम की राशि कहते हैं॥७॥

अश्विनी भरनी कृत्तिका पादे मेष ऋतिकानां त्रयः पा दारोहिणी मृगशिरोर्द्धं वृषः१ मृगशिरोर्द्धं आर्द्रा पुन र्वसुपादत्रयं मिथुन पुनर्वसु पादमेकं पुष्य श्लेषांतंक र्क१ मघाचपूर्वा फाल्गुनी उत्तरा पादे सिंह उत्तराणांत्र यः पादा हस्तचित्रार्द्धं कन्या चित्रार्द्धं स्वाति विशाखा पा दत्रयं तुल विशाखा पादमेकं अनुराधाज्येष्ठांत वृश्चि कमूलंच पूर्वाषाढ उत्तरा पादे धनु उत्तराणांत्रयः पा दाश्रवणा धनिष्ठार्द्धं मकर धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पू- र्वाभाद्रपदपादत्रयं कुंभ पूर्वाभाद्रपादमेकं उत्तरा रे वत्यांतं मीन॥

दी०॥ सवा दो नक्षत्र की एक राशि होती है इसी क्रमानुसे १२ राशि जानना सब नक्षत्रों के क्रम से और इसी रीति से चंद्रमा वर्तता है॥

(मंचकारोहण)

अश्विनुरँग धनिष्ठारेवती पुष्यचित्रा शतभिषग नु राधा श्रुत्तरा स्वातिहस्ता॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्ये लग्नेभेकस्य निगदितमिह पूर्वं मंचकारोहणंनु॥१॥

दी०॥ मृगशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा ती नों उत्तरा स्वाति हस्त ये नक्षत्र और बुधगुरुशुक्र ये वार तुला वृश्चिक कुंभ इन ल ग्नों में बालक का शिर पूर्व दिशा को करे ऐसा मंचकारोहण करावे तो शुभ है॥१॥

॥अथ पालने का मुहूर्त॥

आंदोलशयनं पुंसोदादशे दिवसे शुभम्॥
त्रयोदशेतु कन्यायानक्षत्रविचारणा॥१

टी०॥ जन्म होनेकेउपरांत पुत्रकोए२ दिन और कन्याको१३ दिनपा
लनेमें झूलायन करावे और नक्षत्रादिकेविचारकीकुछआवश्यकतानहीं

(दुग्धपानकामुहूर्त्तनक्षत्रनिकेमतसे)

एकद्वित्रिपुष्यहस्तेचैवपञ्चपूरवेनपापयेत्॥
अन्नप्राश्यनंनक्षत्रंदिवसोदयराशिषु॥१

टी०॥ जन्म होनेकेपीछे३२वेंदिनअन्नप्राशनकेजोनक्षत्रउनमें
झूलनमेंदूधभरिकैंबालकको पिलानाचाहिये॥२॥

(तांबूलखानेकामु०)

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्तांबूलंप्रथमंशिशोः॥कर्पूरादिक
समिश्रंविलासापहितायच॥मूलेचत्वाष्टकरात्रिद्वयंद्र
मेषुपौष्णेतथामृगशिरेदितिवासरेषु॥अर्केंदुजीवभृगु
बोधनवासरेषुतांबूलभक्षणविधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः॥२॥

टी०॥ जन्म होनेकेपीछेढाईमहीने मेंकर्पूरआदिपदार्थमिलाक
रतांबूलबालकको मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवणज्येष्ठारेवतीमृगशि
रपुनर्वसुधनिष्ठाघ्रौरविवारसोमवारगुरुवारशुक्रवारबुधवारइन
वारोंऔरनक्षत्रोंमेंतांबूलभक्षणशुभजानना॥२॥

(सूर्यावलोकनवाकुंवाभूजनमुहूर्त्त)

हस्तःपुष्यपुनर्वसुहरियुगंमंत्रत्रयंरोहिणीरेवत्सु
मरफाल्गुनीमृगयुताषाढोत्तरास्वातिभे॥मासेतु
र्यतृतीयकौशनिकुजोत्पञ्चाचरिक्कातिथिंसिंहा
दित्रयकुंभराशिसहितंनिष्कासनंशस्यते॥१॥

टी०॥ हस्तपुष्यपुनर्वसुश्रवणधनिष्ठाअनुराधाज्येष्ठामूलरोहिणी
रेवतीउत्तराफाल्गुनीमृगशिरउत्तराषाढस्वातिचौथेवातीसरेमास
मेंशनिभौमरिक्ताइनविनासिंहकन्यातुलाकुंभइनशुभदिनोंमें
पहलेबालककोबाहरनिकालकेसूर्यावलोकनकरानाशुभहै१॥

कर्णवेध

रोहिण्युत्तरभूलेत्रमृगभेविष्णुत्रयेर्कत्रयेरेव
तांत्र्यूनर्क्षयुतेभगेकर्णस्यवेधःशुभः॥मीने
स्त्रीधनमन्त्यपेशुचघटे वर्षेचयुग्मेतिथौसौम्ये
ऽह्नगुरौरवौचशुभनंत्यक्षार्चविद्योबुधैः॥१॥

टी०॥रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृग श्रवण धनिष्ठा शतभिषा हस्त चित्रा ये नक्षत्र और युग्म तिथि और युग्म वर्ष ये वार बुध चंद्र गुरु रवि विष्णु श्रवण को छोड के कर्ण कर्ण वेध शुभ है॥१॥

॥बालक को भूमि में अवेधा कराने बैठाने का मु०॥

पंचमेचनवामासिभूमौनसुपवेशयेत्॥नवमेवैशुक्लाः
पक्षेभौमोप्यत्रविशोधनः॥उत्तराश्चित्रयंसौम्यंपुष्यर्क्षं
शुक्रवैवनं॥प्राजापत्यंचहस्तश्चशुक्लमाश्विनमित्रभम्॥१

टी०॥पांचवे मास में रवि भौम गुरु ये वार और शुभ तिथि और तीनों उत्तरा मृग चित्र बुध ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा इनमें बालक को पृथ्वी वराह की पूजा करके बैठावना शुभ है॥२॥

अन्नप्राशन

पूर्वार्द्राभरणीभुजंगवरुणेत्वष्ट्राकुजाकीलयो॥नंदा
पर्वचरिक्तसप्तमीमपिनयेरिक्तांशपिद्वादशीम्॥षष्ठेमा
स्यथवान्नभक्षणविधिस्त्रीणामयुक्पंचमेगोकन्या
मकरान्त्ययेबुधबले पक्षेचयोगेशुभे॥२॥१॥२॥

टी०॥तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी श्लेषा और भौम शनि ये वार नंदा पर्व रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सब को छोड के आठवे महीने में लड़के को और पांचवें महीने कन्या को वृष मिथुन मकर कन्या इनका चंद्रमा के शुक्ल पक्ष में शुभ योग में बालक को अन्न प्राशन करावे॥२॥

चौलकर्म

रेवत्यादिकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये पुष्ये
चोत्तरगेरवौगुरुकवीन्द्रत्रेशुक्लपक्षेसिते॥गौरी-

नन्नयचापकुंभमकरंहित्वाचरिक्कातिथिंषष्ठीप
र्वतथाष्टमीमापिसिनीवालीचचूडांशुभाम् ॥२॥
जन्मतस्तृतीयेब्देश्रेष्ठमिच्छंतिपंडिताः
पंचमेसप्तमेवापिजन्मतोमध्यमंभवेत्॥२॥

टी०॥रेवतीअश्विनीहस्तचित्रास्वातिपुनर्वसुमृगशिरज्येष्ठाश्रव
णाधनिष्ठाशतभिषाशुभ्यंयेनक्षत्रंशौरशुक्रसोमबुधयेवार
शुक्लपक्षउत्तरायनमुंडनमेंयेशुभहैंऔरवृषकन्यामिथुनधनु
कुंभमकरइनकोछोड़कैंऔररिक्काछठिआठेंअमावसाइनदुष्ट
तिथोंकोछोड़केंजन्मसेपांचवेंवर्षमेंमुंडनशुभहै औरपांचवें
सातवेंवर्षमेंमध्यमहै ऐसापंडितोंनेकहाहै ॥१॥२॥

(विद्यारंभमुहूर्त्त)

रेवत्यांमृगपंचकेहरियुगेपूर्वासुहस्तत्रयेमूलेम्बे
अभिजिद्भानुभृगुजेसौम्येधनुर्जीदयोः ॥१॥
अब्देपंचमकेविहायनिरिक्तान्आयंचषष्ठीयु
तान्रिक्तांसौम्यदिनेतथैवविबुधैःश्लोकामुहूर्तःशुभः१

टी०॥रेवतीमृगशिरआर्द्रापुनर्वसुपुष्यश्लेषाअवणाधनिष्ठापूर्वा
हस्तचित्रास्वातिमूलअश्विनीअभिजित्औररविगुरुशुक्रबुधसोम
येवारशुभतिथिशुक्लपक्षउत्तरायनजन्मसेपांचवेंवर्षमेंअथम
विद्याभ्यासकरनाशुभहै ॥१॥

(यज्ञोपवीतकामुहूर्त्त)

पूर्वाषाढहरित्रयेश्विमृगभेहस्तत्रयेरेवती॥ज्येष्ठा
पुष्यभगेषुचोत्तरगतेभानौचपक्षेसिते ॥गोमीन
अमदाधनुर्वनचरेशुक्रेर्कजीवेतिथौपंचम्यांदशु-
भीत्रयेव्रतमहश्चैवेद्विजन्महृये ॥२॥ + ॥ + ॥

टी०॥पूर्वाषाढश्रवणाधनिष्ठाशतभिषाअश्विनीमृगशिरहस्त
चित्रास्वातिरेवतीज्येष्ठापुष्यपूर्वाफाल्गुनीऔरशुक्लपक्षउत्त
रायनवृषभीनकन्याधनसिंहयेलग्नरविगुरुसोमशुक्र-

बुध ये वार पंचमी दशमी से तीन हि दूज तीन दूज में मौंजी बंधन शुभ है॥

वर्षसंख्या

गर्भाब्दमेऽष्टमेवाब्दे पंचमे सप्तमेपिवा ॥
द्विजत्वंप्राप्नुया द्विप्रो वर्षेत्वेकादशेन्नृप:

टी०।गर्भ से अथवा जन्म से आठ मे पांचमे सातवें वर्ष में ब्राह्मण को और ग्यारहवें वर्ष क्षत्रियों को यज्ञोपवीत उचित है॥ मास दिन॥

विप्रं वसंतिस्निग्धियं निदाघे वैश्यंधनानेब्रूति
नंविद्ध्यात्॥माघादिषट्कं तिक पंचमास:
साधारणोवास कला द्विजा नाम ॥ ९ ॥ ५

टीका॥ब्राह्मणों को वसंत ऋतु में क्षत्रियों को ग्रीष्म ऋतु में वैश्यों को शिशिर ऋतु में यज्ञोपवीत करावे माघ से ज्येष्ठ पर्यंत ५ मास में साधारण शुभ है॥

वर्णाधिपे वलोपेते उपवीत क्रियाहिता
सर्वेषांचगुरो सूर्ये चंद्रेच वल शालिनी

टी०॥वर्णों के अधिपति के अनुसार वल देखि के और सबों को गुरु सूर्य चंद्रमा का वल देखि के मौंजी बंधन करना शुभ है॥

त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्यादि तिथित्रयं
चतुर्थैकादिनी प्रोक्ता अष्टावेवगलग्रहा

टी०॥तेरस से आदि चार तिथि और सप्तमी अष्टमी नवमी चौथ ये आठ गलग्रह जानिये॥

१ मूढादि कों के संस्कार का मुहूर्त)

मूलार्द्राश्रवणाद्वैद्य वसु भे पुष्ये तथाचाश्विभैरेव
त्यामृगरोहिणीदिति करैभैत्रे तथावारुणे ॥चित्रा
स्वाति मघोत्तराभृगुसुते भौमे तथाचांद्रजे मूढानां
तुबुधैः शुभंहिकथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥१॥

टी०॥मूल आर्द्रा श्रवण विषाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाति मघा उत्तरा ये नक्षत्र-शुक्र भौम बुध मूढादिक अन्यजाति के संस्कार में शुभ जानिये ॥१॥

॥ अस्तोदय ॥

आगुद्गतः शिाम्भुरह स्त्रितयं सितः स्यात्पश्चाद्दृग्
हमिह पंचदिनानि वृद्धः॥ अस्तपक्षमेवगदितोऽत्र व
शिष्ट मुदयेजीवस्त्र पक्षमपि वृद्धशिम्भुर्विकर्म्यः॥१॥

टी०॥ पूर्व में शुक्र का उदय होयतो त्रीन दिनबालसंज्ञा कहिये और अ
स्त होयतो १५ दिन वृद्धत्व के वर्जित हैं और पश्चिम में उदय होयतो पांच
दिन बाल संज्ञा और २० दिन वर्जित हैं और शुक्र के उदय अस्त में पंद्र
ह २ दिन वर्जनीय हैं॥१॥ (अस्तोदयकालक्षण)

यमपूरभुज वासर वह्निगो दिशि हिसप्त ॥
सितास्तमनंतया॥ गगन वारणयमे दिशि ।
पश्चिमेनवदिनास्तमनंतु भृगोर्बुधैः॥ १॥

टी०॥ अष्टवें दिवस शुक्र का अस्त पूर्व में होता है और उसका उदय
७२वें दिवस पश्चिम में होता है और २५० वें दिवस पश्चिम में अस्त
होता है तिसका उदय ५९ वें दिन पूर्व में होता है ॥ १॥

अस्त में वर्जनीय कर्म

वापी कूप तडाग यज्ञ गमनं क्षौरं प्रतिष्ठाव्रतं
विद्या मंदिर कर्णवेधन महादानं गुरोःसेवनम्
तीर्थस्नान विवाह काम्यहवनं मंत्रोपदेशोशुभम्
दूरेशोव जिजीविषुः परिहरेदस्तेगुरौभार्गवे १

टी०॥ वापी कूप तलाव यज्ञोपवीत यज्ञ यात्रा मुंडन देव प्रतिष्ठा
विद्यारंभनवीनगृह प्रवेश बालक का कर्ण छेदन महादान गुरु
सेवा करनी तीर्थस्नान विवाह उत्तम कर्म होम मंत्रोपदेश यह
कर्म गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित हैं ॥१॥

(विवाहे वर्जनीयं)

नाषाढ अभृतिचतुष्टये विवाहो नो पौषे नचमधुसत्र
के विधेयः। नैवास्तंगतवतिभार्गवेचजीवे वृद्धत्वेनख
लुतयोर्न बालभावे। गीर्वाणमंत्रिणि मृगेन्द्रमधिरू
ढेनमासेधिकेत्रिदिनसंस्मृतिनामभेच ॥ १॥

टीका॥ आषाढ आदि लेके ४ मास और पौष चैत्र ये मास और शुक्र का अस्त और इन दोनों का बाल वृद्धपन और सिंह मकर की गृह स्थिति और अधिक मास क्षय मास यह विवाह में वर्जित हैं ॥१॥

(मूलादिजन्मनक्षत्र का दोष)

मूलाजान्च शुणाहंति व्यालजा कुलरांगना
विशाखजा देवरघ्नी ज्येष्ठजा ज्येष्ठ नाकी

टीका॥ मूल नक्षत्र में कन्या का जन्म होय तो गुणों का नाश करे श्लेषा में जन्म होय तो व्यभिचारिणी विशाखा में देवर की मृत्यु कारक जेष्ठा में जन्म होय तो पति से ज्येठे को मृत्यु दायक होय ॥१॥

जन्मर्थे जन्म दिवसे जन्म मासे शुभंत्यजेत्
ज्येष्ठे मासाधगर्भस्थ शुभ्र वस्त्र स्त्रियायथा॥१
अज्येष्ठा कन्यका यत्र ज्येष्ठ शुचौ वरोयदि ॥
अन्यथो वा नथोक्तञ्च ज्येष्ठो मास शुभप्रदः॥२

टीका॥ जन्म के नक्षत्र जन्म के मास में बालकों का विवाहादि शुभ वर्जित है जैसे स्त्रियों को श्वेत वस्त्र धारण करना अशुभ है और कन्या कनिष्ठ होय वर ज्येष्ठ होय अथवा इस से विपरीत होय तो ज्येष्ठ के महीने में विवाह शुभ है ॥ १॥ २॥

वर्षप्रमाण

जन्मतो गर्भधाना द्वा पंचमाद्वात्परं शुभं
कुमारी वरणं दानं मेखला बंधनं तथा॥१

टीका॥ जन्म होने से अथवा गर्भ धारण से पांच वर्ष उपरांत कन्या का वरण अथवा दान व्रत बंध उत्तम जानिये-गुरुचंद्रबलः स्त्रीणां गुरुबलंश्रेष्ठम्॥१॥

गुरुचंद्र बलम्

स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठं पुरुषाणां रवेर्बलम्
तयोश्चंद्र बलं श्रेष्ठमिति गर्गेण भाषितम्

टीका॥ कन्या को गुरुबल और वर को सूर्य दोनों को चंद्रबल ये गर्ग मुनि ने कहा है सो अतिश्रेष्ठ है॥१॥

गुरुबलम्

नष्टात्मजा धनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विनाहतप
त्यशुभगा विधवा ॥स्वामिप्रियाविगतपुत्रधनाधना
ख्याबंध्याभवेत्तुरगुरौक्रमशोभिजन्म ॥२॥ २॥

टीका॥कंन्याके जन्म स्थान में जो बृहस्पति होय तो विवाह में मृत्यु दायक अत्यंत बालकों को है और दूसरी धनवती तीसरी में विध वा चौथी में व्यभिचारिणी पांचमी में पुत्रवती छठी में पति का नाश सातवीं में सौभाग्यवती आठवीं में पुत्रहानि नवीं में पतिप्रियादशमी में बालक का नाश ग्यारही में धनाढ्या बारहीमें बंध्या जानिये ऐसे क्रमसे फल जानिये ॥ ९॥

(गुरु अनुकूल करनेका विचार)

जन्मविद्दशमाऋक्षपूजयाशुभदोगुरुः
विवाहेचचतुर्थेच द्वादशेच्छेदमृतिप्रदः१

टी०॥जन्म का तीसरा छठ दशमा गुरुनेष्ट है परंतु पूजा करनेसे शुभ छल देताहै और चौथा आठवां बारहवां गुरु मृत्युदायक है विवाहमें १

(अष्टमैत्रीज्ञान)

वर्णोवश्यंतथातारायोनिग्रहगणोतथा
भकूटंनाडिमंचीचइत्येताश्चाष्टमैत्रिका१

टी०॥वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह मैत्री गण मैत्री भकूट नाडी इनकी मैत्री जानिये ॥ २॥

मिलापमें वर्णादिकोंकाज्ञान

मीनालिकर्कराविप्रान्नृपाःसिंहाजधन्विनः॥कन्यानक्र
वृषावैश्याश्चद्वायुग्मतुलाघटाः१द्वंद्वचापघटकन्यका
तुलामानवाश्चजवृषोचलुब्धकौ॥कर्कमीनमकराजलौ
द्भवाःकेसरीवनचरोलिकीटकाः२॥कन्यकीटरभंयाव
त्कन्याभंवरभादपि॥गणयेन्नवभिःशेषेविच्चद्विभम
त्रस्मृतम्॥३॥अथयोगजश्छागसर्पोसर्पश्चमूविडाल
कः॥मेषोविडालकश्चैवमूषको मूषकश्चगौ॥ ४॥

महिषीचततोव्याघ्रोमहिषोव्याघ्रकंक्रमात्॥मृगोभृ
गुस्तयाश्वाचकपिर्नकुलएवच॥४॥नकुलोवानरस्सिं
होतुलोमृगराट्पशुः॥अघोरेणाक्रमेणैवअन्यान्यारि
मयोमृयः॥६॥गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषंश्वेरांचव
भूरगंवैरंनरमेषयोश्चसुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरः॥लो
कानांव्यवहारतोन्यदपिनस्तात्राप्रयत्नाद्दंपत्योर्न
पभृत्ययोरपिसदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः॥७॥मेषवृश्चि
कयोर्भौमःशुक्रोवृषतुलाधिपः॥कन्यामिथुनयोःसौ
म्योगुरुस्तुधनमीनयोः॥८॥घूकनिर्ऋसकुंभस्यकर्कस्येव
तुचंद्रमाः॥सिंहस्याधिपतिःसूर्यःकथितोगणकैःक्रमात्॥९
(इनहींका शत्रु मित्र समझना चाहिये)
शत्रूमंदसितौसमज्ञशनिजौमित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्ण
शुहिमरश्मिजज्ञसुहृदौशेषाःसमाःशीतगोःजीवेइस
कराकुजस्यसुहृदोज्ञेरीसितार्कीसमौमित्रेसूर्यसितौबुध
स्यहिमगुःशत्रुःसमाश्चापरे॥गुरोःसौम्यसितावरीरवि
कुजौमध्यौपरेचन्मयासौम्याकीसुहृदौसमौ कुजगुरूशुक्र
स्यशेषावरी॥शुक्रस्यौसुहृदौसमःसुरगुरुःसौरस्यतुन्येर
यौयंप्रोक्ताःसुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेमीभयाकीर्तिताः
१०॥अनुराधामृगोश्विस्रुग्ज्वरणोदितिपुष्यकः॥स्वाती
हस्तोरेवतीचनवदेवगणाःस्मृताः॥११॥पूर्वोत्तरंरोहि
णीचउत्तराज्येष्ठमेवच॥आर्द्रावुभरणीचैवनवैतेभानु
यागणाः॥१२॥आश्लेषार्द्रामिमूलविशाखाकृत्ति
कालया॥चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसागणाः१३॥
कृत्तिकारोहिणीस्वातीमघाश्लेषाचरेवती॥श्रवणश्चोत्त
राषाढविशाखांत्यनाडिका॥पूर्वाफाल्गुनिकाचित्रा
धनिष्ठाभरणीमृगाः॥पूर्वाषाढानुराधाचपुष्योहिर्बुध्र
मध्यमा॥१५॥पूर्वाभाद्रपदाशूलंज्येष्ठाहस्तः

पुनर्वसुः॥ अस्मिन्याद्यो भृतभिषद्योनरान्त्यैक नाडिका ॥ १६॥

राशि	वर्ण	वश्य	स्वामी
मेष	क्षत्री	चतुष्पद	मंगल
वृष	वैश्य	चतुष्पद	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मनुष्य	बुध
कर्क	विप्र	जलचर	चंद्र
सिंह	क्षत्री	वनचर	सूर्य
कन्या	वैश्य	मनुष्य	बुध

राशि	वर्ण	वश्य	स्वामी
तुला	शूद्र	मनुष्य	शुक्र
वृश्चिक	विप्र	कीट	मंगल
धन	क्षत्री	मनुष्य	गुरु
मकर	वैश्य	जलचर	शनि
कुंभ	शूद्र	मानव	शनि
मीन	ब्राह्मण	जलचर	गुरु

श्लो॰। सिंहे विनान्त्यणां सर्वे चतुष्पाभक्ष्याश्चतोयजाः। सिंहस्य चतुष्पास्त्यक्त्वा ऋक्षं सर्वेणाव्यवहारिकाः २॥ टी॰॥ सिंह के विना सब चतुष्पद मनुष्यों के वश में हैं और जल जंतु भक्ष्य हैं और वृश्चिक को छोड़ के सिंह के सब वश्य होते हैं शेष राशियों में भक्ष्याभक्ष्य विचार करि वश्यावश्य व्यवहार से जानिये॥ नक्षत्र

नक्षत्र	योग	वश्य	गण	नाडी
अ॰	अश्व	भैंस	देवता	आदि
भ॰	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
क॰	मेढा	वंदर	राक्षस	अंत्य
रो॰	सर्प	नौला	मनुष्य	अंत्य
मृ॰	सर्प	नौला	देवता	मध्य
आ॰	श्वान	मृग	मनुष्य	आदि
पु॰	मार्जा	मूषक	देवता	मध्य
पु॰	मेढा	वानर	देवता	मध्य
श्ले॰	मार्जा	मूषक	राक्षस	अंत्य
म॰	मूषक	मार्जा	राक्षस	अंत्य
पू॰	मूषक	मार्जा	मनुष्य	मध्य
उ	गौ	मनुष्य	मनुष्य	आदि
ह॰	भैंस	अश्व	देवता	आदि
•	•	•	•	•

नक्षत्र	योग	वश्य	गण	नाडी
चित्रा	भैंस	भेंड़ा	राक्षस	मध्य
स्वाति	व्याघ्र	गौ	देवता	अंत्य
विशाखा	मृग	श्वान	राक्षस	अंत्य
अनुराधा	मृग	श्वान	देवता	मध्य
ज्येष्ठा	व्याघ्र	श्वान	राक्षस	आदि
मूल	श्वान	मृग	राक्षस	आदि
पूर्वा	वानर	मेढा	मनुष्य	मध्य
उत्तरा	नौला	सर्प	मनुष्य	अंत्य
श्रवण	नौला	सर्प	देवता	अंत्य
धनिष्ठ	वानर	मेढा	राक्षस	मध्य
शत	सिंह	गज	राक्षस	आदि
पू॰फा॰	अश्व	भैंस	मनुष्य	आदि
उ॰फा॰	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
रेवती	पशु	व्याघ्र	देवता	अंत्य

टीका॥मिथुन धन कुंभ कन्या तुलये द्विपदमेष वृष थे चतुष्पद कर्क मीन मकर थे जलचर-सिंह वनचर वृश्चिक कीट ९ वधू के न क्षत्र से वर के नक्षत्र तक जो संख्या होय तिस में नव ९ का भाग देय शेष रहे ३।५।७ तो अशुभ जानिये ऐसे ही वर के नक्षत्र से वधू के नक्षत्र तक गिने ९ का भागदे शेष रहें सो जानिये ॥१॥

भकूट ॥ नव पंचक ॥ श्लोक ॥

मीनालिकन्यायुते कीटे कुंभे मिथुनसंयुते॥
मकरे कर्कयुक्तेन कुर्यान्नवपंचके १

टीका॥ कर्क मीन का और वृश्चिक कुंभका मिथुन मकर का इन दो दो राशिन का नव पंचक होता है सो वर्जितहै ॥१॥

(मृत्यु षडाष्टक)

मेषकन्यायुतौरैवतुलामीनकयोस्तथा
युग्मात्योस्तु बुधैर्ज्ञेयोमृत्युर्वैनक्रसिंहयोः
कुंभकर्कद्वयोश्चैव वृषकोदंडयोस्तथा।१।

टीका॥ मेष कन्या ये परस्पर छठे आठवें होय है और तुल मीन मिथुन वृश्चिक मकर सिंह कुंभ कर्क वृष धन इन दोदो राशि यों का मृत्यु षडाष्टक होता है सो वर्जित है ॥१॥

(प्रीति षडाष्टक)

सिंहे मीनयुतश्चैव तुलावृषपुलस्तथा॥
धनुःकर्कयुतश्चैव कुंभकन्यकयोस्तथा
नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजास्योः

टीका॥ मीन सिंह तुला वृष कुंभ कन्या मकर मिथुन मेष वृश्चिक कर्क धन इन दोदो राशियों का प्रीति षडाष्टक जानिये ॥१॥

(द्विर्द्वादश)

मेषमृषौवृषमिथुनौकर्कहरीतुलकन्ये॥
अलिधनुषीमकरकुंभावेतौद्विर्द्वादशोराशि

टीका॥ मेष मीन वृष मिथुन कर्क सिंह तुल कन्या वृश्चिक धन मकर

कुंभ ये दो दो राशि द्विर्द्वादश हैं सो वर्जित हैं - चतुर्थ दशम एकादश
प्र उभय सप्तम ॥

चतुर्थे दशमश्चैव तृतीयेकादशः शु[illegible]
उभयः सप्तमः साम्यमेकर्क्षे शुभमुच्य[illegible]

टीका ॥ वधूवर की परस्पर राशि चौथे दशवें तृतीये एकादश और सप्तम अथवा एक राशि होय तो शुभ जानिये ॥ (ग्रहमैत्री)

नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं. मं. बृ.	सू. बु.	चं. बृ. सू.	सू. शु.	सू. चं. मं.	बु. शु.	बु. शु.
सम	बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ. ०
शत्रु	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. मं.

मार्तंड के मत से गुणों का मिलाना

वर्णों का गुण - दोनों का एक वर्ण अथवा वर का ऊंचा होय तो शुभ जा०

वैरभक्ष्यो गुणाभावा द्वयोः साम्ये गुणाद्वयं
वश्यवैरे गुणाश्चैको वश्यभक्ष्ये गुणार्द्धकम्

वर्ण के गुण — वश्य के गुण

नाम	ब्रा०	क्ष०	वै०	शू०	२	१	०	१	२	चतुष्पद
ब्राह्मण	२	०	०	०	१	२	०	०	०	मानव
क्षत्री	२	०	०	०	१	०	२	२	२	जलचर
वैश्य	२	२	२	०	०	०	२	२	०	वानर
शूद्र	२	२	२	२	२	०	२	०	२	कीट

एकतोलग्नतो तारा शुभा चैवाशुभान्यतः ॥
तदा सद्गुणाश्चैक तारा शुद्धो भिषस्त्रयः २
अथैतो लग्नशुभा तारा तदा मृत्युं समादिशेत्

टीका ॥ एक को शुभ तारा और एक की अशुभ तारा होय तो उष्ठ २ ॥

गुण और दोनों की एक तारा-अथवा ये शुभ तारा होय तो तीन ३गुण और जो दोनों की अशुभ तारा होय तो शून्य गुण जानिये ॥

तारा गुण

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनि के गुण

महावैरेच वैरेच स्वस्वभावे यथा क्रमात्
मैत्रे चैवातिमैत्रे चववेदद्वि त्रिचतुर्गुणाः १

टीका ॥ महा वैरका गुण शून्य० दोनों की शत्रुता का गुण १ स्वभाव के गुण २ दोनों की मित्रता का गुण ३ अति मित्रता के गुण एक गति के गुण ४ व्यवहार से जानिये ॥ (तारा गुण)

योनि	अ०	ग०	भें०	स०	श्वा०	मा०	मू०	गो०	भै०	व्या०	मृ०	बान०	मौ०	सिं०
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	५	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेढा	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	०	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मजारि	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	०

गो.	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	०
भैस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	२	१	१	२
मृग	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नौला	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	३	४

ग्रहों के गुण दोनों का स्वामी १ मैत्री के गुण २ सम शत्रु का गुण ० मित्रत्व के गुण ४ शत्रु मित्र का गुण १ सम का गुण ० शत्रु का गुण शून्य ० इस प्रकार ग्रह मैत्री के गुण जानिये - गुणों के गुण - दोनों का गुण एक होय तिसके गुण ६ वर देवता गण - वधू मनुष्य गण तिसके गुण ६ इस विपरीत होय तो ५ गुण और वर राक्षस वधू देवता तिसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ॥

ग्रहों के गुण

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ग्रह
सू.	५	५	५	३	५	०	०	सू.
चं.	५	५	४	१	४	।।।	।।.	चं.
मं.	५	४	५	।।.	५	२	।।.	मं.
बु.	३	१	।।.	५	।।.	५	४	बु.
बृ.	५	४	५	।।.	५	।।.	३	बृ.
शु.	५	।।।	३	५	।।.	५	५	शु.
श.	०	।।.	।।.	४	३	५	५	श.

गणों के गुण

गण	देवता	मनष्य	राक्षस
देवता	६	६	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

भिन्ननाडी के गुण ८ एक नाड़ी शून्य

नाड़ीगुण	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	७	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	०	०

सत्कूट के गुण ७ अथवा असत्कूट के एक राशि भिन्न चरण भिन्न नक्षत्र दूनके गुण ७ तृतीय एकादश दूनके गुण ७ भिन्न राशि नक्षत्र एक दूसके गुण ५ प्रीति षड़ाष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नवम पंचम दूनमें वर दूरता हो योनि शत्रुता हो ने पर भी भूकूट के गुण ६ होते हैं असत्कूट के लक्षण वर योनि मैत्र

वा स्त्रीदूरत्व होय तो षड़ाष्टक द्विर्द्वादश नव पंचमादि दुष्ट कूटों के गुण ४ जानिये-यानि मैत्री वा स्त्री दूरत्व इनमें से एक हो तो दुष्ट कूट का गुण १ जानिये - और एक नक्षत्र वा एक चरण १ इस प्रकार गुणों का मिलाना १८ गुण अधिक हो तो शुभ गुण कम हो तो अशुभ गु० ॥

लग्नः	मे०	वृ०	मि०	कं०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	०	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

वर्णादिकका फल

यस्याद्वर्णाधिका कन्याभर्त्ता तस्यन जीवती
यदिजीवतिभर्त्तातुज्येष्ठ पुत्रो विनश्यति॥ १

टीका॥ जिस कन्या का वर्ण वर से श्रेष्ठ हो उसका पति वा ज्येष्ठ पुत्र मृत्य पावे॥ वैर योनि का फल ॥ जैसे अश्व और भैंस की वैर योनि है इसी प्रकार बधू और वैर की योनि वैर विचारी चाहिये और राज सेवा इत्यादिका भी विचारिये इसमें शुभ की इच्छा नहीं है॥ १॥

गुणोंके फल॥

स्वगणे चोत्तरा प्रीति मध्यमानरदे
वयोः॥ कलहोदेवदैत्यानां मृत्युर्मानव रक्षसाम् १

टीका॥ दोनों का एक गण होय तो उत्तम प्रीति जानिये मनुष्य देवता में

मध्यम जानिये-राक्षस मनुष्य गण में मृत्यु जानिये ॥ १ ॥ * ॥ *

कूट फलं

वडाष्टकेयमृत्युः पंचमेनवमेन पत्यता ज्ञेया॥
द्विर्द्वादशे निधनता शेषेषु मध्यमता ज्ञेया॥ १॥

टीका ॥दोनोंका षडाष्टक होय तो मृत्यकारक नव पंचम शुभपत्य का एक दूसरा बारहवा निधनता कारक शेष रहा सो मध्यम जानना ॥१॥

नाड़ी फलं ॥ आद्य नाड़ी व्यधेद्भर्त्ता मध्य नाडीव्यधे द्वयं ॥ पृष्ठ नाड़ी व्यधेत्कन्या म्रियते नात्र संशयः १

टी०॥दोनोंकी आदि नाड़ी होय तो भर्त्ता को बुरी-मध्य नाडी दोनों को होंतो अशुभ अंत्य नाडी दोनों को होय तो कन्या को अशुभ है ॥१॥

मध्य नाड़ी ॥ जठरे निधनत्वंच गर्भे मरणमेवच पृष्ठेदौर्भाग्य माप्नोति तस्मात्तां परिवर्जयेत ॥ १॥

टी०॥दोनोंकी मध्य नाडी निधनता कारक और गर्भ नाशका और अंत्य नाड़ा दुर्भाग कारक जानिये॥ ज्योतिःप्रकाशे पार्श्व नाड़ी

निधनं मध्य नाड्यांतु दंपत्योनैव पार्श्वयोः करग्रपृष्ट नाड्योन विद्यते इतितद्वच॥ १

टी०॥दोनोंकी मध्य नाड़ी मृत्य प्रद जैसे ही पार्श्व नाड़ी परंतु विवाह में पार्श्व नाडी मना नहीं है और के मत से क्षत्रियादि को मना कही है॥

(असत्कूट विचारः)

स्त्री के नक्षत्र से वर को नक्षत्र निकट होतो अशुभ और वर के नक्षत्र से स्त्री को नक्षत्र दूर हो तो शुभ जो नक्षत्र १ वा स्वामी १ हो तो शुभ जानिये॥

राजमार्त्तंड के मत से दुष्टकूटों का दान कहते हैं॥

षडाष्टकै गोमिथुनं प्रदद्यात्कांस्यं सरूपं नवपंचमेच ॥ नाड्यांसुधेन्वन्न सुवर्णंच स्त्रंद्विर्द्वादशे ब्राह्मण तर्पणं च ॥ १ ॥

टीका ॥श्रुति स्मार्त्त पूर्वक में दुष्ट कूटादिक के दान वर और वधू को

पडाष्टक में गोदान दो २ नौमें पाचमें चाँदी काँसे का पात्र एक नाड़ी में गोदान दूसर बारहें में अन्न सोना वस्त्र ब्राह्मणों को प्रसन्न कर ना इस से सब दोष दूर होता है ॥ १ ॥

यस्य वर्णस्य योनि ज्ञानं नोक्तं तस्य जातस्य जातकावलोकन प्रकारो वास्तु प्रकरणोक्तः

टीका ॥ जिस वर्ण की योनि का जानना कहा नहीं है तिस के जातक देखने का प्रकार वास्तु प्रकरण में कहा है सो जानना ॥

(विवाहे नक्षत्र)

मूलमैत्रकर स्वातीमघा पौष्णाध्रुवं दुवैः
एतैः निर्दोषभैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः

टीका ॥ मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती तीनों उत्तरा मृगसिर यह निर्दोष होय तो शुभ है ॥ १ ॥

(एक विंशति महा दोषाः)

पंचागशुद्धि राहतो दोषस्त्वाद्यः प्रकीर्तिताः॥
उदयास्तशुद्धि राहतो द्वितीयः सूर्यसंक्रमः।तृ
तीयः पापषड्गौभृगुः षष्ठकुजोष्टमः।गंडांतकर्त्त
रीरिस्फ षडष्टैदुश्च संग्रहः।दंपत्योरष्टमंलग्नराशौ
विषघटीतथा॥दुर्मुहूर्त्तोवारदोषखार्जूरी कंस
मांधिभं॥ग्रहणोत्पातभंक्रूरविद्धर्क्षंक्रूरसंयुत
कुनवांघ्रौमहापातोवैधृतिश्चैकविंशति॥ १॥

टीका ॥ प्रथम पंचाग शुद्ध रहित दोष १ उदयास्त शुद्धि राहतं २ संक्रांति दिवस ३ पापग्रह का वर्ग ४ लग्न में छटै शुक्र ५ लग्न में आठवें मंगल ६ लग्न में ६। ८। १२ चंद्रमा ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्त्तरी ९ लग्न में चद्रमा १० और पापग्रह ११ वर वधू की राशि से अष्टम लग्न वर्जित है ११ विष घटी १२ दुष्ट मुहूर्त्त १३ या मार्द्र आदिक १४ खत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहों करि विद्ध नक्षत्र १८ पापग्रह युक्त नक्षत्र १९ पापांघ्रि २० संक्राति साम्य २१ ॥

कर्त्तरी दोष लक्षणं

लग्ना च्चंद्रा द्व्यये द्विस्थौ पापखेटौ यदा तदा
कर्त्तरी वर्जनीया सा विवाहो पनयादिषु॥१
नहि कर्त्तरिजो दोषः सौम्ययोर्यदि जायते॥
शुभग्रह युतं लग्नं क्रूरयोर्नास्ति कर्त्तरी॥२

टीका॥ लग्न अथवा चद्रमा से १२वें दूसरे स्थान में जो पापग्रह पड़े तो कर्त्तरी दोष होता है इसमें विवाह यज्ञोपवीत वर्जित है इन हीं स्थानों मेंजो शुभग्रह होय तो कर्त्तरी दोष नहीं है और जो लग्न शुभ ग्रह युक्त हो तो शुभजानिये और क्रूर ग्रहयुक्त होय तो शुभजानियेा॥२

(वरवधू की राशि से अष्टम राशि का दोष)

वरवध्वोर्वटो श्चापि जन्म राशे श्च लग्नतः
त्याज्य मष्टम लग्नं स्या द्विवाह व्रत बंधयोः१

टीका॥ वरवधू और कट इनकी राशि से वा जन्म लग्न से वरवधू की पहली चारी की से अष्टम लग्न विवाह यज्ञोपवीत की होय तो अशुभ है॥१॥

(दुष्ट मुहूर्त्त कथन)

तिथ्यं शो दिन मानस्य रात्रि मानस्य चैव हि
मुहूर्त्तः कथितः स्तेषु दुर्मुहूर्त्तः शुभे त्यजेत्१

टीका॥ दिनमान और रात्रिमान इनका पद्रहवां अंश दुर्मुहूर्त्त होता है सो शुभ कार्य में वर्जित है॥१॥

(यामाद्यादिक कथनं)

सूर्याद्या मदलं दिवैव निगमाद्यपूर्वी षनाग त्रिषट्
संख्या कं कुलिकं दिवेंद्र रविदिङ्नागर्तु वेदद्विकम्
व्येकं तं निशि षोडशं शमपरे तिथ्यंश मुक्तिते:। का
लंकरटकै निर्घट मर्मरे ज्यज्ञा स्फुजि द्भ्यः क्रमात्

टीका॥ दिनमान का सोलहवां भाग कुलिक रविवार से होता है सो शुभ कार्य में वर्जित है और रात्रि में एक एक घटा दूये किसी के मत से पंच दशांश वर्जित है शुभ कार्य में इस रीति से जानना॥१॥

गुरुवार से काल दोष बुधवार से कंटक शुक्रवार से निघंट ये सब यथा क्रम कुलिक के समान वर्जित हैं १ एक दिन का या मार्द्ध८ कुलिकादि १६ वारानुसार जानिये परंतु इनमें से जिस वार को जो वर्जित है वे कोष्टक में नीचे लिखे हैं ॥

वार	या मार्द्ध	घाटका ४	पहति निल	कुलिक	कालवे.	कंटक	निघंट
रवि	४	१२	१६	१४	८	६	१०
चंद्र	७	२४	२८	१२	६	४	८
मंगल	२	४	८	१०	४	२	६
बुध	५	१६	२०	८	२	१४	४
गुरु	८	२८	३२	६	१४	१२	२
शुक्र	३	८	१२	४	१२	१०	१४
शनि	६	२०	२४	२	१०	८	१२

लत्ता दोष

भौमाच्चाक्षतिषट्जिनाष्टनखभंहृत्यग्रतो लत्तया ॥
खेटो कौर्कमितंशशीमुनिमितंपूर्णोनसत्तच्छुभे ॥ १

टीका ॥ मंगल जिस नक्षत्र पै होय तिस्से तासरे नक्षत्र में लत्ता दोष और बुध जिस नक्षत्र का होय तिस्से २२वें नक्षत्र में लत्ता दोष- गुरु जिस नक्षत्र पै होय तिस्से छठ नक्षत्र लत्ता दोष- शुक्र जिस नक्षत्र में तिससे २४वें नक्षत्र लत्ता दोष हो- शनि के नक्षत्र से आठवें नक्षत्र में लत्ता दोष- राहु के नक्षत्र से २०वें नक्षत्र में लत्ता दोष- सूर्य के नक्षत्र से १२वें नक्षत्र में लत्ता दोष चंद्रमा से ७वे नक्षत्र लत्ता दोष यह दोष मालव देश में अशुभ होता है ॥ १ ॥

यस्मिन धिष्ण्ये महोत्पातो ग्रहणं वाभवेद्यदि
तस्मिन धिष्ण्ये शुभं कर्म षण्मासे वर्जयेद्बुधः ॥

टीका ॥ जिस नक्षत्र में उत्पात अथवा ग्रहण हो यति से नक्षत्र में षट् मास तक शुभ कर्म वर्जित है ॥ १ ॥

पाप युक्त ग्रह और वेध नक्षत्र

श्रुत्यग्निभे भिजिद्वाह्यये वैश्वेंद्रर्क्षे तुरुद्रभे ॥१॥
मूलादित्येव पुष्ये द्रे मैत्राश्लेषे मघांतके। हस्तभा
ग्यर्यमांत्ये चहस्ताहिर्बुध्नभे तथा। चित्राज चरणे
स्वातीवारुणेच परस्परं। वासवेंद्राग्निभेतद्वेधः सप्त
सलाकजः। त्याज्यः पापोद्भवो पत्ता द्भतबंधादिकर्मसु

(नक्षत्र चरणवेधः)

टीका॥ पंच सप्त शलाका चक्र में जिस रेखा पर जो नक्षत्र होय और उसी में पापग्रह होय तो वह नक्षत्र विद्ध होय व्याह में अशुभ जानिये॥

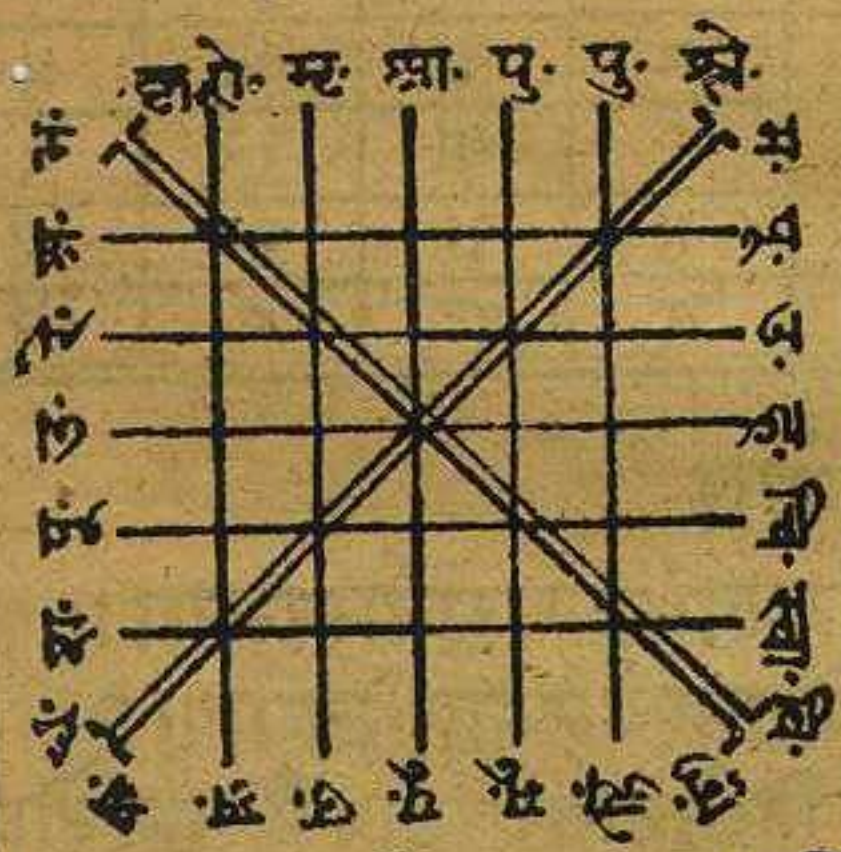

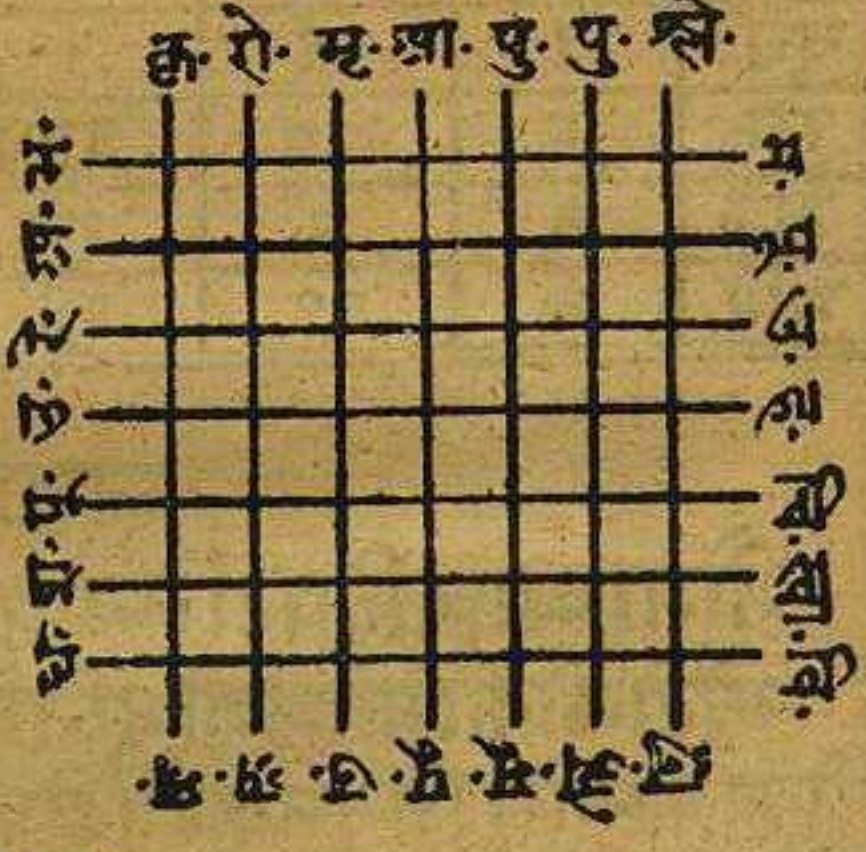

(श्लोकः)

सप्तपंच सलाकाभ्या विद्धमेकागलेनयत्
लग्नोपग्रहगंधिषंपादमात्र शुभेत्यजेत्। १
वेधमाद्यंतयोरघ्रोरन्योन्यंहितृतीययाः॥
क्रूरैरपित्यजेत्यादं केचिद्वुचुर्महर्षयः॥ २

टीका॥ विद्ध नक्षत्र और एकार्गल लग्न उत्पात नक्षत्र इन के चरण में शुभग्रह का योग होवा पापग्रह का वह चरण शुभकर्म में वर्जे तहै पहिले चरण में चौथे से और दूसरे चरण से तीसरे चरण से परस्पर वेध होताहै किसी के मत से पापग्रह का वेध चरण वर्जित है सो एकार्गल दोष मार्त्तंड के मत से विष्कभादि दुष्ट योग रहित दिन नक्षत्र से अभिजित् सहित गुण नासे विषम नक्षत्र में सूर्य्य होय तो

एकार्गल दोष होता है ॥ चंद्र सूर्य बल से दोष दूर होते हैं ॥

चंडायुध

मूलगंडात पापानां साध्य हर्षणयास्तथा
अत्यंयर्क्षं भवेत्तस्मिन्नत चंडायुधेनसत् ॥

टीका ॥ मूलगंडात व्यतीपात साध्य वधृति हर्षण इन योगों के अंत में जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

क्रांति साम्य

युग्मेधनुःकर्किरलौचयुक्ते कन्याचमीनेहपनक्रयुक्ते
मेषेचसिंहेचघटे तुलायांक्रांतेचसाम्यंशशिसूर्ययोगे ॥

टीका ॥ धन मिथन इन लग्नों में सूर्य चंद्रमा होय तो क्रांति साम्य जानिये - कर्क वृश्चिकमें · कन्या मीनमें · मेष सिंहमें · मकर हृष में · तुलाकुंभमें परस्पर क्रांति साम्य दोष होता है ॥ १ ॥

चक्र का क्रम

उर्ध्वरेखात्रयं चैव तिर्यग्रेखात्रयं तथा
क्रांति साम्यं बुधैर्ज्ञेयं मध्ये मीनेतुयोजयेत

टीका ॥ तीन रेखा ऊंची तीन रेखा तिरछी मध्य भाग की रेखाओं में तीन २ लग्न क्रम से लिखे बारह लग्नों में दो दो का क्रांति साम्य होता है ॥ १ ॥

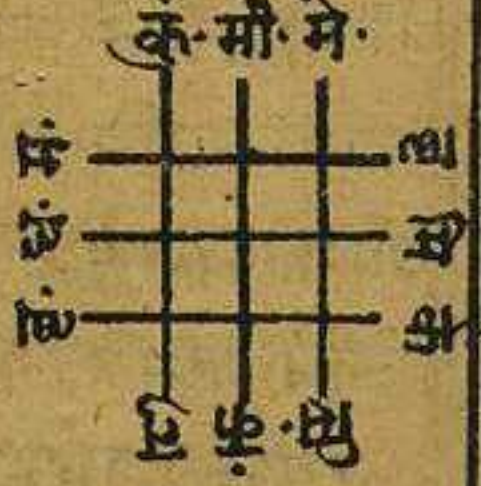

जामित्र दोष

लग्नेंदो र्नास्तगःपापस्तत्तुल्या शेयदिस्थितः॥तदा जामित्रदोषःस्यान्नहिन्यूनाधिकांशके॥क्रूरोवा यदि वासाम्योलग्नाच्चंद्राच्चखेतगः॥एकोपि यदिजामित्रेस मांशेचतदाभवेत्॥जामित्रंनप्रशंसंतिगर्गाकाश्य पदेव लाः॥ग्राय षष्ठ तृतीयेषु धनधान्य प्रदोरविः॥१॥

टीका ॥ लग्न चंद्रमा से सप्तम स्थान पाप शुभ न होय जोहोय तो यामि मित्र दोषहोता है और उसकेतुल्यांशश्रोवेतोजामित्रदोषहोय ॥

अधिक वा न्यून होय तो या मित्र दोष नहीं - दूसरा पक्ष लग्न चंद्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह वा पापग्रह सम अंश होय तो जा मित्रदोष होय गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियों के मत के अनुसार जामित्रदोष विवाह में वर्जित जो लग्न से एकादश षष्ठ तासरे इन स्थानों में सूर्य होय तो जामित्र दोष सुखदायक जानिये ॥ १ ॥

चरत्रय दोष

कर्के लग्नेथ वा मेषे चरांशो यदि दीयते
तुलार्यो मकरे चंद्रे वैधव्यं जायते ध्रुवं १

टीका ॥ कर्के और मेष लग्न में तुला का अंश और मकर तुला का चंद्रमा ऐसे योगों का दोष वैधव्य कारक होता है सो वर्जित है विवाह में ॥ १ ॥

तिथि के अनुसार वर्जित लग्न

प्रतिपदि तुला मकरौ सिंह मकरौ तृतीयायां कन्या मिथुने पंचम्यां सप्तम्यां चैव धनु कर्कौ नवम्यां कर्के सिंहौ एकादश्यां धनुर्मीनौ त्रयोदश्यां वृषभ मीनौ शून्यं लग्नानि तिथियो गात् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रति पदा को तुला और मकर तृतीया को सिंह मकर पंचमी को कन्या मिथुन सप्तमी को कर्क धनु नवमी को कर्क सिंह एकादशी को धन मीन त्रयोदशी को वृष मीन इन तिथि में ये शून्य लग्न जानो शुभ कार्य में वर्जित हैं ॥ १ ॥

दोष निवारण

द्यूनं विना केंद्र गतो मेरज्यस्त्री कोण गो वापि हिलक्ष मेकं
न हंति दोषा स्त्रि शतं भृगुश्च शतं वुधो वापि हि दृश्य मूर्तिः

टीका ॥ गुरु शुक्र वा वुध ये इन स्थानों में १ । ४ । ७ । १० । ५ होय तो एक लक्ष तीनसौ दोषों को क्रम से दूर करते हैं गुरु तो १०००० शु क्र २०० बुध १००० ऐसे लग्न शुद्ध जानना ॥ १ ॥

(बारह राशियों का उदय प्रमाण)

गजाग्निदस्रा २३८ गिरिषट्कदस्रा २६७ व्योमेंदुरामा ३१०
रसरामरामा ३३६ कुरामरामा ३४१ गजचंद्ररामा ३१८ नागेंदु

लोका:३१८कुगुणानलाश्च ३३१षट्रामरामा ३३६स्व
शशांकरामा ३१०सप्तांगा पक्षा २६७श्चगजाग्निदस्त्र २३८
मेषादि १२ राशिन का पल संख्या

मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३११	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्न की घटिकाओं की संख्या
मीनेमेषे ऽष्टपंचकमान्नाड्य: पलानिच॥वृषेकुंभे
व्यिसप्तद्विपंचदिङ्मिथुनेमृगे॥धनु:कर्के शरेषट्त्रिसिं
हास्यो:शरभूत्रयं॥कणाष्टदशतूलांगेलग्ननाड्यःपलानिच॥२

मेषादि १२ लग्नों का क्रम

राशि	मे	वृ.	मि.	कं	सिं	कं	तु.	वृ.	ध	म	कुं	मी.
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

दिन प्रति भुक्त पल जानने का क्रम
मानाजेसप्तषट्पंचपलानिविपलानितु॥गोकुभष्टौ
युगशरादिविंशतिर्नृयुमस्मे॥॥कर्कचापेभवा:सूर्या:
सिंहल्योरुद्रदस्रिता:॥तुलागेदृक्चषट्त्रीणिलग्ने
ष्वकांशसम्मिति:॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्त लग्न कथनं
यस्मिन्राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदयोभवेत्॥
तस्मात्सप्तम राशिस्तु अस्त लग्नंतदुच्यते॥१
टीका॥ जिस राशि के के सूर्य हो वही लग्न सूर्योदय में होती है और उससे सातमी लग्न में सूर्य अस्त होता है उसे अस्त लग्न जानिये॥१

लग्नकेनवांशः॥ वृषश्चमिथुनंकन्यातुलाधन्वीमृष
स्तथा॥एतेशुभानवांशास्तुततोन्येकुनवांशकाः॥ १
टीका॥वृषमिथनकन्यातुलाधनमीनइनकेअंश द्वादश लग्नोंमें
शुभ होतेहै शेषअशुभजानिये मेषआदि१२लग्न वाअंशसात कोष्ठ
मेंहै तिनमेंसे जिसकेअंशकावर्गशुद्धि होयउनका कोष्ठमेंउसअंश
घटीमें अयनांशदेकरभुक्त काल लाइये प्रत्येक कोष्ठमें चार अंकहैं
उसकेनामराशिअंशकलाविकलाजानिये राशिकीसंज्ञा शून्यका
नाममेषसौरवृष१कोजानना इसप्रकार१२ राशि होतीहैं॥

मे.	वृ.	मि.	कं	सिं	कं	तु.	वृ	ध	म.	कुं	मी	०
वृ.	० ३ २०	८ ११ ३०	५ २३ ३०	० ० ०	४ ३ ३०	५ १३ २०	६ २३ २०	० ० ०	४ ३ ३०	१० १३ २०	१० १३ २०	० ० ०
मि.	० ६ ४०	६ २६ ४०	२ २६ ४०	० ० ०	४ ६ ४०	१६ १६ ४०	२६ २६ ४०	० ० ०	८ ६ ४०	१६ १६ ४०	२६ २६ ४०	० ० ०
कं.	० ० ०	१ २० ०	० ० ०	३ ० ०	४ १० ०	७ २६ ४०	६ ० ०	७ ० ०	८ ० १०	१० २० ०	० ० ०	१० १० ०
सिं.	० ६ ४७	१ २६ ४०	० ० ०	४ ६ ४०	४ १६ ४०	७ २६ ४०	६ ० ०	७ ६ ४०	८ १६ ४०	१० २६ ४०	० ० ०	१० १६ ४०
कं.	० २० ०	० ० ०	० ० ०	३ १० ०	४ २० ०	७ ० ०	६ ० ०	७ १० ०	८ २० ०	१० ० ०	० ० ०	१० २० ०
तु.	० २७ ४०	० ० ०	० ० ०	३ ६ ४०	४ २६ ४०	७ १६ ४०	६ १० ०	७ १६ ४०	८ १६ ४०	१० ० ०	० ० ०	१० ६ ४०
वृ. ध.	० ० ०	० ० ०	० ० ०	३ १६ ४०	४ २६ ४०	७ ० ०	६ १६ ४०	७ २६ ४०	८ ० ०	१० ० ०	० ० ०	१० १६ ४०

अथ तात्कालसूर्यस्पष्टकरनेका क्रम

गतागम्यदिनहतद्यभुक्तेः खरसप्तांशवियुग्मतोग्रहः स्यात्
टी०॥पञ्चागस्थग्रहोंके कोष्ठमें पूर्णमासी अमावसतक और मावससे
पूर्णिमा तकसूर्य स्पष्ट है परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जिस दिन का सूर्य

करना होय उस दिनका ग्रौर पूर्नों की पंगत का ग्रंतर करना उस ग्रंतर से सूय की गति से गुणना ग्रौर ६० का भाग देना जो ग्रंश कला मिले उ से स्पष्ट सूर्यमें ऋण धन करना पीछे का हो तो सूर्यमें ऋण धन करना ग्रागे का हो तो धन करना सूर्य स्पष्ट होय उस दिनका १ यही रीत सब की है॥

उदाहरण

शक: १७६८ कार्तिक शुदि ८ मंगलवार को स्पष्ट सूर्य कितना है सो कहैं

सूर्यकी गति
पल विपल
६० ४७

६ दिन ८ से १५ तक
ग्रंतर को गुणै

३६० २८२ गुणा
भाग ६०)२८२(४ ग्रंश
२४०
४२ शेष फल

३६०
४।४२ मिलाये
३६४ । ४२

६४।४२ भाग ६०।३६४ (६४।४२
३६

स्पष्ट रवि का उदाहरण
रा. ग्र. क वि.
पंचागस्थ रवि
७।७।२१।५७
गति ६।४।४२

शेष संख्या
७।९।१७।१५
ये स्पष्ट सूर्य जानिये

ग्रभुक्त दिवसों का उदाहरण

शक: १७६८ कार्तिक कृष्णा ६ का सूर्य स्पष्ट लाने का क्रम पूर्णिमा का स्पष्ट सूर्य राशि ७ ग्रंश ७ घ. २१ प. ५७ ग्रभुक्त दिवस ६ सूर्य की गति ६०।४२ इन ग्रंकों को ६ से गुणा तो हुए ३६४।४२ इन में ६० का भाग देने से शेष रहे वे ग्रंश ६ घटी ४ प. ४ इन ग्रंकों को सूर्य के ग्रंश घटी पलों में मिलाये तो राशि ७ ग्रंश १३ घ. २६ प. २ दूसरा प्रकार होता है॥

(ग्रयनांशू लाने का क्रम)

शकोवेदाब्धिवेदोनःषष्टिभक्तायनांशकाः
देयास्तेतुरवौस्पष्टेचरलग्नादिसिद्धये ॥१॥

टीका॥ वर्त्तमानशकः में ४४४ घटाने से जो शेष बचे उसमें ६० का भाग दे चर स्थिर द्विस्वभाव लग्नों को सिद्ध के लिये अयनांश को स्पष्ट सूर्य के अंश और घटिका शों में मिलाने से सायन सूर्य के होवे ॥ १ ॥

उदाहरण

मा·६०।१३।२५ (२२ अंश ७।१।१७।१५ स्पष्ट रवि
१२०
१२५
१२०
५
२२।५ अयनांश मिलावे

६० गुणक
६०)३०० (५ कला
३००
००
यह सायन जानिये

लग्न से इष्ट काल लाना

स्फुटसायनभार्गकभोग्यांशफलसंमितिः।सायनंभुक्तनोश्चा
पिभुक्तांशफलसंयुता।मध्यलग्नोदयेयुक्तांषष्ट्याप्तानाडिकास्तनो

टीका॥ सायन सूर्य से भोग्य और सायन लग्न से भुक्त बनाने की रीति दोनों का योग करके और सूर्य लग्न के मध्य का उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देने से लग्न पर से सूर्य का भोग्य काल स्पष्ट हो जाता है ॥

उदाहरण ॥ शके १७६९ कार्तिक शुदि ९ भौम वार को स्पष्ट सूर्य की राशि आदि ७।१।१७।१५ और अयनांशः २२।५ को सूर्य के अंश और घडियोंमें मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादिक होता है १।२३।२२।१५ यह हश्चिक राशि का सूर्य २३ अंश २२ घटी १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ये हुआ ६।३७।४५ सूर्य हश्चिक का है हश्चिक का उदय कहिये ३३१ इन से भोग्यांश को गुणने से ये अंक हुए २१९४ इन में ३० का भाग देने से आये ७३।८ इसको सूर्य का भोग्य काल जानिये ॥

लग्न से भुक्त लाना ॥

मकरलग्न वृषलग्न तिसको कोष्ठक में देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे वे राश्यादि ९।१३।२० कहिये मकर राशि की लग्न १३ अंश २० घटी होती है इस लग्न के अंश कला विं अयनांशः २२।५ मिलाने से सायन लग्न १०।५।२५ हुई कुंभ राशि के अंक ५ घटी २५ सायन लग्न होती है लग्न के भुक्तांश ५।२५ कुंभ राशि का उदय २६७ इस गुणने से अंक हुआ १४४६ इनमें ३० का भाग दिया तो आया ४८।१२ यही अंक लग्न का भुक्त होता है ॥

भोग्य भुक्त से इष्ट लाने का क्रम ॥

भोग्य भुक्त योग १२१।२० सूर्य अथवा लग्न इस राशि के मध्यंतर का उदय २ धन ३१६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्य भुक्त योग १२१ इनमें मिलाया तो अंक हुआ ७६७ इस अंक में ६० का भाग दिया तो वह इष्ट काल की घटी १२ पल ४७ हुए इन पलों में वृत्ति के ५ पल जाड़ने में स्पष्ट इष्ट काल १२।५२ आजाता है ॥

उदाहरण

सायन सूर्य से भोग्य लाने का क्रम ॥

अंश	घटी	पल
३०	०	०
२३	२२	१५
६	२७	४५

इसमें सायन सूर्य के अंश घटाने से यह सूर्य दृक्षिक का है

३३१ गुणक

१९८६	२३१७	१६५५
३०८	६६३	१३३४
	१३२४७	भाग ६०) १४८६५ (घटिका का
	२४८	१२०
		२८६
	भाग २६७) १२४६५ (अंश्पा २०८	२४०
	१२०	४६५
	४६५	४८०
	४८०	२५ पल पले ॥
	२५ शेष	

रवि के भोग्य काल लाने का क्रम

अंश घटी
भाग ३०)२१९४ १५।७३।८ ये सूर्यभोग्य काल जानिये
२१०
१९४
६०
४
६०गुण
२४०
१५ शेष
भाग ३०) २५५ (८ शेष
२४०
१५ शेष

लग्न से भुक्त काल लाने का क्रम

राशि अंश कला
९ १३ २० मकर लग्न
२३ ५ यह अयनांश मिलावे
१० ५ २५ सायन लग्न भुक्त
२६७ लग्न का उदय
१३३५ १७५
१३३५ १७५
१११ १५०
१४४६ १५० अंशा
६०) ६६७५ (१११
६०
६७
६०
७५
६०
१५

भाग ३०) अं. शत्रांश
१४४६ (१४५. १२
१२०
२४६
२४०
६०
६०गुणक
भा. ३०) ३६०
३६०

इष्टकाल

घन ३३६

मकर ३१० मिलाव

६४६

१२१ येभुक्त भो. मिलावे

भाग ६०)७६७(१२ घटी

६०

१६६

१२७

४७

६०

भाग ६०)२८२०(४७ पल

२४०

४२०

४२०

भुक्त भोग योग

४८	१२	भुक्त
७३	८	भोग
१२१	२०	सूर्यलग्न

उन्नर इष्ट घटी का

घटी	पल
१२	४७

प्रहलिका फल

१२ ५२ उन्नरइष्ट

इष्ट समय का तत्काल सूर्य साधन

तत्कालभवस्तथा घादध्याःखरसैर्लब्धकलोनसंयुतस्यात्

टी० ॥इष्ट घटीमें सूर्य लाना होय तो उसको और उससे सूर्य की घटियों को गुणाकरना ६० का भाग देनाजो लब्ध होय उसमें जो सूर्य गत होतो हीन करै और जो भोगम्य होय तो उसमें युक्त करे तबतत्काल सूर्य आजाता है

उदाहरण ॥ शकः १७६६ कार्तिक शुदि ६ भौम वार के दिन प्रातः काल का सूर्य ७।१।१७।१५ है तो कहो कि सायन सूर्य। कतना होगा॥

इष्ट घटी की गति का गुणाकार

१२		५२ इष्ट घटी
भा.६०	७२०	३१२०
४७	५६४	२४४४
	७२०	३६८४ २४४४

घटी पलों का भागाकार

७२०	३६८४	६०)२४४४
६२	४०	२४
७८२	३७२४(६२	४४
	३६०	

दृष्टकाभाग

६०)७८२(१३।२
६२
१८२
१८
६०गुणक

भाग २०)१२०
१२०

१२४
१२०
४

७ १ १७ १५ प्रातःकालकासूर्य
१२ २ गम्यघटी

७ १३० ३५
३२ भुक्तयनांशाः

७ २ ३५ १७ सा.ता.सूर्य

(दृष्ट घटी से लग्न लाने का क्रम)

तत्कालार्कः सायनोस्योदयघ्नाः भोग्यांशाः खद्र्युद्धृता भोग्यकालः॥ एवंयातो भैर्भवेद्यातकालो भोग्यः शोध्यो भीष्टनाड़ीपलेभ्यः॥१॥ तदनुजहीहिग्रात्योदयांश्चशेषं गगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यं॥ सहितमजादिगृहैरशुद्ध पूर्वैर्भयातेविलग्नमुदयनांशहीनम्॥ २॥ २॥

टीका॥ सायन सूर्य जिस राशि में होय उसका उदय लेना और सायन सूर्य का ३० अंश में हीन करे शेष बचे सो भोग्यांश जानिये उदय राशि को भोग्य अंश से गुणिये ३० का भाग दीजे तो सूर्य का भोग्यकाल निकल आवे सूर्य का गतकाल लाने का क्रम-सायन सर्य के उदय में उसी के अंशादि को गुणा के ३० का भाग दे तो भुक्तकाल आजायगा इष्ट घटियों के पल करके उस में भोग्य काल को हीन करे शेष जिस राशि में सूर्य का उदय होय वह राशि और आगे जितनी राशि उदय में काम हो उनको घटादे जो उदय न घटे तो अशुद्ध जानिये शेष अंको को का ३० गुणाकर अशुद्ध राशि का भाग दे तो अंशादिक आवेंगे उसमें शेष राशि से अशुद्ध राशि को पूर्व राशि तक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट हो जाय॥

(उदाहरण) पीछे जो सायन सूर्य आया है वह ७।२३।३५।१७ उसका उदय ३३१ सूर्य के अंश २३। ३५।१७ वे ३० में हीन करे शेष बचे वह भोग्यांश ६। २४।४४ इनको उदय से गुणे वे अंक

२१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्य काल निकल आवै उसके हि साव का क्रम ॥ ३० में सायन सूर्य के अंश घटाये २३।३५।१७ तब यह रहे ६।२४।४३ भोग्यांश उदय ३२१ हुआ ॥

शंक	कला	विकला
१९९६	१२२४	४३
१३६	६६२	१२६
३०)२१२२(७०	७६४४	भा.३०)१४२३३(२३७ कला
२१०	२३७	१२०
२२	६०)८१८१(१३६	२२३
६० गुणक	१६०	१८०
३०)३९०(४४	२१८	४३३
१२०	१८०	४२०
१२०	३८१	१३
	२१	

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये ॥ इष्ट घड़ी १२।५२ इसके पल ७७२ इस अंक में भोग्य काल घटा या तो शेष अंक ७०।१।१६ धन राशि का उदय ३३६ वा मकर राशि का उदय ३१० इन दोनों का योग ३६४ शेष अंक में हीनक्रि यातो रहे ५५।१६ इन अंकोंमें कुंभ राशिका उदय २६७ घट नही सका इस लिये अशुद्ध उदय जानिये ॥

इष्ट घटी १२
६०
गुणक ७२०
५२
७७२

भोग्य काल ७० ४४

३३६ धन राशि का उदय ७०१ १६

३१० मकर राशिका उदय ६४६ ५५ १६ इन अंकोंमें कुंभ

राशि का उदय नहीं घट सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं ॥ शेष रहे ५५।१६ इनको ३० से गुणा किया तो वे अंक १६।५८ हुए इनका अशुद्ध उदय से भाग दे जितने भाग आवें वे अंक और शेष अंक ५८ को ६० से गुणा तो हुए ३३६० फिर उनके उदय में भाग दिया तो घटी १२ शेष १५८ को ६० से गुणा तो हुए ८६८० फिर उनके उदय में भाग दिया तो पल ३५ मेष राशि से अशुद्ध की पूर्व राशितक राश १० और और यह लीअंशादिक ६।१२।१५ तिनके और राशि के अंकों के लिखे से स्पष्ट सायन लग्न १०।२६।१२।२५ अयनांश १२।५ सायन लग्न के अंश घटियोंमें घ टाने से स्पष्ट लग्न ९।१४।७।३५ मकर लग्न अंश ७ घ. ३५ पल जा०

शेषांक १५ १६ — ५८ ६० गुणक — ३३६० (१२ घ. — १५८ ६० गुणक — ८७ — ९५८० (३५ प.

१६०२ — ३३६० — १३५० — १३३५ — १५

५८ — ५३८ — ९५८ — १५

राशि	अंश	घटी	पल
१०	६	१२	३५
	२१	५	अयनांश घटावे
	१५	७	३५

इस प्रकार मकर लग्न का प्रमाण १५ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ॥

सूर्य और लग्न एक राशि के होंय तो इष्ट घटी लाने का क्रम

यदि तनुदिनुनाथावेक राशौ तदंशांतर
हृत उदयः स्यात्तवाग्नि हृत्विष्ट कालः

टीका ॥ सूर्य और लग्न एक राशि के होय तो दोनों का अंतर निका ले और तिसको राशि के उदय से गुणे ३० का भाग दे जो लब्धि हो

सो इष्ट काल जाने और रात्रिमें लग्न अथवा इष्टकाल निकाल
ना हो तो सूर्यकी राशिमें ६ मिलावे शेष क्रिया पूर्ववत् जानना ॥

(लग्नके शुभाशुभ ग्रहों का विचार)

लग्ने चंद्र खलारिपौ शशिसितौ सर्वेखवे बुधो ज्ञोंत्ये
गुः स्कखमोष्टमाः कुज शुभाः शुक्रस्तृतीयाश्रुचे ॥ ला
भे सर्वखगाः शुभा श्चखिलगास्त्र्यष्टारिगास्युः खलाश्चं
द्रस्यावुधने श्रियेशुभ इकेट स्यान्मृत्युवेष्टारिगः ॥ १

टीका ॥ लग्नमें चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्न से षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्रमा और सप्तम स्थान में कोई ग्रह न होय दशम स्थान में बुध वृहस्पति चंद्रमा चौथे राहु आठवें मंगल वा शुभग्रह और तीसरे शुक्र ऐसे ग्रह लग्नमे होय तो अनिष्ट शोक कारक अशुभग्रह जानिये ॥

लग्न से ११वें स्थान में संपूर्ण ग्रह होंय और निद्य स्थान को छोड के और शेष स्थान में शुभग्रह होय और तीसरे छठे स्थानमें सूर्य और दूसरे तीसरे चौथे चंद्रमा होंय तो शुभहै लक्ष्मी की प्राप्ति करे और लग्न का स्वामी अथवा अंश का स्वामी अथवा द्रेष्काण का स्वामी ये ६ या ८वें स्थानमें होय तो मृत्यु दायक जानिये ॥ १ ॥

पंचभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैरनिष्टमादेश्यम् ॥
स्थानादि फल समृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते दैवैः १

टीका ॥ लग्नोंके पांच ग्रह शुभस्थानी होंतो पुष्टि कारक होतेहैं और अशुभ स्थानी होंतो अरिष्ट कारक होतेहैं और यवनादिक के मत से चार ग्रह भी इष्ट कारक शुभ जानिये ॥ १ ॥

षट्वर्गो शुद्धिजानने का क्रम ॥ ग्रहंहोरा च द्रेष्काणो नवांशो
द्वादशांशकः ॥ त्रिंशांशाश्चेतिषड्वर्गास्तेसाम्यग्रहजा शुभाः

टीका ॥ प्रथम जाननेमें १ होरा १ द्रेष्काण २ नवांश ३ द्वादशांश ४ त्रिंशांश ५ और ग्रह ६ इन छः वर्गोमे शुभग्रह के वर्ग शुभ होते हैं और अशुभ ग्रह के वर्ग अशुभ होते हैं ॥ त्रिंशांशादि कथनं ॥

त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरातस्यार्द्धमुच्यते ॥

लग्नात्त्रिभागो द्रेष्काणो नवांशो नव मांशकः।
द्वादशांशो द्वादशांशः त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः

टीका ॥ लग्न के ३० अंश होते हैं तिनका अष्टम १५ अंश होरा कहाता है और लग्न ही का तीसरा भाग १० ऐसे ३ द्रेष्काण होते हैं और लग्न का नवम भाग २०। २० ऐसे नवमांश कहाता है और लग्न के सातवें भाग ४। १७ ऐसे सातवां भाग सप्तांश कहाता है और लग्न का १२ वां भाग २। ३० ऐसे द्वादशांश कहाता है और लग्न का ३० वां भाग का त्रिंशांश कहते हैं इस रीति से १ लग्न के ३० अंश होते हैं उन्हीं अंशों के ईश वर्ग होते हैं ॥

ग्रादौ ग्रह ज्ञानं

यस्य ग्रहस्य योराशिस्तस्यतद्गृहमुच्यते

टीका ॥ जिस ग्रह का जो राशि होय सो ग्रह उसीका कहाता है ॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	रा.
ग्रह	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	बृ.	शु.	श.	बृ.	ग्र.

होरा कथनं ॥ श्लो० ॥ सूर्ये ह्योर्विषमे लग्नेहोरा चंद्रार्कयोः समे

टीका ॥ विषम लग्न में १५ अंश तक सूर्य की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा सम राशि में १५ अंश तक चंद्रमा की होरा तिसके पीछे सूर्य की होरा शुभ सूर्य की होरा अशुभ जानिये ॥

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.	०
अंश	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	१५
अंश	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	चं.	सू.	३०

द्रेष्काण कथनं

द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्यच॥
द्रेष्काणश्चतृतीयस्तु लग्नान्नवम राशियः१

टीका ॥ प्रथम द्रेष्काण लग्न के ३० अंश तनमें ३ द्रेष्काण होते हैं प्रथम द्रेष्काण का स्वामी लग्न का दूसरे द्रेष्काण का स्वामी पंचम का तीसरे द्रेष्काण का स्वामी नवम का होता है श०मं०सू० इनका द्रेष्काण अशुभ और शुभ जानिये १

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
१३	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.	वृ.	श.	गु.	वृ.
२३	सू.	बु.	शु.	मं.	वृ.	गु.	श.	वृ.	मं.	शु.	बु.	चं.
३३	वृ.	गु.	श.	वृ.	मं.	शु.	बु.	चं.	सू.	बु.	शु.	मं.

सप्तांश कथनं ॥ श्लो० ॥ ओजराशौस्वराशाद्यास्समेसप्तमराशितः

टीका ॥ विषम राशि में अपनी राशि से सप्तांशक जानये ॥ और सम राशि में सातवीं राशि से लेके जानिये ॥ सप्तांश

लग्न	मे.	वृ.	मि.	कं	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
४ १७	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८ २४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
१२ ५	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
१७ ८	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
२१ ३५	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२१
२५ ३२	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५
२८ ५८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८

नवांशक कथनं

मेषसिंहधनुर्लग्ने नवांशा मेषतः स्मृताः ॥
वृषकन्यामृगेलग्ने मकरान्नवमांशकाः १
ककोलिमीनलग्नेषु नवांशाः ककतः स्मृताः
नृयुग्मतौलिकुंभेषु तौलिनः स्युर्नवांशकाः

टीका ॥ मेष सिंह धन इन लग्नोंको नवांश मेष से गिनिये और वृष कन्या मकर इनका नवांश मकर से जानिये मिथन तुला कुंभ इनका तुला से जानिये कर्क वृश्चिक मीन इनका कर्क से जानिये सूर्य मंगल शनि इनका नवांश अशुभ जानना चाहिये ॥ १॥२

नक्ष.	मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं	कं	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
३/३०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६/३०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०/३०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३/३०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६/४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०/३०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३/३०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६/३०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
२९/३०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

द्वादशांशकथनं ॥ श्लो० ॥ लग्नस्यद्वादशांशास्तुस्वराशेरेवकीर्तिता

टीका ॥ लग्न के तीस अंश तिसके २।३० बारह भाग होतेहैं सो द्वा दशांश अपनी अपनी राशि से लेके जानिये तिनमें सूर्य मंगल श नि यह अशुभ जानिये और सब शुभ जानिये ॥

मे.	वृ.	मि.	कं.	सिं	कं	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	द्वा.
२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०	२/३०
२/३०	२/३०	२/३०	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/५
२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	२/॥	७।३०
२/॥	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	१२॥
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	१५
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	१७॥
२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२०
२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२२॥
२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२५
२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७॥
३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०

विषमत्रिंशांशकथनं॥श्लो०॥कुजार्कगुरुविज्ञुक्रात्रिं
शांशाधिपतयःक्रमात्॥पंचपंचाष्टसप्तेषुभागानांविषमेग्रहे
टी०॥विषमलग्नमेंपहले मंगल के पांच ५अंश तिसके पीछे शनि के पां
चतिस पीछे बृहस्पति के ८इस के पीछे बुध के ७अंश इस के आगे
शुक्र के ५अंश इस क्रमसे विषमराशि में त्रिंशांश जानना ॥१॥

विषम	मं.	शु.	बृ	बु.	शु	त्रिंशांश
भाग	५	५	८	७	५	भाग

समत्रिंशांश॥श्लो०॥शुक्रज्यार्कभूपुत्रास्त्रिंशांशा
धिपतयःसमे॥पंचांगाब्धेषुपंचानांभागानांकथितोनुपैः
टी०॥समराशि के त्रिंशांशमें प्रथम ५अंश पर्यंत शुक्र है इससेआगे
बुध७पर्यंत इससे आगे बृहस्पति ८पर्यंत इससे आगे शनि५पर्यंत
इससेआगे मंगल ५पर्यंत इसक्रमसे समराशि में त्रिंशांश जानिये २

समराशि	शुक्र	बुध	गुरु	शनि	मंगल	समराशि
भाग	५	७	८	५	५	भाग

उक्तांशाः॥श्लो०॥मेषेषष्ठेवृषेविद्वान्मिथुनेद्विगुणोर्कजः
गोर्कजोयःकीटेऽयंगवाढ्योर्कभवेगाश्वास्त्रिंशां
अर्कवत्॥ऋक्षैकोद्विखगाःशलोगवगयेऽब्धिनिधर
गोद्वयोनक्रेंशाख्यरुणाघटेऽषष्ठेषौमीनेद्विगोवद्शुभाः
इसकाअर्थ इसचक्रसेजाननासुगमहै॥

उक्तां.रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	२	७	४	६	३	१२	६	३	३	१२	७
कला	७	३	६	६	७	१२	७	७	६	१२	२	६
विकला	०	१२	१२	६	०	६	६	६	६	०	०	६

षट्वर्गपंचवर्गवाचतुर्वर्गमथापिवा॥
कैश्चित्त्रिवर्गसल्लोकंत्र्येकवर्गंनतुत्यजेत्॥
टीका॥कोई ६वर्ग कोई ५वर्ग कोई ४वर्ग लग्न के होंगतो वली श्रेष्ठ

कहते हैं कोई तीन वर्ग भी शुभ कहते हैं और दो वर्ग एक वर्गही
यदी बली नहीं शुभ नहीं हैं इससे शुभ कार्य में वर्जित है ॥१॥

लग्नांश फलमाह

लग्नेचतुर्दशे भागे वृषस्य मकरस्यच
कन्या कर्कटमीनानामष्टादशे लिनः

टीका॥वृष मकर इनके १४ अंश कन्या कर्क मीन इनके ८ अंश
वृश्चिक के १२ अंश ये शुभ फल देते हैं ॥१॥

कुंभेसांशेचषड्विंशेचतुर्विंशेचतौलिनः
नयुकार्मुकयोर्लग्नं शुभंसप्तदशांशके१

टीका॥कुंभ के २६ अंश तुला के २४ अंश मिथुन के और धन
के १७ अंश ये शुभ फल को देते हैं ॥१॥

एकविंशतिमेभागे मेषस्याष्टादशेहरे
संपूर्णफलदंचादौमध्येमध्यफलप्रदं

टीका॥मेष के २१ अंश सिंह के १८ अंश यह लग्नों के शुभ फ
ल के देने वाले हैं और मध्य में होय तो मध्य फल को देते हैं॥

वर्गोत्तमलग्न के लक्षण॥अंते तुच्छ फलं लग्नं यदिवर्गो
त्तमंनचेत्॥लग्नस्यस्वनवांशोमःसवर्गोत्तमउच्यते १

टीका॥लग्न के अंत भाग में वर्गोत्तम न होय तो लग्न अभिष्ट फल
देता है और लग्न अपने नवांशक में होय तो वर्गोत्तमी कहिये।१

(गोधूलिलग्न कथन)

गोधूलंपरजातिकै शुभकरं पंचांग शुद्धौरवेरर्धास्ता
स्तपूर्वतोर्ध घटिका तवेंदु मृद्यारिगम॥सोग्रंगंकु
जमस्तमंगुरुपगाहः पातमर्कमंज ह्याद्विप्रभु।
रेवतिसंकरदृदं सद्यौवनाये कचित्॥१॥५॥१॥

टीका॥शूद्रादि कों को पंचांग शुद्ध देख करके सूर्य के अर्द्धास्त सम
य प्रथम और पश्चात् पंद्रह पल गोधूल काल शुभ है और गोधूल
लग्न से षष्ठम और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पाप ग्रह भौम

अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति साम्य इन दूत्या दिदुष्ट योग छोडिके शुभ है और किसीके मतमें विवाहिकके अति संकट में वर कन्या होय तो गोरज शुभ है ॥२॥

वधूप्रवेशमाह

विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मे थवा शो डशवासरांतान् ॥ तदूर्ध्वमध्येयुजि पंचमो दग्नः परस्तान्नियमो नचास्ति ॥ २॥

टी०॥ विवाह से सम १६ दिवस पर्यंत वधू प्रवेश कहा है आगे ४ वर्ष पर्यंत विषम मासादि करि दैं इस से स्वेच्छा जानना ॥ २॥

उक्तमासादि ॥ माघ फाल्गुन वैशाखे शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥ गुरुर्वादित्य विशुद्धौ स्यात् नित्यं पत्नी द्विरागमः २

टीका ॥ माघ फाल्गुन वैशाख और शुक्ल पक्ष शुभ दिन गुरु आदि अस्त वर्जित में द्विरागम कहा है ॥ २॥

नीहारांभ्युयुत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनी शुक्रेभास्करवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रे प्रशस्ते तिथौ कुंभाजालिगतेरवौ शुभकरे प्राप्तोदये भार्गवे जीव स्यास्तजितां दिने नववधूवेश्मप्रवेशः शुभः १

टी०॥ मृगशिरतीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाति श्रवण शतभिषा चित्रा ये नक्षत्र और कुंभमेष वृश्चिक इन राशीके सूर्य होय और शुक्रादिक का उदय होय और गुरु बुध चंद्र ये वार ऐसे शुभ दिवस में वधु प्रवेश करावे ॥ १॥

नूतन पल्लव धारण का मुहूर्त्तः

हस्तादिपंचमृगपूष्यमदस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिने गुरुशुक्रवारे ॥ स्त्रीणां शुभं प्रथमपल्लवधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसमयेखलुयौनवस्त्रैः ॥ २॥

टी०॥ हस्त से पांच ५ मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा पुनर्वसु और गुरु बुध शुक्र ये वार और वैग्रह होय जो विचार काल में

कथितहै ऐसे दिवस में नूतन पीत वस्त्र करिकें स्त्रियों को प्रथम पल्लव धारण करावे ॥१॥

गांधर्व विवाह मुहूर्त कथनं

मूलांतेषु पुनर्भवा परिणाय। प्रोक्तो विवाहोक्तभैनाली कांतिथि मास वेध भृगु जेज्यास्तादितत्राकभात॥ त्रि अर्थेषु मृति र्धनं मृति मृति पुत्रो मृतिर्दुर्भगं श्रीरौद्र त्यपयो धृति श्चकृततत्वर्थित्ययः सामिजित ॥१॥

टीका॥मूल आदि और रजक आदि और अन्य जाति जिनकीछि यें का पुनर्विवाह होजाता है उन के धरेजे का मुहूर्त्त विवाह नक्षत्र अवश्य देखे मास तिथि वार गुरु शुक्र इनकेअस्त अस्त को कुछ नदे खे इन का दोष नहीं है और सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत नक्षत्र गिनेक्रमसे पहले तीन मरण दूसरें तीन धनहा तीसरें तीन मरण चौथे तीन मरण पांचवें तीन पुत्रलाभ छठे तीन मरण सातवें तीसरे भेदुर्भगा आठवें तीसरे में लक्ष्मी नवें तीसरे औन्नत्यता दूसरीगति से-गांधर्व नक्षत्र जानिये सूर्य के नक्षत्र से चौथा ग्यारहां पच्चीसवां इन स्थानों के नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र अशुभजानना ॥१॥

(दूसरे मत के अनुसार)

इंद्वादितिथि वा श्लेषा आग्नेयं वारुणं तथा ॥
अश्विनी वसु दैवत्यं पट्टकाले शुभंस्मृतम्१

टीका॥ज्येष्ठा श्लेषा आर्द्रा कृतिका पूर्वाभिषा धनिष्ठा येनक्षत्र धो ना करने में शुभजानिये॥१॥

दत्तक पुत्र लेने का मुहूर्त्त

हस्तादि पंचक भिषक् वसु पुष्यभेषु सूर्यक्षमान गुरुभार्गव वासरेषु॥ रिक्ता विवर्जित तिथीष्वलि कुंभ लग्नेसिंह वृषे भवतिदत्त परिग्रहोयम॥१॥

टीका॥हस्त चित्रा स्वाति विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य और मंगल गुरु शुक्र ये वार और चौथ नौमी चौदश रिक्तक कुंभ ये लग्न वर्जित हैं और सिंह वृष ये लग्न शुभ हैं॥१॥

अथ वास्तु प्रकरणंग्रामादि अनुकूलं
ग्रामादिरनु कूलत्वे दिशो भूतग्रहस्यच ॥१॥
सधिषयादि शुद्धिंच वीक्ष्यायव्ययभांशकान १

टी०॥ग्राम दिशा और भूत ग्रह इनके अनुकूल देखिके मासवानक्ष त्र शुद्धि और आय व्यय वा लग्न अंश शुद्धि शुभ देखि लीजे॥१॥

ग्रह बलं

गुरुशुक्रार्क चंद्रेषु स्वोच्चादि बल शालिषु ॥
गुर्वर्केंदुबलं लब्धाग्रहारंभः प्रशस्यते ॥१

टीका॥गुरुशुक्र सूर्य चंद्र इनका बल पाकर ग्रह का आरंभ करना शुभहै ॥१॥

वर्ज्यानि

विवाहोक्तान्महा दोषान्मृतेजामिवशुद्धितः
रिक्ताकुजार्कवारौचचरलग्नंचरांशकम् १

टीका॥जामिव शुद्धि वचा के विवाह के जोदोष कहे हैं वे सबवर्जित करिकें और रिक्तातिथि भौमवार रविवार लग्न और चर लग्नों के अंश ये वर्जित हैं ॥१॥

त्यक्त्वा कुजार्क योरांशं पृष्ठे चाग्रेस्थितंविधुः
बुधेज्यराशिगं चार्के कुर्याद्गेहं शुभाप्तये ॥१

टीका॥सूर्य मंगल का अंश और पीछे स्थित जो चंद्रमा सो वर्जित है मिथुन कन्या धन मीन इन राशिन का सूर्य गृहारंभ करने में शुभहै॥

(द्वार शुद्धिः)

द्वार शुद्धिं निरीक्ष्यादौ भेशुद्धिं वृषचक्रतः
निषंचकैस्थिरे लग्नेद्वारोच्चालयमारभेत् १

टी०॥प्रथम द्वार शुद्धि और वृषचक्र से नक्षत्र शुद्धि देखकर पंचक रहित स्थिर वा द्विस्वभाव लग्न में द्वार का आरंभ कीजै॥ ग्रामानुकूलं॥

स्वनामराशेर्यद्राशिर्दिशारंभेऽरिभिर्मितः
संग्रामःशुभदःप्रोक्तस्तत्शुभःस्यात्ततोन्यथा

टी०॥अपनी राशि से ३।५।८।१२।१०जिस ग्राम की राशि होय वह

ग्राम शुभ जानिये अन्यथा अशुभ जानिये ॥ २॥

एकभेसप्तमे द्यूनगृहहानिस्त्रिषट्गे॥

लग्नाद्याहादशे रोगाःशोषस्थानेभवेत्सुत

टीका॥एक राशि अथवा सप्तम होय तो प्रथम तीसरी अथवा सातवीं होय तो गृह की हानि और चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्म की होय तो रोग कारक जानिये शेष शुभ जानना ॥ २॥

(जातक वर्ग जानने का क्रम)

अकचटतपयश वर्मारहो क्रमतःस्मृताः

एकोनरवेषु वर्गानां स्वरशास्त्रविशारदैः १

अवर्गे षोडशज्ञेयाःस्वराःकार्यिषपंचसु ॥

पंचपंचैव वर्गाण्यर्यशौलु चतुरक्षरौ॥ २॥

टीका॥अवर्ग शवर्ग पर्यंत ४६ अक्षर है जिसमें अवर्ग के १६ स्वरों र कवर्ग से पवर्ग पर्यंत ४५ इनके ३५ अक्षर हैं और यश रून दो नों वर्गों के ४ स्वर होते हैं यह स्वर शास्त्र के ज्ञाता कहते हैं ॥ १॥ २॥

वर्गों के स्वामी

ताक्ष्यर्मार्जार सिंहश्वसर्पाखुगजसूकराः

वर्गेशाः क्रमतोज्ञेयाःस्ववर्गात्पंचमोरिपुः १

टीका॥अवर्ग का स्वामी गरुड कवर्ग का मार्जार पवर्ग का सिंह ३ टवर्ग का श्वान ४ तवर्ग का सर्प ५ पवर्ग का मूषक ६ यवर्ग का गज ७ स वर्ग का मेढा वा मृग सूकर २ और जिस वर्ग का अक्षर अपने नाम का होय उस से पांच मे वर्ग का स्वामी वैरी जानिये और चौथा मित्र और तीसरा उदासीन जानना चाहिये ॥ २॥

कार्किणी

स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् ॥

अयं भिन्नहरेद्रागंयोधिकःसत्रणीभवेत्

टीका॥अपने नाम के वर्ग को द्विगुणा करे उसमें ग्रामादिक का वर्ग मिलावे और आठ का भागदे और ग्रामादिक का वर्ग द्विगुणा

करे और अपने नाम का वर्ग मिलावे ८ का भाग दे इन दोनों में से जो शेष बचे सो अर्थ सात जानिये अर्थात् क्रमती वाले के सन्मुख जानिये ॥

चंद्रमा के मुख जानने का क्रम

वह्निमैत्रान्त्यक्षस्थे चंद्रे प्राग्वक्त्रमानसम्
पित्र्याद्दासवतस्त्वत्साम्यरास्याद्गृहं शुभम्

टी०॥ कृतिका से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का मुख दक्षिण को और अनुराधा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का उत्तर को मुख श्रेष्ठ रेवती से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का पूर्व मुख और धनिष्ठा से ७ नक्षत्रों का चंद्रमा होय तो ग्रहों का मुख पश्चिम को शुभ है ॥

आयादिसाधन

ग्रहेशकरमानेन ग्रहस्यायादिसाधयेत्
करैश्चेन्नेष्टमायादिसाध्यमंगुलितस्तथा

टी०॥ ग्रह के स्वामी के हाथ प्रमाण से अथवा अंगुलमान करके इष्ट आयादि साधन करे ॥

क्षेत्रफल

विस्तारगुणितं दैर्घ्यं ग्रहक्षेत्रफलं भवेत्
तत्यष्टवसुभिर्भक्तं शेषमायोध्वजादिकः

टी०॥ ध्वजा से लेकर आय के साधन का प्रकार चौड़ाई लंबाई को आपस में गुणने से क्षेत्रफल जानना और उस में ८ का भाग देने से शेष बचे सो ध्वज आदि आय जानिये ॥१॥

आयों के नाम

ध्वजो धूमोथ सिंहश्च श्वासोरभेयः खरोगजः
ध्वांक्षश्चैव क्रमेणैतन्नामायाष्टकमुदीरितम्

टी०॥ ध्वज १ धूम २ सिंह ३ श्वान ४ वैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ यह क्रम से आयाष्टक जानिये - वर्णों के अनुसार आय जानिये ॥२॥

ब्राह्मणास्य ध्वजो ज्ञेयो सिंहो वैश्यक्षितस्य च
वृषभश्चैव वैश्यस्य सर्वेषां वृषभ मतः १

टी०॥ ब्राह्मण को ध्वज आय क्षत्री को सिंह आय वैश्य को वृषभ आय

और सववर्णोंको गज आय शुभ कही है ॥१॥

मतांतरसे आयोंके फल

ध्वजे कृतार्थो मरणंच धूमे सिंहे जयश्चाश्व
शुनिप्रकोपः॥वृषेवराज्यंखरेच दुःखं
ध्वांक्षेमृतिश्चैवगजेसुखंस्यात ॥ २ ॥

टी०॥ध्वजका फल कृतार्थ जानिये धूमका फलमरण जानिये सिंहका फल जय जानिये स्वान आयका फल कोप-वृष आय का फल राज्य खर आय का फल दुःख जानिये-ध्वांक्ष आयका फल मृत्यु गज आय का फल सुख जानिये ॥ २ ॥

(अश्वनक्षत्रके अनुसार व्ययसाधन)

पूर्वाहारे वृषेः श्रेयान्गजः प्राग्यमदक्षिणः
क्षेत्रभद्राहतंविशायैर्विभक्तंस्याद्गृहस्यभम्
भेद्यभक्तेव्ययःस्तोयमायादल्पोव्ययःशुभः।

टीका॥पूर्वाभिमुखग्रहों का गज और बैल ये शुभ कारक होते हैं औ पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहों का गजायु कहा है और पूर्वमें के क्षेत्र फ ल को आठसे गुणा करे २७ का भाग दे शेष बचे सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें आठका भाग दे शेष रहे सो उस घरका व्यय जानिये और आपकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ जानिये ॥ २ ॥

(ग्रहोंकी राशि विचार)

अश्विन्यादित्रयेमेषोमघादित्रितयेहरिः॥
मूलादित्रितयेधन्वीभद्रंपौष्णराशिषु॥

टीका॥ग्रहोंके नक्षत्र अश्विनी भरणी कृतिका इन नक्षत्रोंकी रा शि मेष रोहिणी आर्द्रा मृगशिर की वृष आर्द्रा मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु की मिथुन पुष्य श्लेषा की कर्क मघा पूर्वा उत्तरा की सिंह हस्त चित्रा की कन्या स्वाति विशाखा की तुला अनुराधा ज्येष्ठा की वृश्चिक मूल पूर्वाषाढ उत्तराषाढ की धन श्रवण धनिष्ठा की मकर पूर्व भि षा पूर्वाभाद्र पद की कुंभ उत्तराभाद्र पद की और रेवती की मीन रा

क्रम से जानना ॥१॥ (ग्रहों के नाम)

गृहस्य पूर्वतो दिक्क्रमात्कह्याब्धिहंतिनः॥
संस्थाप्या लिंङ्गानं कांस्तान्मित्या षोडशागदाः

टी०॥ ग्रहों के पूर्व दिशा क्रमसे १अंक स्थापितको वेरेसे अंक पूर्वको १दक्षिणको २पश्चिम को ३उत्तर को ४ऐसे चारों दिशाकोस्थापितक दे और जिस ओरको गृह का मुख होय तिस दिशाके अंक मिलावेसा ला की संख्या अधिक एक करके मिलावेजो अंक होय सोई घरका जानिये ॥१॥ ग्रहोंके नाम

ध्रुवं धान्यंजयं नंदं खरं कांतं मनोरमं॥सुमुखंदुर्मुखं
क्रूरं रिपुदं धनदं क्षयं॥आकंदं विपुलं क्षेयंविजयं
चेति षोडशाः॥गदं ध्रुवादिकं क्षेयं नामतुल्य फलप्रदम्१

टी०॥इन ग्रहों के ध्रुवधान्यजय इत्यादि १६ नाम हैं इनका शुभाशुभ नाम के अनुसार जानिये ॥२॥ (अंशूल्लानेकाचक्र)

व्ययेनसंयुते क्षेत्रे गदनामाक्षरान्वितो ॥
त्रिभिर्भक्तोशकाशेषो द्वितीयो शोभनशोभनः

टी०॥ पीछे व्यय होय उसे क्षेत्र फलमें मिलावे और ग्रहोंके नाम के अक्षर मिलाके ३का भाग देशेष दो बचें तो अशुभ और एकबा पूर्णबचें तो शुभ फल जानिये ॥२॥ ग्रहोंके भाग

नवभागंगृहं कुर्यात्पंचभागंतु दक्षिणे॥
त्रिभागंवामतः कुर्याच्छेषं द्वारं प्रकल्पयेत्

टी०॥ गृह क्षेत्र के नव भाग करिकें पूर्वतिसमें से पांच भाग दक्षिणके ३ भाग उत्तरको और १भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करे गृहोंकी १

ग्रहोंके द्वार

द्वारस्योपरि यद्वारं द्वारस्यान्यच्च सन्मुखम्
अयदंतु यदाश्रित्य न कर्तव्यं शुभैः शुभैः॥२॥

टी०॥ द्वारके ऊपर द्वार और आमने सामने के द्वार व्ययदायक हो। ते हैं शुभाभिलाषी पुरुषों को ऐसे घर न बनावने चाहिये ॥२॥

अहों के स्थानों की योजना

स्थानागारं दिशि प्राच्यामाग्ने ष्यांपंचनालयम्
याम्यायांशयनागारंनैऋत्यांपाठ्यमंदिरम् १
प्रतीच्यामोजनागारं व्यायव्यांपशुमन्दिरम्
भांडकोषौचोत्तरस्यांईशान्यांदेवमन्दिरम् २

टी०॥पूर्व में स्थान घर २अग्निकोण में रसोई का स्थान ३दक्षिण में सो
ने का स्थान ४नैऋत्य में पाठ्य का स्थान ५पश्चिम में भोजन का स्थान
६वायव्य में पशु मंदिर ७उत्तर में भंडार कोष का स्थान ८ईशान में दे
व मंदिर ९इस प्रकार घर बनाना चाहिये ॥१॥

अल्पदोषंगुणाओघंदोषाणामवेद्गृहम् ॥
आयव्ययोप्रयत्नेनविरुद्धंचवर्जयेत् ॥२॥

टी०॥जिस घर में दोष थोड़े होंय परन्तु बहुत गुणों करके ओघ होयतो
दोष नहीं होता और आयव्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होयतो पल कर
के वर्जितहै ॥२॥

गृहारंभचक्रम्

आरंभेवृषभंचक्रंस्तंभेहोयंतकूर्मकम्
प्रवेशेकलशंचक्रंवास्तुचक्रंबुधैःशुभम्

टी०॥गृहारंभ में वृषभचक्र और स्तंभ स्थापन में कूर्मचक्र और गृ
ह प्रवेश में कलश चक्र ये वास्तु चक्र में देख लीजे ॥१॥

गृहारंभकेमास॥सौम्यफाल्गुनवैशाख
भाद्रश्रावणाकार्त्तिकाःमासाःस्युर्गृहनि
र्माणेशुभाधान्यधनप्रदाः॥१॥

टी०॥पौष फाल्गुन वैशाख भाद्रो श्रावण कार्तिक इन महीनों में गृ
हारंभ शिलान्यास स्तंभ प्रतिष्ठा यह शुभ जानिये ॥धनि आरोग्य
आयुवृद्धि धन की प्राप्ति इन बातों को शुभ करेहै ॥१॥

मासोंकाफल

शोकोधान्यंपंचतानिःपशुत्वंस्वाग्निर्नैस्वं
संगरंभन्यनाशम्॥सच्छ्री प्राप्तिंवह्निभी

तिंच लक्ष्मी कुर्यु श्चैचाद्यागृहारंभकाले ॥१॥
टी०॥चैत्रमें शोक वैशाखमें धनज्येष्ठमें मृत्यु आषाढमें पशुहानि श्रावणमें द्रव्य प्राप्ति भाद्रपदमें दरिद्र आश्विनमें कलह कार्तिकमें मृत्यु नाश मार्गशिरमें धन प्राप्ति पौषमें लक्ष्मी माघमें अग्निभय फाल्गुनमें लक्ष्मी इस प्रकार मासोंमें शुभाशुभ फल जानिये ॥१॥

(दिशाके अनुसार गृहोंका मुख करना)

कर्कमकरहरिकुंभगतकें पूर्व पश्चिममुखानिगृहाणि
तौलिमेषवृषवृश्चिकपतेदक्षिणोत्तरमुखानिवदंति १
टी०॥कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंके सूर्यमें पूर्व अथवा पश्चिमको घरका द्वार करे मेष तुल वृष वृश्चिक इन राशियोंके सूर्य होयतो दक्षिण वा उत्तरमें घरका द्वार करे इस प्रकार रत्नमालग्रंथमें लिखाहै १

गृहारंभकेनक्षत्र

उत्तरांमृगरोहिणंपुष्यमैत्रकरत्रये॥धनिष्ठा
द्वितीयेपौष्णेगृहारंभःप्रशस्यते॥१॥आदित्यभौम
वर्ज्यंतुसर्ववाराःशुभावहाः।चंद्रादित्यबलंलब्धा
लग्नेशुभनिरीक्षितेस्तंभोच्छ्रायस्तुकर्तव्यस्तान्यत्तु
परिवर्जयेत्प्रासादेष्वेचमेवस्यात्कूपवापीषुचैवहि २
टी०॥तीनों उत्तरा मृगशिर रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाति धनिष्ठा शतभिषा रेवती येनक्षत्र शुभहैं और रवि भौम ये वार वर्जित पौष वार शुभहैं और स्थिर लग्नमें करे स्तंभारोपण देवालय कूपतडागवापी इनकार्योंमें शुभहै ॥२॥ (वृषचक्र)

चिंचेदाद्धि चिंचेदाद्धि हिंचिभेद्धकेतःपृथ्वी।
कुर्याल्लक्ष्मीसमुद्दासंस्थेर्यंलक्ष्मीदरिद्रताम्
धनंहानिंक्रमान्मृत्युमारंभेवृषचक्रकम् ॥१॥
टी०॥सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताईं गिने प्रथम भागमेंतो न लक्ष्मी दायक दूसरे भागमें ४ उद्दासन को तीसरे भागमें ४ स्थिरता कारक चौथे भागमें ३ लक्ष्मी पांचमें ४ दरिद्र छठे धनदायक

सातवां हानिआठवां मृत्युकारक इस क्रमसे शुभाशुभफलदायक होतेहैं ॥

शिलान्यास

दक्षिणपूर्वकोणेकृत्वापूर्वंशिलान्यसेत्प्रथमं
शेषाप्रदक्षिणेनस्तंभांश्चैवंप्रतिष्ठाप्याः॥१॥

दो०॥पूजन करके आग्नेय कोणमें प्रथम शिला स्थापन करे शेष शिलाप्रदक्षिणा स्थापित करवे इसी प्रकारस्तंभ स्थापित करे १

शिलान्यासनक्षत्र

शिलान्यासःप्रकर्तव्योरहिणीश्रवणेभृगे
शेषेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विश्रुत्तरात्रये१

दो०॥श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा यह नक्षत्र शुभहैं ॥१॥

सूर्यकेनक्षत्रसेद्वारचक्रं

शिर४	कोण८	घ्राण२	देहत्व३	मध्यभे४
लक्ष्मी	उद्वसनं	सौख्यं	गृहपतिमरणं	सौख्यं

शेषनागकेमुख

सिंहेकन्यालुलायांभुजगपतिमुखंभ्रांभुकोणेविनि
क्षातंवायव्येस्यालद्वयंत्वलिधनमकरेदृष्टखा
नंवदंति॥कुंभेमीनेचमेषेनिऋतिदिविधुमं
खंवातंवायव्यकोणेचाग्नेकोणेमुखंवैशेष
मिथुनगतेकर्कटेरक्षखातम्॥१॥२॥३॥

दो०॥सिंह कन्या तुला इन राशिन के सूर्य में ईशान में मुख जानिये तब अग्नि कोण में खात करावे वृश्चिक धन मकर इनके सूर्य में वायु कोण में मुख जानिये तब ईशान कोण में खात करावे-कुंभ मीन मेष इन के सूर्य में नैऋति में मुख जानिये तब वायव्य में खात करावे वृष मिथुन कर्क इन के सूर्य में अग्नि कोण में मुख जानिये

तवनेऋत्य कोणमेंस्नान करावे इस प्रकार नीव धरै ॥१॥

दुष्टयोग॥वज्र व्याघात मूल भ्रुव व्यती पात अंग-
डक॥॥विष्कुंभ परिघो वर्ज्यौ बारो मंगल भास्करो

टी०॥वज्र व्याघात मूल ध्रुव व्यतीपात गंड विष्कुंभ परिघ और मंगल रवि ये वर्जित हैं ॥१॥ (कूर्मचक्रं)

तिथिस्तु पंच गुणिता कृत्तिकाद्यैः संयुता॥तथाद्रा-
श्लेषाश्च नव भागेन भाजिता॥फलं॥जले वेदा मुनि
अद्रुस्थले पंच हयं चलः॥विषङ्गनवचाकाशे त्रिविध
कूर्मलक्षणं॥जले लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्त-
थैवच॥आकाशे मरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम्॥१॥

टी०॥गृहारंभ की तिथियों को पांच से गुणा करे और कृत्तिका से नव तक संख्या को मिलावे फिर १२ मिलावे और ९ का भाग देजो शेष बचे ४ ७ भ्रु तो जलस्थान में कूर्म जानियेता को फललाभकारक है और ४।२।९ ये बचें तो स्थल में जानिये ता को फल हानिकारक है और ३।६।८ ये बचें तो आकाश में कूर्म जानियेता को फल मरण है इस प्रकार त्रिवि धकूर्म के लक्षण जानेये॥२॥ (स्तंभचक्रं)

सूर्याधिष्ठित भ ऋक्षं प्रथम तो मध्ये तथा दिंद्यानि
स्तंभाग्रे रस संख्ययामुनि वरैः कृत्वा मुहूर्तं शुभम्
स्तंभाग्रे मरणं भवेत् गृह पतेर्मूले धनार्थक्षयो
ध्येचैवनु सर्वसौख्य मतुलं प्राप्नोति कर्तासदा॥१॥

टी०॥सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम तिस में प्रथम दो नक्षत्र स्तंभ के मूल के तिस का फल धन क्षय और दूसरे २ नक्षत्र स्तंभ के मध्य के तिस का फल लक्ष्मी और कीर्ति की प्राप्ति तीसरे नक्षत्र स्तंभ के अग्रभाग के तिस का फल मरण कारक इस रीति से स्तंभारोपण करना॥२॥ (देहलीरचने का मुहूर्त्त)

मूलेभोमे चिरं संगृहपतिमरणं पंचगर्भेसुखं स्यात्
मध्येदेयाश्चरर्क्षं धनसुखसुखदं पुच्छदेशेऽतिहानिः

पञ्चादेयं विकरक्षंगृहपतिसुखदंभाग्यपुत्रार्थदेयंस्
र्यक्षाच्चंद्रऋक्षंआनेदिनगणायन्मोभचक्रंविलोक्य।१।
टी०।सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्र तक संख्या और फलऐसेक्रमसेजा
नियेप्रथम ३नक्षत्रमेंसंभारोपणा करेतोमृत्यु-दूसरे ५गर्भके नक्षत्र
मेंगर्भसुख करेतीसरे ८नक्षत्रमध्यके धनसुखपुत्रसुख करे चौथे८
नक्षत्रपुच्छके मित्रहानिका पांचवें ३नक्षत्रअग्र भागके सुखसौभा
ग्यपुत्रलाभकारक ऐसे देहलीकरनाशुभजानिये॥१॥ (द्वारचक्रं)
शरकोष्ठत्वारिऋक्षाणिऊर्ध्वंचैवप्रदापयेत्॥द्वौद्वौ
कोणेषुदद्याद्दशरवा पंचचतुश्चतुः॥शषश्चत्वारिदे
यानिमध्येत्रीणिप्रदापयेत्॥ऊर्ध्वेतुलभतेराज्यमुद्वासे
कोणकेषुच। शरवायांलभतेलक्ष्मीमध्येराज्यप्रदं
तथा॥शषःस्यत्तेमरणंप्रोक्तंद्वारचक्रंप्रकीर्तितम्॥१
टी०।सूर्यकेनक्षत्रसेदिवसकेनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रमप्रथम ४न
क्षत्रऊर्ध्वकेतिसका फलराज्यप्राप्ति दूसरे कोणाके ४नक्षत्रतिसका फ
लउद्वासनतीसरेवाजूकेनक्षत्र ४तिसका फललक्ष्मीप्राप्ति चौथे४मी
चेकेनक्षत्रतिसका फलराज्यप्राप्ति पांचमेंमध्यके ३नक्षत्रतिसका
फलमरण॥२॥ (प्रांतिकर्मका अग्निचक्रं)
श्लोकातिथिर्वारयुताकृताप्तेषेदेगुणाभूभुविवन्हिवासः
शेषाद्यहोमेघृतपिंडयुग्मंशेषेप्राणार्थेनाशोदिविभूलभेन
श्लोका।।जिस तिथिमें प्रांति करनी होय विस तिथिमें एक और मिला
वे और जोवार होय सो मिलावे और ४का भागदे शेष रहे तिसका फल
जाननातीन और मृत्यु बचेंतो पृथ्वीमें अग्निका वास जानिये।ति
सका फल सुख रहै एक बचेतो अग्निका वास स्वर्गमें जानिये।
तिसका फल प्राणनाशक और होबचेंतो अर्थनाशक जानना।२।।
(गृहके मुखमें आकृतिका विचार)
नरारिभिद्भृगुभास्करीचंद्रमःकुजसौम्यविधनुदकेतवः॥
क्षितोदिनेभंगणायतक्रमात्प्रतिसर्गवितर्यविलग्नरोगश

टी०॥ सूर्य के नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गिने पहले ३ सूर्य के शुभ दूसरे ३ बुध-शुभ तीसरे तीन ३ भृगु शुभ चौथे ३ शनि अशुभ पांचमें तीन ३ चंद्रमा शुभ छठे ३ मंगल अशुभ सातमें ३ गुरु शुभ आठवें ३ राहु अशुभ नवमें ३ केतु अशुभ है॥१॥

॥ गृहप्रवेशकामुहूर्त ॥

अथ प्रवेशो नवमंदिरस्य यात्रानि वस्त्रावयभूषणीनाम्॥
सौम्यायने पूर्वदिने विधेयं वास्तुंचभूतबलिंचकार्यत्

टी०॥यात्रा और राज दर्शन के मुहूर्त में उत्तरायन सूर्य होने में प्रथम वास्तु पूजा और भूतबलि करि के नवीन गृहमें प्रवेश करनायोग्य है १

चित्रानुराधा मृग पौष्ण पुष्य स्वाती श्रविष्ठा श्रवणोद्भमूलम्
वारेश्वसूर्यार्क्षतिथीज्यरिक्तातिथौ प्रशस्तो भवनप्रवेशः १

टी०॥चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती पुष्य स्वाति धनिष्ठा श्रवण मूलये नक्षत्र रवि भौम ये चार और रिक्तातिथि इनको छोड के गृहप्रवेश करना

कलशचक्रम्

प्रवेशे कलशेर्क्षात्संचनागाद्यर्क्षमानम्॥
अशुभंच शुभंज्ञेयंमशुभंच शुभंतथा॥२॥

टी०॥सूर्य के नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक जो नक्षत्र होय उनमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभजानिये और आठ नक्षत्र शुभ आगे आठ फिर अशुभ शेष ६ शुभइस प्रकार कलशचक्र मे में जानना॥२॥

वामार्कलक्षणं

रंध्रात्सुचाद्यनादायात्संख्यं स्वर्कस्थितेक्रमात्
पूर्वाद्यगादि मुखंगेहं विप्रोद्वामो भवेदनः॥१॥

टी०॥घरमें प्रवेश करने के समय सूर्य वायां होय तिसके जानने का क्रम प्रवेश लग्नमें ८ वें स्थान से ५ वें स्थान तक पूर्व द्वार वारे को शुभ और दक्षिन के द्वार वारे को ५ वें स्थान से ५ स्थान तक शुभ पश्चिम द्वार वारे को दूसरे स्थान से पांच स्थान तक शुभ उत्तर द्वार वारे को एकादश स्थान से ५ स्थान पर्यंत वामार्क होता है सो प्रवेश काल में शुभ है॥१॥

लग्नका शुभाशुभविचार ॥ त्रिकोणकेंद्रगैः शुभैः स्त्रियश्च त्याभसंस्थितैः ॥ असद्ग्रहैः स्थिरोदयगैर्विशेद्बलेविधौ ॥ १
टी० ॥ त्रिकोण केंद्रमें शुभग्रह होय और तीसरे ग्यारहवें पापग्रहो य ऐसी स्थिर लग्नमें गृह प्रवेश शुभजानिये ॥ २ ॥

ग्रहप्रवेशो लग्ने ॥ त्रिषडायगतैः पापैः रष्टान्त्येंतरगैः शुभैः ॥ चंद्रे लग्नारिरंध्रांत्यवर्जिते स्याच्छुभंगृहम् ॥ १
टी० ॥ तीसरे छठे ग्यारहे ३ । ६ । ११ पापग्रह शुभ और आठवें बारहवें ४ । १२ शुभग्रह होंय तो शुभ परंतु चंद्रमा लग्न में छठे बारहे आठवें नवें २ । ६ । ८ । १२ । ९ होंय तो शुभ है ॥ २ ॥ अशुभयोग लग्न के ॥

धनकेंद्रत्रिकोणास्थः क्षीणचंद्रोनशोभनः ॥
शुक्रोनैवांशगः खेटः स्वास्तसंस्थोपिनोशुभः ॥ १
टी० ॥ लग्नके विषे २ । ११ । ४ । ७ । १० । ५ । ९ इन स्थानोंमें स्थित कृष्ण पक्षका चंद्रमा तो अशुभ जानना और शुक्र ग्रह और नवांशमें तथा १० । ७ स्थित होय तो अशुभ जानना ॥ आयुष योग ॥

लग्नेजीवःसुखेशुक्रोबुधःकर्मण्यगोरविः ॥
रविजःसहजेन्यूनशतायुःस्यान्नवागृहम् ॥ १
टी० ॥ लग्नमें बृहस्पति मित्र स्यानी दशमें बुध चौथे शुक्र तीसरे ग्यारहे सूर्य ऐसी लग्नमें घर का आरंभ करे तो १०० वर्ष की आयु होय ॥

दूसरा प्रकार

भृगुर्लग्नेबुधेज्ञेलाभेर्कःकेंद्रगोगुरुः ॥
यस्यारंभेवतस्यायुर्वत्सराणांशतद्वयम् ॥ १ ॥
टी० ॥ शुक्र बुधये दशमें १० स्थानमें हो ११ वे रवि हो केंद्रमें बृहस्पति होय ऐसी लग्नमें गृहारंभ करे तो दोसो २०० वर्षकी आयु होय ॥ १ ॥

तीसरा ॥ जीवोबुधेभृगुर्ज्ञेलाभगोभानुभूमि
जौ ॥ आरंभेयस्यतस्यायुःसमाधीतिःसहस्रियाः
टी० ॥ बुध बृहस्पति शुद्धये दशमें स्थान में हो सूर्य मंगलये २ रवें स्था
नमें होय तो लक्ष्मी युत घर की आयु ९० वर्षकी जानिये ॥ २ ॥

स्वर्क्षगे हिभगोलाभे सुरेज्ये केन्द्र संस्थिते ॥
धनधान्ययुता गेहे सुता योग्य चिरं भवेत् ॥ १॥

टीका ॥ कर्क का चंद्रमा ११वें स्थान वें होय वा गुरु केंद्र में होय ऐसी लग्नमें गृहारंभ होय तो धनधान्ययुक्त सुता योग्य सहित चिरकाल रहै ॥ १॥

स्वोच्चवर्तिनिभृगौ बिलग्नगे देवमंत्रिणि रसातले थवा
स्वोच्चगे रविसुते थवायगे स्यास्थितिश्च सुचिरं सहस्त्रिया

टीका ॥ शुक्र लग्नमें बृहस्पति ४ स्थान शनि स्वगृही होय ऐसी लग्नमें लक्ष्मी युक्त चिरकाल रहै ॥ १॥ (पृथ्वी शोधने का प्रकार:)

कुंडार्थ पृथ्वी परिशोधनतवे प्रष्टर्मुखाद्यः प्रथमं स्फुटाभवेत् ॥ वर्गादिवर्णाः किल तद्दिशि स्मृतं शल्यं मुनींद्रैरुपयैस्तु मध्यतः ॥ १॥ स्मृत्वेष्टदेवतां प्रष्टर्वचनस्याद्यमक्षरं ॥ गृहीत्वातुततः शल्यात्शल्यं सम्यग्विचार्यते ५ ॥

टीका ॥ कुंड के निमित्त अर्थात् नवीन घर के बनाने को प्रथम धरती शोधन करे पृच्छक इष्ट देवता का स्मरण करके प्रश्न करे ब्राह्मण सेता के मुख का आदि का अक्षर जिस वर्ग का निकले तिसका उत्तर अ क च ट त प य श वर्ग पूर्वादि अष्ट दिशाओं में जाने मध्यमें ह य व वर्गों के आदि अक्षर जहाँ होय बिस स्थान में शल्य है तिस का प्रकार नीचे लिखा है तिसमें से दो दो स्थानों को जानिये ॥ १ ॥ २॥

पृच्छायांयदिप्रश्नः प्राच्यांनरशल्यंतदाभवेत ॥ सार्धहस्त प्रमाणेनतच्च मानुष्यमृत्युकृत १आग्नेयांदिशिकः प्रष्टा स्वरशल्यंकरद्वये ॥ राजदंडोभवेत्तत्रभयंचैवनिवर्तते ॥ २॥ याम्यायांदिशिचःप्रश्नेतदास्यात्कृमिसंस्थितं ।नरशल्यं गृहेतस्यमरणंचिरयोगतः ३नैर्ऋत्यांयदिटःप्रश्ने सार्द्धहस्तदधःस्थले । शुनोस्थिजायते तत्र बालानांजायतेमृतिः । तःप्रश्नेपश्चिमायांतुशिशोःशल्यं प्रजायते ॥ सार्द्धहस्तेगृहस्वामीनतिष्ठतिसदागृहे ५ वायव्यांदिशिपः प्रश्नेतपांगारास्तुष्करे ॥ कुर्वंतिमित्रनाशंचदुःस्वप्नदर्शनंसदा ॥ ६॥

उदीच्यांदिशिपः प्रश्नेविप्रशल्यंकरादधः॥तस्छ्रीघंनिर्धन
त्वायकुवैरसदृशस्यहि॥७॥ईशान्यांयदिशः प्रश्नेगोपू
त्यंसार्द्धहस्ततः॥तद्गोधनस्यनाशायजायतेगृहमेधिनः॥
॥८॥हपयाकोष्टमध्येचवक्षोमात्रंभवेदधः॥नृकपाल
मथोभस्मलोहंतत्कुलनाशकृत्॥९॥ ॰ ॰ ॰ ॰ ॰॥

टीका॥ पृच्छक के मुख से आदि अक्षर अ वर्ग का निकलेतो पूर्व कोडे ढ हाथ गहरा खोदे तो मनुष्य की हड्डी निकले वह मृत्यु कारक जानिये १ और क: निकले तो दो हाथ गहरा अग्नि कोण में खोदे तामें गध की हड्डी निकले उस्से राजदंड का भय कभी निवृत्त न होय १ च अक्षर उच्चारण होय तो दक्षिण की ओर कमर की बराबर गहरा खोदे तो नर के हाड निकले तिसका फल चिरकाल के रोग से मरण होय ३ ट का उच्चारण हो तो नऋत्य दिशा में डेढ हाथ गहरा खोदने से कुत्ते के हाड निकले तिस का फल कन्जीवे ४ त का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशा मे डेढ हाथ गहरे पर बालक के हाड जानिये तिसका फल घर का मालिक सदा घर में न रहै ५ प का उच्चारण होय तो वायव्य दिशा में चार हाथ गहरे में जली हुई धान की भूसी वा कोयले निकलें तिसका फल मित्र का नाश करे दि सुपने दिखाई दें ६ य का उच्चारण होय तो एक हाथ गहरा उत्तर में खोदे तो ब्राह्मण के हाड निकले तिसका फल कुवेर की बराबर धन का नाश करे दरिद्र होय ७ श का उच्चारण होय तो ईशान दिशा में डेढ हाथ पर गौ के हाड जा० तिसका फल गोधन का नाश करे॥८॥ ह प य इनका उच्चारण हो तो मध्य में छाती की बराबर गौंडे में मनुष्य कपाल वा भस्म वा लोह निकले तिस्का फल कुल नाश इस प्रकार जिस वर्ग का नामाक्षर प्रश्न कर्त्ता के मुख से उच्चारित हो उसी दिशा में देखै॥९॥

शुक्र का विचार

एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविप्लवे॥विवा
हेतीर्थयात्रायांप्रतिशुक्रोन विद्यते॥ १ ॥

टीका॥ गांव के गांव में शहर के शहर में दुर्भिक्ष में काल में देश के उपद्रव

यात्रा में सन्मुख शुक्र होय तो कुछ दोष नहीं है ॥ १ ॥

पौष्णादावग्नि पादांतं यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ॥
तावच्छुक्रोभवेदंधः सन्मुखं गमनं शुभम् ॥ १ ॥

टीका ॥ रेवती अश्विनी कृतिका इन नक्षत्रों के प्रथम चरण में शुक्र अंधा होता है उसके सन्मुख गमन में दोष नहीं है ॥ १ ॥

दक्षिणोदुःखदः शुक्रः सन्मुखेहंतिलोचनः ॥ वा
मेपृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेदस्तगः शुभः ॥ १ ॥

टीका ॥ जाने में शुक्र दाहना होय तो दुःख दायक सन्मुख नेत्र पीड़ा का रुक जायें और पीछे शुभ जानना - और जो पश्चिम में अस्त होय तो पूर्व को उत्तम जानिये और जो पूर्व में अस्त होय तो पश्चिम में उत्तम जानना ॥ १

घात प्रकरणं ॥ प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणि
ज्य संग्रहे। वादिचैव गृहारंभे वर्जयेत् घात चंद्रमाः

टीका ॥ यात्रा में युद्ध में व्यापार में खेती करने में धान्य संग्रह करने में वाद विवाद समय में गृहारंभ के समय में घात चंद्र वर्जित है ॥ १ ॥

घाततिथिंघातवारं घातनक्षत्रमेवच ॥
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्

टीका ॥ यात्रा समय में घात वार नक्षत्र तिथि वर्जित है और में शुभ जानिये ॥

मेषेरविर्मघाप्रोक्ता षष्ठी प्रथम चंद्रमाः ॥ वृषभेपंच
मोहस्तचतुर्थीशूनिरेवच ॥ २ ॥ मिथुनेनवमः स्वाती
शुक्रेचंद्रवासरः ॥ कर्के द्विरनुराधा चबुधषष्ठी प्र
कीर्तिता ॥ २ ॥ सिंहेपरश्चंद्रमाश्चदशमी शनि मूलके
कन्यायांदशमश्चंद्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥ ३ ॥ तुलेगु
रुर्द्वादशीचशतंतृतीय चंद्रमः ॥ वृश्चिकेरेवतीसप्तदशमी
भार्गवस्तथा ॥ ४ ॥ धनेचतुर्थोभरनीद्वितीयाभार्गवस्त
था ॥ मकरेष्टमोरोहिणीद्वादशी भौमवासरः ॥ ५ ॥
कुम्भेएकादशश्चार्द्रा चतुर्थी गुरुवासरः ॥ मीनेच
द्वादशः सर्पे द्वितीयाभार्गवस्तथा ॥ ६ ॥ ५ ॥

टीका सुगमत्वादिचक्रं ॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	कं	सिं.	कं	तु	वृ.	ध.	म.	कुं	मी.
सू.	४	८	१२	५	८	१	६	१०	७	११	२	३
चं.	१	५	८	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
मं.	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	४
बु.	२	६	१०	३	७	११	४	८	५	९	१२	१
वृ.	६	१०	२	७	११	३	८	१२	९	१	४	६
शु.	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	१०	१	२
श	७	११	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुरा	मूल	श्रव	शत	रेवती	भरणी	रोहिणी	आद्रा	श्लेषा
वार	सूर्य	शनि	चंद्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	भौम	भौम	शुक्र	शुक्र
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२
गुण	रजो.	रजो.	तमो.	सतो.	तमो.	रजो.	रजो.	सतो.	तमो.	तमो.	तमो.	सतो

(तिथि परत्व लग्न वर्जित)

नंदायामलिहर्योस्तुतुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायांमीनधनुवोःकालतिष्ठतिसर्वदा १ जयायांस्त्रीमिथुनयोरिक्तायांमेषकर्कयोः ॥ पूर्णायांकुंभवृषयोर्मनुष्यमरणंध्रुवम् ॥ २ ॥

टीका ॥ नंदा तिथि को सिंह तुला वृश्चिक मकर और भद्रा तिथि को मीन धन जया तिथि को कन्या मिथन रिक्ता तिथि में मेष कर्क पूर्णतिथि में कुंभ वृष इन तिथियों में लग्न वर्जित है ॥ १ ॥

मेषे वेदा वृषे छौच मिथुनेचत्रतीयकः ॥ दशा कर्के रविःसिंहेकन्यायांकप्रकीर्तितः । षट्तुलेवृश्चिकेखेदुधनेरुद्राप्रकीर्तिताः । मकरेऋषयःप्रोक्ताःकुंभेवाणाःउदाहृताः । मीनेशांध्रकालचंद्रःशौनकश्चेदमब्रवीत् २

टीका ॥ मेष राशि को चौथा वृष को आठवां मिथुन को ३ कर्क को १० सिंह को १२ कन्या को ६ तुला को ६ वृ. को १० धन को ११ मकर को ७ कुंभ को ५ मीन को ४ इस प्रकार लाल चंद्र राशि के अनुसार शौनक मत से वर्जनीय है ॥

सत्वंतुचंद्रगुरुवोकुजभृगुराजसोगुणो घातः
रविशनिचंद्रसुतानांरपुणांतामसोनेष्टाः १

टीका ॥ बृहस्पतिवार सोमवार को सतोगुण घात मंगल वा शुक्र को रजोगुण घात रविवार शनिवार बुधवार कोतमोगुण घात जानना ॥ १

धनुर्मीनकुलीराणा घातःसत्योविनिर्दिशेत्
तुलालिवृषमेषानां घातोरजसिनिश्चितम् २ ॥
कन्यामिथुनसिंहचकुम्भस्यमकरस्यच ३ ३ ॥
घातस्तमसिवेलायांविपरीतेशुभप्रदः ॥ ३ ॥

॥ टीका ॥

	रजो.	सतो.	तमो.	सतो.	रजो.	तमो.	गुण
रा.	१	४	७	चं	भौम	सूर्य	वाराः
शु.	२	८	१०	द्र	शनि		
बा.	७	१२	११	बृह	भृगु	बुध	

होराकथनंशुकुन ॥ वारात्षष्ठस्यसप्तस्यहोरासार्द्धद्विनाडिका।अर्कशुक्रोबुधश्चंद्रोमंदोजीवधरासुतो १गुरुविवाहेगमनेचशुक्रोवोधेसौम्यःसर्वकार्येषुचंद्रः।कुजेचयुद्धेरविराजसेवामंदेचवित्तंइतिहोरयोगः।यस्यगृहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम्॥तस्यगृहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते २ ॥

टीका ॥ जिस वार का होरा होय उसी में प्रथम २ घटिका होरा तिसके छटे वार की दूसरी होरा इसी क्रम से दिवस के १२ होरा जानिये रवि की होरा राजसेवा को शुभ दूसरी शुक्र की गमन का शुभ तीसरी बुध की ज्ञानप्राप्ति को शुभ चौथी चंद्रमा की सर्वकार्य को शुभ पांचवी शनि की द्रव्यसंग्रह को शुभ छठी गुरु की विवाह को शुभ सातवीं मंगल की होरा युद्ध को शुभ इस प्रमाण होरा का क्रम जानिये और जिस २ ग्रह का जो जो वार जिसमें कहा जो कर्म सो उसकी होरा में करावे ॥ १ ॥

(सूर्य का होरा)

सूर्यस्यहोरेराजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयंच ॥
काकत्रयंद्यूनकुलोतथैवचाषस्तथैकोवृषभस्तुगौश्च १

टीका ॥ रवि की होरा में गमन करे तो आगे जो शकुन होय तिस को कहते हैं। रज की वस्त्र युक्त कन्या ४ ब्राह्मण ३ काक २ नौला २ चाष १ बैलगाय ये शकुन मिलै ॥ १ ॥

चंद्रस्यहोरेद्विजयुग्मकाकभेरीमृदंगानकुलःखरोष्टौ
हयश्चगोमेषशुभस्तथैवपुष्पाणिनारीद्वयमेवमार्गे॥१

टीका ॥ चंद्रमा की होरा में गमन करे तो मार्ग में दो ब्राह्मण काक नग रि मृदंग और नौला गधा ऊँट घोड़ा गाय वा मेढ़ा कुत्ता और पुष्प दो स्त्री ये शकुन जानिये ॥ १ ॥ (मंगल की होरा)

मर्जारयुद्धंकलहःकुदंवेरजस्वलास्त्रीभवनेप्रदाहः।
नपुंसकःस्वत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्तोधरणीसुतस्य

टी०॥ मंगल की होरा में गमन करे तो मार्जार युद्ध अथवा स्त्री पुरुष की लड़ाई वा रजस्वला स्त्री वा जलता हुआ घर के नपुंसक ३ कुत्ता नग्न ब्राह्मण ये मिलें ॥ १ ॥ (बुध की होरा)

बुधस्यहोरेशकुनश्चसर्वःस्त्रीपुत्रयुक्तोकलशस्तुपूर्णः
सुचातकश्चाषगजोकुमारःपुष्पाणिनारीखलुदर्पणाश्च १

टीका ॥ बुध की होरा में सर्व शकुन स्त्री पुत्र युक्त पानी भरे कलश सा तक पक्षी वा चाष पक्षी हाथी वा बालक स्त्री दर्पण ये मार्ग में मिलें ॥ १

(गुरु की होरा)

गुरोर्द्विजातिर्गणकाचधेनुस्त्रीबालयुक्तासजलोघटस्तु
ऊर्णाचकाकोनकुलोवकश्चहंसस्यराजावहवस्तुवैश्यः १

टी०॥ गुरु की होरा में ब्राह्मण गणिका वा गाय पुत्र सहित स्त्री जल का भरा घड़ा ऊनवस्त्र काक नौला वगुला हंस राजा वैश्य मिलें ॥ १ ॥

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेन्द्रःकाकत्रिकंचायनपुंसकोवा
मद्यंहिमांसंगणिकाचधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयंचवैश्यः।१॥

टीका ॥ शुक्र की होरा में ब्राह्मण गणिका ३ तीन काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीन शूद्र वैश्य ये मिलें ॥ १ ॥

पतंगशूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्रीमृतकंस्तथैव

पिशाचगृध्रौविधवाचवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचंडः१

टीका ॥ शनिकीहोरामेंनग्नमुसलमानरजस्वलास्त्रीप्रेतपिशाचगीध पक्षीविधवास्त्रीअग्निनपुंसकप्रचंडतरुणपुरुषये शकुनमिलें॥१॥

(मनु का वाक्य)

गमनंप्रतिराजंस्तुसन्मुखादर्शनेनच ॥ शु
तस्तांश्चैवसभाषेतसर्वान्नेताश्चकीर्तयेत १

टीका ॥ मनु का वाक्य राजा प्रति कहते हैं - गमन काल में पूर्वोक्त शकुनों का कीर्त्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न होय तो मन में स्मरण करके गमन करे तो शुभ है ॥ १ ॥

(वारानुसार वस्त्र धारण)

रवौ नीलंबुधे पीतं कृष्णा वर्णं शनिश्चरे॥श्वे
तंगुरौशुक्रेभौमे रक्तं सोमेतुचित्रकम ॥ १ ॥

टीका ॥ रविवार को नीला वस्त्र - बुध को पीत - शनि को काला गुरु शुक्र को श्वेत पीत - मंगल को रक्त सोम को चित्र विचित्र इस प्रकार ब स्त्र धारण करके गमन करे॥ १॥ (यात्राप्रकरण)

हस्तेंदुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्टाचपुनर्वसुश्च॥प्रो
क्तानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपंचाद्रिमसप्ततारा:

टीका ॥ हस्त मृगशिर अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ हैं परंतु ३।५।७ येतारा नेष्ट हैं॥ १॥

रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ॥ षा
ढौत्रयंभाद्रविश्वेप्रयाणेमध्यमास्मृता:॥१॥

टीका ॥ रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढ उत्तराभाद्रपद उत्तरा षाढ ये नक्षत्र यात्रा में मध्यम जानना ॥ १ ॥

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीकृत्तिकातथास
र्पःस्वातिविशाखाचनित्यंगमनवर्जिताः ॥

टीका ॥ तीनों पूर्वा मघा ज्येष्ठा भरणी कृतिका श्लेषा स्वाति विशाखा ये नक्षत्र यात्रा में वर्जित हैं॥ १॥ (आवश्यकेवर्ज्यानि)

कृतिका एक विंशूत्या भरणाय: सप्तनाडिका:
एकादशी मघा याश्च त्रिपुर्वाणां च षोडश: ॥ १
विशाखा सार्प चित्रा च स्वाती रौद्र चतुर्दशी: ॥
आद्यास्तु घटिका स्त्याज्या: प्रेषांप्रेगमनं पुभं २

टीका ॥ तीनों पूवा की १६ घटी मघा की ११ ज्येष्टा संपूर्ण भरणी की ७ घटी कृतिका २१ घटी जन्म नक्षत्र संपूर्ण श्लेषा विशाखा चित्रा स्वांति आद्रा इन नक्षत्रों की आदि की १४ घटी यात्र में वर्जित है ॥ १ ॥ २ ॥

(शुभाशुभ वार यात्रा समय)

अर्के क्लेशमनर्थकं च गमने सोमे च बन्धुप्रियं
चांगारे नलतस्कर ज्वरभयं प्राप्नोति चार्थं बुधे ॥
क्षेमा रोग्य सुखं करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रे शुभो
मंदे बंधन हानि रोग मरणा न्मुक्ता निगर्गादि भि: १

टीका ॥ रवि वार को गमन करे तो मार्ग में क्लेश होय अर्थ की हानि सोम वार को गमन करे तो बंधु प्रिय दर्शन होय मंगल को गमन करे तो अग्नि चौर भय ज्वर भय - बुध को गमन करे तो द्रव्य और सुख की प्राप्ति - गुरु को गमन करे तो आरोग्य - शुक्र को गमन करे तो शुभ फल प्राप्ति और लाभ होय शनि को गमन करे तो बंधन रोग होय मरण होय ॥ १ ॥

तिथि वार नक्षत्र अनुसार दिक् शूल वर्ज्या दिशा परत्व जानना

मूल श्रवण घ्राजेषु प्रति पन्नवमीषुच ॥ शनौ सो
मे बुधे चैव पूर्वस्यां गमनं त्यजेत् ॥ १ ॥ ५ ५ ॥

टीका ॥ पूर्व दिशा को मूल श्रवण ज्येष्टा परवा नवमी शनि सोम बुध वार इन में गमन नहीं करे वर्जित है ॥ १ ॥

पूर्वाभाद्रपदाश्विनौ पंचमी च त्रयोदशी
गुरुर्धनिष्ठाद्रौ चैव याम्ये सप्त विवर्जयेत् १

टीका ॥ दक्षिण दिशा को पूर्वाभाद्रपद अश्विनी पंचमी तरस गुरु वार धनिष्ठा इनमें गमन नहीं करे ॥ १ ॥

रोहिण्यां च तथा पुष्ये षष्टी चैव चतुर्दशी

भौमार्कभृगुवारेषु नगच्छेत्पश्चिमां दिशाम्

टीका ॥ पश्चिम दिशा को रोहिणी पुष्य षष्टी ६ चतुर्दशी १४ मंगल रवि शुक्र इनमें न जाय ॥ १ ॥

करे चोत्तर फाल्गुन्यां द्वितीया दशमी तथा । बुधौ रवौ भौमवारे न गच्छे दुत्तरां दिशम् ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ हस्त उत्तरा फाल्गुनी दूज २ दशमी १० बुध रवि भौम इन में उत्तर दिशा को गमन न करे ॥ १ ॥ (विदिक्शूल)

ईशान्यां ज्ञे शनौ शूले आग्नेय्यां गुरु सामयोः वाय व्यां भूमि पुत्रेषु नैऋत्यां शुक्र सूर्ययोः ॥ १ ॥

टीका ॥ बुध शनि में ईशान को वर्जित है गुरु और सोम वार में आग्नेय कोण में गमन कीजिये मंगल को वायव्य में शुक्र और रवि को नैऋत दिशा को गमन कीजिये ॥ १ ॥ (शूलदोषनिवारणभक्ष्य)

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमेऽस्तथा ॥ गुडमंगारवारेतु बुधवारे तिलानपि ॥ गुरुवारे दधि ज्ञेयं भृगुवारेयवानपि ॥ मा षान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूलदोषोपशांतये ॥ २ ॥ ४ ४ ४ ॥

टीका ॥ सूर्य को घी सोम को दूध मंगल को गुण बुध को तिल बृहस्पति को दधि शुक्र को जब शनि को माष ये भक्षण करके गमन करे तो शूल दोष दूर होय ॥ २ ॥ (कुंभमीन के चंद्रमा में वर्जित कर्म)

शय्या वितानं प्रेताग्नि क्रिया काष्ठ तृणा जिनम् याम्य दिग्गमनं कुर्यान्न चंद्रे कुंभ मीनगे ॥ १ ॥

टीका ॥ पलंग चुनाना और प्रेत क्रिया और तृण काष्ठादि संग्रह दक्षिण को गमन ये काम कुंभ मीन के चंद्रमा में न करे वर्जित है ॥ १ ॥

(सन्मुख चंद्र का विचार)

करणभगणदोषं वार संक्रांति दोषं कुतिथि कुलिक दोषं यामयामार्द्ध दोषम् ॥ कुज शनि रवि दोषं राहु केत्वा दि दोषं हरति सकल दोषं चंद्रमा सन्मुखस्थः ॥ १ ॥

टीका ॥ करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यमार्द्ध मंगल शनि

रवि राहु इन के दोषों को सन्मुख चंद्रमा दूरि करता है ॥ १ ॥

दिशा के अनुसार सन्मुख चंद्रमा ॥

मेषे च सिंहे धन पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये । तुले च कुंभे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ १ ॥
सन्मुखो चार्थ लाभाय दक्षिणे सुख संपदा ॥ पृष्टतः प्राण नाशाय वामे चंद्र धन क्षयः ॥ २ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

टीका ॥ मेष सिंह धन ये पूर्वभागी चंद्रमा वृष कन्या मकर इन का दक्षिण भागी चंद्रमा तुल कुंभ मिथुन इनका पश्चिम में चंद्रमा कर्क वृश्चिक मीन इन का उत्तर में चंद्रमा वास करता है ॥ फल ॥ दिशानुसार सन्मुख चंद्र होय तो गमन करे अर्थ लाभ होय दाहना होय तो धन संपति की लाभ पीछे चंद्र होय तो प्राण नाश करे और बायां चंद्रमा होय तो धन नाश करे ॥ १ ॥ २ ॥

काल वेला विचार ॥ पूर्वाह्णे चोत्तरं गच्छेत्प्राच्यां मध्याह्नके तथा ॥ दक्षिणे अपरान्हे तु पश्चिमे अर्द्ध रात्रके ॥ १ ॥

टीका ॥ दिवस के पहले पहर में उत्तर को और दूसरे पहर में तथा मध्यान में पूर्व को और तीसरे पहर चौथे में दक्षिण को और अर्द्ध रात्रि में पश्चिम को गमन न करना शुभ है ॥ १ ॥ (योगिनी वासः)

प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया दिशि चोत्तरे ॥ तृतीये कादशी वन्हौ चतुर्दशी दिशि नैऋते ॥ १ ॥ पंच त्रयोदशी याम्ये षष्ठी भूतं च पश्चिमे ॥ षष्टे च शिवदाः प्रोक्ता वामे चैव विशोषतः ॥ सप्तमी पूर्व वायव्ये अमावास्या षष्ठमी शिवे ॥ योगिनी सा भवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणाम् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रतिपदा और नवमी को पूर्व में योगिनी जानिये - द्वितीया और दशमी को उत्तर में - तीज एकादशी को अग्नि कोण में - चौथ द्वादशी को नैऋत्य में - पंचमी त्रयोदशी को दक्षिण में - षष्ठी चौदश को पश्चिम में - सप्तमी पूर्णिमा को वायव्य में - अमावस अष्टमी को ईशान में इस प्रमाण से योगिनी का वास जानिये ॥ १ ॥ फल ॥ ये पीछे और बायें होय तो शुभ जानो - दाहिने होय तो धन हानि करे और सन्मुख मरण के तुल्य फल जानिये ॥ १ ॥

(वारानुसार कालवासा)

रकोत्तरे वायु दिशाच सोमे भौमे प्रतीच्यां वुधनैऋतेच
याम्ये गुरौ वह्नि दिशाच शुक्रे मंदेच पूर्वे प्रवदंति कालम्

टीका ॥ रविवार को उत्तर में काल सोमवार को वायव्य में मंगल को प
श्चिम में बुध को नैऋत में गुरु को दक्षिण में शुक्र को आग्नेय में शनि को पू
र्व में इस प्रमाण से कालादिक शूल वार अनुसार जानिये ॥ (फलं)

रवि दिन गुरु पूर्वे सोम शुक्रे च याम्ये वरुणदिशि तु भौमे
चौत्तरे सौरि संस्थे ॥ प्रति दिन मति मत्वा काल राहु दिशा
नां सकल गमन कार्ये वाम पृष्टे च सिद्धिः ॥ १ ॥ ५ ॥

टीका ॥ रवि गुरु को पूर्व को गमन करे तो काल राहु वाम पृष्ट भागी जानि
ये जिसमें गमन करे तो सिद्धि होय सोम शुक्र में दक्षिण को गमन करे। भौ
म को पश्चिम को शनि को उत्तर को गमन करे तो कार्य सिद्ध होय ॥ १

क्षुधित राहु ॥ दुंद्रे वायौ यमेरुद्रे तोयेग्नौ शशि रक्षसोः
यामार्द्धं क्षुधितो राहुर्भ्रमत्येव दिगष्टके । नतिथिर्न च नक्षत्रं
न योगो नच चंद्रमाः सिद्धंति सर्व कार्याणि यात्रायां दक्षिणे स्थि

टीका ॥ पहले पहर में क्षुधित राहु पूर्व में जानिये दूसरे में वायव्य में तीस
रे में दक्षिण में चौथे में ईशान में पांचमें पश्चिम को षष्टमें अग्नि कोण को
सप्तम में उत्तर में को अष्टम में नैऋत्य को इस प्रमाण से आठ दिशाओं में
भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भाग में स्थित रवि विचार के गमन करे
तो तिथि नक्षत्र दिशा का दोष जाता रहै और समस्त कार्य सिद्धि होय ॥ १ ॥

काल कोष्ठ

कालं पलं घातक लोह पात वदुवानलः खड्ग चोलि कांति
काः नखाश्चतु र्विंशति षट्तथादिक रुद्रा धृतिर्वेद गुणाः क्रमेण
तिथ्या पुतं वैव सुभाजितं च शेषश्च कालो मुनयो वदंति ॥ फल
॥ कालं च पृष्टे फल सन्मुखेन घातं च लोहं तुंड वाम पृष्टे खड्गे च
चाग्रे कवचं च वामे कांति स्त्रयो ज्यादि शि दक्षिणस्यात् ॥ ॥

टीका ॥ काल कहां है तिसका जानना - कालों के नाम १ काल २ फल ३ घात क

४ लाह प्रात ५ वडवानल ६ खड्ग ७ कवच ८ कांति ऐसे ग्राठ नाम तिनकेनीचे ग्रंक लिखे हैं २०।२४।६।१०।११।१८।४।३ उनमें गमन का लकी तिथि है उनको एक एक ग्रंक में मिलावे ८ का भागदे ग्रेष जो ग्रंक रहै उसी दिग्रा को काल जानिये इस प्रकार पूर्वादे ८ दिग्रा क्रम से जा निये एष्ट भागी काल शुभ सन्मुख फल शुभ-एष्ट भाग में पातक लोह ग्रौर वडवानल ये तीनों शुभ-ग्रग्र भाग में खड्ग शुभ- वाम भाग में कव च शुभ- दक्षिण भाग में कांति शुभ - ऐसे दिग्रानुसार शुभ विचार के उस दिग्रा को युद्ध में वा यात्रा में गमन करे तो कार्य सिद्ध होय ॥ १ ॥

पंथा राहु चरं ॥ स्पुर्धर्मेदस्त्र पुष्योरग वसुजल पद्दी
पूमेत्रा प्यर्थार्थे याम्याजांघ्रीद कर्णादितिपित्र पव
नोदुन्यथोभानिकामे ॥ ब्रह्मार्द्रा वुध्य चित्रानिऋति
विधिभगोरव्यानिमोक्ष्योथ रोहिण्यर्यमणाप्येंदु वि
श्वांतिमम दिन कर्क्षाणि पथ्यादि राहौ ॥ १ ॥

धर्म	ग्रश्विनी	पुष्य	ग्लेषा	विग्रा·	ऽनुरा·	धनिष्ठा	शत·
ग्रर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाति	ज्येष्ठा	ग्रवण	पू·भा·
काम	कृतिका	ग्रार्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	ऽभि·	उ·भा·
मोक्ष	रोहिणी	मृगशिर	उत्तरा	हस्त	पूर्वा·षा	उ·षा·	रेवती

टीका ॥ धर्म मार्ग के नक्षत्र ७ प्रथम दूसरे ग्रर्थ मार्ग के नक्षत्र ७ तीसरे काम मार्ग के नक्षत्र ७ चौथे मोक्ष मार्ग के नक्षत्र ७ या प्रकार चार मार्गों के नक्षत्र में होय सूर्य तो चंद्रमा चारि मार्ग के नक्षत्र में फिरता है तिसका फल सुनो ॥

धर्म मार्ग का फल

धर्ममार्गे गते सूर्य्ये ग्रर्थीपो चंद्रमा यदि ॥ तदा
प्रत्नुभयं तस्य ज्ञेयंतु विवुधैः शुभम् ॥ १ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रों में सूर्य ग्रौर ग्रर्थ मार्गी नक्षत्रों में चन्द्रमा होय तो गमन करने वाले को मार्ग में शत्रु भय होय ॥ १ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्य्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते ॥
संहारस्त्वभवेत्तत्र भृगौ हानिः प्रजायते ॥ २ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रोंमें सूर्य और चंद्रमा दोनों होंतो हानिभंग संहारजा ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये कामांशे चंन्द्रमा यदि विग्र
हे दारुणं चैव चौरा कुल समुद्भवम् ॥ ३ ॥

टीका ॥ धर्म मार्गी नक्षत्रोंमें सूर्य होय और काम मार्गी नक्षत्रों में चंद्रमा होय तो विग्रह दारुण और चार भय होय ॥ ३ ॥

धर्ममार्गे गते सूर्ये चंद्रे मोक्ष गते यदि ॥ गृ
हा लाभो भवेत्तस्य वित्तेयो नात्र संशय:

टीका ॥ धर्म मार्गी सूर्य मोक्ष मार्गी चंद्रमा होय तो गृहा लाभ मार्गमें सुख होय ॥ अर्थमार्गे गते सूर्यो चंद्रे धर्म स्थिते यदि गज
लाभो भवेत्तस्य तत्र श्री सर्वतो मुखी ॥ ५ ॥

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य हो और धर्म मार्गी चंद्रमा हो तो लाभ सुख करे सदा

अर्थमार्गे गते सूर्यो चंद्रे तत्रैव संस्थिते ॥ प्रथमं
जायते कार्यं तत्र भंगो भविष्यति ॥ ६ ॥ ॥

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य और चंद्र मार्गी दोनों होंय तो पहले पहू
ल कार्य करे और पीछे कार्य भंग करे ॥ ६ ॥

अर्थमार्गे गते सूर्ये चंद्रे कामोपगे संस्थिते
सर्व सिद्धि भवेत्तस्य जानीयान्नात्र संशय:

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य और काम मार्गी चंद्र होय तो सब काम सिद्ध होय ७ ॥ अर्थमार्गे गते सूर्ये चंद्रे मोक्ष स्थिते यदि
भूमि लाभो भवेत्तस्य हर्ष युक्त: सुखी भवेत्

टीका ॥ अर्थ मार्गी सूर्य होय और चंद्रमा मोक्ष मार्गी होय तो हर्ष युक्त भूमि लाभ होय मार्ग में सुखी रहै ॥ ८ ॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे धर्मे च संस्थिते
गजाश्वाश्व विलभ्यते राज सन्मान संभवात्

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और धर्म मार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोड़ा प्र
ष्वी इनकी लाभ करावे और राज्य सन्मान पावे ॥ ९ ॥

काम मार्गे गते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते

विग्रहं दारुणं चैव कार्य नाप्तं विनिर्दिशेत्

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो विग्रह और कार्य का नाश होय

काम मार्गे गते सूर्ये चंद्रमोक्ष गते पिवा ॥ राज्ञो
लाभोभवेत्तस्य स्वर्थलाभं विनिर्दिशेत् ॥ १०

टीका ॥ काम मार्गी सूर्य और मोक्ष मार्गी चंद्रमा होय तो राजा से लाभ हो
य और अर्थ सिद्ध होय ॥ १० ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चंद्रे धर्म स्थिते यदि ॥
हेम लाभोभ्रवेत्तस्य सर्व कार्य्य प्रसिध्यति

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य वा धर्म मार्गी चंद्रमा होय तो हेम लाभ होय
और सर्व सिद्धि होय ॥ ११ ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये अर्थीप्तो चंद्रमा यदि ॥ विफ
लं यस्य कार्ये च चौर राज रिपुर्भयम् ॥ १२ ॥

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य और अर्थ मार्गी चंद्रमा होय तो राजा चोर
और चेरी से भय होय ॥ १२ ॥

मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चंद्रे काम स्थिते यदि ॥ सर्व
सिद्धि मवाप्नोति कार्ये च जय मेव च ॥ १३ ॥

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य और काम मार्गी चंद्रमा होय तो सर्व कार्य सि
द्ध होय ॥ मोक्ष मार्गे गते सूर्ये चंद्रे तत्र व संस्थिते ॐ ॥
विग्रहं दारुणं चैव विघ्नस्तस्य भविष्यति ॥

टीका ॥ मोक्ष मार्गी सूर्य चंद्रमा दोनों होंय तो विघ्न और लड़ाई होय ॥ १४

यात्रा युद्धे विवाहे च प्रवेशे नगरा दिषु ॥ व्या
पारेषु च सर्वेषु पंथा राहुः प्रशस्यते ॥ ॐ ॐ ॥

टीका ॥ यात्रा में युद्ध में विवाह में नगरादिक के प्रवेश में तैसेही सर्व
व्यापारों में प्रवेश करने में यथा राहु शुभ होता है ॥ १५ ॥

गर्गादिकामत ॥ उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्प
तिः ॥ अंगिरा मनउत्साहो विप्र वाक्य जनार्दनः ॥ ॐ ॥

टीका ॥ गर्गादिक के मत से रात्रि पिछली घड़ी ऊषा काल होती है उस में

गमन शुभ है बृहस्पति के मत से शकुन अंगिरा के मत से उत्साह मन का और जनार्दन के मत से गमन में विप्र वाक्य शुभ जानिये ॥ १ ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनोजन्मनक्षत्रादीननक्षत्रमे वच । एकीकृत्वाहरेद्भागंनंद शेषेचवाहनं । रासभोश्वो गजोमेषोजंबुकःसिंहसंज्ञकःकाकश्चैवंमयूरश्चहंसइत्ये वंवाहनं । फलं । रासभोऽर्थलाभश्चधनलाभश्चवाहन । लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्येयंमेषेचमरणंध्रुवं ॥ जंबुकेस्वल्पला भश्चसर्वसिद्धिश्चसिंहगे । काकेचनिष्फलंकार्यमयूरेचसु खावहम् ॥ हंसेतुसर्वसिद्धिःस्याद्वाहनानांफलंस्मृतम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अपने नक्षत्र से दिवस नक्षत्रतक गिनेऔर नवका भागदे शेष बचे सो वाहन जानिये एक बचे तो गद्धभ तिसका फल और लाभ दो बचें तो घोड़ा धन लाभ तीन बचेंतो हाथी अभीष्ट लाभ चार बचेंतो मेढा मरण तुल्य-५ बचेंतो जंबुक स्वल्प लाभ-६ बचेंतो सिंह कार्य सिद्धि-७ बचें तो काक निष्फल कहा है-८ बचें तो मोर सुख प्राप्ति-९ बचेंतो हंस सर्वसिद्धि ये फल जानिये ॥

(अंक महूर्त्त)

तिथयःपक्षगुणिताःसप्तभिर्भाजिताश्चताः
वारास्युर्द्विगुणिता वसुभिश्चैव भाजिताः ॥
चतुर्गुणा निभान्यंगभाजितानि यथाक्रमम् ।

टीका ॥ जिस तिथि में गमन करना चाहिये उसे दूनी करे सात का भाग दे और वार को तिगुणा करे आठ का भाग देय और नक्षत्र को चौगुणा करे सात का भाग देय जो शेष ३ अंक बचें तो शुभ जानिये और शून्य बचें तो अशुभ जानिये ॥ १ ॥

(फलं)

पीडास्यात्प्रथमे शून्येमध्ये शून्येमहद्भयम् ॥
अंत्यशून्येतुमरणं त्र्यंकेच विजयीभवेत् ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रथम तिथि के भाग का शून्य बचे तो पीडा करे दूसरे वार के भाग में शून्य बचे तो बड़ा भय करे तीसरे नक्षत्र के भाग में शून्य बचे तो मरण करे तीनों जगह अंक बचें तो शुभ जानिये ॥ (भ्रमणाडल महूर्त्त)

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं सप्तभिर्भागमाचरेत् ॥ त्रिषड्क्रभ्रमणंचैवद्विसप्तमहदाडलं ॥ प्रथमंपंचचत्वारिआडलोनास्तिनिश्चितम् ॥ आडलेताडनंप्रोक्तंभ्रमणेकार्यनाप्यानम् ॥ १ ॥ २ ॥

टीका ॥ सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने और सात का भागदे शेष ३।७ बचें तो उस दिन भ्रमण और कार्य नापा करें अथवा ७ ही बचें तो आडल जानिये उस दिन ताडन करने में शुभ है और १। ४। ५ बचें तो आड ल नहीं होता गमन में उक्त है ॥ १ ॥ (हैवरमुहूर्त्त)

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं पक्षादितिथिवारयुक् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं सप्तशेषंतुहैवरम् ॥ १ ॥ ४ ४ ४ ॥

टीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र की संख्या में पक्ष तिथि वार मिलावे ९ का भागदे शेष ७ रहेंतो हैवर मुहूर्त्त जानो सो गमनमें शुभ है ॥ १

(घवाडमहूर्त्त) ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं त्रिगुणंतिथिमिश्रितम् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंघवाडकम् १

टीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र तक गिने तिसको तिगुणा करे चलती तिथि उसमें मिलावे ९ का भागदे शेष ३ बचेंतो घवाड जानिये १

वारानुसारस्वर ॥ गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणस्वरः ॥ अन्यवारेषुवामस्तुस्वरश्चैवशुभस्मृतः ॥ १ निर्गमेवामतः श्रेष्ठःप्रवेशेदक्षिणःशुभः ॥ यस्स्वरःसैवनाशाग्रेयोगीनांमतमीदृशम् ॥ २ ॥ ४ ४ ४ ॥

टीका ॥ गुरु शनि रवि भौम इन चार वारों में दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करने में शुभ है और बुध चंद्र शुक्र इन वारों में बायां स्वर चले तो निर्गम को शुभ है ये योगियों के मत से स्वर विचार है ॥ (वारानुसारपाकुन)

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधरणिसुतेसप्तजीवेपदानिज्ञेयंचैकादशार्केशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमर्थेचतुष्कं ॥ तस्मिन्कालेमुहूर्त्तेसकलगुणयुतेकार्यसिद्धिःशुभोक्तानासिंपेचांगयुद्धिर्नैवखलुशशिबलंभाषितंगर्गमुख्यैः ॥ ४ ४ ४ ॥

टीका ॥ बुध को ८ पद अपनी छाया होतो गमनको तंगलको ६ तो भगन

करेगुरुकोशब्दहोतोगमनकरेऔररविशनिसोमशुक्रइनवारों मेंइसशब्दछायाहोतोगमनकरेयेमुहूर्तगुरुशुक्रसर्वकार्यकलाजानिये १॥

काकशब्दशकुन॥काकस्यवचनश्रुत्वापादछा यांतुकारयेत।चयोदशयुतांकृत्वाषड्भिर्भागमाह रेत।फल॥लाभःसुखंचकुमेरोवगर्गस्यवचनंयथा॥२॥

टी०॥काकका शब्द सुनि के अपने पादों छाया में १३ मिलावै और ६ का भागदे शेष रहे तिसका फल १ शेष रहे तो लाभ २ बचें तो सुख ३ बचें तो भोजन की प्राप्ति ४ बचें तो धन लाभ और शून्य होय तो शु भजानिये ५२॥

पिंगलाशब्दशकुनं॥

उल्लासःकिल्विलेचैवचिल्लिभोजनंतथा भंजनेखरिरिखिहिस्यात्कुर्कुर्शब्दैर्महद्भयम्।१

टी०॥जो किल्विल शब्द होय उल्लास होय और चिल्लिल शब्द होय तो भोजन प्राप्ति खिट शब्द होतो बंधन करे कुर्कुर शब्द होतो बहुत भय करे॥२॥

छींकानुसारपदछायाशकुन

वुधैःछिक्कारवंश्रुत्वापादछायांचकारयेत॥च यौदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत॥१॥फलं। लाभःसिद्धिर्हानिश्चोकभयंश्रीर्दुःखनिष्फले॥ कुमेरोवफलंज्ञेयंगर्गेणाचयथोदितम्॥१॥२

टी०॥छींक का शब्द सुनके अपनी छाया नापै तिसमे १३ मिलावै ८ का भागदे शेष रहे तिसका फल १ शेष रहे तो लाभ २ रहें तो लाभ ३ रहें तो कार्य सिद्धि ४ रहें तो हानि ५ रहें तो शोक ६ रहें लक्ष्मी ७ रहें तो दुःख शून्य रहे तो निष्फल ऐसा गर्गादि मुनि कहते हैं॥२॥

(छींक शकुन)

छिक्कास्वरंश्रवस्यामिपूर्वस्यांशुभफलं॥अग्नेय्यां शोकदुःखंस्यादक्षिणेऽनया॥१॥नैऋत्यांचशुभंशोकं पश्चिमेमिष्टभक्षणं।वायव्येधनलाभस्तूत्तरेकलहस्तथा

र्पणान्यंत्र शुभंज्ञेयं मात्रस्त्रिकामद्वयम्॥ ऊर्द्धंचैव शुभंज्ञे
यंमध्येचैव महद्भयम्॥ आसने शयनेचैवदाने चैवतु भोज
ने॥ वामांगे पत्तनंचैव षट्स्त्रिकाश्च शुभावहः २॥३॥
टी०॥ पूर्व की छींक शुभ आग्नेय की शोक कारक दक्षिण की दुःख
कारक नैऋत की अरिष्ट कारक पश्चिम की शुभ वायव्य की भस्म क
री उत्तर की धन दायक ईशान की शुभ अग्नी छींक अत्यंत दुखद
यक ऊपर की होय तो शुभ दायक और मध्य में होय तो बड़ा भय कारक
और छः जगे शुभ दायक आसन १ शय्या २ दान ३ भोजन ४ वाम ५ पत्त
न ६ ये शुभ जानिये॥१॥ पल्ली शब्द शकुन॥

वितंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलांशत्रुक्षतांशोभयं याम्ये
मित्रवधःक्षयश्चनिऋतेलाभःसमृद्धालये॥ वायो
व्यांदरमिष्टमन्नमशनंसौम्यायेलाभस्तथाईशाने
नेगृहगोधिकार्यमतुलंसर्वत्रभूमीभयम्॥२॥
टी०॥ पल्ली शब्द के अनुसार दिशा का फल ऊर्द्ध दिशा को लक्ष्मी प्रा
प्त पूर्व को कार्य सिद्धि आग्नेय को भय दक्षिण को मित्र वध नैऋत को क्ष
य पश्चिम को लाभ वायव्य को मिष्ट भोजन उत्तर को लाभ ईशान को का
र्य सिद्धि भूमी में सर्वत्र भय जानिये॥ (पल्ली पतन शब्द का चढ़ना
राज्यंतुमस्तकसिक्तेयंललाटेबंधुदर्शनं॥ भ्रूमध्येराज्यसन्मा
नंमुखरोगेधनक्षयं२ अधरोष्ठेधनैश्वर्यंनासांतेव्याधिपी
डनं॥ श्रायुष्यंदक्षिणेकर्णेबहुलाभस्तुवामके२ अक्षणो
स्तुबंधनंज्ञेयंभुजेभूपतितुल्यता॥ बाहुशोभनंत्यागे
कंठेपुत्रविनाशनं॥ स्तनद्वयेचदुर्भाग्यंउदरेमंडनंशुभं
भजानाभेः पृष्ठेशोजानुनेषेशुभावहं४ करद्वयेवस्त्रला
भःस्कंधयोर्विजयीभवेत्॥ नाभौबहुधनंप्रोक्तं पूर्वोक्तंचैवह
यादिकं५ दक्षिणेमणिबंधेचमनस्तापोधनक्षयः॥ मणि
बंधेतथावामेकीर्तिर्दृष्टिर्धनप्रदं६ नरेषुधान्यलाभंच
कैमिष्टान्नभोजनं॥ गुल्फयोर्वंधनं ज्ञेयंकेशांतेमरणंध्रुवं७

अध्वा च दक्षिणे पादे वामे बंधुविनाशनं॥स्त्रीनाशस्यात्
पादमध्ये पादांते मरणं भवेत। पत्न्याः प्रयत्नेश्रेयंसरट
स्याधिरोहणं। यद्वोद्युक्तं मनुष्यस्य शुभाशुभहिसूचकम॥
तिलमाषादिदानं च स्नात्वादेयं द्विजन्मने। पिनाकिनं नमस्कृ
त्यजपेन्मंत्रं षडक्षरं॥१०॥ शतंसहस्रंमथवा सर्वदोषनिव
र्हणम्॥शिवालये प्रकर्त्तव्यो दीपदोषोपशांतये॥११॥
टी०॥मनुष्योंके गमन समयमें अंग पर पत्नीश्रर्थात् छिपकली गिरे अ
थवा गिरगट चढ़े तो शुभा शुभ फलस्थान अंग के अनुसार जानना कह
तेहैं कि छिपकली गिरे वा गिरगट चढ़े तो वस्त्र सहित स्नान करे तिल
उड़द ब्राह्मण को दे शिवालय में जाय के शिव को नमस्कार करि षड़
क्षर ११०० शिवमंत्र का जप करावे तो दोष दूर होय ॥११॥

१शिर	राज्यप्राप्ति	२१वामबाहु	राज्यभय	४१ऊरूपर	घोड़ा वा०
२कपाल	बंधुदर्शन	२२कंठ	शत्रुनाश	४२दहिनापद	धनक्षय
३भृकुटी	राजसन्मान	२३स्तनोंपर	दुर्भाग्य	४३बा०जानु	कीर्ति
४उत्तरोष्ठ	धनक्षय	२४उदरपै	शुभ	४४नख	धनलाभ
५अधरोष्ठ	ऐश्वर्य	२५पृष्ठपर	बुद्धिनाश	४५सुरतपर	मिष्टभोजन
६नासिका	व्याधि	२६जानुपर	शुभ	४६टकनोंपर	बंधन
७दा०कान	आयुष्य	शिरपर ७	शुभ	४७कोशोंपर	मरण
८बा०कान	वस्त्रलाभ	२८हाथोंपर	वस्त्रलाभ	४८दहिनापर	मार्ग चले
९नेत्र	वस्त्रलाभ	२९कंधोंपर	विजय	४९बायांपद	बंधुनाश
१०गाल	राजासमान	३०नाभिपर	धनधन	५०या०मध्य	स्त्रीनाश

अंगस्फुरणा मनुः

अहिमेत्वं निमित्तानि प्रशुभानि शुभानिच
सर्वधर्मभृतां श्रेष्ठत्वंहि सर्वविदुध्रुवे ?

टी०॥मनुमत्स्य प्रति प्रश्न करे है धर्मधारियों में श्रेष्ठ शुभाशुभफल
वर्णन कीजिये॥ अंगस्यदक्षिणो भागो प्रशस्तंस्फुरणाद्भवेत्
प्रशस्तंतथावामेपरतस्तुहतास्पच॥

टीका॥अंग का फरकना दहिना भाग शुभ है और वामां भाग हृदय पीठ ये अशुभ जानना चाहिये॥१॥

अंगानां स्पंदनं चैव शुभाशुभविचेष्टितं॥तन्मे विस्तरतो ब्रूहि येनस्यान्नाद्विधोभवि॥मत्स्यउवाच॥ पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्ध्नि ललाटेरविनंदनः॥स्यानंचवृद्धिमायातिभ्रुवो सोप्रियसंगमः॥भृत्यलब्धीक्षिदेशेदृगुपातेधनागमः॥उत्कंठोपगमोमध्येदृशंराजन्विचक्षणैः॥४॥दृग्बंधने संगरेचजयशीघ्रमवाप्नुयात्॥योषिल्लाभोपांगदेशेश्रवणांतेप्रियश्रुतिः॥नासिकायांप्रीतिसौख्यंप्रियप्राप्तिरधोष्ठयोः॥कंठेतुभोगलाभस्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः॥बृहत्भेष्वग्रबाहुभ्यांहस्तेचैवधनागमः॥एष्टेपरांजयोरुभोजयोवृक्षस्थलेभवेत्॥कुक्षिभ्याप्रीतिरुद्दिष्टास्त्रियाःप्रजननेभगे॥स्यानभ्रष्टोनाभिदेशेआंत्रेचैवधनागमः॥जानुसंधौपरैःसंधिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप॥एकदेशोभवेत्साभीजंघाभ्यांरविनंदनः॥६॥उत्तमस्थानमान्येतिपद्भ्यांप्रस्फुरणेनृप॥अलाभंचाध्वगमनंभवेत्यादतलेनृप॥७॥

टीका॥मनु प्रश्न करते हैं अंग के स्थान स्फुरण का विचार शुभाशुभफल विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये॥

१ मस्तकस्फुरण	पृथ्वीलाभहोइ	११ अधरोष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
२ ललाटस्फुरण	स्थान वृद्धि	१२ कंठमें	ऐश्वर्यप्राप्ति
३ भृकुटीमध्यमा	प्रियदर्शन	१३ कंधोंमें	भोगवृद्धि
४ नेत्रों में स्फु.	भृत्यमिलै	१४ दोनोंबाहु	महत्कीभट
५ नेत्रों की कोरोंमें	धनप्राप्ति	१५ दोनोंहाथ	धनप्राप्ति
६ कंठमध्य	राज्यप्रीति	१६ पृष्ठमें	दूसरेसेजयहोय
७ हृत्बंधन	युद्धमेंजीत	१७ उरूमें	जयप्राप्ति
८ अपांगदेश	स्त्रीलाभ	१८ कुक्षिमें	प्रीतिप्राप्ति
९ कर्णांतमें	प्रियमित्रकीसु;	१९ पिंडीं	स्त्रीप्राप्ति

२० नाभिमें	स्थानभ्रंश	२३ जंघकेएकदे	रेश का स्वामी
२१ श्रोतोंमें	धनप्राप्ति	२४ पादोंमें	उत्तम स्थानसे
२२ जानुसंधि	बली शत्रुसेसंधि	२५ तलुओंमें	पाप का गमन

स्त्रियों का अंग स्फुरण

लांछनं पीलकंचैव ज्ञेयं स्फुरणा वत्तथा॥ विप
र्ययेण विज्ञेयः सर्वस्त्रीणां विपर्ययः॥१॥ द
क्षिणे विप्र शस्तंग मशस्तंस्या द्विशेषतः॥२॥

टी०॥ स्त्रियोंका अंगस्फुरण भ्रूमध्यमें पुरुषोंही के समान है परंतु शेष सब स्थानोंमें पुरुषसे विपरीत है अर्थात् वाम भाग शुभजानिये॥१॥

अन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्यशास्त्रस्य चनिंदितस्य।
अनिष्टनिर्द्वोषगमे द्विजानांकार्यं सुवर्णोनतुतर्पणंस्यात्॥२॥

टी०॥ हे राजा अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण करावे सुवर्णदान करे तो अंग स्फुरण का दोष जाय॥२॥

नेत्रास्योर्द्ध हरति सकलं मानसंदुःखमालं नेत्रोपांतेदि
शतिचधनंनासिकांतेचमृत्युः॥ नेत्रस्याधः स्फुरणमसक
त्संगरेभङ्ग हेतुर्वामे चैतत्फलमदि फलंदक्षिणेवैपरीत्यम्

टी०॥ स्त्रीणां विपर्ययो नेत्रों के ऊर्द्ध प्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरणा होने का फल कहते हैं नेत्रों के ऊपर पलक में स्फुरणा होय तो मनका दुःख होय धनकी प्राप्ति होय और नासिका के निकट स्फुरणा होय तो मृत्युक होय अधर के नीचे के पलक में स्फुरणा हो तो युद्ध में पराजय होय ये फलवा यें नेत्र के जानिये जो पुरुष का दाहना और स्त्री का बायां अंग शुभजानो॥

त्रिशूलयंत्र॥ रोगिरोगच्छुनाद्यर्क्षान्नाद्यर्क्षंचय
ऋतः॥ क्षतिकागमनेस्यादन्यत्रवृद्धीयते॥२॥

टी०॥ रोगी का प्रश्न त्रिशूल मध्यागमें जिस नक्षत्र का मंगलादे त्यादि को देवे और चंद्रमा जिस स्थान विषें यंत्र में होय तो फल देवै इस से आगे फल जानिये - युद्ध में जाना होय तो दिवस नक्षत्र से

नक्षत्र तक गिने और गमन करना हो तो कृतिका से दिवस नक्षत्र तक गिने और दूसरे कर्मों को मूल नक्षत्र से सोम नक्षत्र तक गिने इस क्रम से १

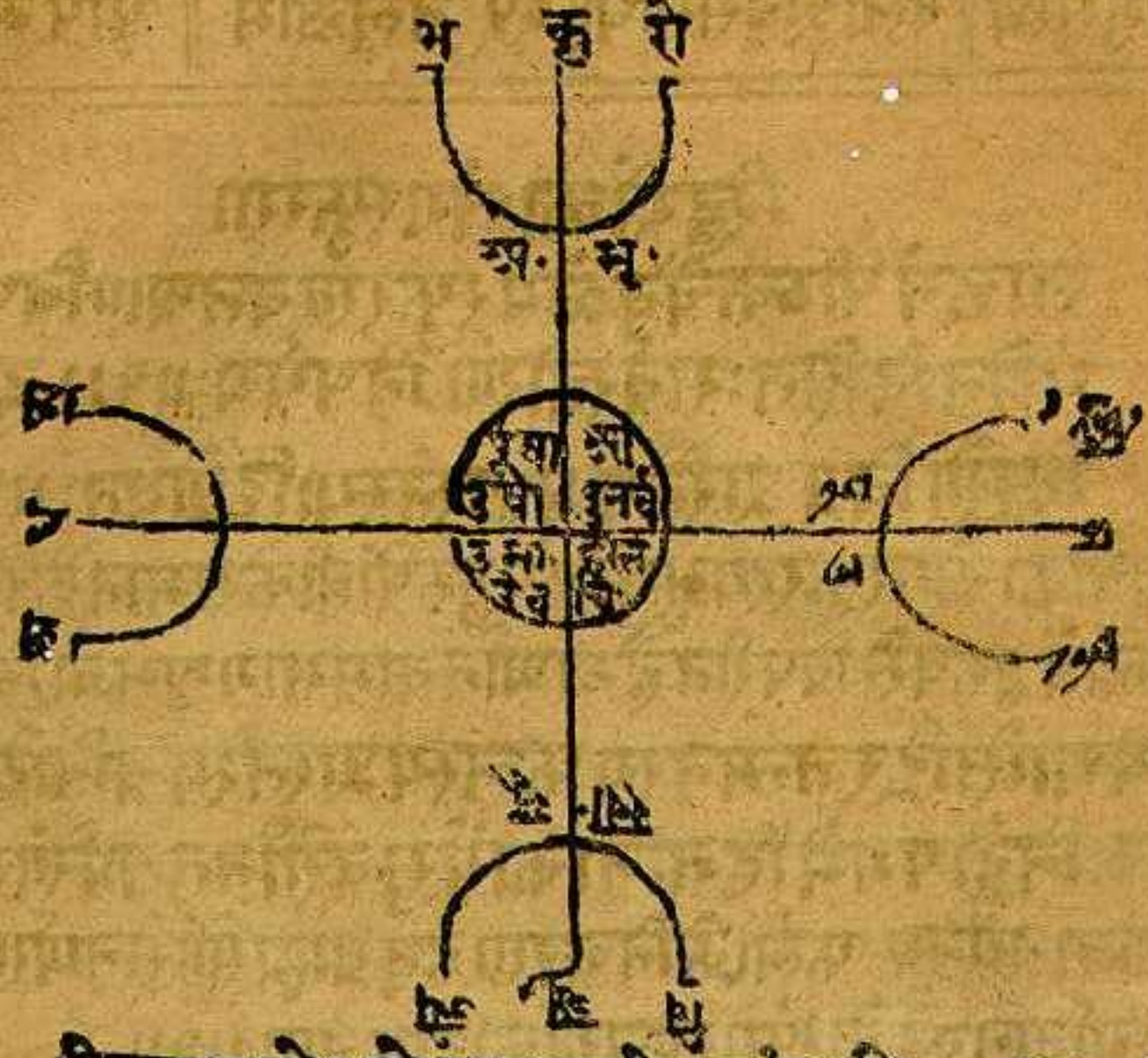

त्रिमूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमंवाहे रथक्रम
लाभक्षेमंजया रोग्यं चंद्रगर्भेषु सोमनम् १।

टी०॥ त्रिमूल के अग्र भाग में दिवस नक्षत्र होय तो मृत्यु और वाह्री अ धक में हो तो मध्यम मध्य के अर्धक में होतो क्षेम लाभजय आरोग्य ये सब संमन जानिये ॥१॥ गमन की लग्न

चर लग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः॥
लग्ने स्थिरे नगंतव्यं यात्रा यां क्षेम भीप्सुभिः

टी०॥ मेष कर्क तुला मकर ये चर और मिथुन कन्या धन मीन ये द्विस्वभा व आठ लग्नों में गमन करने से सब कार्य सुफल होय और लग्न स्थिर सो वर्जित है यात्रा में ॥१॥ दूसरा प्रकार लग्न का

लग्ने कार्मुकमेषसौलि गमने कार्यं विलंबान्नृणां
पंचत्वं मकरे तथैव च घटे नद्युत्फले वृश्चिके॥ सिं
हे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धिंलभेत्क-
न्यामीन गतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नवस्त्र १॥

टी०।धनमेषतुलाद्यनमेंगमन करेतो कार्य विलंबसेहोयऔर मकर कुंभ
स्थिकद्यनमेंगमनकरेतोमृत्यु तुल्यकष्ट सिंहकर्कवृषद्यनमेंकार्य सिद्ध
होय मिथुन कन्यामीनद्यनमेंगमन करेतो अन्नधन शुभदायक जानिये

द्वादशस्थानों के अनुसार यात्रालग्नमेंग्रह।प्रथमस्थान

जन्मस्थंचाष्टमंत्याज्यंलग्नेद्वादशमेवच ।
ग्रहाणांचबलंवीक्ष्यगच्छेद्दिग्विजयंनृपः

टी०॥लग्न और अष्टम द्वादशद्यनमेंपाप ग्रह वर्जित ग्रह बल देखि
गमन करेतो विजय कार्य सिद्धि होय ॥

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्य शुक्राः सिध्यंतिकार्याणिचपंच
चमेही।राज्यास्यदंवासुखदेशलाभंमासस्यमध्येग्रहभावयुक्ता

टी०॥लग्नमें गुरु वा बुध शुक्र ये होयतो पंच दिवस मे तथा
एक मास मे राज्य सुख देश लाभ ये होंय ॥१॥

दूसरे स्थान के फल॥जीवोवुधोवाभृगुनंदनो
वास्थानेद्वितीयेगमनस्यकाले।सुवस्त्रलाभं
चतुरंगलाभंमासस्यमध्येचचतुर्दशान्हि ।२

टी०॥दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र होयतो वस्त्रतुरंगलाभ
एक मास मध्यमेंवा चौदह दिनमें सिद्ध होय ॥२॥

क्रूराधनस्थारविराहुभौमाःसौरिश्चकेतुस्त्रिभिरेव
मासैःविनस्यनाशंचहन्तिमृत्युसत्यंहवाक्यंमुनयोवदंति

टी०॥इनमेंसे कोईभी होयतो तीन मासमें मृत्यु और विनाश
होय यह मुनीश्वरों ने कहा है ॥३॥

स्थानेतृतीयेगुरुभार्गवौचसोमस्यसूनुश्चनिधनपतिश्च
करोतिकार्यंसकलंचसर्वंपक्षद्वयेनापिदिनत्रयेण ३

टी०॥तीसरे स्थान में गुरु शुक्र वा चंद्रमा बुध होयतो दो पक्षमें
अथवा तीन दिन में कार्य सिद्धि होय ॥३॥

क्रूराश्चलग्नेगमनेयदालग्नस्यश्चशेषाःशुभदाहिकार्ये
नक्षत्रदेवेनभवेच्चसिद्धिर्मासत्रयेणापिदशाहमध्ये ३

टी०॥ जो क्रूरग्रह चतुर्थस्थानमें होउसेवर्जिकैं शेषग्रह होयवे शुभफले
नोहैंवयोगकरिकैं ३मासवाऽथवा ९दिवसके अंतमें कार्यसिद्ध होय॥२

गुरुर्भृगुश्चंद्रबुधौयदा स्यात्सुभेचलग्नेतुसुतेचयुक्ताः॥
कुर्वंतिकार्यस्यचसिद्धिमिष्टांमासद्वयेनापिवदंतिसत्यम्॥३

टी०॥ गुरुशुक्रचंद्रमाबुधयेचारोंग्रह पंचमस्थानमें होय तोशु
भहोय और २मासमें कार्यसिद्धि होय॥३॥

जीवश्चशुक्रश्चबुधश्चषष्ठकरोतियात्रा॰ फलंविल
ग्नात्॥पक्षद्वयेनापिवदंतिसत्यंसौम्यक्षितिस्थःकुरुतेबलंच॥४

टी०॥ गुरुशुक्रचाबुधये छठेस्थानमें हों और मृगशिरनक्षत्रकाचंद्र
माउसीस्थानमें होतो सर्वकार्य एकमास में सिद्धि होय॥४॥

चेत्सप्तमस्थागुरुसौम्यसोमाःकुर्वंतियात्राविजयंनृपाणां
सर्वेनृपास्तस्यभवंतिवश्यामासद्वयेनापिचपंचभिर्दिनैः॥५

टी०॥ चंद्रबुधगुरुयेसप्तमस्थानमें होयतो यात्रामें विजय होय
सबराजादो मासमें वा पांच दिनमें वशीभूत होंय॥५॥

क्रूराश्चसर्वेयदिलग्नकालेमृत्युस्थिताःमृत्युकराभवंति
सौम्योगुरुर्वाभृगुनंदनश्चदीर्घायुषांमृत्युकरश्चचन्द्रः॥६

टी०॥ शनिरविभौमराहुकेतुयेअष्टमस्थानमेंहोंतोमृत्युकारकग्रो
येनहोंतो शुभहोय आयुकी वृद्धिकरे परंतुचंद्रमा कारक जानना॥६

धर्मस्थिताःयदिभवंतिहिपापखेटाःप्रयाणकालेचतथैवचंद्र
द्रमाःनरस्यजयंवैसबलेचचंद्रेमासत्रयेणापिदिनैश्चतुर्भिः॥७

टी०॥ नवमस्थानमें पापग्रहतथाचंद्रमा होयतो तीनमासमें
वा चारदिवसमें कार्यसिद्धि होय॥७॥

धर्मास्थितौवायदिजीवशुक्रौसोमस्यसूनुर्यदिलग्नकाले॥
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवाकार्यस्यसिद्धिंश्रभवेच्चलाभः॥८

टी०॥ धर्मस्थानमें गुरुबुधशुक्रचंद्रमाये चरलग्नमें वा स्थिर
लग्नमें स्थितहोय तोकार्यसिद्धि करै लाभकरै॥८॥

कर्मस्थितापापखगास्तुसौम्याःकुर्वंतिकार्यंशनिवर्जिताश्च

लग्नेचरेवायदिचास्थिरेवा मासत्रयेणापिचैकमास:।
टी०॥ दशमस्थान में मेषादि से पाप ग्रहों को छोडि के सौम्य ग्रह चर अथवा स्थिर लग्न में होतो ३ मास वा एक मास में कार्य सिद्ध होय

लाभस्थितौगुरुबुधौमृगुनंदनोवाक्रूरग्रस
वैश्यर्क्षगैवयुक्ता:॥ सद्यःफलाप्तिश्चभवेद्ध्रु
वावापक्षैकमध्येदिवसत्रयेच॥१॥ ५ ॥ ५
टी०॥ एकादश स्थान में रवि को आदिले पापग्रह चंद्रमासहित अथवा गुरु आदिले शुभ ग्रह होय तो १ पक्ष में वा ३ दिन में कार्य सिद्ध होय

सर्वेशुभाद्वादशसंस्थिताश्चयात्राभवेत्तत्रविचित्रलाभः।
पापाश्चसर्वेव्ययकृद्भवंतियात्राफलंगर्गमुनिप्रणीतम्
टी०॥ द्वादश स्थान में सर्व शुभ ग्रह होयतो लाभ होय पापग्रह होतो व्यय खर्च कारक जानिये यह यात्रा फल गर्ग मुनिकहे हैं॥१॥

प्रस्थानरत्नं॥मुहूर्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्था
कार्यम्॥यज्ञोपवीतकंक्षत्रंमधुचस्थापयेन्फलं
विप्रादिक्रमतःसर्वंस्वर्णंधान्यांबरादिकम्॥१॥
टी०॥ मुहूर्त के समय किसी आवश्यक कार्य में आपन जासके तो प्रस्थान करना योग्य है उस की विधि ब्राह्मणादिक को ब्राह्मण यज्ञोपवीत क्षत्रिय को शस्त्र वैश्य को मधु और शूद्र को फल इस क्रम से जानिये सुवर्ण वस्त्र धान्य ये सब को युक्त है॥१॥

प्रस्थान कितने दिवसतक उपयोगी है॥
राज्ञांदशाहंपंचाहमन्योन्यप्रस्थितोभवेत्॥
अंगप्रस्थानसंपूर्णंवस्त्रप्रस्थानकोऽर्धके २
टी०॥ राजाओं को प्रस्थान करने पर दश दिन का और को ५ दिन तक मुहूर्त उपयोगी रहताहै परंतु वस्त्र प्रकार स्थान में आधा फल जानिये और अंक के प्रस्थान में पूर्ण फल जानिये॥२॥

प्रस्थान के स्थानका विचार॥गेहाद्गेहांतरंगर्गःसीम्नः
सीमांतरंभृगुः॥चारणेक्षयंभरद्वाजोवासिष्ठोनगरादहिः२

प्रस्थानेपिक्रतेरोगान्महादोषान्विते दिने २

टी०॥ गर्गजी के मत से दूसरे के घर में प्रस्थान रखना और भृगुजी के मत से सीमा से बाहर रखना और भारद्वाज के मत से चार मार्ग पैर के अर्थात् जितना नीर जाता हो उतने पर और वसिष्ठ के मत से नगर के बाहर रक्खे परंतु महादोषयुक्त दिवस में यात्रा न करे परंतु प्रस्थान रोज रोज चलाता रहै॥ प्रस्थान दिवस में वर्जनीय पदार्थ

क्रोधक्षौरस्त्रिसंगश्रमभयमधुगुडघृतास्रदुग्धासवक्षा
राभ्यंगगयासितांबरवमीतैलंकटह्यङ्गमे॥क्षौरस्त्री
रतीःक्रमात्रीप्रारसप्ताह परंतद्दिनैरोगंस्त्र्यातवक
सितान्यतिलकंप्रस्थानकेपीतिच ॥२॥ ५॥ ५

टी०। क्रोध करना और क्षौर स्त्री संग परिश्रम करना भांग गुड घृत रोहल्दू धमरक्षार अभ्यंग अन्य विषयक भय श्वेत वस्त्र वमन तैल कटु पदार्थ इत नी वस्तु प्रस्थान दिन वर्जित हैं तिन में दूध क्षौर स्त्री संग ये क्रम से ३।५।७ दिन प्रस्थान दिन में पहले वर्जित है पीत और कही हुई वस्तु केसल प्रस्था न दिन में वर्जित है और श्वेत से भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्ण आदि ति लक और रोग विषयक चिंता भी प्रस्थान के दिन वर्जित है ॥१॥

मत्स्योल्कपूकुन॥औषध्याचनियुक्तोहि धान्यकृसंतु
यद्भवेत्॥कार्पासस्त्रतृणंभुष्कंभुष्कंगोमयमेवच।१।

टी०॥ औषधयुक्त मनुष्य काला धान्य कपास सूखा तृण भूमी इत्यादि वस्तु और उपलाये प्रस्थान समय आगे से आवे तो अशुभ जानिये।१।

इंधनंचभस्मांगारंगुडंसर्पिस्तथाशुभम् ॥५॥
अभ्यक्तोमलिनोमंदःस्तब्धानग्नश्चमानवः१

टी०॥ ईंधन भस्म गुड घी दुग्ध पदार्थ तैल लगाने से मलिन मंद नग्न मनुष्य ये प्रस्थान समय में अशुभ जानिये ॥२॥

मुक्तकेशोरुजार्तश्चकाषायांबरधारणः॥
उन्मत्तःक्षपितोसत्वोदीनोवाद्यनपुंसकः२

टी०॥ खुले भये केश युक्त मनुष्य रोगी गेरुआ वस्त्र पहिने मनुष्य उन्मत

कंथा पुक्क पुरुष पापी पुरुष दीन अथवा नपुंसकयेभी अशुभ जानिये॥

आयः पंकस्तथा चर्म केश बंधन मेवच ॥
तथैवोद्धृत सारांगि पिण्याकादितथैवच

टी०॥ लोहा कीच चर्म केश बांधता हुआ मनुष्य जिस केसार निकाल लियेहैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक ये भी अशुभ जानिये॥१॥

चांडालस्य ध्रुवंचैव राज्ञबंधन पालकाः॥
वधकाः पापकर्माणो गर्भिणी स्त्रीतथैवच१

टी०॥ चांडाल प्रेत बंधुओं के रक्षक वध कर्त्ता पापी पुरुष गर्भिणी स्त्री यह भी अशुभ जानिये॥१॥

तुषं भस्म कपालास्थि भिन्नभांडानि यानिच। रक्तानि चैवभांडानि मृत सारंगएवच॥एवमादीनिचान्यानि ह्यप्रशस्तानिदर्शने

टी०॥ भूसी भस्म कपाल अस्थिरीते वा फूटे वर्त्तन मारा हुआ सारंग पक्षी यह यात्रा काल में हानि कारक जानिये॥२॥

क्वयास्यसिभद्र आगच्छ किंतेनत्र गतास्यत॥
अन्य शब्दाश्च ये निष्टास्ते विपत्तिकराआप

टी०॥ कहां जाते हो ठहरो आओ वहां जाने से तुम को क्या होगा ये और भी अनिष्ट शब्द विपत्ति कारक होते हैं॥१॥

ध्वजादौ वायसास्थान क्व्याद्दान विगर्हितं
स्खलनं वाहनानांच वस्त्र संगस्तथैवच।१।

टी०॥ ध्वजा वा पताका के ऊपर काक बैठे अथवा अग्नि दान और वाहनों को गिरना वस्त्र लपेटता हुआ पुरुष ये भी अशुभ जानिये॥

इत्वं निमित्ते प्रथमं अमंगल्य विनाशनम्॥
केशव पूजये द्विद्वान स्तवे नर्म सदनम् २

टी०॥ यात्रा के समय प्रथम में जो अमंगल रूप पावे तो नाश कारक हो य इस के निवारण को विष्णु पूजा मधुसूदन स्तोत्र का पाठ करावे २

द्वितीये चततोरुद्रं तृतीये अग्नि पूजनम्॥५
अथेष्टानिष्ट स्थानेषु मंगलादिनयानच१

टी०॥दूसरी वारभी अशुभ शकुन दीखे तो पीछे प्राण खांस पीछेंजाय
तीसरेजो अशुभ शकुन दीखे तौनजाय घरमेंप्रवेशकरे इसकेपीछेमग
शकुन कहते हैं॥१॥ गमनकालकेउत्तमशकुन॥

शब्दस्तोवाद्यशब्दश्चभिन्नभेरीरवस्तथा॥
पुरतःशब्दएहीतिशब्दस्तेनचशब्दतः॥ग
च्छेतिचैवपश्चाद्यःपुरस्तादभिगर्हितः १

टी०॥यात्राकालके शुभ शकुन कहतेहैं वाजोंकाशब्द भेरी काशब्द
नक्कारोंका शब्द और आओ यह आगेसे होय तो शुभजानियेऔर
जाओये शब्द पीछे से होय तो शुभ आगे होय तो अशुभजानना१

श्वेतास्तूर्णमनसःपूर्णाःपूर्णकुंभास्तथैवच॥
जलजाःपक्षिणश्चैव मांसंमत्स्यस्यपार्थिव १

टी०॥श्वेत फूल भरा पानी का कलश जलके पक्षीमत्स्यका मांसयेशु
भहैं॥ गावस्तुरंगमोनागोवृद्धएकःपशुस्त्रजा॥
त्रिरग्नाःस्कन्धेविप्राज्वलितश्चहुतासन:१

टीका॥गौघोडा हाथी वृद्धएक पशु बकरी देवता मित्र ब्राह्मण॥
जलती अग्नी यह शुभ जानिये॥१॥

गणिकाचमहाभागदूर्वाश्चार्द्राश्चगोमयम्
रूप्यंहिरण्यंचताम्रंचसर्वरत्नानिचाण्य॥१

टी०॥वे पुष्पहरी दूब गोबरसोनारूपा तांबा और सबरत्न ये शुभहैं॥१॥

क्षीरवृक्षानिचसर्वत्राःयवाःसर्वौषधीकुशाः
खड्गपात्रंपात्रंपताकाचमृत्तिकायुधपीठकम्१

टी०॥क्षीरवृक्ष सर्वत्र पुरुषजो श्वेत सरसों खड्ग पात्र पताका मृत्तिका
आयुध आसन यह शुभ जानिये॥१॥

राजलिंगानिसर्वाणिशवंरहितवर्जितम्
घृतंदधिपयश्चैव फलान्यविविधानिच१

टी०॥सबराजाके चिन्ह रोदनरहित मृतक दही दूधघी और
नाना प्रकारके फल ये शुभजानिये॥१॥

स्वस्तिवृद्धि निनादश्चनद्यावर्तः सकौस्तुभः
वादित्राणांशुभःशब्दोगंभीरस्तमनोहरः १

टी०॥ आशीर्वाद शब्द कौस्तुभमणिवाद्य उन्नमशब्द ये विघ्ननाशकरैं

गांधारषड्जऋषभायेगीताःसुष्ठुराःस्वराः।
वायुःसभूर्करोनृणांःसर्वे विघ्न विनाशकाः१

टी०॥ गांधार षड्ज ऋषभ येराग अच्छे गाये गये हों सुर सुंदर मीठा पवन अथवाउत्तम ये सब विघ्न नाशक जानिये॥ २॥

प्रतिलोमास्तथानीचोम्लेच्छोभयकृद्विजः।
अनुकूलोमृदुःस्निग्धसुखस्पर्शःसुखावहः

टीका॥ वर्ण शंकर मनुष्य नीच मुसलमानादिक ये भयकरने वाले हैं ब्राह्मण को अपने अनुकूल पदार्थ और सुख स्पर्श मनुष्य आदि सुख कारी होते हैं॥२॥

प्रस्तान्येतानि धर्मज्ञयत्नस्यान्मनसःप्रियः
मनसस्तुष्टिरेवाच परमंजय लक्षणम् १

टी०॥ हे धर्मज्ञ पहले कहे हुए शकुन शुभ जानिये और अपने मन को प्यारी वस्तु होय उसका दर्शन उत्तम पुष्टि कारक जय दायक जानिये॥२॥

मन्तोत्सुकत्वंमनसःप्रहर्षःशुभस्यलाभो
विजयप्रवादः॥ मांगल्यलब्धिःश्रवणंच
रात्रौत्रेयानिनित्यं विजयावहानि॥ २॥५

टी०॥ यात्रा के समय मन में हर्ष शुभ तथा लाभ कारक विजय वाद और मंगल प्राप्ति का श्रवण शुभ जानिये॥२॥

क्षेमंकराःनीलकंठाःश्लोलूकश्वजंबुकाः
प्रस्थाने वामतःश्रेष्ठाःप्रवेशेदक्षिणाःशुभाः

टी०॥ और कुत्ता उल्लू पक्षी गधा स्यार प्रस्थान समय वाम भागी होंयतो गमन मे शुभ और प्रवेश में दहने शुभ जानिये॥२॥

(अथआनंदादिशुभाशुभयोगकहतेहैं)

सूर्याश्विभानुहिमरोचिपिचंदूधिष्ण्योत्सार्पाच्चभूमिन
न्दोयवुधेचहस्तान्॥मैत्राद्गौभृगुस्फोतस्वलुवैप्रपदे
वाच्छायासुतेवरुणाभाक्रमप्रःस्फुरेव॥आनंदः का
लदंडश्चधूम्राख्योयप्रजापतिः॥सोमोध्यांक्षोधनक्षो
माश्रीवत्सोवरामृदुः॥क्षात्रंमैत्रोमानसश्चपद्माख्योलं
वकस्तथा॥उत्पातोमृत्युकाणाख्यःविष्टिश्चैवशुभोमृतः
मुसलोयगदाख्यश्चमातंगोराक्षसश्चरः॥स्थिरःप्रवर्द्धमो
नश्चयोगोराविंशतिक्रमात्॥फलेसनामसदृशः योगः
प्रोक्तामदाबुधैः॥फलं॥आनंदोलभतेसिद्धिं कालदंडे
मृतिंतथा॥धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंचप्रजापतौ॥
सौम्येचैवमहत्सौख्यंध्यांक्षेचैवधनक्षयं॥ध्वजनाम्नी
चसौभाग्यंश्रीवत्सेसौख्यसंपदः॥वज्रेक्षयोमृदुश्चश्रीवा
प्यल्पनाथैवच॥छत्रेचराजसन्मानोमैत्रेपुष्टिर्नसंशयः॥
मानसेचैवसौभाग्यंपद्माख्येचधनागमं॥लंबकेधनहा
निश्चउत्पातेत्रासनाशनं॥मृत्युयोगेभवेन्मृत्युःकारो
चक्रेशमादिशेत्॥सिद्धियोगेभवेत्सिद्धिःशुभेकल्याणमे
वच्च॥शमनेराजसन्मानोमुसलेचधनक्षयः॥गदाख्यच
क्षयाविद्यामातंगेकुलरक्षनं॥राक्षसेतुमहत्कष्टंचरेका
र्यंचसिध्यति॥स्थिरयोगेगृहारंभःप्रवर्द्धेपाणिपीडनम

टीका

आनंदादियोग २८ हैं तिनमें एक २ योग के सात वार और सातनक्ष
त्र तिनका क्रम रूसे जानिये रविवार को अश्विनी से आनंदादि योग
होते हैं सोमवार को मृगशिर से आनंदादि मंगल को ७ अपासे पा
नंदादि बुध को हस्तसे आनंदादि बृहस्पति को ४ पुष्यसे आ
दादि शुक्र को उत्तराषाढ से आनंदादि शनिवार को ४ शतभिषा से
आनंदादि इस प्रकार से २८ योगों का क्रम जानना॥

॥आगे चक्र लिखाहै॥

योगों के नाम		रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
१	आनंद	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु॰	उ॰षा	पूरा	सिद्धि
२	कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि॰	पू॰भा॰	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति॰	पुन॰	पू॰फा॰	स्वाति	मूल	अव॰	उ॰भा	असुख
४	प्रजापति	रोहि॰	पुष्य	उ॰फा॰	विशा॰	पू॰षा॰	श्रवि॰	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्यः	मृग॰	श्लेषा	हस्त	अनु॰	उ॰षा॰	पूरा॰	अश्वि	अतिसौख्य
६	ध्वांक्षः	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि॰	पू॰भा॰	भरणी	धनक्षय
७	ध्वजः	पुन	पू॰फा॰	स्वाति	मूल	अव॰	उ॰भा॰	कृत्ति॰	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उ॰फा॰	विशा॰	पू॰षा॰	श्रवि॰	रेवती	रोहि॰	सौख्य
९	वज्र	श्लेषा	हस्त	अनु	उ॰षा॰	पूरा॰	अश्वि	मृग	क्षयकृत
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि॰	पू॰भा॰	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीनाश
११	छत्र	पू॰फा॰	स्वाति	मूल	अव॰	उ॰भा	कृत्ति	पुन॰	राज्यसन्मान
१२	मैत्र	उ॰फा॰	विशा॰	पू॰षा॰	श्रवि॰	रेवती	रोहि॰	पुष्य	पुष्टिकरता
१३	मानस	हस्त	अनु॰	उ॰षा॰	पूरा॰	अश्वि	मृग	श्लेषा	सौभाग्य
१४	पद्मारव्य	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू॰भा॰	भरणी	आर्द्रा	मघा	धनकीप्राप्ति
१५	लंबक	स्वाति	मूल	अनु॰	उ॰भा॰	कृत्ति	पुन॰	पू॰फा॰	धनकीहानि
१६	उत्पात	विशा॰	पू॰षा॰	श्रवि॰	रेवती	रोहि॰	पुष्य	उ॰फा॰	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा॰	उ॰षा॰	पूरा॰	अश्वि	मृग	अश्ले॰	हस्त	मृत्यु
१८	काण	ज्येष्ठा	अभि	पू॰भा॰	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	अव	उ॰भा॰	कृत्ति	पुन॰	पू॰फा॰	स्वाति	कामसिद्धि
२०	शुभः	पू॰षा॰	श्रवि॰	रेवती	रोहि॰	पुष्य	उ॰फा॰	विशा॰	जयहोय
२१	अमृत	उषा॰	पूरा॰	अश्वि	मृग॰	अश्ले॰	हस्त	अनु॰	राज्यसन्मान
२२	मुसल	अभि	पू॰भा॰	भरणी	आ॰	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनकानाश
२३	गदाख्य	श्रवण	उ॰भा	कृत्ति	पुन	पू॰फा	स्वाति	मूल	अखंडविद्या
२४	मातंग	धनि	रेवती	रोहि॰	पुष्य	उ॰फा	विशा॰	पू॰षा॰	कुलक्षयहोई
२५	राक्षस	पूरा॰	अश्वि	मृग	श्लेषा	हस्त	अनु॰	उ॰षा॰	अग्निकाष्ठ
२६	चर	पू॰भा॰	भरणी	आ॰	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि॰	कामसिद्धि

२७	स्थिर	उ॰भा	कौलव	पुन॰	पू॰फा	स्वा॰	मृ॰	अव॰	दृष्टारंभः
२४	वर्द्धमान	रेवती	तैतिल	पुष्य	उ॰फा॰	वि॰	पू॰षा॰	धान॰	विवाह॰

चरयोग

रवौ पूषा गुरौ पुष्यः शनौ मूलं भृगौ मघा ॥ सोम्ये घ्राह्यं विषाभौमे चंद्रे ह्यौ चरयोगकः ॥ १ ॥ ऋक्षचरयोगः ॥ रवौ नुद्वादशी प्रोक्ता भौमे च दशमी तथा ॥ चंद्रे चैकादशीन वमी बुधवासरे ॥ २ ॥ शुक्रे च सप्तमी ज्ञेया शनौ चैव नु षष्ठिका ॥ गुरौ चाष्टमिका ज्ञेयो योग एष बुधैः ॥ ३ ॥ दग्धयोग ॥ बुधे तृतीया कुजपंचमी च षष्ठी गुरौ रवौ शुक्रवारे ॥ एकादशी सोम शनिर्नवम्यां द्वादश्यमर्की मिति दग्धयोगः ॥ ४ ॥ मृत्युदा योग ॥ रवौ भौमे भवेन्नंदा भद्रा जीव शशांकयोः ॥ जया शुक्रे बुधे रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ५ ॥ सिद्धियोगः ॥ शुक्रे नंदा बुधे भद्रा जया भौमे प्रकीर्तिताः ॥ शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगा उदाहृताः ॥ ५ ॥ उत्पात दियो- ॥ विष्णारवादिचतुष्कं च भास्करादिक्रमेणतु ॥ उत्पात मृत्युकालश्च सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥ यमदंष्ट्र योगः ॥ मघा धनिष्ठा सूर्येतु चंद्रे मूलं विष्णारवेकृ तिका भरणी भौमे सोम्ये पूषा पुनर्वसुः ॥ ७ ॥ गुरौ पू चाश्विनी शुक्रे रोहिणी चानुराधिके ॥ शनौ विष्णुः प्र तभिषक् यमदंष्ट्राः प्रकीर्तिताः ॥ ८ ॥ यमघंट योगः ॥ रवौ मघा बुधे मूलं गुरौ चैव च कृत्तिका ॥ भौमे चाश्लेषा शौक्रः शुक्रे चैव तु रोहिणी ॥ चंद्रे विष्णारवा योगी यंय मघंटः प्रकीर्तितः ॥ ९ ॥ मुसलवज्रयोगः ॥ चंद्रे चित्रा भृगौ ज्येष्ठा शनौ चैव तु रेवती ॥ चंद्रे तु धनिष्ठाक्रांते तुभरणी तथा ॥ उषाग्नेयं तु भौमे च गुरौ चैवोत्तरा तथा ॥ त्रयं मुसलवज्राख्य योगो वर्ज्यः शुभे बुधैः ॥ ९ ॥ १० ॥

अमृतसिद्धियोगः॥आदित्यहस्तेगुरुपुष्ययोगे
बुधानुराधाभृगिरोहिणी च॥सोमेऽश्विभे भृ
गुरेवती चौमाश्विनौ चामृतसिद्धियोगः॥११॥
थी वारचरयोगादिक और सातवार कोष्टक में लिखते हैं तिनमें
जिसवार को नक्षत्र वा तिथि होय सोयोग उसदिन जानना॥

योगी के नाम	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रा.
१	चरयोग	पू.षा.	श्रावि.	विशा.	रोहि.	पुष्य	मघा	मूल	न.
२	अमृत	२३	२७	६०	६	८	७	६	तिं.
३	दग्धा	१३	११	५	३	६	८	९	तिं.
४	मृत्यु	२५ ३०	१ ५	२५ ३०	३० ६	१ २	४ ६	२० २५	तिं.
५	सिद्धि	० ० ०	० ० ०	६ ९	७ १२	१० १५	२० २५	१५ २०	नि.
६	उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ.फा	न.
७	मृत्यु	श्रवि	उ.षा.	शतभि	आश्वि.	मृग.	मूल	हस्त	न.
८	काल	ज्येष्ठा	अ.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	विशा.	न.
९	सिद्धि	मूल	म.	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्व.	पू.फा	स्वाति	न.
१०	यम दंष्ट्रा	मघा धनिष्ठा	मूल विशा.	कृत्ति. रोहि.	पू.षा. पुनर्व.	उ.षा. आश्वि	रोहि. अनु	श्रवणा शतभि.	न.
११	यमघं.	मघा	विशा.	उ.षा.	मूल	कृत्ति.	रोहि.	हस्त	न.
१२	मुसलय	भरणी	चित्रा	आश्वि	धनि.	उ.षा	ज्येष्ठा	रेवती	न.
१३	समृत सिद्धि	हस्त	श्रवणा	आर्द्रा	अनु	पुष्य	रेवती	रोहि.	न.

दासचक्रम्

नराकारं लिखेच्चक्रं सेवार्थे मृत्यसंग्रहे॥पूर्वे
पैंडिशयर्क्षलाभस्थान्मुखेऽग्नीनिदिनाप्तले॥हृदंघ्रि च
धनंधान्यं पादेषट्कं रविदूना वधेद्दासान्सदेहा

नाभौवेदा शुभावहम्॥गुदे द्वेभवपीडान्वरस
हलैकमर्थैकम्॥एकंवामेनाशकरे भृत्य
भ्रात्स्वामिभांतकम्॥९॥

टी०॥नराकारचक्रके अवयव स्थानों में स्थापन करे शिरपै ३ती
नक्षत्र धरे तिसका फल अर्थलाभ मुखमें ३ हानि कंधा पर २ स्वामी मृत्यु हृदय में ५ पंच धन धान्यवृद्धि पैरों पर ६ दरिद्र दृष्टि पर २ भृत्य नाभि
में ५ शुभ गुदा पर २ भय पीडा बायें हाथ पर २ अर्थ अर्थप्राप्ति दाहि
ने पर २ नाश करे॥ दूसरा मत

दासीचक्रं प्रवक्ष्यामि दासीभात्स्वामिभांतकं॥शीर्षे
त्रीणिमुखेत्रीणिस्कंधे पोश्वहृदयेस्मृतम्२हृदयेपंच
क्षाणिनाभौपंचभगेकंकम्॥जानुद्वयेहयंज्ञेयपादयोश्च
त्रयंत्रयम्२॥फलं॥शिरस्थानेभवेल्लाभोमुखेहानिः
प्रजायते॥स्कंधेचस्वामिनोमृत्युहृदयेपुष्टिवर्द्धनम्
॥३॥नाभौहानिरुदंप्रोक्तंभगेचैवपलायनम्॥जा
नौसेवोत्तमेनित्यंपादयोरुत्तमंधनक्षय॥४॥५

टी०दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रतक गिने तिस्का
क्रम सीस पर ३ लाभ मुखमें ३ हानि कंधा पर २ स्वामी की मृत्यु हृद
यमें ५ वृद्धि नाभि में ५ हानि भग पर १ पलायन जानु पर २ सेवा करै
पद पर ६ धनक्षय इस में शुभ फल देख कर रक्खे॥४॥

(गवादिपशुलेनेकामुहूर्त)

शीर्षेत्रयंमुखेद्वेचपादेक्षौचिनिर्दिशेत्॥हृदयेपंच
क्षरक्षाणिहानिस्तेशौभगेकंकम्२॥फले॥शिरस्थाने
भवेल्लाभोमुखेक्षानिप्रजायते॥पादयोरर्थलाभःस्या
न्हृदयेसौख्यवर्द्धनम्॥स्तनयोरुक्तमहालाभोगुह्य
स्थानेमहद्भयम्॥सूर्यमादिगवांज्ञेयंमहिषंसूर्यभान्य
पैल॥दूरमेवहृषेस्त्रेयं विप्रोषःपक्षषोडशः॥१॥

टी०॥गाय वा वृष लेना होय तो उत्तरा फाल्गुनी से लेके श्विसनक्षत्र

नक्षत्रसे जन्मका नक्षत्र मस्तक पर लाभदायक मुख में २ हानि
पैरों पर ९ अर्थ लाभ हृदय में ५ मुख स्तन में ६ महालाभ भग पर
१ जंघा वृद्धि गुह्य पर ४ भय जानिये महिषा लेनी होय तो भी इसी क्रम
से शुभाशुभ फल जानिये परंतु सूर्य नक्षत्र से स्वस्व नक्षत्र तक
गिनके भैंस बैल लेना होय तो भी यही क्रम जानिये परंतु पैरों पर २
नक्षत्र धरे और शेष स्थानों में दोदो नक्षत्र धरे गाय के समान
शुभाशुभ जानिये ॥२॥

(अश्व लेनेका मुहूर्त)

अश्वेतु सूर्यभांचैव स्वामिजिह्वेलिखेत्तथा ॥
पृच्छे त्रयं तत आरभ्य तुर्यं रंध्रे तुर्यके ॥ उदरे ।
पंचमं धिष्ण्यमुरसि चैव मुखे लिखेत् ॥ फलं ॥ यो
ग्राह्यमर्थ लाभञ्च स्त्रीनाशोरुभंगतः ॥ ना
शुभञ्च अर्थ लाभञ्च फलं ज्ञेयं मनीषिभिः ४

टीका ॥ सूर्य के नक्षत्र से अपने जन्म नक्षत्र तक गिनि जिसमें
नक्षत्र स्थापित करे इस क्रम से स्थानों का फल कहे पर शीर्ष
पीठ पर १० अर्थ लाभ पृष्ठ पर स्त्रीनाश पैरों पर ४ रण भंग उद
र पर ५ लाभ मुख में ३ अर्थ लाभ ऐसे फल जानिये ॥४॥

(हाथी लेनेका मुहूर्त)

गजाकारं लिखेच्चक्रं जन्मभांतं च सूर्यभात् ॥ क
र्णे शीर्षे हृदि पृच्छे गुह्यं सर्वत्रयोजयेत् ॥ शुंडायांतु
हयंयोज्यं वेदा पृष्ठोरु रसे ॥ यद्वैचवदुपांश्वस्त्र
मिदंन्यसेत्क्रमात् ॥ फलं ॥ करेणैवमहल्लाभो
मस्तकेलाभएवच ॥ हृतेचैवभवेल्लाभो पृच्छेहानि
रजायते ॥ शुंडायांतु शुभंज्ञेयं पृष्ठेतु रुधिरं तथा ॥ उदरे
उदरे रोग संभूतिर्मुखेतु मध्यमं स्मृतम् ॥ पाद्ये
ष्वभवेल्लाभोगजे चैवं विनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥ ५

टीका ॥ प्रथम सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक स्थापित करे लिस क्रम

ये प्रथम कानों पर २ लाभ मस्तक पर २ लाभ होतों पर २ लाभ घूंछ पर २ हानि सूंड पर २ शुभ पीठ पर ४ सुख संपदा पेट पर ४ रोग मुख पर ४ मध्यम पायों पर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥१॥

(पालकी चढ़ने का मुहूर्त्त)

सूर्यभाद्दिनभंयावत्तंच पंचचतुर्दशी॥मध्येतुसप्त। हेयानिचैकेश्रेयंसुखावहम्॥फलं॥पूर्वभागेतुचारे। ग्यंदक्षिणेकाष्ठकारकं॥पश्चिमेकृपृताचैवउत्तरेव्याधिसंभवः॥मध्यस्थंचशुभंप्रोक्तमायुवृद्धिकरंपरम् पल्यंकारोपरांचैवद्वालकस्यबुधैर्हितम्॥१॥२॥३॥

टी०॥ सूर्यनक्षत्र दिवसनक्षत्र पर्यंत पालकीपालना इनमें चढ़ना चाहैउस के चारों ओर ग्वार मध्य में लिखने का क्रम पूर्वभाग में १ आरोग्यदक्षिण में ५ कष्ट करना पश्चिम में १ कृपृता उत्तर में ५ व्याधिना १ मध्य में ७ आयुवृद्धि कारक जानिये॥१॥२॥३॥

(छत्रचक्रं)

अश्वरा रोहिणीरौद्रे पुष्यश्च श्रुततारका॥धनिष्ठाश्च वराश्चैव शुभानिछत्रधारणे॥फलं॥मूलेविनाशस्तरंडे कंठेचैवतु पंचकं॥मध्येचस्वप्रशस्तव्यं शिखरेवेदएवच॥मूलेचजायतेनाशोदंडे हानिर्धनक्षयः॥२॥ कंठेचराजसन्मानोमध्येछत्रपतिर्भवेत्॥ शिखरेकीर्त्तिरद्दिष्टाजन्मभात्सूर्य्यभान्तकम्॥५॥३॥

टीका॥तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य श्रुत तारका धनिष्ठा श्रवण यह नक्षत्र छत्र धारण में शुभ है परंतु अपने जन्म नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम मूल पर २ जीव नाश दंड पर ७ हानि धन क्षय कंठ पर ५ राज सन्मान मध्य में ८ छत्रपति शिखर पर ४ कीर्त्ति इति जानिये॥१॥२॥३॥४॥

(मंचकचक्रम्)

सूर्यभाद्गणयेच्चांद्रं मंत्र मूलेचतुश्चतुः॥गात्रेषुत्वे-

कचिंध्यास्क मध्ये सप्त विनिर्दिशेत्॥फलं॥मूले ।
तुरंगवसौभाग्यं गात्रे पीडाभयं महत्॥मध्येसम्पु
त्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरंपरम्॥१॥२॥३॥४॥

टी०॥सूर्य के नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत मंचान में नक्षत्र अंक स्थापन करे पहले मुख में १ सुख प्राप्ति मध्य गात्र पर १ भय प्राप्ति आगे विध्या पर १ भय मध्य में ७ पुत्र लाभ और आयु वृद्धि होय॥

(पूर सहित धनुष चक्र)

सूर्यभाज्जन्मभांतंचधनुष्येवंचयोजयेत्।
चापाग्रेबाण संख्यांकं पूराग्रे पंचयोजयेत्
पूरमूलेतथा पंच पंचसन्धौप्रकीर्तयेत्।
दंडेचैवतुरंघाद्यै धनुषश्चक्रमुत्तमम्॥फलं
अग्रहानिः पूरेलाभो पूरमूलेजयस्तथा॥
चापसंधौतुधैर्यस्यद्दंडभंगःप्रजायते॥१॥

टी०॥सूर्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र पर्यंत धनुष पर अंक स्थापन करने क्रम अग्र पर १ हानि पूर के अग्र पर १ लाभ पूर की मूल पर १ जय फिर संधि पर १ सुख ता बीच के दंड पर १ राज्यभंग इन में से शुभ फल देख कर धनुष धारण करे॥१॥२॥३॥४॥

(रथचक्रं)

रथाकारं लिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जन्मभंन्यसेत्॥रथा
ग्रेत्रीणिऋक्षाणिषट्चक्रेषुतुनाम्यसेत्॥ऋक्षत्रयम
दंडेरथाग्रेभवयंतथा॥युगेचभवयंत्रेयंषडृक्षाण्यं
तमध्यनि॥पौषमृक्षत्रयंयोज्यंचक्रेःसर्वतोमुखे
फलं॥मृगेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिस्तैयाच दंड के॥
रथाग्रेदंड ऋक्षानंमध्येचैव सुखं शुभम्॥१॥२॥
बुधैरेवं फलं ज्ञेयंजन्मभांतं क्रमेणाच॥गर्गेणोक्ता
निचक्राणि विज्ञेयानि सदा बुधैः॥१॥२॥३॥४॥

टी०॥रथ के आकार चक्र खींच करउसके स्थानोंपर सूर्य नक्षत्र

सेजन्म नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम पक्षों पर २ मृत्यु पैयों पै
ई जय मध्य के दंड पर ३ सिद्धि रथ के शत्रु पर ४ धन लाभ ऊपा पै.
२ भंग अंत के मार्ग पर ६ शुभ और सर्वत्र ४ करत जानिये ॥ २॥

(लिखों की घानी करने का क्रम)

कोष्ठ चक्र

घाणाचक्रं भवत्यादि सूर्य भाच्चंद्रमे वच्च ॥ त्रिरिंशी
द्विजयं त्रीणि त्रीणि त्रीणि त्रयं तथा ॥ त्रीणि त्रीणि तु भान्य
त्रयोजयेद्घाणा के शुभे ॥ फले ॥ हानिरैश्वर्य भारैश्ये क्षिप्रा
प्तौ मृत्यु मे वच्च ॥ स्वामिघातो निर्धनता मृत्युरे व सुरंध क्रमात् १

टी० ॥ सूर्य के नक्षत्र से चंद्रमा नक्षत्र तक घानी चक्र के भाग ९ नौ
लिस का क्रम प्रथम भाग में ६ हानि दूसरे २ भाग ऐश्वर्य तीसरे भाग ३
क्षारोग्य चौथे भाग ४ लाभ पांच में भाग ५ मृत्यु छठे भाग ६ स्वामी
घात सात में भाग ७ निर्धनता आठ में भाग ८ मृत्यु नवें भाग ९ क्रम
से इन में जिस दिन शुभ फल आवे उस दिन करै ॥ २॥

(ऊख के रस काढने का मुहूर्त)

चैत्रे हिने शुभं भत वारा हस्त रसा क्रमात् ॥ फले ॥ प्र
थमं चल भेल्लक्ष्मी द्वितीये हानि मे वच्च ॥ तृतीये सर्व ला
भश्च चतुर्थे च क्षयं तथा ॥ पंचमे च भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने
शुभं स्मृतम् ॥ २ ॥ सप्तमे चैव पीडा स्यादष्टमे धन धान्यदं
सूर्य भाद्रणा येच्चांद्रमिक्षुयंत्रे नियोजयेत् ॥ ३ ॥ *

टी० ॥ सूर्य के नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र के इस क्रम से भाग ८ लिखे प्रथम
भाग १ लक्ष्मी दूसरे २ हानि तीसरे ३ सर्व लाभ चौथे ४ क्षय पांच में
५ मृत्यु छठे ६ शुभ सात में ७ पीडा आठ में ८ धन धान्य इन में जिस
दिन शुभ आवे उस दिन रस काढने का आरंभ करे ॥ ३ ॥

(खेती करने का मुहूर्त)

स्वातीत्राल्प मृगोत्तरा दितियुगे राधाचतुष्के मघारे
वस्वत्तर विष्णुभं कृषिविभौ क्षेत्रादिवापे विभौ * *

गो कन्या न्न मन्म या श्च सुभदा चाण कुम्भा कीनरं
वही॥ हारथरिक्त पर्वरुतथा वन्ये द्वितीया द्वयम् २
टी०॥ स्वाति रोहिणी उत्तरा पुनर्वसु शुध्र अनुराधा ज्येष्ठा मूल पू
र्वाषाढ मघा उत्तरा फाल्गुनी श्रवणा यह नक्षत्र औरवकन्या म
कमिथुन ये लग्नें शुभहैं मगसर पूर्णिमा और वही हारथरिक्ता हो
नों पर्वनी अर्थात् मावस पूनो २७।२५ और दोनों द्वितीया दूनको
छोड़ि कें कृषिकर्म का आरंभ और बीज बोना ये करावे ॥२॥

(हलचक्रं)

चिकं चिकं चिकं पंच चिकं पंच चिकं चिकम्
सूर्यभद्रणयेच्चांदुं अशुभंचशुभंक्रमात्॥ २
टी०॥ सूर्य नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत गिने तिनके ९ भाग रखने
का क्रम प्रथम ३ अशुभ दूसरा ३ शुभ तीसरा तीन ३ अशुभ चौथा
शुभ पांचवां ३ अशुभ छठा शुभ सातवां ३ अशुभ आठवां ३ शुभ
जिस नक्षत्र के भाग में दिवस नक्षत्र शुभ आदि उठ दिन धारणा करै

(नौका चक्रम्)

पौष्णादिशिरसंस्थाने चारणा मिच चिच शीतोंसरश्मि
वस्तुजीव कभान्य भूमि॥ भारच जीव भृगुभंस्थ के प्र
थमे नौकादि संघटन चारुन मेषु कुर्यात् ॥ १॥ ५

टीका॥ रेवती पुनर्वसु आश्लेषा भूतनारका अनुराधा चित्रा
मृगशिर हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार इन में
नाव बनाना जल में उतारना शुभ है ॥१॥

(नौका चक्रं)

रविभुक्तर्क्षमारभ्य कुर्यात्त्रीण्युदयेन च षट ॥
भात्र्यांत्रीणि हृदि त्रीणि पृष्ठे भूः पार्श्वगं त्रयम् १
मुखान्त्रीणि षट् मध्ये नौकाचक्रे भसंस्थितिः
उपरिस्थंच मध्यस्थे यद्भेषंच यंत्र सत् ॥२॥

टी०॥ सूर्य नक्षत्र से तीन तीन नक्षत्र लिखने का क्रम ऊपर के भाग में

ईनीली में ३हृदय पर ३पीठ पर ३पार्श्व में मुक्काण में ३नाव के सम ध्य में ईरीजिये लिग में ऊपर के मध्य के शुभ और स्थानों के अशुभ जानिये।

(लग्न और ग्रह बल)

त्रिषडायगतः सूर्यश्चंद्रो द्वित्र्यायगः शुभः॥
कुजार्की त्रिषडायस्थौ त्रिषट्खेत रगो गुरुः॥
द्विसप्तमारिःफायरिपुसंस्थोबुधःस्मृतः
सप्तांत्यारिर्न्विनाथश्चनौयानेशुभदःसितः २।

टी०॥नौका के चलाने और माल भरने की लग्नका ग्रहबलज्ञान तीसरे ३छठे ईग्यारह वें ११सूर्य शुभ और चंद्रमंगल घूनि यहभी इन में शुभ इनस्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में गुरु शुभ ३।५।७।८ १२।ईइन स्थानों में बुध होयतो शुभ ३।१२।ईइनस्थानों को छोड़ कर अन्य स्थानों में शुभजानना ॥२॥

(नौकास्थान के ग्रह)

नान्यो पापखगाःसौम्याःमुक्काणेशुभकारकाः
व्यस्तामृत्युकराःक्रूरःपृष्ठेकूर्पेचभीतिकृत ४।
अंतेवाहो स्थितास्तेचल्लाभायस्मृता बुधैः।
एवंविचार्य दैवज्ञोनौयात्तसमयंवदेत् ॥ ३ ॥

टी०॥लग्न समय में जो जो ग्रह जिस जिस स्थान में पडा होयतिस्का तेसा फल नाडी में पाप ग्रह अशुभ मुक्काण पर शुभग्रह शुभहै और यह विपरीत होयतो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठ पर वा कूर्पर पर आवेतोभय दायक और इनग्रहों में से बाहर आवेतो लाभ होय यह विचारिक रि के ज्योतिषी नाव चलावे॥१॥ ३॥

दीपकचक्रम्

दीपिकायासुखेपंचराजसन्मानलाभदाः॥
कंठेनवधनप्राप्तिर्मध्येष्टौस्वामिमृत्युदाः २
दंडेपंचभवेद्राज्यं भगिरक्षाच्चदीपिकाम्।

टी०॥कृतिका नक्षत्र से दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखने का क्रम-मुख

पर ५ लाभ कंठ पर ९ धन प्राप्ति मध्यमें ८ स्वामी मृत्यु दंड पर ५ राज्य प्राप्ति इस रीति से नक्षत्र क्रम जानिये ॥१॥

(कूपचक्रं)

कूपे वाप्योस्तु चक्रं वै विज्ञेयं विबुधैः शुभं॥ रोहिणी गर्भमेतस्यां त्रि त्रिऋक्षाणि चंद्रभं॥ मध्ये पूर्वेतयाग्नेयो या सेचैवतुनैर्ऋते॥ पश्चिमे चैव वाय्यां सौम्यपूर्दिशिऋक्षमात्॥ फलं॥ शीघ्रं जलं नजलं मध्यमजलमजलं वहु जलंच॥ अमृतजलं वहुक्षारं सजलं मध्यजलं क्रमात् ज्ञेयम्॥ मत्स्ये कुलीरमकरे वहु जलंतथैव चार्द्रवृषकुंभयोस्तु॥ अल्पोचतौ लोचजलातानामतापेवाभ्रसर्वे जलदाः प्रकीर्तिताः॥ नवीन कूप अरु वापी रोदना॥

टी०॥ रोहिणी से वर्त्तमान दिवस के नक्षत्र पर्यंत का क्रम गिनकर मकर इन तीन राशियों का चंद्रमा होय तो वहुत जल निकले और वृष कुंभ इन का होय तो उससे आधा जल रहे वृश्चिक तुला इनका चंद्रमा होय तो अल्प जल रहे शेष राशियों का चंद्रमा होय तो नहीं निकले यह वात प्रसिद्ध है ॥१॥

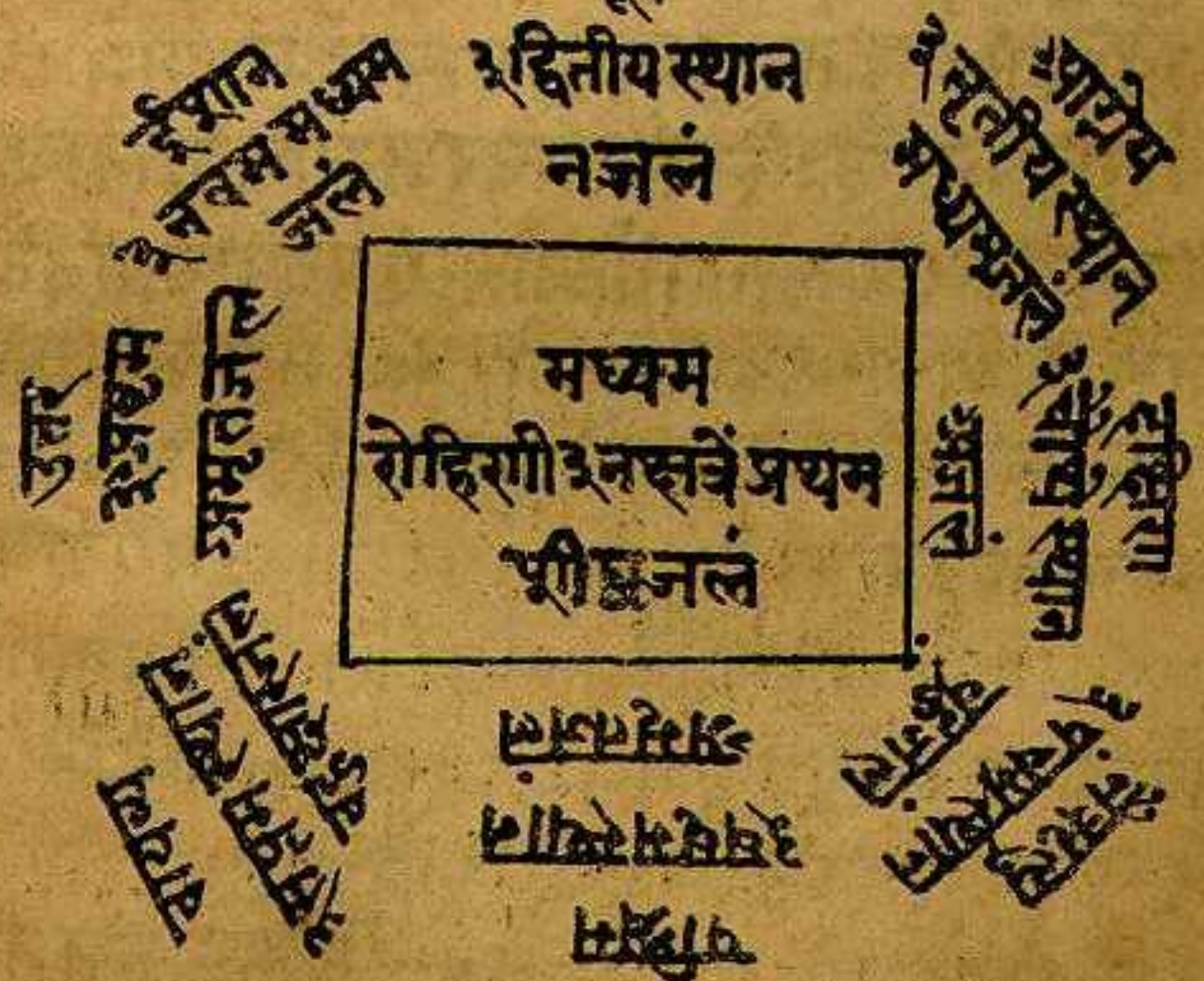

(वागलगानेकामु)

गोसिंहालिगतेषुचोत्तरगतेभानौबुधाश्चियेचंद्रार्केचशुभावुधैरभिहितारामप्रतिष्ठाक्रिया

दी०॥उत्तरायनमेंवृष सिंह वृश्चिकइन राशियों का सूर्य और बुधगुरुशुक्र रवि चन्द्रमा इनमें कोई वार हो ऐसा शुभ दिन देख कर वाग लगानाचाहिये ॥ ११॥

श्लेषाभरणी ध्रुवंधृतभिषक्स्वाती विशाखाश्वीकु
ह्वरिक्तापक्षतिथ्यमीपरिहरेत्पक्षीमपिद्वादशीम् १

दी०॥ श्लेषा भरणी कृतिका धृतभिषा विशाखा स्वाति अमावस्या रिक्ता तिथि द्वितिया अष्टमी द्वादशी इनसबको छोडकेदिनमेंवाग लगावे॥

(सिक्काढालनेकामु)

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुभेषुयोगेशुभास्तेशुभनिरीक्षितेषु
वारेतथाधृतिजलाह्वयेचमुद्राशुभास्तास्शुभदाहिरण्या

दी०॥ मृदु संज्ञक ध्रुव संक्षिप्र संज्ञक इन नक्षत्रों शुभदे शुभनि चन्द्र येवार छोड़के सिक्का रचे॥ १॥

(प्रश्नप्रकरणतिथ्यादिप्रयुक्तप्रश्नः)

तिथिप्रहरसंयुक्तंनक्षत्रवारमिश्रितम् ॥
अग्निभिस्तुहरेद्भागंशेषंसत्वंरजस्तमः॥ १॥
सिद्धिस्तात्कालिकीसत्वेरजसातुविलंबिता
तमसानिष्फलंकार्यंज्ञातव्यंप्रश्नकोविदैः २

दी०॥ जिस तिथि वार नक्षत्र में और प्रहर में प्रश्न में करे तिसका उत्तर नीचे लिखते हैं॥ उदाहरण॥ तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबों को छोड़के ९ तीन का भाग दे तो २५ गये शेष ३ रहे तिस का नाम सूत्र रज तिसं का फल ये के कार्य में विलंब दूसरी प्रमाणसे सब का फल जानना तीन बचे ३ तम निष्फल २ बचे तो सत्व कार्य सिद्धि॥ ५। २॥

(अपनीछायासेप्रश्न)

आत्मछायादिगुणितांत्रयोदशसमन्विती

वस्कभिश्चहरेद्भागं शेषं चैव शुभाशुभं ॥ फलं ॥
लाभश्चैवक्षतिकैसिद्धिर्हानिः पंचमसप्तकैः ॥
शेषो निश्चयतः शोकं वधाच्चे मरणं ध्रुवम् २ ॥

टी० ॥ अपनी छाया को तिगुनी करे उसमें १२ मिलावे फिर ८ का भाग दे शेष बचे तिस का फल जानिये शेष १ लाभ द्वि० २ शेष हानि तीन ३ शेष सिद्धि चार ४ शेष शोक पांच ५ शेष दंडि छः ६ शेष मरण सात ७ शेष हाड़ि आठ ८ शेष मरण जानिये ॥ २ ॥ २ ॥

(पंथा प्रश्न)

तिथिप्रहरसंयुक्तानारकावारभिश्चिता ॥ सप्तभि
रूद्धरेद्भागं शेषं फलमादिशेत् १ वर्तमानचनक्ष
त्रंगणयेत्कृतिकादितः ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं ।
प्रश्नस्यलक्षरणं २ प्रश्नाक्षरं रुद्रयुक्तंसप्तभिर्भाजि
तंतथा ॥ फलमेवंक्रमात्ज्ञेयं सर्वेषांहि शुभाशुभं १

टी० ॥ तिथि वार नक्षत्र प्रहर इन सब को जोड़ के ७ का भाग दे शेष ब
चे तो फल जानिये दूसरा कृतिका से वर्त्तमान नक्षत्र तक गिने ७ का
भाग दे शेष बचे सो फल जानिये तीसरा प्र० प्रश्न के अक्षरों में ११ मि
ला के ७ सात का भाग देने से शेष रहै सो फल जानिये ॥ २ ॥

(तत्फलं)

एकशेषे तथा स्थाने द्वितीये पथिवर्त्तते ॥
तृतीये प्यर्द्धमार्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् २
पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधिर्भयं वदेत् ॥
शून्यं ज्ञेयं सप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् २

टी० ॥ एक १ शेष रहै तो स्थान ही में जानिये २ दो शेष रहै तो मार्ग में ती
न ३ बचें तो अर्द्ध मार्ग में चार ४ बचें तो ग्राम में आया जानिये पांच
५ शेष रहैं तो मार्ग से उलट गया जानिये छः ६ शेष रहैं तो रोग ग्रस्त
जानिये सात ७ बचें तो शून्य अर्थात् मरण जानिये ॥ २ ॥

दूसरा प्रकार

धनसहज गतौ सिता मरेज्यो कथयत आगम
नंप्रवासि पुंसाम् ॥तनु हिबुक गता विमोचत
हृत्रुटितिन्नृणां कुरुतो गृह प्रवेशम् ॥ २॥

टी०॥ द्वितीय स्थान शुक्र तृतीय स्थानी गुरु अथवा प्रश्न लग्न में शुक्र चतुर्थ स्थानी गुरु ऐसा योग होतो प्रश्नपूछी शीघ्र ही आया जानिये

(कार्याकार्यप्रश्नः)

दिग्भ्रहरसंयुक्ता तारकाचार मिश्रिता ॥ अर्क भिक्षुहरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणं ॥ फले ॥ पं ॥ चैकेत्वरिता सिद्धिः षट् सूर्येच्च दिनत्रयम् ॥ वि सप्तके विलंबश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ ॥ २॥

टी०॥ एच्छक का मुख जिस दिशा को होय वह दिशा और प्रहर गण नक्षत्र इन सबको एकत्र करिकें ८ का भाग दे शेष बचें तिस में शुभ शुभ जानिये एक १ पांच ५ शेष बचें तो कार्य शीघ्र सिद्धि जानिये चा र ४ छः ६ बचें तो तीन दिन में काम सिद्धि हो तीन ३ सात ७ बचें तो वि लंब से कार्य सिद्धि होय २ दो ८ आठ बचें तो कार्य नहीं होय ॥ २॥

(अंक प्रश्नः)

४	३	८
६	५	१
२	७	६

अंकंहिगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम् ॥
त्रयोदशयुतंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ फलं
एकेहिधनवृद्धिश्च द्वितीयेचधन क्षयः ॥
तृतीये क्षेम मारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहि ॥ ३॥
पंचकेचस्त्रिलाभस्यात्षष्ठेबंधुविनाशनम्
सप्तमेद्रुस्त्रिलाभस्त्रिमे मरणं ध्रुवम् ।
नवमे राज्यसंप्राप्तिर्गर्भस्य चंचनं तथा ॥ ४॥

टीका॥ जितने अंक का नाम होय उनको दूना करे फल और नाम के अक्षरों को मिलावे फिर उस में १३ और मिलावे ९ का भाग दे शेष बचें तिस का फल कहिये एक से १ धन वृद्धि दो २ से धन क्षय तीन से ३ आरोग्य चार से ४ व्याधि पांच से ५ स्त्री का लाभ - छः ६

वंधकनाशू सात७से कार्य सिद्धि आठ८में मरणा नौ९में रा
ज्य प्राप्ति यह गर्ग मुनिका वचन है ॥२॥

नवग्रहात्मकं यंत्रं कृत्वा प्रश्न निरीक्षयेत्
फलं पूर्वोक्तमे वात्र दृश्यं प्रश्नको विदैः१

टी०॥नवग्रहात्मक यंत्र वनावे उस में अवलोकन कीजे जो अंक पै
उँगली रक्खे उस का फल पूर्व कहा उस प्रकार से जानना चाहिये।

(दूसरा मत)

सप्तत्रयांके कथयंति वार्तां नवैक पंचत्वरितं वदंति
अष्टौ द्वितीये नहि कार्य सिद्धिरसाध्य वेदा घटिका चयंत्र

टी०॥पूर्व जो अंक कहे हैं तिन के प्रमाण से फल जानिये परंतु फ
लभिन्न हैं शेष सात७ वा तीन ३ रहें तो वार्ता करना जानना और ९
नव एक१ पांच ५ वचें तो शीघ्र कार्य सिद्धि होय दो२ आठ८ वचें तो का
र्य नहीं होय छः६ चार४ वचें तो तीन दिन वा तीन घरी में कार्य होय॥

(वारनक्षत्रयुक्त पृथा प्रश्न)

बुधे चंद्रे तथा मार्गे समीपे गुरु शुक्रयोः ।
रवौ भौमे तथा दूरे शनौ चैव परिपौड्यते१ ।
निर्जीवः सप्तऋक्षाणि सजीवो द्वादशे भवेत्
व्याधितो नव ऋक्षाणि सूर्ये त्रिमासुचाष्टमं२

टी०॥बुध सोम को पूछे तो मार्ग में जानिये-और गुरु शुक्रवार को पू
छे तो समीप आया जानिये-रवि भौम वार को पूछे तो दूर जानिये श
नैश्चर वार को पूछे तो योग्य युक्त जानिये-और सूर्य नक्षत्र से चंद्रमा
के नक्षत्र तक लिखने का क्रम प्रथम सात नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो
निर्जीव दूसरे १२ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो जीता जानिये-तीसरे
नव ९ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो रोग की उत्पत्ति जानिये-इसमां
ति पंथा प्रश्न जानिये ॥१॥२॥

(नष्ट वस्तु प्रश्न)

तिथिवारंच नक्षत्रं लग्नं चन्द्रं निमिलितं ॥

पंचभिस्तु हरेद्भागं शेषंलत्वंविनिर्दिशेत्॥फले
पृथिव्यांतुस्थिरं ज्ञेयं भास्कव्योम्नि न लभ्यते॥
तेजसंराजसंज्ञेयं वायौ प्लोकंविनिर्दिशेत् २

टी०॥ तिथिवार नक्षत्र लग्नइनमें तीनमिलावे और पांचका भागदे शेष १वचे तो प्रथ्वी में जानिये दो २वचें तो जल में जानिये तीन ३ वचें तो आकाश में पर मिले नहीं चारवचें तो अग्नि में राजाके गई जानिये पांच वचें तो वायु में प्लोक जानिये ॥१॥२॥

(गर्भिणीप्रश्न)

नत्यृच्छलग्नेरविजीवभौमेतृतीयेसप्तेनव
पंचमेच॥गर्भःपुमान्वैद्यरविभिःप्रणीतं
चान्यग्रहे स्त्रीविबुधैःप्रणीतम् ॥१॥ २।

टी०॥ गर्भिणी जिस लग्नमें प्रश्न करे उस लग्न सेप्रश्न कहे लग्नके तृतीय नवम पंचम सप्तम इनस्थानोंमें गुरु रवि भौम यहग्रहस्थित होंतोपुत्रहोय इन्हीस्थानोंमें अन्यग्रहपडेहोंयतोकन्याहोय ॥१॥

(मुष्टिप्रश्न)

मेषेरक्तंवृषेपीतं मिथुने नील वर्णकम् ॥
कर्केचपांडुरंज्ञेयं सिंहे धूम्र प्रकीर्तितम् १ ।
कन्यायां नील मिश्रंतुतुला पीत मिश्रितम् ।
वृश्चिके नाम्र मिश्रंच चापि पीतं विनिश्चितम् २
नक्रे कुंभे कृष्ण वर्णं मीने पीतंवदेत्सुधी ॥

टी०॥ प्रश्न कर्त्ता की मुष्टि में किस रंग की वस्तु है निसके बताने की रीति जो मेष लग्न होय तो लालरंग की वस्तु मुट्ठी में है और वृषभ ग्रहोयतो पीत मिथुन होय तो नील कर्क लग्नहोय तो पांडुर सिंह लग्नमें धूम्र कन्या में नीला मिला तुला में पीला मिला वृश्चि कमें तांबा मिला धनु में पीला मिला मकर में हरा मिला बेलका वर्ण कुंभमें लोहमय मीन में पीत मय वर्ण जानना चाहिये ॥१।२

(लग्नसे मनचिंतन प्रश्ने)

मेषेचद्विपदांचिंतावृषेचिंताचतुष्पदः॥मिथुनेगर्भचिं
ताचव्यवसायस्यकर्कटे॥सिंहेचजीवचिंतास्यात्कन्या
यांचस्त्रियस्तथा॥तुलेचधनचिंताचव्याधिचिंताचवृ
श्चिके॥चापेचधनचिंतास्यान्मकरेप्रभुचिंतनम्॥
कुंभेस्थानस्यचिंतास्यामीनेचिंताचदैवकी॥५॥

टी०॥ मेष लग्न में प्रश्न करे तो मनुष्यों की चिंता कहिये वृष में गाय भैंस की चिंता मिथुन में गर्भ चिंता कर्क में व्यापार की चिंता सिंह में जावकी चिंता कन्या में स्त्री की चिंता तुला में धन की वृश्चिक में रोग की धन में धन की चिंता मकर में प्रभु की कुंभ में स्थान की मीन में भूत पिशाचिनी वाहरी बाधा की॥ ५॥

धातुमूलंजीवश्चरस्थिरद्विस्वभावाश्च॥
मेषादयःक्रमेणज्ञातव्याःप्रश्नकोविदैः२।

टीका॥ मेष धातु वृष में मूल मिथुन में जीव इसी क्रम से चर स्थिर द्विस्वभाव इसप्रकार बारह १२ लग्नों की संज्ञा जानिये॥ २॥

(अंकप्रश्न)

अष्टोत्तरशतेचैवप्रश्नकोन्यूनमाचरेत॥शेषंहृ
दशभिर्भक्तंशेषंचैवशुभाशुभं॥फलं॥एकद्वि
सप्तकेवैत्रिलवश्चागेतुर्यदिक्षुभूतेषुनाशः॥दृ
ष्टिसिद्धियुगलेदृष्टिरक्षाशीघ्रंकार्यंस्याच्त्रिषट्हारशेषु३

टी०॥ पृच्छक के कहेहुये एकसे आठ अंकोमें से एक अंक का नाम लिखावे और उसमें १२ का भाग दे शेष बचे तो उससे फल कहिये २।७।९ बचें तो देरमें काम होय और चार ४।५।८।१० बचें तो नाश होय ११ बचें तो सिद्धि ३ व दृष्टि हो ६ बचे तो शीघ्र कार्य होय॥ ३॥

(रोगीप्रश्न)

तिथिवारंचनक्षत्रंलग्नंग्रहरएवच॥अष्ट
भिस्तुहरेद्भागंशेषंतुफलमादिशेत्॥फलं॥
ह्यागमोदेवनाबाधापेत्रीवैनेचरंनिशु॥४॥

षट्चतुर्थभूतबाधानबाधा एकपंचके॥१॥

टी०॥तिथिवारनक्षत्रलग्नप्रहरइनको मिलावे और ८ का भागदेय शेषबचे तिससे फल कहना चाहिये ७।३ बचें तो देवता की बाधा-और २।८ बचें तो पित्त की बाधा-६। ५ बचे तो भूत की बाधा २।५ बचें तो बाधा नहीं जानिये॥१॥

(लग्नदोष)

मेषेच देवी दोषः स्यात् वृषे दोषश्चपैतृकः॥
मिथुने प्रेताकिनी दोषो कर्कटेभूतदोषकः १
सिंहे सहोदराणां वै कन्यायांकुल मातृजाः॥
तुलेदोषश्चंडिकायानाडी दोषो हि वृश्चिके २
चापेचयक्षिणी दोषो मकरे ग्रामदेवतात॥
अपुत्राक्षिजाःकुंभे मीने आकाशगामिनः ३

टी०॥जिस लग्न में रोगी प्रश्न करे तिस का उत्तर मेष लग्न में पित्त दोष-वृष में आकाश देवी- मिथुन में महामाया-कर्क में वातज्वर भूत आकिनी- सिंह में प्रेत भाई को दोष कन्या में कुल देवता तुला में चंडि का पूतना-वृश्चिक नाग दोष वात ज्वर पीड़ा-धन में यक्षिणी वा देह दोष मकर में ग्राम देवी हंसे रोवे कुंभ में अपुत्रा स्त्री की दृष्टि का दो- ष मीन में ज्वर जंजाल दर्शन योगिनी दोष जानना॥

(मेघका प्रश्न)

आषाढस्यासिते पक्षे दशम्यादि दिनत्रये॥
रोहिणी कालमाख्याति सुस्तदुर्भिक्षलक्षणं
रात्रावेवनिरभ्रंस्यात् प्रभाते मेघडंबरम्॥
मध्यान्हेजल विंदुः स्यात्तदादुर्भिक्षकारणम्२

टी०॥आषाढ कृष्णपक्ष की दशमी एकादशी द्वादशी इनमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तिथि क्रम से जानिये और रात्रि में मेघ न होय और प्रातःकाल मेघ गर्जे मध्यान्ह में बूंदें पड़ें ये से लक्षण जिस संवत्सर के होंय उसमें महर्घता जानिये॥२॥

(जल लग्नं)

कुंभः कर्कवृषौमीनमकरौवृश्चिकस्तुलाज्ञ
लग्नान्येवोक्तानिलग्नेष्वेतेषुसूर्यभं॥लभ्ये
वसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ॥ १ ॥ ५ ५ ॥

टीका ॥ कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये जल लग्नें ३ समेंजो सूर्य नक्षत्र जामिले तो बर्षा जानिये ॥ पर्जन्य नक्षत्र॥ अ श्विनीमृग पुष्येषुपूष विष्मुमघासुच ॥ स्वात्यांप्रविष्टेभा नुर्वर्षतेनात्रसंशयः॥१॥ टीका ॥ अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रव ण मघा स्वांति इनक्षत्रोंमेंसूर्य प्रवेश करेतो वृष्टि अधिक होय ॥ १ ॥

(स्त्रीनपुंसकनक्षत्रजानना)

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणांविष्णवान्त्रिनपुंसकंमू
लाच्चतुर्दशंपुंसांनक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः॥१॥ वा
युर्नपुंसकेभेचस्त्रीणांभेचाभ्रदर्शनम् ॥ स्त्री
णांपुरुषसंयोगेवृष्टिर्भवतिनिश्चितम्॥२॥

टीका ॥ आर्द्रा से स्वांति पर्यंत १० स्त्री संज्ञक विष्णवा से ज्येष्ठा पर्यंत ३ नपुंसक मूल से मृगशिर पर्यंत १४ पुरुष संज्ञक न पुंसक न क्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवे तो वायु चले और दोनों स्त्री २ आवें तो मेघ दर्शन शीतल छाया हो और जो स्त्री पुरुष नक्षत्रोंका जोग होय तो वर्षा बहुत होय ॥ (सूर्यचंद्रनक्षत्र की संज्ञा)

अश्विन्यादित्रयंचैवआर्द्रादेःपंचकंतथा ॥ पूर्वाषाढा
दिचत्वारिचोत्तरारेवतीद्वयं ॥ उक्तानिशशिभान्यत्रप्रो
च्यंतेसूर्यभान्यथ ॥ रोहिणीचमृगश्चैवपूर्वाफाल्गु
निकातथा ॥ सूर्येसूर्यभवेद्वायुश्चंद्रेचंद्रेनवर्षति ॥ चो
द्रसूर्येभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ॥ १ ॥ ५ ५ ॥

टीका ॥ अश्विनी भरणी कृतिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य श्लेषा मघा पू र्वाषाढ उत्तराषाढ श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्र नक्षत्र और शे ष सूर्यके नक्षत्र जानिये फल दिन नक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों जो

ी के होंय तो वायु चले और जो दोनों चंद्रमा के होंय तो मेघ नबर्षे और सूर्य चंद्रमा के नक्षत्र होंय तो वर्षा होय ॥ १ ॥

(धान्य प्रश्न)

कापायेजयधर्मलाभकुगिरौमित्राणिसर्वेशुभंगोरा
येप्रियमुग्धनानिलपेलाभारिनाशादिकम् ॥ रघ्या
गेकलहःश्रियश्चवलगेस्थानानिमित्रागमौरोरणंवि
पदापरंगकलहखालेयशोकावहः ॥ २ ॥ ॥ ॥

टीका ॥ २७ दाने धान्य के लेकर एक राशि करे उसी राशि में से एक चुटकी भर निकाल के रक्खे ऐसे तीन राशि करे उनमें से तीन २ दाने जुदे २ करता जाय जो तीन राशियों में से एक एक बचे तो जय लाभ होय -का कहिये १ पा कहिये २ य कहिये १ ऐसी तीन राशियों से पृथक २ एक एक बचे तो उसका फल जय लाभ जानिये ॥ १ ॥

२	कु	क	१	गौ	क	२	मित्रादि सर्व सिद्धि
३	गौ	क	३	ए	२	पे	१	प्रिय भोग प्राप्ति
४	ल	३	प	१	रे	२	लाभ और शत्रु का नाश
५	र	२	प	१	ग	३	कलह होय
६	व	३	ल	३	गे	३	लक्ष्मी मित्र लाभ
७	ले	२	ले	२	रे	२	विपत्ति होय
८	प	१	रे	२	ग	३	कलह होय
९	खा	२	ल	३	प	१	शोक प्राप्ति

ऐसे तीन वार करने से बुरा भला फल जानिये और राशि के समय तीन तीन दाने गिनै ॥ १ ॥

(पशु विषय प्रश्न)

चुमणिभान्नवभेषुवनेस्थितंतदनुषट्सुच
कर्णपथेस्थितम् ॥ प्रचलभेषुगतंगृहमा
गतंह्रयमतंगतमेवमृतंत्रिषु ॥ १ ॥ ॥

टीका ॥ जो सूर्य नक्षत्र से वर्त्तमान नक्षत्र नववा होय तो पशु बन में

जानिये श्रैजो ६ नक्षत्रांत आवे तो मार्ग में पशु जानिये - तिसने आगे ७ सातक्षत्र आवें तो घर में आया जानिये - तिस पीछे दो २ नक्षत्रांत आवे आवन जान नहीं तिसके आगे ३ तीन नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा जानो ॥ १ ॥

(राज्य भंगादि योग)

यदि भवति कदाचि च्छाश्विनी नष्टचंद्रा पुनि रविकुज संरे स्वाति रायुष्मा योगो ॥ गगनचरपशूनांजंगमस्था वरांश्च नृपतिजन विनाशो राज्यभंगस्तु चोक्तः ॥ १ ॥

कदचित् पुनि रवि भौम इनमें किसी वार कर युक्त आर्द्रा अश्वनी किंवा स्वाति नक्षत्र और आयुष्मान् योग होय योग पक्षी पशु जाति स्थावर राजा राजन इनका नाश राज्य भा जानिये ॥ १ ॥

(सूर्यचंद्र के परिवेष मंडल का फल)

रवि शशि पा वेषे पूर्वयामेच पीडा रवि शशि परिवेषे यामेच द्वष्टिः ॥ रवि शशि परिवेषे धान्य नाशस्तृतीये वि शशि परिवेषे राज्यभंग श्चतुर्थे ॥ १ ॥ ६ ॥

रवि का अथवा चंद्रमा का मंडल जो प्रथम पहर में होय तो पीडा जाये - दूसरे पहर में होय तो मघ वर्षे - तीसरे प्रहर में होय तो धान्य नाश - चौथे प्रहर में राज्य भंग होय ॥ १ ॥

(उत्पातों का फल)

रात्रौ धनु र्दिने उल्का तारा चैव दिने तथा ॥ रात्रौ तु धूम केतु श्च भूकंप श्चतथै वहि ॥ १ ॥ एता निदुष्ट चिन्हानि देशा क्षय कराणिच ॥ १ ॥

रात्रि में धनुष दिन में उल्का तथा वज्रपात और रात्रि में धूम केतु का उदय तथा भूकंप ऐसे दुष्ट चिन्ह लक्षित होय तो देश क्षय कारक जानिये ॥ १ ॥

॥ अथ ग्रह युद्ध प्रकरणम् ॥

सूर्य ॥ ऋक्षसंक्रमणंयत्रहृद्वक्त्रे विनियोज्य॰ ॥
दक्षिणेवाहौत्रीणित्रीणिच पादयोः ॥ चत्वो वाम
वाहौचहृदयेंचनिर्दिशेत् ॥ ऋक्षणोर्द्वयंद्वयंयोज्यमूर्ध्निचै
कंगुदे ॥ फलं ॥ रोगोलाभस्त॰ धसम्प
वच ॥ ऐश्वर्यंराजपूजाचअपमृत्युरि॰ ति ॥ ३ चंद्रचं
द्रचक्रंप्रवक्ष्यामिनरकारंसुशोभनम् ॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्रे
कंत्रीणिदक्षिणहस्तके ॥ १ ॥ हृदिषट्कंप्रदातव्यंवाम
हस्तेत्रयंतथा ॥ २ ॥ कुक्ष्योःषट्कचदातव्यंपादे॰ कं
विनिर्दिशेत् ॥ फलं ॥ मुखेचंद्रव्यहरणंशीर्षे॰ ख॰ रं
स्मृतम् ॥ ह्यानिदंदक्षिणेहस्तेहृदयेचसुखावहम् ॥
वामहस्तेतुरोगाश्चकुक्ष्योःशोकस्तथैवच ॥ पाद॰ ॥
निरोगौचजन्मधिष्ण्यादिचन्द्रभम् ॥ ४ ॥ भौमस्य॰ र्हा
मस्यचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मधिष्ण्यादिभौमभम् ॥ शीं॰ भौ
केमुखेत्रीणित्रीणिवैदक्षिणेकरे ॥ १ ॥ पादयोः॰ ट
तव्यंवामहस्तेत्रयंतथा ॥ गृह्येचैकंनेत्रयोर्हृदय॰ प्रदा
च ॥ २ ॥ फलं ॥ विजयश्चैवरोगश्चलक्ष्मीः॰ यमे
था ॥ मृत्युलाभःसुखंचापिफलंज्ञेयंविचक्ष॰ भय
बुधस्य ॥ बुधचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मऋक्षादि॰ ॥ ३
॥ शिरसित्रीणि राज्यंस्यात्वक्त्रेकंधनधान्य॰ गोम्यभ
१ ॥ नेत्रेद्वेप्रीतिलाभौचनाभौपंचकंतथा ॥ म् ॥
षट्प्रवासश्चवामेवेदाधनंतथा ॥ २ ॥ चत्व॰ क्ष्योः
क्षिणेहस्तेधनलाभस्तथैवच ॥ गुह्यस्थाने॰ द्वयं
चवंधनेमरणं फलम् ॥ ३ ॥ गुरुःगुरुचक्रंप्र॰ गामि
गुरुभाज्जन्मऋक्षकम् ॥ दद्याच्छिरसिचत्वा॰ रिच
त्वारिदक्षिणेकरे ॥ १ ॥ एकंकंठेमुखंपंचपादय॰ ःष
ट्प्रदापयेत् ॥ करेवामेचचत्वारित्रीणि दद्या॰ ॥
नेत्रयोः ॥ २ ॥ तत्फलम् ॥ राज्यं लक्ष्मीर्धनप्र॰ प्रः

मेघनर्षे

गोरा
ष्यां
संवि
॥ क
रं
॥
ला
का
यो:
द
यं
यामि
रिच
ीःष
प्रः

मृत्युस्तथैवच ॥ सुखंनैवक्रमेणैवं फलंज्ञेयं
क्षणैः ॥ ३ ॥ शुक्र ॥ शुक्रचक्रंप्रवक्ष्यामि शुक्राधि
नुजन्मभम् ॥ मुखे त्रीणिमहालाभः पूर्णैर्षेपंच
म् ॥ त्रिकंतुदक्षिणहस्तेलाभहानिकरंसदा ॥ त
त्रीणिभि जयेत् ॥ २ ॥ हृदयेद्वेधनं
पौख्यंधनप्राप्तिर्गुह्य
प्रोक्तंभृगुपुत्रस्य
योर्द्वयोः ॥ भव सौरिर्व्यजन्म
व ॥ ३ ॥ स्त्रीलाभश्चकर
भिः ॥ पाणिः ॥ सौरिचक्रंप्रवक्ष्यामि
क्षभम् ॥ मूर्ध्नेकंचतथावक्त्रे
॥ १ ॥ विन्यसेत्स्यादयुग्मेषट्व
हृदयेपंचरक्षाणिक्रमाच्चत्वारि
यंगुदेचैकंमंदस्यापुरुषाकृतेः ॥ फल
भेरोगोलाभोवैदक्षिकरे ॥ स्याद्ध्वाच
वामकरेन्हणाम् ॥ हृदयेपंचलाभोवैनेत्रे
ता ॥ पूजामस्तेपरानूनंगुदेमृत्युर्विनिर्दि
राहु ॥ राहुचक्रंप्रवक्ष्यामिजन्मभाद्राहु
भ्रिंत्रीणितथाप्रोक्तंकरेचत्वारिदक्षिणे ॥
प्रदातव्यंवामहस्तेचतुष्टयम् ॥ हृदयेत्री
द्वौनेत्रयोर्द्वयम् ॥ गुह्योद्वयंक्रमेणैवराहु
२ ॥ फलं ॥ सव्यंरिपुक्षयःपंथा
॥ जयःसौरंस्थूल
॥ केतुचक्रंप्रवक्ष्य
चजयश्चैवमु
च विजय
स्यो
गो

ग्रीवे त्रीणिमुखे त्रयंच विभदे कैकमंसकंधयोरं
कभुजयोस्तथा करतलेधिष्ठायानि पंचोदरे ॥
गुह्यतलेचजानुयुगलेएकैकमक्षिपेज्जंतो
दिति वृंनिगणकाः पृष्ठपाणिपादद्वयोः ॥ ३
णं स्थितेचगमनंदेशंलंजा ॥ ४ ॥ ग्रथ
मनमहीनाभौ च गौरव्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्ये ल
स्यकरयोर्वा ह्रीर्वलंवैमुखे मिष्टान्नंच नभेच्चमा
स्यं करयोर्वा ह्रीर्वलंवैमुखे मिष्टान्नंच नभेच्चमा
ग्यं मूर्द्धिनी ॥ २ ॥ ॐ ॐ ॐ ॥

जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने प्रथम १ मस्तक रा
२ मिष्टान्न भोजन १।१ कंधों पर बल ग्रधिकहो
२ बलवान् हथेलियों पर १।१ चोरहोय हृदय प
र १ सुख प्राप्ति मुख पर १ परदार संपटता जानु
मन दोनों पैरों पर ३।३ ग्रल्पायुः दुख प्रकाशन
ल जानिये नव ग्रहों कोटीका सुगम है सो ग्रागे च
से सब ग्रहों का फल जानना ॥ २ ॥

ति जिस नक्षत्र में शनैः उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गिने
तिने नक्षत्र ग्रावें वही फल जानना ॥ १

मुख	पायों	वा वायु	हृदय	नेत्रों	मस्त	गुदा	सूर्य
	६	४	५	७	१	२	०
भ	लक्ष्मी	राज्य	मृ	चर्क			

ग्रहोय तिस पर्यंत
निये ॥

णिमा में जो होली की लौ पूर्व को जा
ी सुख जानिये और दक्षिण को जाती होय तो
ा पड़े निश्चय करके जानना और जो प
तो क्षण बढ़े संपत्ति होय जो उत्तर को जाती
प्राकाश को जाय तो राजा गढ़ में जाय बैठे
हुतासनी धूल बर्षा फलम् ॥

(बर्षा फल)

ष्टिश्च निहारश्च भयंकरः ॥ वि
हस्य परिवेशस्य ऐनकृत ॥ १ दि
संकुर्या न्निर्घातो नृपभ
श्चौर भीति प्रदायकी ॥ २ ग्रह यु
ोदृष्टे तथै वच ॥ ग्रहाणां तेम
विनाप्पिनी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

की बर्षा होय तो क्षय करे और जो कुहर पड़े तो
में जानिये - जो बिजली पात होय तो अग्नि चार ओ
पात होय तो राज की भय जानिये - और जो पवन
चंड पवन चले तो चोरन की भय जानिये और
द होय तो राजान में युद्ध जानिये - और जो केतु उद
का भय जानना चाहिये - और जो ग्रह के अंत में वर्ष
॥ २ ॥ ३

लबर्षा

ज्योतिषसार संवत्सर
प्रथम शुभम्

श्री

श्रीगणेशाय नमः श्रीसम्वत् २००३ वैशाख द्वितीया गते गुरुवासरे श्री
सूर्योदयात् गत घटी ४ पलोष्ट च ४५ गतेषु पश्चिमे मध्ये
क्षमाच्छेदकतादिसर्वारिष्ट शम